माऊली

सुधा खराटे

Prashant

प्रशांत पब्लिकेशन्स

माऊली (ललित गद्य) / सुधा खराटे
Mauli (Lalit Gadya) / Sudha Kharate

© सुधा खराटे

संवाद : 9975163843
Email : sudhakharate4@gmail.com

प्रकाशक
रंगराव पाटील
प्रशांत पब्लिकेशन्स
3, प्रताप नगर, श्री संत ज्ञानेश्वर मंदिर रोड,
नूतन मराठा महाविद्यालयाजवळ, जळगाव 425001.
दूरध्वनी : 0257-2235520,2232800
Email : prashantpublication.jal@gmail.com
Website : www.prashantpublications.com

पहिली आवृत्ती : 1 जानेवारी 2023

ISBN 978-93-95227-49-0

मुद्रण : थॉमसन प्रेस (इंडिया) लि., दिल्ली
अक्षरजुळवणी : प्रशांत पब्लिकेशन्स

मूल्य : ₹ 200/-

Shot on realme 1

अनुक्रमणिका

१. माऊली ९
२. निसर्ग १६
३. नातं २३
४. दगड ३०
५. अंतरिचे धावे... ..... ३६
६. योग आणि महिलांचे आरोग्य ४३
७. बालमन ५३
८. स्पर्श ६३
९. जय जवान ७१
१०. पुन्हा स्थलांतर ८०
११. अवलिया ८७
१२. सँडविच ९५
१३. घरं झाली मोठी... ..... १०२
१४. सिक्स्थ सेंस १०८
१५. श्री गजानन महाराज संस्थान, शेगाव ११६

Shot on realme 1

(१)

माऊली

'मातृ देवो भव', 'पितृ देवो भव' असे प्रभावी, अर्थपूर्ण शब्द आपल्या संस्कृतीत आहेत. 'माता-पिता', 'आई-वडील' या शब्दजोडीत 'आई' शब्द आधी आहे. आई-वडिलांमध्येच परमेश्वर आहे. त्यांना मनोभावे वंदन करणे, त्यांची श्रध्देने मनापासून सेवा करणे म्हणजे देवाची सेवा करणे. ज्या आईने नऊ महिने उदरात सांभाळले, प्रसुतीवेदना सहन करून जन्माला घातले, हे जग दाखवले, कष्ट करून संगोपन केले, विविध संस्कार करून जीवन जगण्यास सक्षम केले त्या आईविषयी प्रत्येकानेच कृतज्ञता बाळगणे महत्त्वाचे आहे. आई म्हणजे काय? 'आई' या संज्ञेत दोन वर्ण आहेत - आ + ई = आई. आ म्हणजे आत्मा व ई म्हणजे ईश्वर. जिच्यामध्ये आत्मारूपी ईश्वर सामावलेला आहे ती आई होय. या आईलाच श्रद्धेने माऊली देखील म्हटले जाते.

आम्ही भावंडे खरोखर खूप भाग्यवान आहोत. मी साठीत प्रवेश केलेला आहे. आजही आईचे कृपाछत्र आमच्यावर आहे. आई हातात बॅट घेऊन ९१ वी धाव काढत आहे. खरे तर आईच्या पिढीला म्हणजे आमच्या आधीच्या पिढीला दीर्घायुष्य आहे. काहींनी नव्वदच्या वर धावा काढल्या तर काहींनी शंभरी पार केली. त्याला अनेक कारणे आहेत. मुख्य कारण म्हणजे कष्ट करून कमवलेले शरीर होय. तसेच शांत, समाधानी वृत्ती, नैतिक आचरण, जिजीविषावृत्ती व कोणत्याही गोष्टींचा हव्यास नसणे ह्या बाबी देखील त्यांच्या दीर्घायुष्याला कारणीभूत आहेत. आईचे माहेर खानदेशातील जळगाव जिल्ह्यातील शिरसोली या गावचे. शेतकरी कुटुंबात तिचा जन्म झाला. आईचा जन्म ३ फेब्रुवारी १९३२ ला झाला. आमचे आजोबा बारकू पाटील हे पुरोगामी विचारांचे होते. त्यांनी आईला सातवीपर्यंत शिक्षण दिले. त्यावेळी सातवीला 'फायनल' शब्द वापरीत. फायनल पास झाल्यावर शाळेत शिक्षिकेची नोकरी मिळत असे. त्याकाळी अल्पवयात लग्न करण्याची प्रथा होती. तरी आजोबांनी चारही मुलींची लग्नं अठरा वर्षानंतर केली.

शिरसोलीतील घारे कुळात जन्मलेली मुलगी अमळनेर तालुक्यातील वासरे गावी व्यास कुळात सून म्हणून आली. वर्तमान काळाप्रमाणे त्या काळातही [illegible]र संशोधन करताना मुलीचे वडील हे शेती व नोकरी पाहत असत.

Shot on realme 1

SJIF Impact Factor - 5.67 E- ISSN 2582-5429

AKSHARA

Multidisciplinary Research Journal
Peer-Reviewed & Refereed International Research Journal
January 2023 Special Issue 07 Volume III (B)

आज़ादी का अमृत महोत्सव

22-23

आज़ादी के 75 वर्ष का हिंदी साहित्य

अतिथि संपादक
प्रोफेसर रजनी शिखरे
प्राचार्य
र. भ. अट्टल कला, विज्ञान एवं वाणिज्य महाविद्यालय गेवराई
जि. बीड महाराष्ट्र

कार्यकारी संपादक

. गजानन चव्हाण
धान सचिव
हाराष्ट्र हिंदी परिषद

प्रो.डॉ.जिजाबराव पाटील
अध्यक्ष
महाराष्ट्र हिंदी परिषद

प्रा.संतोष नागरे
हिंदी विभागाध्यक्ष
र. भ. अट्टल महाविद्यालय गेवराई

ef Editor : Dr. Girish S. Koli, AMRJ
Details Visit To - www.aimrj.com

Scanned with CamScanner

E- ISSN 2582-5429
AMRJ
Akshara Multidisciplinary Research Journal
Single Blind Peer Reviewed & Refereed International Research Journal
SJIF Impact- 5.67
January 2023 Special Issue 07 Volume III (B)

35

प्रभा खेतान के काव्य में आम आदमी की वेदना

प्रा. डॉ. प्रल्हाद विजयसिंग पावरा
हिंदी विभागाध्यक्ष
कला, वाणिज्य एवं विज्ञान महाविद्यालय, यावल जि.जलगाँव

प्रस्तावना-:

समय के परिवर्तन के साथ-साथ काव्य के रूप में भी बदलाव आये। सामाजिक परिवेश के प्रति सजगता के कारण काव्य में नई संवेदनाओं ने जन्म लिया। कवियत्री ने नई संवेदनाओं में आम आदमी की पीड़ा को लेकर कई कविताएँ लिखी। प्रभा खेतान की कविताएँ आम आदमी की व्यथा को प्रकट करती हैं। कवियित्री आज की परिस्थिति से संतुष्ट नहीं है। आज की वर्तमान व्यवस्था में आम आदमी की अवस्था बहुत ही दयनीय है। प्रभा खेतान आर्थिक स्वतंत्रता को स्त्री के विकास की पहली सीढ़ी मानती है। 'आओ पेपे घर चलें' में वह लिखती है कि, "मैं उस समाज की हूँ जहाँ आदमी की एक की विशेषता होती है-वह लाख रुपए का आदमी है या करोड़ों का ? पुनःनही मेरी बढ़ाई इसी समाज में चलेगी आप नहीं जानती बहन जी, औरत की सारी स्वतंत्रता उसके पर्स में निहित है।"[1]

प्रभा खेतान ने आम आदमी की पीड़ा एवं व्यथा को भी अपनी कविता का कथ्य बनाया है। आज वर्तमान व्यवस्था में यह आम आदमी की रोटी के लिए संघर्ष कर रहा है। उसे भूख की आग सिर से लेकर पैर तक जलाती रही हैं। जिसे समाज में सबसे निचले सोपान पर रखा जाता है, ऐसे आदमी की व्यथा को कवयित्री ने बखूबी व्यक्त किया है। इसी परंपरा में प्रभा ने अपने 'अपरिचित उजाले' प्रथम काव्य-संग्रह की कविताएँ 'बंद कमरे में' के अंतर्गत इस आदमी की स्थिति का चित्रांकन किया है। आज के वर्तमान युग में आम आदमी संघर्ष करता हुआ अपना जीवन जीता है। उसकी आर्थिक स्थिति में कोई सुधार नहीं आया है इसलिए पहले वह जो था वही आज भी है। प्रभा लिखती है-

"मेरी सब चीजें अपना परिचय खोने लगती है
दीवारों के रंग धूमिल
नीले पर्दे फीके
छत पर घूमता पंखा
गतिहीना"[2]

आम आदमी अपने जीवन में आर्थिकता को बढ़ाने हेतु किस तरह संघर्ष करता हैं। इस संघर्षभरे जीवन को प्रभा अपने आपको आम आदमी के रूप में देखते हैं, तभी तो वह उसकी वेदना को समझ सकी हैं। उनकी पीड़ा उन्हें अपनी सी लगती हैं। प्रभा लिखती है कि-"तब मैं निकल पड़ती हूँ-बाहर / फुटपाथ पर मुँगफली बेचनेवाला / परिचय की मुस्कान देता है / और सामने पानवाले की दुकान पर / घरवाली का हाल पूछना / कहीं अधिक अपना लगता है।"[3]

इस आदमी की आवश्यकताएँ अत्यंत सीमित होती हैं। क्योंकि वह स्थिति और औकात को जानता है। वह केवल जिंदा रहना चाहता है, चाहे भीख से क्यों ना मिले रोटी, इसलिए भीख माँगता है। इस चित्र को देख प्रभा लिखती है- "पेड़ की फुनगी पर बैठी चिड़िया / गीत गाती है / और नीचे भिखारिन भीख माँगती है, / इस शहर में बसंत भी आकर /मौसमी खबर बन जाता है।"[4]

आम आदमी हर दिन एक खबर बन जाता है। वह अपनी योग्यता, अपनी शक्ति जानता है, अतः अपनी सीमा से बाहर कभी नहीं जाता। अपने काम में ही अपना सबकुछ है यह मानकर अपने दैनंदिन जीवन का बड़ी निष्ठा के साथ जुड़ा रहता है। प्रभा लिखती है-"मुन्ने तो घर का बहुत काम है / कपड़े सुखाने है / मेरे चुल्हे की लकड़ियाँ गीली है / बच्चा सर्दी से खाँसता है, / तुम्हारे साथ-साथ कैसे बनूँ पाखी / या मेघ मल्हार गाऊँ।"[5]

आज की समाज व्यवस्था में आम आदमी अपनी स्थिति से समझौता कर लेता है और दिन-ब-दिन उसी तरह जीवन जीता रहता है। प्रभा खेतान अपनी कविता 'अब बची नहीं' में लिखती है कि, "हम / प्रारब्ध सोचने लगते है। / कुकुरमुत्तों के संबंधी हम यों ही / बरसात में / गोबर की खाद में / सड़े-गीले महान स्तंभों की दरारों में / पनपते रहेंगे / हर रोज।"[6] इस तरह अपने प्रथम काव्य संग्रह 'अपरिचित उजाले' में आम आदमी की वेदना के चित्रांकन में उनकी पीड़ा, दुःख, व्यथा, तकलीफ आदि को अपनी कविताओं में कवयित्री ने अभिव्यक्त किया है।

Scanned with CamScanner

E- ISSN 2582-5429

Akshara Multidisciplinary Research Journal

Single Blind Peer Reviewed & Refereed International Research Journal

SJIF Impact- 5.67

AMRJ

January 2023 Special Issue 07 Volume III (B)

आज के समाज व्यवस्था में मनुष्य वर्ग अपना जीवन जी रहा है, बिना रुके बिना थके। क्योंकि आज सभी लगें है अपनी पेट की भूख को पूरा करने के लिए। प्रभा का द्वितीय कविता संग्रह सीढ़ियाँ चढ़ती हुई मैं की कविता 'अमता' में प्रभा खेतान लिखती है कि-

"सबके सब लगे है जीने की तैयारी में
अविराम युद्ध चल रहा है
भूख और रोटी।"

सामाजिक अव्यवस्था और भ्रष्टाचार के कारण आम आदमी अपनी हालात की स्थिति को उभारने हेतु आज लड़ रहा है। अमीर और अमीर बनता जा रहा है। किंतु गरीब गरीब ही रहा है। प्रभा अपनी कविता 'मंथन' में लिखती है- "सड़क किनारे पत्थर तोड़नेवाला / दो पैसों का दैत्य और दानव / लड़ रहे है, / मंथन जारी है / विष्णु मोहिनी रूप धरे / पिला रहे, / डालर, पाउण्ड और रुपया।"[8]

आम आदमी अपने परिवार के साथ जीवन जीता है। वह समाज-व्यवस्था द्वारा मिलने वाली असुविधा को भली-भाँति समझता है। इसलिए वह हमेशा जागृत रहता है। आम आदमी कई शताब्दियों से यह जानता है कि यह जीवन एक सफर है, उसे कई समस्याओं से जूझना पड़ता है। शुरू से लेकर अंत तक। प्रभा अपनी कविता 'आग का होना' में लिखती हैं कि,

"जन्म से मृत्यु तक की
एक यात्रा
सुखद या दुखद
कुछ भी हो सकती है
पर इस छोर से
उस छोर तक।"[9]

आज वर्तमान युग के समाज में आम आदमी की स्थिति ऊसर भूमी की तरह हो गयी हैं। संभावना यही हैं कि, आज नहीं तो कल उसके जीवन में खुशी का नया सवेरा जगमगाएगा। प्रभा अपनी कविता 'संभावना' में लिखती है कि,

"ऊसर धरती पर
इतना बरसो कि
वह गेहूं का खेत उगलने
पर मजबूर हो जाये।"[10]

AMRJ

'सीढ़ियाँ चढ़ती हुई मैं' प्रभा की कविताओं मे आम आदमी के जीवन की त्रासदी, अन्याय, गरीबी और बेकारी आदि समस्याओं का अंकन हुआ है।

वर्तमान युग आम आदमी की वेदना मे हर दिन नयी दिशा लेकर नए दुःख को सामने खड़ा कर देता है। आम आदमी पीड़ा को सहते-सहते, उस पीड़ा मे भी खुशी का एहसास होने लगा है। क्योंकि उसका यह जीवन इस जन्म में तो बदलने वाला नहीं चाहे कोई भी आस बांधकर वह जिये। 'एक और आकाश की खोज में' काव्य-संग्रह मे प्रभा ने आम आदमी की वेदना को अपनी 'तुम्हारे आने की खुशी मे व्यक्त करते हुए लिखती है कि,

"कोई कहता आ गया
जीवन का पतझर
मैं भी सिर हिला
हामी भरती।"[11]

आम आदमी की त्रासदी को इस आधुनिक युग मे भी प्रकृति पहचान भरी दृष्टि से देखती हैं चाहे समाज में कोई भी बदलाव आए। किंतु आम आदमी कष्टमर जीवन से ही अपना भविष्य उजागर कर सकता है। यही आज का यथार्थ है प्रभा अपनी कविता 'आकाश में उड़ान भरता हुआ मे लिखती है कि,

"एक गंध है
मोरियों में बहते ...

Scanned with CamScanner

E- ISSN 2582-5429
Akshara Multidisciplinary Research Journal
Single Blind Peer Reviewed & Refereed International Research Journal
AMRJ
January 2023 Special Issue 07 Volume III (B)
SJIF Impact- 5.67

चिड़िया ने भी
आत्मसात किया है ?"[12]

आज आम आदमी अपनी सास बाँधे बैठा है कि, आज नही तो कल मेरी बात वह परमात्मा सुनेगा। उसकी अंतर्गत मन की दशा तुम हो गई है। फिर भी अपनी पुकार जारी रखता है। प्रभा अपनी कविता 'पंख उछालती तितलियाँ फूलों पर, पत्तों पर' में लिखती है कि, "जाड़े की सुबह। सुनो क्या कहना चाहती है / राम नाम की / माला जपती हुई बुढ़ीया / जो अब उम्मीद नहीं करती कि / उसका बेटा लौट कर आयेगा / उसके पास।"[13] 'एक और आकाश की खोज में' इस काव्य संग्रह की कुछ कविताओं में कवयित्री ने आम आदमी के दु:ख, दर्द, आशा, आकांक्षा और मन की दशा का अंकन किया हैं।

आम आदमी का जीवन अश्रुमय होता है। सभी प्रकार के अभाव से संघर्ष करता हुआ वह हताश-निराश भी हो जाता हैं। आर्थिक स्थिति ने उसे विवश कर दिया है। फिर से कोई अवतार हो समय को चक्र चले ओर चारों ओर से यह स्थिति बदल जाए। 'कृष्णाधर्मा मैं' इस काव्य संग्रह की कुछ एक पदों में आम आदमी की वेदना, दर्द, पीड़ा का अंकन हुआ हैं- "लोटती रही / असमर्पिता / बार बार पाती रही / अपनी ही तरह एक नश्वर आदमी को अपने पास।"[14]

इस युग का आम आदमी उस समय के चित्र को देख कॉप गया है। क्योंकि मानव अवतार में परमात्मा भी आम आदमी ही था। नश्वरता की राह पर चल रहा था। आज का यह आदमी भू-स्थल पर जितनी भी जीव दशा इसी आतंक का शिकार हुई हैं। प्रभा अपनी कविता 'कृष्णाधर्मा मैं' लिखती है कि, "जब जारी था भयंकर युद्ध / तुम भी कॉप गये, देव / दानवों के आतंक से / कौन था /एक अदना आदमी के सिवा।"[15]

निष्कर्ष:-

प्रभा खेतान ने कविताओं में सामाजिक संवेदना का विवेचन संपूर्ण प्रामाणिकता के साथ किया हैं। आम आदमी की पक्षधर प्रभा की कविता उनके समाज जीवन का यथार्थ चित्रण करती हैं। आम आदमी की अभावों से भरी जिंदगी, संघर्षशीलता, पीड़ा वेदना दु:ख-दर्द,व्यथा, संकट से जुड़ने पर भी अदम्य जिजीविषा हैं। आम आदमी के प्रति संवेदनशील प्रभा के मन में सहानुभूति है, इसलिए वह अपनी कविताओं में उनकी वेदना का चित्रण कर सकी हैं।

संदर्भ-:

1. आओ पेपे घर चलेप्लैप से .पृ ,प्रभा खेतान-
2. अपरिचित उजाले 12 .पृ ,प्रभा खेतान -
3. वही12 .पृ ,
4. वही19 .पृ ,
5. वही28 .पृ ,
6. वही68 .पृ ,
7. सीढ़ीयाँ चढ़ती हुई मैं 16 .पृ ,प्रभा खेतान -
8. वही25 .पृ ,
9. वही32 .पृ ,
10. वही79 .पृ ,
11. एक और आकाश की खोज1 .पृ ,प्रभा खेतान -
12. वही21 .पृ ,
13. वही55 .पृ ,
14. कृष्णाधर्मा मैं 16-15 .पृ ,प्रभा खेतान -
15. वही16 .पृ ,

AMRJ

Scanned with CamScanner

2582-5429
pact - 5.675

AKSHARA

MULTIDISCIPLINARY RESEARCH JOURNAL
Peer-Reviewed & Refereed International Research Journal
March 2023 Special Issue 08 Volume I

अ. शि. मंडल द्वारा संचालित, कला एवं वाणिज्य महाविद्यालय ट्रस्ट का

चं. ह. चौधरी कला, शं. गो. पटेल वाणिज्य एवं बा. भ. जा. पटेल विज्ञान महाविद्यालय, तलोदा,

जि. नंदुरबार महाराष्ट्र

स्नातकोत्तर हिंदी विभाग एवं

उत्तर महाराष्ट्र हिंदी प्राध्यापक परिषद

के संयुक्त तत्वावधान में आयोजित

वार्षिक अधिवेशन एवं राष्ट्रीय संगोष्ठी

12 मार्च 2023

22-23

आज़ादी के 75 वर्ष के हिंदी साहित्य की कालजयी रचनाएँ

संपादक
डॉ. महेश गांगुर्डे
महासचिव
उत्तर महाराष्ट्र हिंदी प्राध्यापक परिषद

अतिथि संपादक
प्रोफेसर संजयकुमार शर्मा
अध्यक्ष
उत्तर महाराष्ट्र हिंदी प्राध्यापक परिषद

hief Editor :
. Girish S. Koli

Scanned with CamScanner

E- ISSN 2582-5429

Akshara Multidisciplinary Research Journal

Single Blind Peer Reviewed & Refereed International Research Journal

AMRJ

SJIF Impact- 5.67

March 2023 Special Issue 08 Volume I

33	मन्नू भंडारी का उपन्यास 'आपका बंटी' मे चित्रित स्त्री चेतना -- डॉ.मनोज सामा पाडवी	98
34	लक्ष्मीनारायण मिश्र जी का नाटक 'मृत्युंजय' मे गांधी दर्शन-- डॉ. विजयप्रकाश ओमप्रकाश शर्मा	100
35	कालजयी रचना-'चांदनी का दु:ख' -- डॉ.प्रीति सुरेंद्रकुमार सोनी	102
36	'तरकश के तीर' ग़ज़ल-संग्रह मे सामाजिक और राजनीतिक चिंतन- प्रा. छाया देवीदास पाटील	106
37	वीरेन्द्र जैन के उपन्यासो मे पर्यावरण जागृति एवं मानवतावादी चिंतन -- डॉ. काळु दत्तु बागुल	109
38	आदिवासी जीवन की मूल संवेदना को दर्शाता आंचलिक उपन्यास 'मरे न माहुर खाय'-डॉ. स्वाती वसंत शेलार	112
39	सुधा अरोडा की कहानी 'छोटी हत्या, बडी हत्या' के संदर्भ में- डॉ. योगेश जी. पाटील / प्रा. भारती माधवराव सोनवणे	115
40	'टीन के घेरे' कहानी संग्रह मे नारीविषयक चिंतन-- प्रा. एम. जी. ठाकरे	117
41	भारतीय संस्कृति को नव-संजीवनी प्रदान करता ग़ज़ल-संग्रह - 'आदमी है कहाँ' - डॉ. दिपक (कला) विश्वासराव पाटील	119
42	मन्नू भंडारी की कहानियों में पारिवारिक एवं दाम्पत्य विघटन का चित्रण-- प्रा. राजेश एम. खर्डे	122
43	विभाजन की त्रासदी – 'मलबे का मालिक'--प्रा. राजेन्द्र मुरलीधर ब्राहमणे	125
44	कालजयी उपन्यास 'चौदह फेरे'– प्रा. डॉ. अंजीर नथ्थू भील	128
45	कमलेश्वर का कालजयी उपन्यास – 'कितने पाकिस्तान' प्रो. डॉ. संजयकुमार शर्मा / प्रा. डॉ. दत्तात्रय दशरथ पटेल	130
46	शकुंतिका – एक कालजयी उपन्यास - डॉ. संजयकुमार शर्मा / परेश रामकृष्ण सननसे	134
47	हिंदी साहित्य की कालजयी रचना अमरकांत जी का उपन्यास 'उन्हीं हथियारों से' प्रो. डॉ. राजेंद्र काशीनाथ जाधव / श्री. प्रमोदगिर बारकुगिर गोसावी	138
48	मनीषा कुलश्रेष्ठ के 'पंचकन्या' उपन्यास में चित्रित नारी विमर्श - प्रा. सपना पाटील /प्रो. डॉ. जिजाबराव व्ही. पाटील	141
49	'अस्तित्व' उपन्यास में चित्रित नारी विमर्श --प्रा. वैशाली प्रमोद अहिरे/ प्रो. डॉ. जिजाबराव व्ही. पाटील	143
50	नाटककार स्वदेश दीपक की कालजयी नाट्य कृति: ' जलता हुआ रथ ' -डॉ. बन्सीलाल हेमलाल गाडीलोहार	145
51	प्रभा खेतान का काव्यसंग्रह 'कृष्णाधर्मा मैं'-प्रा. डॉ. प्रल्हाद विजयसिंग पावरा	149
52	'शिकंजे का दर्द' कालजयी रचना-- श्रीमती संघमित्रा म. गवळे/ प्रो. डॉ. संजयकुमार नं. शर्मा	151
53	संजीव की कालजयी कहानी – 'अपराध'-- डॉ.सुनिल पानपाटील / श्री.मनोज रामदास पाटील	153
54	सुषमा मुनीन्द्र जी की कालजयी कहानियां -मेमो, क्षुधा। - प्रो.डॉ.संजयकुमार नं. शर्मा, / भारती राजधर निकम	156
55	'अभिषेक' उपन्यास में चित्रित सामाजिक बोध– डॉ . जगदीश चव्हाण	159
56	'दौड़' उपन्यास में व्यक्त मानवीय संघर्ष-- डॉ कृष्णा प्रल्हाद पाटील	161
57	'मैला आँचल' में अभिव्यंजित समाज वर्तमान परिप्रेक्ष्य में -- प्रा. महेंद्र गोरजी वसावे	163
58	आज़ादी के 75 वर्ष के हिंदी साहित्य की कालजयी रचनाएं- प्रा. डॉ. करुणा दत्तात्रय आहिरे	166
59	हिंदी साहित्य की कालजयी गद्य रचनाओं में गैर दलित साहित्यकार–प्रा. तडवी नटवर संपत	168
60	धरती की सतह पर और समय से मुठभेड़–कालजयी ग़ज़ल संग्रह -डॉ.वसीम मक्रानी	171
61	'कर्ण की आत्मकथा' में पौराणिक बोध--प्रा.भाऊसाहेब नामदेव पाटील	174
62	'सलाम आखिरी' उपन्यास में वर्णित बेबस जिंदगी का चित्रण– डॉ. मनोज पाटील	176
63	'जंगल पहाड़ के पाठ' : आदिवासी संस्कृति का दस्तावेज-- प्रा. शोभा अहिरराव / प्रा.डॉ.गौतम कुवर	180
64	दो कालजयी कहानियाँ-'अपना-अपना भाग्य' और 'उसने कहा था' -नागेश भरत सूर्यवंशी / डॉ.संजयकुमार शर्मा	183
65	गोदान : एक कालजयी उपन्यास- डॉ. सुभाष कुमार ठाकरे	186
66	परशुराम शुक्ल के बाल काव्य मे सांस्कृतिक चेतना-- शेख जेबा शकिल	189
67	रश्मिरथी में कर्ण-कृष्ण संवादों की कालजयिता - डॉ मनि...	

Scanned with CamScanner

E- ISSN 2582-5429
Akshara Multidisciplinary Research Journal
Single Blind Peer Reviewed & Refereed International Research Journal
March 2023 Special Issue 08 Volume I
SJIF Impact- 5.67

51

प्रभा खेतान का काव्यसंग्रह 'कृष्णाधर्मा मैं'

प्रा. डॉ. प्रल्हाद विजयसिंग पावरा
हिंदी विभागाध्यक्ष
कला, वाणिज्य एवं विज्ञान महाविद्यालय, यावल जि.जलगाँव

प्रस्तावना :-

उत्तरशती के हिंदी साहित्य में नारी लेखन की अहम भूमिका रही हैं। फलस्वरूप जो नारी- जीवन हाशिए पर था वह परिधि में आ गया है। महिलाओं द्वारा नारी जीवन के अनेकानेक प्रश्नों, समस्याओं का अध्ययन, चिंतन, मनन एवं लेखन किया गया है। समकालीन महिला साहित्यकारों में कृष्णा सोबती, मन्नू भंडारी, मैत्रेयी पुष्पा, उषा प्रियंवदा, मृदुला गर्ग आदि के साथ जुड़नेवाला एक महत्वपूर्ण नाम है प्रभा खेतान। वह एक संवेदनशील कवयित्री, उपन्यासकार, कहानीकार, चिंतक, अनुवादक, संपादक तथा आत्मकथाकार है। नारी-जीवन अनेक साहित्य का केंद्रीय विषय रहा है। उनके साहित्य में नारी-जीवन के विविध आयाम परिलक्षित होते हैं।

कृष्णा धर्मा मैं:-

प्रभा खेतान का यह चौथा काव्य संग्रह है सन 1986 में 'स्वर समवेत' कोलकाता से प्रकाशित हुआ है। 'कृष्णा धर्मा मैं' एक लंबी लंबी कविता है। प्रभा ने 'स्व' को कृष्ण से जोड़ दिया है। वह जो कुछ कर रही है कृष्णाधर्मा बनकर कर ही रही है। प्रभा खेतान स्वयं कहती है कि "यह कविता खुद-ब-खुद टुकड़े-टुकड़े में कलम के सहारे कागज पर उतरती चली गई। किसी महत्ती प्रेरणा के रूप में नहीं, यह कोई अमूर्त धारणा भी नहीं थी। यह तो अपने समूचे अस्तित्व के साथ सफेद कागज पर उभरती हुई एक बिल्कुल ठोस कविता थी।"[1]

प्रभा खेतान ने भी कृष्ण की तरह अपनी भूमिका निभाई है। जिस तरह महाभारत में कृष्ण ने अपनी मुख्य भूमिका निभाई, धर्म की रक्षा करने के लिए। प्रभा ने काव्यकृति के आरंभ में अपनी भूमिका में कहा है कि "पूरी रचना के दौरान में आज की चुनौतियों के बीच अपने को कृष्ण की साझीदार पाती रही हूँ। हास-उल्लास के क्षणों से लेकर महाभारत के महासंहार तक के प्रकरणों के बीच, केलिकुंजों से लेकर प्रभास-तीर्थ तक की रचना यात्रा के बीच। शायद साझेदारी के इस एहसास में ही मुझे स्थूल कथा-सूत्रों से बचाकर चेतना के स्तर पर कृष्ण से जोड़ा है, कृष्णाधर्मा बनाया है।"[2]

प्रभा ने मनुष्य जीवन को भी महाभारत की तरह माना है। इसलिए इस जीवन में विशेष उपलब्धियाँ पाने के लिए कृष्ण की नीतियों को अपनाने के लिए कहती हैं। इतिहास निर्माण में कृष्ण की तरह वे अपनी साझेदारी बराबर मानती है-

"तुम कौन कृष्ण
और मैं कौन
तुम्हारी विराट चेतना
और मेरी व्यक्ति चेतना
इतिहास तो हमारे साझे का क्षेत्र है।"[3]

प्रभा खेतान कृष्ण से आग्रह करती है। कि तुम युगों-युगों तक अवतार लेते रहो। ताकि आम आदमी के दर्द को दर्द को उभार सको। कृष्ण भी अपने जन्म से लेकर महाभारत तक की अपनी लीलाओं के कारण ही महान बन पाए। किंतु फिर भी मनुष्य जन्म लेने की पीड़ा उन्हे भोगनी पड़ी। इसीलिए प्रभा खेतान का मानना है कि परमात्मा कभी जन्म नहीं लेता, मानव ही अपने कर्म से परमात्मा बनता है। प्रभा खेतान इस के संदर्भ में लिखती है- "जानती हूँ / अकेले तुम कहीं नहीं पहुँचोगे / कृष्ण / लेते रहो / युगों-युगों तक अवतार / अकेले तुम बना नहीं सकते / आदमी को देवता / बार-बार बनकर / एक अदना आदमी / तुम्हें भी भोगना पड़ता / आदमी होने का दर्द।"[4]

प्रभा खेतान के काव्य में आम आदमी का जीवन अश्रुमय होता है। सभी प्रकार के अभाव से संघर्ष करता हुआ वह हताश-निराश भी हो जाता है। आर्थिक स्थिति ने उसे विवश कर दिया है। फिर से कोई अवतार हो समय को चक्र चले और चारों ओर से यह स्थिति बदल जाए। प्रभा खेतान इस के संदर्भ में लिखती है- " लौटी रही / असमर्पिता / बार-बार पाती रही / अपनी ही तरह एक नश्वर आदमी को अपने पास।"[5]

इस युग का आम आदमी उस समय के चित्र को देखकर काँप गया है। क्योंकि मानव अवतार में परमात्मा भी आम आदमी ही था। नश्वरता की राह पर चल रहा था। आज का यह आदमी वह भू-स्थल पर जितनी भी जीव दशा इसी आतंक का शिकार हुई हैं।

Scanned with CamScanner

प्रभा खेतान इस के संदर्भ में लिखती है- "जब जारी था भयंकर युद्ध तुम भी कांप गये, देव / दानवों के आतंक से / कौन था / एक अदना आदमी के सिवा।"[6]

आज के समय में आम आदमी समाज व्यवस्था के साथ जुड़ा हैं। क्योंकि वह भी उसी का एक अंश मात्र है। जब-जब समाज पर आतंक हो रहे थे। तब-तब उन आंतक के प्रहारों को आम आदमी ही रोक पाया था। आज जो समाज के सामने यह परिस्थिति है। वह उसने अपने आप को समर्पित करके ही दी है- "तुम्हें समर्पित करने के लिए / बचा पाने को अमृत-कलश? / कौन था / एक अदना आदमी के सिवा / जो झेल सकता मंथन का दाह।"[7]

युगों-युगों से चले आ रहे जीवन चक्र में आम आदमी ही संघर्ष करके जीवन व्यतीत करने लगा हैं। समाज की व्यवस्था के अनुसार ही उसे मिली आम आदमी होने की स्थिति। उसने अभी जिसे अपने आप ही चुन लिया हैं- "सब कुछ संबोधित / रे एकल को / हाँ / स्वेच्छा से ओढ़ी है / आदमी होने की सर्वोच्च भूमिका।"[8]

प्राचीन काल से आ रही समाज व्यवस्था में आम आदमी ही प्रारंभ से अंत तक है। इन सभी फासलों में महत्वपूर्ण आम आदमी ही हैं। प्रभा खेतान इस के संदर्भ में लिखती है- "अपनी पहुंच पर बैठकर / गिरेगा संत / आँकेगा फासले की दूरी / सोचेगा / कृष्णा होने तक के सारे संदर्भों पर / और समझेगा तब / जब तक थे फासले / तभी तक था वह आदमी।"[9]

समसामयिक युग में आम आदमी असहनीय परिस्थितियों के चक्र में फँसा हुआ हैं। वही संघर्ष भी करता हैं। उसे जीवन में जिंदा रहने के लिए केवल यही विकल्प हैं कि, अपने सामने खड़े संकटों, अभाओं से संघर्ष करता रहें। उसके भूतल से चले जाने के बाद भी उसके सामने यही वेदना हमेशा-हमेशा के लिए चिपकी रही हैं। प्रभा खेतान इस के संदर्भ में लिखती है- "तृप्त होती हूँ मैं / तृप्त होती है वेदना / आज फिर / आदमी का पुनर्जन्म होता है / इतिहास में।"[10]

प्रभा खेतान का मानना है कि जीवन महासंग्राम है। संघर्षरत रहने से साहस, आत्मबल बढ़ता हैं। मनुष्य स्वाभिमानी है। उसमें परिस्थितियों के साथ सामना करने की शक्ति है। इसीलिए वे कृष्ण की भाँति जीवन के पथ पर बिना रुके आगे चलते रहने की प्रेरणा देती है। प्रभा खेतान इस के संदर्भ में लिखती है- "तुम जानते हो कृष्ण / न कभी रुका है / इतिहास का संघर्ष / न खत्म होगी कभी / नारायण की भूमिका।"[11]

प्रभा खेतान कहती है कि सच्चाई यह है कि महाभारत कभी समाप्त नहीं होता। महाभारत में पांडवों की विजय हुई फिर भी उन्हें महाप्रस्थान ही करना पड़ा है। सम्प्रति, मानवता के विरुद्ध दानवता खड़ी हो रही है। प्रभा खेतान इस के संदर्भ में लिखती है- "जागता है / यंत्रणाओं का एक पूरा नर्क / कहीं दुःशासन कहीं दुर्योधन / कहीं अंधा धृतराष्ट्र / आदमियत के खिलाफ खड़े हत्यारों की एक पूरी जमात।"[12]

संक्षेप में कहा जा सकता है कि 'कृष्णाधर्मा मैं' यह एक लंबी कविता है। इस कविता में कवयित्री ने मनुष्य को कर्तव्य पथ-पर चलने का, संघर्ष स्थिति में अदम्य साहस के साथ आगे बढ़ने का संदेश दिया है। इस काव्य-संग्रह में पौराणिक मिथक को समसामयिक स्थितियों से जोड़ने का महत्वपूर्ण कार्य किया गया है। आम आदमी के युगों से चली आ रही समाज व्यवस्था की परंपरा के अनुसार उन्हें मिली हुई वेदना, त्रासदी, व्यथा गरीबी और बेकारी की दशा का अंकन किया हैं।

संदर्भ:-

1. कृष्णधर्मा मैं-प्रभा खेतान, पृ.4
2. वही, पृ.3
3. वही, पृ.5
4. वही, पृ.14
5. वही, पृ.15-16
6. वही, पृ.16
7. वही, पृ.17
8. वही, पृ.21
9. वही, पृ.28
10. वही, पृ.47
11. वही, पृ.48
12. वही, पृ.19

Scanned with CamScanner

Impact Factor – 6.625 | Special Issue – 232 | February 2020 | ISSN – 2348-7143

19-20.

INTERNATIONAL RESEARCH FELLOWS ASSOCIATION'S

RESEARCH JOURNEY

Multidisciplinary International E-Research Journal

PEER REVIEWED, INDEXED AND REFEREED JOURNAL

२१ वीं शताब्दी का हिंदी उपन्यास साहित्य

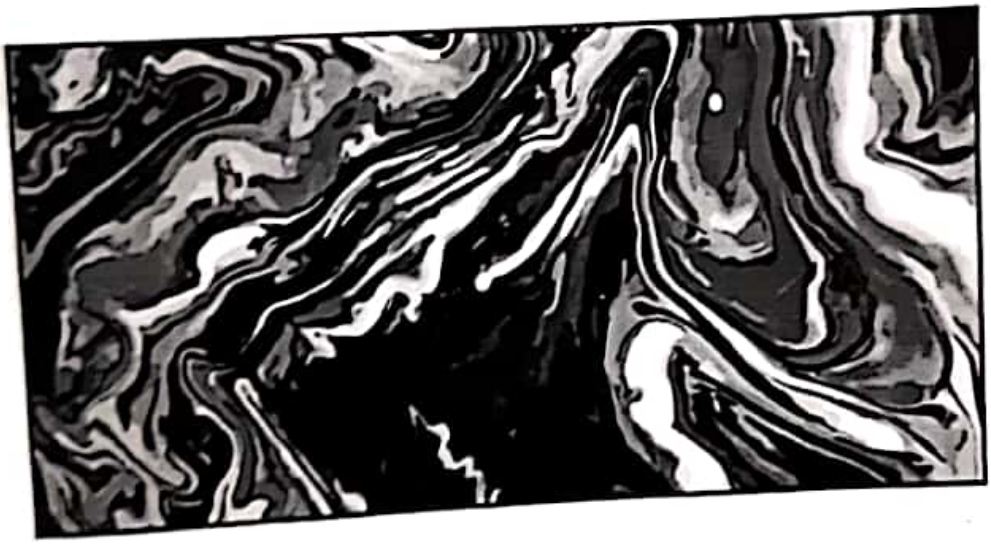

अतिथि संपादक
प्राचार्य डॉ. ए. एस. पैठणे

कार्यकारी संपादक
डॉ. महेश गांगुर्डे

मुख्य संपादक
डॉ. धनराज टी. धनगर

कार्यकारी सह-संपादक
प्रा. महेंद्र वसावे

For Details Visit To :
www.researchjourney.net

Printed By : PRASHANT PUBLICATIONS, JALGAON

Scanned with CamScanner

अयोध्या में ध्वंसलीला : 'आखिरी कलाम' ८९
डॉ. अमृत बिसन खाडपे

मिथिलेश्वर के उपन्यासों में प्रेम एवं काम की अभिव्यक्ति ९१
प्रा. डॉ. प्रल्हाद विजयसिंग पावरा

नारी अस्मिता की पहचान कराता मधुर कपिला का उपन्यास – 'सातवां स्वर' ९५
डॉ. अभयकुमार आर. खैरनार

"गिलिगडु : बदलते मानवमूल्यों की कथा" ९७
डॉ. अशोक शामराव मराठे

समाज जीवन को उन्नत जीवन प्रदान करने वाली नवचैतन्य की निरंतर धारा – 'सुखदा' ९९
डॉ. दिपक विश्वासराव पाटील

"भगवानदास मोरवाल के उपन्यसों में स्त्री–विमर्श" १०२
प्रा. डॉ. मनोहर हिलाल पाटील

'ग्लोबल गाँव के देवता' उपन्यास में आदिवासी विमर्श १०४
प्रा. डॉ. प्रमोद गोकुळ पाटील

'विजन' उपन्यास में व्यक्त नारी विमर्श १०६
प्रा. डॉ. पूनम त्रिवेदी

'गुनाह बेगुनाह' उपन्यास में अभिव्यक्त नारी संघर्ष १०८
प्रा. डॉ. रविंद्र आर. खरे

"सुरेन्द्र वर्मा के उपन्यासों में नारी चेतना" ('दो मुर्दो के लिए गुलदस्ता' एवं 'मुझे चाँद चाहिए' के विशेष संदर्भ में) १११
डॉ. संजय प्रल्हाद महाजन

गोविन्द मिश्र के उपन्यासों में चित्रित नारी विमर्श ११३
प्रा. डॉ. विजय एकनाथ सोनजे

जीवन की त्रासदी को दर्शाता उपन्यास – 'बेसबब' ११६
डॉ. अशफ़ाक़ इब्राहिम सिकलगर

उच्च शिक्षित कामयाब बच्चों के वृध्द माता–पिताओं के मन में 'डर' और 'भय' को व्यक्त करने वाला उपन्यास–"दौड" ११८
डॉ. गोकुलदास सोनु ठाकरे

"२१ वीं शताब्दी का हिन्दी उपन्यास साहित्य" १२०
डॉ. विजय जी. गुरव

कठगुलाब उपन्यास में नारी चित्रण (मृदूला गर्ग) १२३
प्रा. शरद शेलार

२१ वी सदी के महिला उपन्यासों में नारी चेतना १२५
श्री. आमलपुरे सूर्यकांत विश्वनाथ

'मरंग गोडा नीलकंठ हुआ' उपन्यास में आदिवासी विमर्श १२७
डॉ. निवा लोटन वाल्हे

नारी वेदना का दस्तावेज 'तिनका तिनके पास' १२८
डॉ. ईश्वर ठाकुर

"टूटा हुआ इंद्रधनुष" उपन्यास में पारिवारिक विघटन १३०
डॉ. आनंद गुलाबराव खरात

मैत्रेय पुष्पा का उपन्यास गुनाह–बेगुनाह में चित्रित नारी संघर्ष १३३
प्रा. तुलसा मोची

Scanned with CamScanner

E- ISSN 2582-5429
AMRJ
Akshara Multidisciplinary Research Journal
Single Blind Peer Reviewed & Refereed International Research Journal
Augest 2022 Special Issue 06 Volume III
SJIF Impact: 5.54

13

समसामयिक युग में हिंदी ग़ज़ल में व्यक्त आम आदमी का चित्रण

डॉ. प्रल्हाद विजयसिंग पावरा
हिंदी विभागाध्यक्ष
कला, वाणिज्य एवं विज्ञान महाविद्यालय, यावल, जि. जलगांव

प्रस्तावना:-

हिंदी ग़ज़लकारोंने अपने समय के यथार्थ को अनदेखा नहीं किया बल्कि इस यथार्थ को देखा तथा जीवन में उसे भोगा भी है। वे उसकी कड़वाहट से पूर्णत: परिचित है। समाज का यथार्थ चित्रण करना ही उनकी रचनाधर्मिता का मुख्य उद्देश रहा है। आम आदमी की जिंदगी से संबंधीत कई सामाजिक बिंब-प्रतिबिंब स्पष्ट रूप से दिखाई देते है। समसामयिक युग में आम आदमी असंख्य तखलीफो से गुजर रहा है। गजलकारों ने आम आदमी किन परिस्थिति एवं पीड़ाओं से गुजर रहा इसका मर्मस्पर्शी चित्रण ग़ज़लों में दिखाई देता है। वह किन माहौल से गुजर रहा है, वह अपनी गरीबी से चिंतित है, उसका विविध स्तर पर शोषण हो रहा है, वह समाज की व्यवस्था के प्रति नाराज है आदि समस्त बातों का चित्रण हिंदी ग़ज़लों में निरूपित हुआ है। हिंदी ग़ज़लकारोंने युगीन परिवेश को दृष्टि में रखकर सामाजिक समस्याओं में आम आदमी का चित्रण निम्नतरह देखा जा सकता है।

आम आदमी का जीवन

जहीर कुरेशी ने आम आदमी की पीड़ा का चित्रण मर्मस्पर्शी ढंग से किया है। आम आदमी को दुख दर्द से, पीड़ा से, अनेकानेक समस्याओं से घिरा हुआ है। उसका यातानामय जीवन बन गया है। भारतवर्ष में आम आदमी के लिए कई योजनाएं बनती है।

उसे मरने से पहले भी जरूरत,
मरण के बाद, लाखों दान आया [1]

समसामयिक युग में आम आदमी किस तरह का जीवन जीने के लिए अभिशप्त है, अदम गोंडवी की गजलों में इसका जीवंत चित्रण मर्मस्पर्शी हुआ है। जीवन में आदमी की जिंदगी में कई मुसीबतें आती रहती है। आम आदमी रोटी, कपड़ा, और मकान की समस्याओं से परेशान हैं। अपने जीवन में जीवनावश्यक बातों के लिए तरसता रहता है। उसका जीवन गरीबी, दुःख, अभाव, शोषण आदि से बद से बदतर होता जा रहा है। वह नारकीय जीवन जी रहा है। जीवन की परेशानियों से वह त्रस्त हो चुका है। इस परिस्थिति में उसके मुख से यह बात निकलना स्वाभाविक है। इसका चित्रण समय से मुठभेड़ इस गजल में दिखाई देता है-

आप कहते हैं सरापा गुलमोहर है जिंदगी
हम गरीबों की नजर में इक कहर है जिंदगी
भुखमरी की धूप में कुम्हला गई अस्मत की बेल
मौत के लम्हात से भी तल्खतरपर है जिंदगी[2]

आम आदमी का जीवन अश्रुमय होता जा रहा है। वर्तमान युग के सभी प्रकार के अभाव से संघर्ष करता हुआ वह हताश-निराश भी हो जाता है। सामाजिक, मानसिक, आर्थिक शोषण को सहते हुए उसका मन इतना टूट जाता है कि आंखों में आंसू का छा जाते हैं, किंतु वह उनको गिरने नहीं देता बल्कि ओठों पर मुस्कान बिखेरते है। जहीर कुरेशी की भीड़ में सबसे अलग इस ग़ज़ल में यह बात दिखाई देती-

आंसुओं की धार को बंदी बना लेते हैं लोग
यह करिश्मा है कि फिर भी मुस्कुरा देते हैं लोग[3]

भारत देश के विकास से तात्पर्य संपूर्ण देश का विकास, हरएक तबके का विकास, ना कि गिने-चुने लोगों का विकास। देश का विकास बड़े-बड़े मकान, आलीशान होटल, मॉल, और ब्रिज इससे देश का वास्तविक विकास नहीं होता है। देश में रहने वाले हर एक व्यक्ति का खुशहाल बने रहना ही देश का वास्तविक विकास है। क्योंकि आज भी कितने लोग ऐसे है जो फुटपाथ पर जिंदगी जीने के लिए विवश हैं इसीलिए अदम गोंडवी अपनी ग़ज़ल समय से मुठभेड़ में लिखते हैं-

कोठियों से मुल्क के मेआर को मत आंकिये
असली हिंदुस्तान तो फुटपाथ पर आबाद है। [4]

Scanned with CamScanner

E- ISSN 2582-5429
AMRJ
Akshara Multidisciplinary Research Journal
Single Blind Peer Reviewed & Refereed International Research Journal
Augest 2022 Special Issue 06 Volume III SJIF Impact- 5.54

जनवादी चेतना के ग़जलकार अदम गोंडवी की गजलों में भी आम आदमी के जीवन के कई आयाम दृष्टिगोचर होते हैं। उनकी गजलों का मुख्य उद्देश्य सामाजिक परिवर्तन रहा है। डॉ प्रमिला अवस्थी अदम गोंडवी के संबंध में अपने विचार को अभिव्यक्त करते हुए लिखती है- "ठेठ गंवई जबान में सत्ता के खिलाफ आग बरसाने वाले अदम की बातें, उनका बिंदास अंदाज, उनका कहन, आग और करेंट जो एक बार सुन लेता तो उसकी पैनी धार दिमाग को बेधती एवं जिगर को चीरती हुई अविस्मरणीय बना देती है। अदम गोंडवी सामाजिक परिवर्तन में कविता की भूमिका ही नहीं स्वीकारते है अपितु जनचेतना के क्रांतिरथ को वेग देने के लिए वे समर्थ हथियार भी मानते है।"[1]

समकालीन युग में आज आम आदमी का जीवन अत्यंत कष्टप्रद हो गया है आज का जीवन सुखदाई नहीं रहा है। उनके कष्टमय जीवन को वाणी देने के लिए हिंदी गजलकारों ने जीवन को वाणी प्रदान करने किया है। गिरिजाशरण यह मानते हैं कि आम आदमी के इस नारकीय जीवन के लिए शोषण की प्रवृत्ति ही जिम्मेदार है। आम आदमी का शारीरिक, मानसिक, आर्थिक, शोषण किया जाता है। उनको सुविधाओ से वंचित रखा जाता है। दिन-प्रतिदिन आम आदमी की हालत खस्ता होती जा रही है। न खाने के लिए रोटी है, न सिर पर छत है। उनका सारा जीवन ही अभावग्रस्त हो चुका है। इस अभाव के कारण उसका जीना दुश्वार हो चुका है। उसकी सारी हसरते जलकर नष्ट हो चुकी है। उसके सारे अरमान मिट्टी में मिल चुके हैं। ऐसे शोषित और पीड़ित व्यक्ति का चित्रण करते हुए गिरिराज शरण अग्रवाल अपनी ग़जल सन्नाटे में गोद में लिखते हैं-

दिन-रात बरसाती रहती है, सूखे में भी छत घर की
अब किस-किस को बताऊं मैं, कैसी है हालत घर की
भूख यहां सपने बुनती है, सर्दी लोरी गाती है
इच्छाएं होली-सी जलती हालत यह औरत और सब घर की। [6]

गिरिराजशरण अग्रवाल ने अपनी गजलों में आम आदमी के जीवन पर प्रकाश डालने का प्रामाणिक प्रयास किया है। उनके संबंध में तथा उनकी गजलों के संबंध में खानकाही अपने विचार व्यक्त करते हुए लिखती है कि-" उनकी यात्रा आदमी के बाहर नहीं, उसके भीतर है। अंतरात्मा के कोने में छिपे उन काले धब्बों की तरफ़ है, जो बाहर के कृत्रिम प्रकार के प्रहार से बचकर भीतर जा छिपे हैं और जिनका पता उस व्यक्ति को भी नहीं है, जिसके भीतर कोण इन काले धब्बों को छिपाया हुए हैं। इस तलाश में जो कुछ और जैसा कुछ गिरिराज के सामने आता है, वह उसे शेर के रूप में ढालते हैं और इस प्रकार आज का आदमी और परिस्थितियों से बंधा उसका जीवन अपने विभिन्न अनबुझे पहलुओं के साथ हमारे सामने आता है।[7]

हम कह सकते हैं कि समसामयिक युग में हिंदी के अधिकारों की जड़ों में आम आदमी के जीवन से संबंधित कई चित्र अत्यंत प्रामाणिकता के साथ अभिव्यक्त हुए हैं। उसके जीवन के विविध आयामों को इन गजलकारों ने ईमानदारी के साथ चित्रित किया है।

संदर्भ ग्रथ

1. भीड में सबसे अलग – जहीर कुरेशी, पृ. 8
2. समय से मुठभेड – अदम गोंडवी, पृ. 84
3. भीड में सबसे अलग – जहीर कुरेशी, पृ. 56
4. समय से मुठभेड – अदम गोंडवी, पृ. 46
5. नवनिकष – सं. डॉ. लक्ष्मीकांत पाण्डेय (फरवरी 2012), पृ. 9
6. सन्नाटे में गूंज – गिरिराजशण अग्रवाल पृ. 34
7. भीतर बहुत शोर है - गिरिराजशण अग्रवाल (भूमिकासे) पृ. 13

□ □ □

Scanned with CamScanner

आज़ादी का अमृत महोत्सव

आता ई-बुक स्वरूपातही
अथर्ववी सर्व पुस्तके उपलब्ध...

- pejbook.com
- amazon.com
- Google Play Books
- atharvapublications.com

अथर्व पब्लिकेशन्स्
ऑनलाईन पुस्तक खरेदीकरिता...
www.atharvapublications.com

ISBN 978-93-94269-36-1

₹ - 150/-

आपले शहर आपला इतिहास

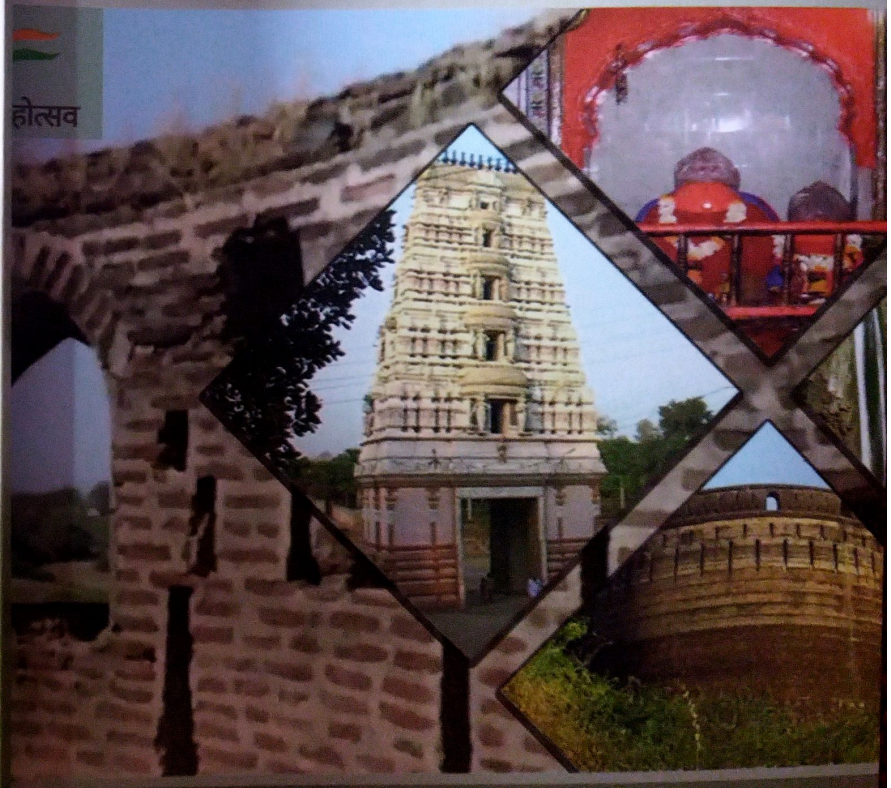

-संपादक-
प्र. प्राचार्य डॉ. संध्या सोनवणे

अथर्व पब्लिकेशन्स

आपले शहर आपला इतिहास
Aple Shahar Apla Etihas

© सुरक्षित

ISBN : 978-93-94269-36-1
पुस्तक प्रकाशन क्र. १४३

प्रकाशक व मुद्रक
युवराज भटू माळी

अथर्व पब्लिकेशन्स
धुळे : १७, देविदास कॉलनी, वरखेडी रोड, धुळे - ४२४ ००१.
संपर्क : ९४०५२०६२३०
जळगाव : शॉप नं. २, नक्षत्र अपार्टमेंट, शाहूनगर हौसिंग सोसायटी,
तेली समाज मंगल कार्यालयासमोर, जळगाव - ४२५००१.
संपर्क : ०२५७-२२३९६६६, ९७६४६९४७९७
ई-मेल : atharvapublications@gmail.com
वेबसाइट : www.atharvapublications.com

प्रथमावृत्ती : २२ एप्रिल २०२२
अक्षरजुळवणी : अथर्व पब्लिकेशन्स
मूल्य : १५०/-

E-Book *available on*
amazon.in ▪ GooglePlayBooks ▪ atharvapublications.com

ऑनलाइन पुस्तक खरेदीसाठी www.atharvapublications.com

- या पुस्तकाच्या प्रकाशनासाठी कवयित्री बहिणाबाई चौधरी उत्तर महाराष्ट्र विद्यापीठ, जळगाव यांच्याकडून निधी मिळाला आहे.
- या पुस्तकातील कोणत्याही भागाचे पुनर्निर्माण अथवा वापर इलेक्ट्रॉनिक अथवा यांत्रिकी साधनांनी - फोटोकॉपिंग, रेकॉर्डिंग किंवा कोणत्याही प्रकारे माहिती साठवणुकीच्या तंत्रज्ञानातून प्रकाशकाच्या व लेखकाच्या लेखी परवानगीशिवाय करता येणार नाही. सर्व हक्क राखून ठेवले आहेत.
- सदरील संपादित पुस्तकात प्रसिद्ध झालेले लेख हे लेखकांच्या वैयक्तिक मतांवर आधारित आहेत. संपादक पुस्तकातील मतांशी, विचारांशी सहमत असतीलच असे नाही.

॥ अंतरी पेटवू ज्ञानज्योत ॥
कवयित्री बहिणाबाई चौधरी उत्तर महाराष्ट्र विद्यापीठ, जळगाव
उमविनगर, जळगाव - ४२५००१ (महाराष्ट्र) भारत
(पूर्वीचे उत्तर महाराष्ट्र विद्यापीठ, जळगाव)

शुभेच्छा संदेश

भारतीय स्वातंत्र्याच्या अमृतमहोत्सवी वर्षानिमित्त आपले महाविद्यालय 'आपले शहर-आपला इतिहास' हे पुस्तक प्रकाशित करीत आहे, हे वाचून आनंद वाटला.

भारतीय स्वातंत्र्याच्या अमृतमहोत्सवी वर्षानिमित्त प्रकाशित होत असलेल्या या पुस्तकातील यावल तालुक्याची अभ्यासपूर्ण ऐतिहासिक, सांस्कृतिक, तसेच भौगोलिक माहिती आणि महत्त्व वाचकांपर्यंत पोहोचणार आहे, ही बाब अभिनंदनीय आहे. पुस्तक प्रकाशनात सहभागी असलेल्या महाविद्यालयातील सर्व घटकांचे मनापासून अभिनंदन!

'आपले शहर-आपला इतिहास' या पुस्तकास हार्दिक शुभेच्छा!

प्रा. वि. ल. माहेश्वरी
कुलगुरू

कार्यालय : + ९१ - २५७ - २२५८४०१, २२५८४०२ निवास : + ९१ - २५७ - २२५८४०४
फॅक्स : + ९१ - २५७ - २२५८४०३ ई मेल : vc@nmu.ac.in वेबसाईट : www.nmu.ac.in

ऋणनिर्देश

जळगाव जिल्ह्यातील यावल हा तालुका इतिहासाच्या पाऊलखुणा असलेला तालुका आहे. या तालुक्याने प्राचीन काळापासून वेगवेगळ्या राजवटी पहिल्या तालुक्यात धार्मिक पर्यटन क्षेत्रात व्यास मुनी तसेच मनुदेवीचे अनन्य साधारण महत्त्व आहे. तालुकावासीयांचेच नव्हे तर जिल्हावासीयांचे आराध्य दैवत, कुलदैवत, कुलस्वामीनी म्हणून मनुदेवीला मान्यता आहे. यामुळे पौराणिक, धार्मिक, अध्यात्मिक उर्जेची भूमी म्हणून यावल तालुक्याचे नावलौकीक आहे. मध्ययुगीन कालखंडामध्ये रावधार निंबाळकर यांच्या भूईकोट किल्ल्यामुळे यावल प्रकाशझोतात होते. मध्ययुगीन कालखंडातील मोठी व्यापारीपेठ असलेले सुरत शहर आणि बुऱ्हाणपूर शहर या दोन शहरांना जोडणाऱ्या रस्त्यावर यावलचा हा किल्ला असल्यामुळे यावलला फार महत्त्व होते. इंग्रजी आमदनीमध्ये सुद्धा स्वातंत्र्यसैनिकांच्या प्रखर राष्ट्रभक्तीमुळे तसेच ग्रामीण भागातील काँग्रेसच्या पहिल्या राष्ट्रीय अधिवेशनामुळे यावल फैजपूरसह यावलचे नाव देशाच्या पटलावर चमकले होते. स्वातंत्र्यानंतर मधुकरराव चौधरी, जे.टी.महाजन, रमाबाई देशपांडे, रमेश चौधरी, हरीभाऊ जावळे, शिरीष चौधरी या व्यक्तींनी यावलचे प्रतिनिधीत्व करुन तालुक्यात विकासाची गंगा आणण्याचा प्रयत्न केला. या सर्व बाबी सदरील पुस्तकांत संकलीत करुन ते पुस्तकरुपाने प्रकाशीत करण्याचा प्रयत्न केलेला आहे.

प्रस्तुत शोधनिबंधाच्या प्रकाशन कार्यात मला अनेकांचे सहकार्य लाभले. प्रकाशनकामी आमच्या महाविद्यालयाचे उपप्राचार्य प्रा. ए.पी.पाटील, उपप्राचार्य प्रा. एम.डी.खैरनार यांचे मार्गदर्शन आणि सहकार्य प्रेरणादायी ठरले. शोधनिबंध संकलन, वर्गीकरण, मुद्रण करण्यासाठी प्रा. डॉ. सुधा खराटे, प्रा. डॉ. अनिल पाटील, प्रा. मुकेश येवले, प्रा. डॉ. एस.पी.कापडे, प्रा. एस.आर.गायकवाड, प्रा. डॉ.एस.जी.भंगाळे, यांचे सहकार्य मिळाले. या पुस्तकासाठी कवयित्री बहिणाबाई चौधरी उत्तर महाराष्ट्र विद्यापीठातील कुलगुरू डॉ. व्ही.एल.माहेश्वरी, व्यवस्थापन परिषद सदस्य श्री. दिलीप रामू पाटील तसेच विद्यार्थी विकास विभागाचे संचालक

सुनिल कुलकर्णी यांनी सदरील पुस्तक प्रकाशनासाठी निधी उपलब्ध करून दिला. त्याबद्दल त्यांचे आभार व्यक्त करते.

याशिवाय प्रकाशक, मुद्रक तसेच सर्वात महत्त्वाचे म्हणजे शोधनिबंध पाठविणारे सहकारी शिक्षक, प्राध्यापक या सर्वांचे मी ऋण व्यक्त करते. तसेच या पुस्तकाची अक्षरजुळवणी करणारे जळगाव येथील अथर्व पब्लिकेन्सचे श्री. युवराज पाटील यांचेही मी मनापासून आभार मानते.

ठिकाण : यावल **– प्रभारी प्राचार्य डॉ. संध्या सोनवणे**

अनुक्रमणिका

१ **ऐतिहासिक पार्श्वभूमी** १३
– संजय दिनकर पाटील

२ **यावल तालुक्याचे ऐतिहासिक व सामाजिक महत्त्व** १६
– दिलीप नवलसिंग मोरे

३ **यावलचा राजकीय वारसा व सद्यस्थिती** २२
– मुकेश पोपटराव येवले

४ **यावलची आर्थिक स्थिती, महत्त्व मुख्य उत्पादन व बाजारपेठ** ३७
– शेखर वसंतराव चव्हाण

५ **यावल तालुक्याची धार्मिक व ऐतिहासिक पार्श्वभूमी** ४२
– मनोज हिंमतराव पाटील

६ **यावल तालुक्यातील पर्जन्यस्थिती व पेयजल व्यवस्थापन** ५३
– चिंतामण काशीनाथ पाटील

७ **यावल तालुक्याची लोकसंख्या व लोकसंख्येचे विश्लेषण** ५६
– अरुण घनश्याम सोनवणे

८ **यावल गावातील जातीय सलोखा** ६१
– प्रवीण आर.पाटील

९ **यावल तालुका व शहराच्या शैक्षणिक स्थितीचा आढावा** ६५
– विकास पाटील

सिंधू संस्कृतीच्या काळात सांस्कृतिक, सामाजिक घटकांबरोबरच राजकीय आर्थिकदृष्ट्या भारत समृद्ध आणि विकासाच्या दृष्टीने विकसनशील देश म्हणून ओळखला जात होता. देशातील जैवविविधता, आर्थिक संपन्नतेच्या हव्यासापोटी आर्य, शक, हुण, कुशाण, मुस्लीम, डच, पोर्तुगीज, इंग्रज, फ्रेंच इत्यादी लोकांनी भारतावर आक्रमण करून साधनसंपत्ती स्वतःच्या देशात नेली. इंग्रजांनी ईस्ट इंडिया कंपनीची स्थापना करून देशातील संपत्ती इंग्लंडला नेली. त्यामुळे त्यांचा देश सधन झाला, तर भारत देशाला कंगाल करण्याचा यशस्वी प्रयत्न केला. हे सारे दूर करण्यासाठी पुढे इंग्रजांविरुद्ध मोठ्या प्रमाणावर बंड होऊ लागले. त्या बंडाचे निशाण भारतातील मोठमोठ्या शहरांपासून पुढे जळगाव जिल्ह्यातील फैजपूरसारख्या ग्रामीण भागातील खेड्यांपर्यंत येऊन पोहोचले होते. भारताच्या स्वातंत्र्य आंदोलनात यावल तालुक्यातील असंख्य लोकांनी आपल्या त्यागाने, निस्सीम राष्ट्रभक्तीने आणि जाज्वल देशाभिमानाने स्वातंत्र्य मिळविण्यासाठी प्रयत्न केला होता. या भागातील स्वातंत्र्यसैनिक, सेनानी या सर्वांचा इतिहास शब्दबद्ध करून तालुकावासियांना याची माहिती व्हावी, या उदात्त हेतूने सदरील लेखन पुस्तकरूपाने प्रकाशित करण्याचा छोटासा प्रयत्न मी व माझ्या सहकाऱ्यांनी केला आहे.

●●●

आता ई बुक स्वरूपातही
अथर्ववी सर्व पुस्तके उपलब्ध...

- pejbook.com
- amazon.com
- Google Play Books
- atharvapublications.com

अथर्व पब्लिकेशन्स्
ऑनलाईन पुस्तक खरेदीकरिता...
www.atharvapublications.com

ISBN 978-93-94269-59-0

₹ - 195/-

दखल यावल तालुक्यातील सेनानी व त्यागींची

प्र. प्राचार्य डॉ. संध्या सोनवणे
डॉ. अनिल पाटील

अथर्व पब्लिकेशन्स

भारतीय स्वातंत्र्याच्या अमृत महोत्सवानिमित्त...
दखल यावल तालुक्यातील सेनानी व त्यागींची

© प्रा. डॉ. संध्या सोनवणे, डॉ. अनिल पाटील

ISBN : 978-93-94269-59-0
पुस्तक प्रकाशन क्र. ९५५

प्रकाशक व मुद्रक
युवराज भटू माळी

अथर्व पब्लिकेशन्स
धुळे : १७, देविदास कॉलनी, वरखेडी रोड, धुळे - ४२४ ००१.
संपर्क : ९४०५२०६२३०
जळगाव : शॉप नं. २, नक्षत्र अपार्टमेंट, शाहूनगर हौसिंग सोसायटी,
तेली समाज मंगल कार्यालयासमोर, जळगाव - ४२५००१.
संपर्क : ०२५७-२२३९६६६, ९७६४६९४७९७
ई-मेल : atharvapublications@gmail.com
वेबसाइट : www.atharvapublications.com

प्रथमावृत्ती : २३ एप्रिल २०२२
अक्षरजुळवणी : अथर्व पब्लिकेशन्स
मूल्य : १९५/-

E-Book *available on*
amazon.in ▪ GooglePlayBooks ▪ atharvapublications.com

ऑनलाइन पुस्तक खरेदीसाठी www.atharvapublications.com

- या पुस्तकाच्या प्रकाशनासाठी कवयित्री बहिणाबाई चौधरी उत्तर महाराष्ट्र विद्यापीठ, जळगाव यांच्याकडून निधी मिळाला आहे.
- या पुस्तकातील कोणत्याही भागाचे पुनर्निर्माण अथवा वापर इलेक्ट्रॉनिक अथवा यांत्रिकी साधनांनी - फोटोकॉपिंग, रेकॉर्डिंग किंवा कोणत्याही प्रकारे माहिती साठवणुकीच्या तंत्रज्ञानातून प्रकाशकाच्या व लेखकाच्या लेखी परवानगीशिवाय करता येणार नाही. सर्व हक्क राखून ठेवले आहेत.

भारतीय समाजाला गुलामगिरीच्या जोखडातून मुक्त करून समता, स्वातंत्र्यता,
बंधुतेचा संदेश देणाऱ्या सकल स्वातंत्र्यसैनिक, सेनानी
यांना निष्ठापूर्वक अर्पण...!

॥ अंतरी पेटवू ज्ञानज्योत ॥

कवयित्री बहिणाबाई चौधरी उत्तर महाराष्ट्र विद्यापीठ, जळगाव

उमविनगर, जळगाव - ४२५००१ (महाराष्ट्र) भारत

(पूर्वीचे उत्तर महाराष्ट्र विद्यापीठ, जळगाव)

शुभेच्छा संदेश

भारतीय स्वातंत्र्याच्या अमृतमहोत्सवी वर्षानिमित्त आपले महाविद्यालय 'दखल यावल तालुक्यातील स्वातंत्र्यसेनानी व त्यागींची' हे पुस्तक प्रकाशित करीत आहे, हे वाचून आनंद वाटला.

प्राणाची बाजी लावून भारताला स्वातंत्र्य मिळवून देणाऱ्या स्वातंत्र्यसैनिकांना वाहिलेली ही एक भावपूर्ण श्रद्धांजली आहे. या पुस्तकातील सर्वच लेख राष्ट्रभावना वृद्धिंगत करणारे असतील. पुस्तक प्रकाशनात सहभागी असलेल्या महाविद्यालयातील सर्व घटकांचे मनापासून अभिनंदन!

'दखल यावल तालुक्यातील स्वातंत्र्यसेनानी व त्यागींची' या पुस्तकास माझ्या हार्दिक शुभेच्छा!

(प्रा. वि. ल. माहेश्वरी)
कुलगुरू

☎ कार्यालय : + ९१ - २५७ - २२५८४०१, २२५८४०२ निवास : + ९१ - २५७ - २२५८४०४
फॅक्स : + ९१ - २५७ - २२५८४०३ ई मेल : vco@nmu.ac.in वेबसाईट : www.nmu.ac.in

महाराष्ट्र शासन

डॉ. जालिंदर सुपेकर भा.पो.से
अपर पोलीस आयुक्त, प्रशासन
पुणे शहर

अ.शा.क्र. 21/2022
पोलीस आयुक्त
२, साधु वासवानी रोड,
कॅम्प, पुणे यांचे कार्यालय,
पिन : ४११ ००१.
दिनांक : 24/03/2022

शुभेच्छा संदेश

भारताच्या स्वातंत्र्य आंदोलनात यावल तालुक्याचे महत्त्वपूर्ण योगदान आहे. अखिल भारतीय काँग्रेसचे ५० व अधिवेशन २७ ते २९ डिसेंबर १९३६ या कालावधीत यावल तालुक्यातील फैजपूर सारख्या खेडेगावात भरले आणि ते यशस्वी सुद्धा झाले. भारतीय स्वातंत्र्याचा संदेश ग्रामीण जनतेपर्यंत पोहचावा हा महात्मा गांधी यांचा उद्देश फैजपूर अधिवेशनामुळे यशस्वी झाला होता.

भारतीय स्वातंत्र्याचा अमृत महोत्सवानिमित्त **दखल यावल तालुक्यातील सेनानी व त्यागींची** हे प्राचार्य डॉ. संध्या सोनवणे व डॉ. अनिल पाटील यांचे पुस्तक प्रकाशित होत आहे. ही महत्त्वाची तसेच आनंदाची बाब आहे. सदर पुस्तकामुळे जळगाव जिल्ह्यातील यावल तालुक्यातील सर्वांगीण इतिहास समोत येत आहे. क्रांतिकारक, देशभक्त तसेच भारतीय संरक्षण सेवेत दाखल झालेल्या सैनिकांच्या कार्यावर प्रकाश पडून नव्या पिढीला यापासून स्फुर्ती मिळेल अशी अशा करतो.

सदरील विशेषांकास माझ्या मनःपूर्वक शुभेच्छा !

आपला स्नेहांकित

डॉ. जालिंदर सुपेकर
भा.पो.से
अपर पोलीस आयुक्त, पुणे शहर

॥ अंतरी पेटवू ज्ञानज्योत ॥
कवयित्री बहिणाबाई चौधरी उत्तर महाराष्ट्र विद्यापीठ, जळगाव
Kavayitri Bahinabai Chaudhari North Maharashtra University, Jalgaon

दिलीप रामू पाटील
व्यवस्थापन परिषद सदस्य, क.ब.चौ.उ.म.वि., जळगाव
दूरध्वनी नि. : ०२५८८ - २५१२५१
भ्रमणध्वनी : ९४२२२८४९८०, ८७८८३९००३२
ई-मेल : drpatilnmu@gmail.com

Dilip Ramu Patil
Member of Management Council, K.B.C.N.M.U., Jalgaon
Telephone : 02588 - 251251
Mobile : 9422284960, 8788290032
Email : drpatilnmu@gmail.com

शुभेच्छा संदेश

मला या गोष्टीचा अत्यानंद होत आहे की, भारतीय स्वातंत्र्याच्या अमृत महोत्सवा निमित्ताने दखल यावल तालुक्यातील सेनानी व त्यागींची हा विशेषांक प्रसिध्द होत आहे. या संशोधनात्मक विशेषांकासाठी मी प्राचार्या डॉ. संध्या महेंद्र सोनवणे व डॉ.अनिल पाटील यांचे मनःपूर्वक अभिनंदन करतो.

भारतवर्षाला एक जाज्वल्य इतिहास प्राप्त झालेला आहे. या इतिहासात विविध घटकांचे मोठे योगदान लाभलेले होते. असे असले तरी तत्कालीन काळात त्यांच्या योगदानाची योग्य ती दखल घेण्यात आलेली नव्हती. मात्र भारतीय स्वातंत्र्याच्या अमृत महोत्सवाच्या निमित्ताने या गोष्टीला चालना मिळाली असून विविध भूक्षेत्रातील अज्ञात शूरविरांचे. सेनानींचे कार्य नव्या पिढीच्या समोर येत आहे, ही निश्चितपणे समाधानाची बाब आहे. त्यात या विशेषांकाने निश्चितच आपली एक वेगळी ओळख निर्माण केलेली आहे.

किंबहुना खानदेशातील एक महत्त्वाचा ऐतिहासिक भूप्रदेश असलेल्या यावल तालुक्यातील सेनानींची माहिती प्रथमच प्रस्तुत विशेषांकाच्या निमित्ताने समोर येत आहे. आजच्या तरुणांसमोर असा इतिहास येणे ही काळाची गरज असून ती या विशेषांकाच्या निमित्ताने पूर्णत्वास येत आहे, ही माझ्यासाठी निश्चितपणे आनंदाची व अभिमानाची बाब आहे. स्वातंत्र्य चळवळीतील येथील सर्वसामान्य नागरिकांचा सहभाग व देशाप्रती त्यांची जाज्वल्य भावना या ग्रंथाच्या निमित्ताने स्पष्टरूपाने प्रतिपादीत होतांना दिसत आहे. आझाद हिंद सेनेतील या क्षेत्रातील सेनानींचा सहभाग ही माहिती खानदेशच्या इतिहासाच्या दृष्टिने निश्चितच नाविन्यपूर्ण व

निवास : 'दाता' ३५, गणेश नगर, धरणगाव, ता. धरणगाव, जि. जळगाव - ४२५ १०५
Residence : 'Data', Ganesh Nagar, Dharangaon, Tal. Dharangaon, Dist. Jalgaon - 425 105

॥ अंतरी पेटवू ज्ञानज्योत ॥
कवयित्री बहिणाबाई चौधरी उत्तर महाराष्ट्र विद्यापीठ, जळगाव
Kavayitri Bahinabai Chaudhari North Maharashtra University, Jalgaon
दिलीप रामू पाटील
व्यवस्थापन परिषद सदस्य, क.ब.चौ.उ.म.वि., जळगाव
दूरध्वनी नि. : ०२५८८ - २५१२५१
भ्रमणध्वनी : ९४२२२८४९८०, ८७८८३९००३२
ई-मेल : drpatilnmu@gmail.com
'A' Grade
NAAC Re-Accredited
(3rd Cycle)
Dilip Ramu Patil
Member of Management Council, K.B.C.N.M.U., Jalgaon
Telephone : 02588 - 251251
Mobile : 9422284980, 8788390032
Email : drpatilnmu@gmail.com

नव्या इतिहासाची ओळख दर्शविणारी आहे. त्याबददल लेखकांचे निश्चितपणे अभिनंदन केले पाहिजे.

महाराष्ट्रातील इतर प्रांताप्रमाणेच खानदेशातील शेतकऱ्यांनी इंग्रजांच्या विरोधात मोठ्या प्रमाणावर उठाव केला होता. विशेष म्हणजे सन १८५७ च्या उठावापूर्वीच सन १८४९ मध्ये खानदेशातील सावदा, फैजपूर आणि यावल येथील शेतकऱ्यांनी ब्रिटीशांच्या विरोधात केलेला उठाव ही तत्कालीन स्वातंत्र्याची ललकारी होती. किंबहुना ती घटना खानदेशच्या इतिहासातील एक महत्त्वाचे पान समजले जाते. अन्यायी महसूल सर्वेक्षणाची अंमलबजावणी व जे.एफ. डेव्हीडसन यांच्या अन्यायी कृतीच्या विरोधातील तो एल्गार येथील जनसमुहाच्या मनातील खदखद दर्शविणारा होता. तत्कालीन काळात अन्यायाच्या परिमार्जनास्तव सावदा, फैजपूर आणि यावल येथील असंघटित व अशिक्षित जनतेने साम्राज्यशाहीच्या विरोधात दिलेला तो लढा हा खानदेशातीलच नव्हेतर भारतवर्षातील पहिला लढा ठरला होता. ही बाब सुध्दा या क्षेत्राच्या इतिहासाला एक वेगळेपण प्राप्त करून देते.

प्रस्तुत विशेषांकाच्या निमित्ताने मी सर्वांना मन:पूर्वक शुभेच्छा देतो व खानदेशच्या वैभवशाली इतिहासाची अज्ञात पाने अशीच प्रकाशात येत राहो, या अंतरीच्या अपेक्षा व्यक्त करतो.

दिलीप रामू पाटील
व्यवस्थापन परिषद सदस्य

स्थळ – जळगाव
दिनांक – १७/०३/२०२२

निवास : 'दाता' ३५, गणेश नगर, धरणगाव. ता. धरणगाव. जि. जळगाव - ४२५ १०५
Residence : 'Data', Ganesh Nagar, Dharangaon, Tal. Dharangaon, Dist. Jalgaon - 425 105

भूमिका

प्राचीन काळापासून भारत हा अर्थसंपन्न देश म्हणून जगभरात प्रचलित होता. सिंधू संस्कृतीच्या काळात सांस्कृतिक, सामाजिक घटकांबरोबरच राजकीय आर्थिकदृष्ट्या भारत समृद्ध देश तसेच विकासाच्या दृष्टीने विकसनशील देश म्हणून ओळखला जात होता. या समृद्धीच्या चर्चा जगभर असल्या कारणाने परकिय लोकांना नेहमी आपल्या देशाचे आकर्षण राहिलेले आहे. यातूनच पुढील काळात भारतातील जैव विविधता, आर्थिक संपन्नतेच्या हव्यासापोटी भारतावर आर्य, शक, हुण, कुशाण, मुस्लीम तसेच डच पोर्तुगिज, इंग्रज, फ्रेंच इ. देशातील लोकांनी आक्रमण करून येथील साधन संपत्ती स्वतःच्या देशात नेली. यातील बरेचसे आक्रमक भारतात स्थिर स्थावर झाले. भारतातील संस्कृतीशी एकरुप होऊन भारतात वास्तव्य करू लागले. इंग्रजांनी ईस्ट इंडिया कंपनीची स्थापना करुन या देशातील संपत्ती इंग्लंडला नेली. त्यामुळे त्यांचा देश सधन झाला तर भारत देशाला कंगाल करण्याचा यशस्वी प्रयत्न केला. हे सारे दूर करण्यासाठी पुढे इंग्रजांविरुद्ध मोठ्या प्रमाणावर बंड होऊ लागले. त्या बंडाचे निशाण भारतातील मोठमोठ्या शहरांपासून पुढे जळगाव जिल्ह्यातील फैजपूर सारख्या ग्रामीण भागातील खेड्यांपर्यंत येऊन पोहचले होते. भारताच्या स्वातंत्र्य आंदोलनात यावल तालुक्यातील असंख्य लोकांनी आपल्या त्यागाने, निस्सीम राष्ट्रभक्तीने आणि जाज्वल देशाभिमानाने स्वातंत्र्य मिळविण्यासाठी प्रयत्न केला होता. या भागातील स्वातंत्र्यसैनिक, सेनानी या सर्वांचा इतिहास शब्दबध्द करून तालुकावासियांना याची माहिती व्हावी या उदात्त हेतूने सदरील लेखण पुस्तक स्वरुपाने करण्याचा छोटासा प्रयत्न मी व माझ्या सहकाऱ्यांनी केला आहे.

फ्रान्सीस बेकन म्हणतात त्याप्रमाणे इतिहास ही मानवाला शहाणे बनवणारी विद्याशाखा आहे. तसेच प्रा. इ.एच.कार म्हणतात की, भूतकाळ व वर्तमानकाळ यातील कधीही नं संपणारा संवाद म्हणजे इतिहास होय. भारताच्या सेवेत अशाच प्रकारचा संवाद भविष्यकाळातही यावल तालुक्यातून सुरू रहावा तसेच

तालुक्यात घडलेला इतिहास नव्या पिढीला मार्गदर्शक ठरावा त्यांनी वाचावा हाच लेखणामागील खरा हेतू आहे.

– प्रा. डॉ. संध्या सोनवणे
प्र. प्राचार्य
कला, विज्ञान व वाणिज्य महाविद्यालय,
यावल जि. जळगाव

ऋणनिर्देश

महात्मा गांधी यांनी सन १९२० सालात सुरु केलेल्या असहकार चळवळीला नुकतेच १०० वर्षे पूर्ण झाली. तसेच भारतीय स्वातंत्र्याचा अमृत महोत्सव म्हणून आपण सन २०२२ हे वर्ष साजरे करीत आहोत. महात्मा गांधीजींनी वाईट प्रवृत्तींना असहकार केल तर चांगल्या गोष्टींना नेहमी सहकार्य केले. त्यांनी सांगितलेल्या तत्त्वज्ञानानुसार आजही आपला देश मार्गक्रमण करीत आहेत. पारतंत्र्य आणि स्वातंत्र्य या दोन भिन्न गोष्टी आहेत. सन १९४७ पूर्वी महात्मा गांधीजींच्या नेतृत्वात ज्या स्वातंत्र्य सेनानींनी ब्रिटिश साम्राज्याविरूद्ध लढा दिला, तसेच स्वातंत्र्यानंतर ज्या सैनिकांनी भारतीय संरक्षण सेवेत कर्तव्य बजावले या सेनानी आणि सैनिकांची अमृत महोत्सावात आठवण करणे हे देशाचे सुज्ञ नागरिक म्हणून आपणा सर्वांचे कर्तव्य आहेत. या उदात्त हेतूने प्रेरीत होऊन आम्ही हा लेखन प्रपंच केला आहे. कोणतीही गोष्ट ही सहाकार्याशिवाय पूर्णत्वाला नेता येत नाही. याची जाणीव आम्हाला सदरील पुस्तक लेखन करताना झाली. त्यांचे ऋणनिर्देश करणे आम्ही आमचे कर्तव्य समजतो.

प्रस्तुत लेखन करताना नुतन मराठा महाविद्यालय, जळगाव, यावल आणि वरणगाव येथील ग्रंथालयातील कर्मचाऱ्यांनी आम्हाला लागणारी संदर्भ ग्रंथ, मार्गदर्शक पुस्तके वेळोवेळी उपलब्ध करून दिली म्हणून त्यांचे आभार मानणे आम्ही संयुक्तीक समजतो. मुंबई येथील पुराभिलेखागारातील अधिकारी तथा कर्मचारी वर्गाने सहकारी प्राध्यापक डॉ. अनिल पाटील यांना आवक नोंद वह्या पूर्वी अभ्यासासाठी उपलब्ध करून दिल्यात त्याबद्दल त्यांचे आभार मानतो. कारागृह महानिदेशक साहेब, पुणे तसेच बी. डी. केदारे (विशेष कारागृह महानिरीक्षक), सु. ना. चव्हाण, आर. बी. बोरकर (कारागृह उपमहानिरीक्षक), मध्य विभाग औरंगाबाद यांनी मागील काळात धुळे आणि जळगाव कारागृहातील कैदी नोंद वही निरीक्षण करण्याची परवानगी व पुर्नपरवानगी माझे सहकारी प्रा. डॉ. अनिल पाटील यांना दिली त्याबद्दल त्यांचे आभार व्यक्त करतो. जिल्हा कारागृह वर्ग १ धुळे येथील अधिक्षक, उपअधिक्षक तसेच जिल्हा कारागृह वर्ग २ जळगाव

येथील अधिक्षक इ. जी. शिंदेसाहेब यांनी संशोधन कार्याबाबत कारागृहात उपलब्ध असलेले दस्ताऐवज, कैदी नोंदवही निरीक्षणासाठी उपलब्ध करून दिली. त्याबद्दल त्यांचेही आम्ही ऋण व्यक्त करतो. धुळे आणि जळगाव येथील जिल्हाधिकारी साहेब यांनी स्वातंत्र्य चळवळीत भाग घेतलेल्या स्वातंत्र्य सैनिकांच्या वारसांची यादी उपलब्ध करून दिल्याबद्दल त्यांचेही आम्ही आभार मानतो.

भारतीय संरक्षण सेवेत सेवा बजावत असलेल्या यावल तालुक्यातील देश रक्षकांनी संरक्षणशास्त्राची तसेच त्यांनी केलेल्या देशसेवेची माहिती मौखिक स्वरूपात दिली. त्याना मिळालेले पारितोषिक, शौर्य पदके, सन्मान चिन्हे याची छायांकित प्रत उपलब्ध करून दिली त्याबद्दल त्यांच्या ऋणात आम्ही राहू इच्छितो. हा शोध प्रबंध तयार करते वेळी साधन सामुग्री संकलन, वर्गीकरण, संदर्भ लिहिण्यासाठी आम्हाला सहकार्य करणारे आमचे सहकारी उपप्राचार्य प्रा. ए. पी. पाटील, प्रा. एम. डी. खैरनार, डॉ. एस.एम.खराटे, प्रा. डॉ. एस. पी. कापडे, डॉ. एच. जी. भंगाळे, प्रा. डॉ. आर. डी. पवार, प्रा. पी.व्ही.पावरा, प्रा. एस.आर.गायकवाड, प्रा.सी.के.पाटील, उपप्राचार्य श्री.संजय पाटील, श्री. मुकेश येवले, श्री. मनोज पाटील, श्री. संजीव कदम, मिलींद बोरघडे, प्रा. नरेंद्र पाटील, सुभाष कामठी या सर्वांच्या सहकार्याने हे कार्य साध्य झाले. या सर्वांचे आभार मानणे आम्ही आमचे कर्तव्य समजतो. सर्वात महत्त्वाचे म्हणजे आमच्या यावल येथील महाविद्यालयातील राष्ट्रीय सेवा योजना विभाग त्यांचे सर्व स्वयंसेवक यांनी स्वातंत्र्यसेनानी आणि सैनिकांची माहिती गोळा करण्यासाठी महत्त्वपूर्ण भूमिका बजावली म्हणून त्यांचे कौतुक करणे तसेच त्यांना पुढील काळात भारतीय संरक्षण सेवेत दाखल होऊन देशसेवा करण्यासाठी या माध्यमातून शुभेच्छा देण्याचे काम आम्ही करीत आहोत. या पुस्तकासाठी कवयित्री बहिणाबाई चौधरी उत्तर महाराष्ट्र विद्यापीठातील कुलगुरू डॉ. व्ही.एल.माहेश्वरी तसेच विद्यार्थी विकास विभागाचे संचालक सुनिल कुलकर्णी यांनी सदरील पुस्तक प्रकाशनासाठी निधी उपलब्ध करून दिला. त्याबद्दल त्यांचे आम्ही आभार व्यक्त करतो.

तसेच या पुस्तकाची अक्षर जुळवणी करणारे जळगाव येथील अथर्व पब्लिकेशन्सचे श्री. युवराज माळी यांनी देखील वेळोवेळी सहकार्य करून कमी वेळेत पुस्तक वाचकांच्या हाती देण्यास सहकार्य केले म्हणून त्यांचेही मनापासून आम्ही आभार मानतो. सदरील पुस्तक पूर्ण करण्यासाठी ज्या ज्ञात-अज्ञात व्यक्तींनी निरपेक्ष भावनेने आम्हाला प्रत्यक्ष वा अप्रत्यक्ष सहकार्य, मदत केली त्या सर्वांचे आम्ही आभार मानतो.

– प्र. प्राचार्या डॉ. संध्या सोनवणे

– प्रा. डॉ. अनिल पाटील

ठिकाण – यावल

अनुक्रमणिका

१ यावल तालुक्याचा भौगोलिक व ऐतिहासिक अभ्यास १७

२ १८८५ ते १९४१ या कालखंडातील जळगाव जिल्ह्यातील राजकीय घडामोडी २२

३ यावल तालुक्यातील १९४२ ची छोडो भारत चळवळ..... ४४

४ आझाद हिंद सेनेत यावल तालुक्याचे योगदान आणि भारतीय स्वातंत्र्याची पहाट ६६

५ स्वातंत्र्योत्तर काळात भारतीय संरक्षण सेवेत यावल तालुक्याचे योगदान ७१

संदर्भ सूची..... ७८

परिशिष्ट..... ८३

सुधा खराटे

जन्म	:	२६ जानेवारी १९६३
शिक्षण	:	एम.ए., बी.एड., एम.फिल., पीएच.डी.
प्रकाशित ग्रंथ	:	१. अहिराणी ओवीगीतातील 'भ्रतार' (संशोधन) २. अहिराणी ओवीगीते : आशय आणि अभिव्यक्ती (संशोधन) ३. अनोखी मैत्री (ललितगद्य) ४. नजराणा (कथासंग्रह) ५. संध्याछाया (ललितगद्य) ६. मनवा (ललितगद्य) ७. अबोल झाली सतार (कथासंग्रह)
अनुवाद	:	चिमणी (कादंबरी) हिंदी साहित्यिक भगवानदास मोरवाल यांच्या 'शंकुतिका' या कादंबरीचा अनुवाद
संपादित ग्रंथ	:	१. आवडीच्या बोधकथा २. मनोरंजक नीतीकथा ३. छान-छान गोष्टींचा खजिना ४. गोष्टी संस्काराच्या
पुरस्कार	:	'नजराणा' कथासंग्रहास सन २०१६ चा स्व. बाबासाहेब के. नारखेडे राज्यस्तरीय प्रथम पुरस्कार
कार्यस्थळ	:	प्रमुख, मराठी विभाग कला, वाणिज्य व विज्ञान महाविद्यालय, यावल जि. जळगाव – ४२५ ३०१.
निवास	:	राजेश्वर नगर, फेज – १, प्रोफेसर कॉलनी जवळ, भुसावळ, जि. जळगाव – ४२५ २०१.
भ्रमणध्वनी	:	९९७५१ ६३८४३
ई-मेल	:	sudhakharate4@gmail.com

ललितगद्य ₹ 200

ISBN 978-93-92425-86-8

Prashant

Also Available in e-Book

www.prashantpublications.com
prashantpublication.jal@gmail.com

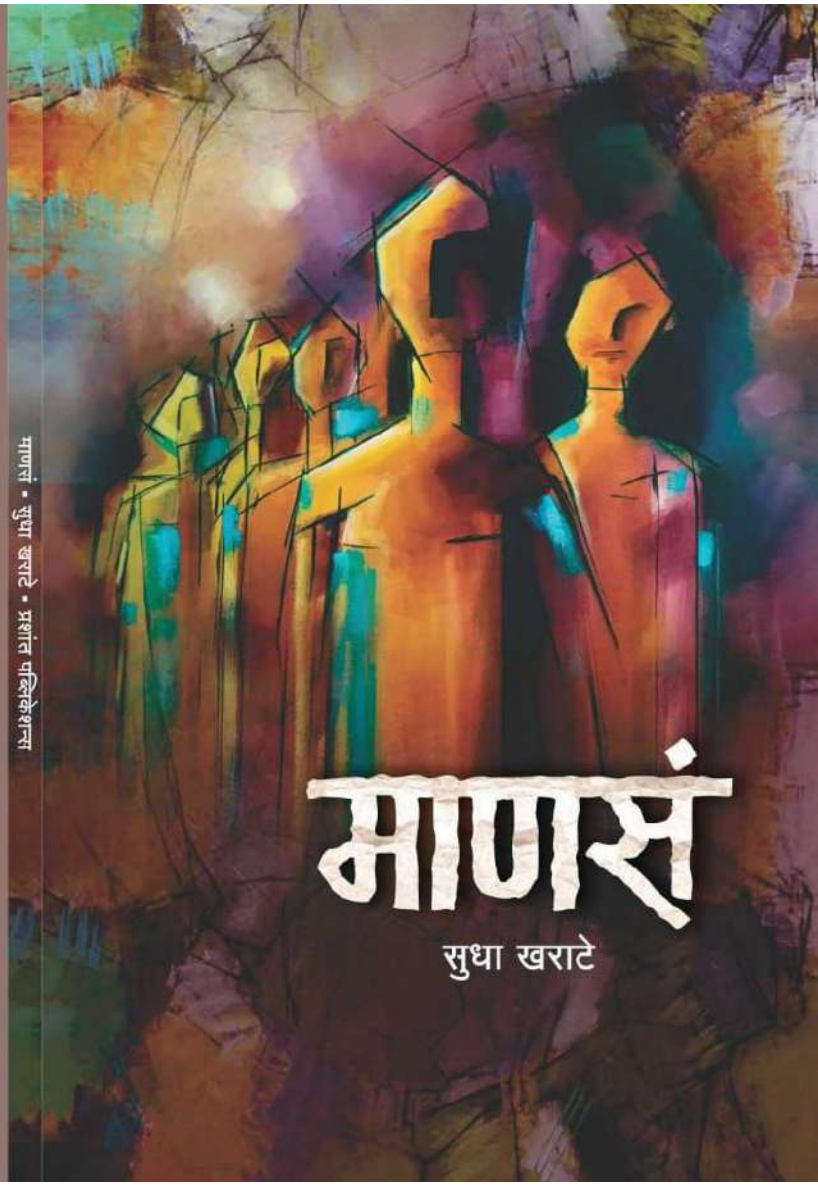

माणसं

सुधा खराटे

INTERNATIONAL JOURNAL FOR INNOVATIVE RESEARCH IN MULTIDISCIPLINARY FIELD ISSN: 2455-0620 Special Issue : 23, March– 2021
Monthly, Peer-Reviewed, Refereed, Indexed Journal with IC Value: 86.87 Impact Factor: 6.719 Publication Date: 31/03/2021

A Two-Day International (Web) Conference
New Vistas in Aquatic & Terrestrial Biology and Environment
During Current Pandemic (ATBE-2021)
26 & 27 March, 2021
Department of Zoology R.S.S.P. Mandal's Nanasaheb Y. N. Chavan Arts, Science and Commerce College Chalisgaon, Dist. Jalgaon (M.S.) India.

Comparative Study of Milk Composition and Nutritive Value of Goat and Cow

[1]Mayur Sonawane and [2]Sandhya Sonawane
Department of Zoology, J.D.M.V.P, A.S.C College, Yawal. Dist., Jalgaon, India
Email - [1] mayursonawane13@gmail.com [2] sandhyamahendra11@gmail.com,

Abstract: Milk is an excellent source of vitamins and minerals. It provides Potassium, B12, Calcium and vitamin D. It is also a good source of vitamin A, Magnesium, Zinc and Thiamin. Many infants and children are feed nutritional milk. Studies suggested that the goat milk resembles human milk, is homogenous, less allergic. Goat milk has an excellent medicinal property; it is better digested and absorbed than the cow milk. The aim of the present study is to find out the nutritional and medicinal property goat and cow milk. Physiochemical analysis is the important tool to monitor the quality of milk and other dairy products. Food energy, Total solid, Total Protein, Fat Content, Conductivity, pH, Ash content, Specific gravity, Lactose, Minerals all these Physicochemical properties are studied in this paper. The nutritive value of goat milk and cow milk was not significantly different but the size of fat globule was smaller in goat milk, therefore it is easy to digest and more nutritive. The basic composition (macronutrients) of goat milk is similar to that of cow milk in regards to total solid, casein, whey proteins, fat, vitamins, minerals, lactose. Goat milk comes out on top for protein and cholesterol, but cow milks fat content is ever so slightly lower. Goat milk has more calcium, potassium and vit A than cow milk, but cow milk has more vit B12, selenium and folic acid.

Key Words: Cow milk, Composition, Goat milk, Nutritive, Physicochemical.

1. INTRODUCTION:

Milk is consumed directly by all the humans. It is a vital and most common source in human diet; it supports the development of neonate in the first six months of life till they can digest the other source of food. Many feed formulae for infants are made from the cow milk. Milk provides a complete source of proteins, lipids and carbohydrates. Although there are about more than 450 breeds of goats are present only 5 to 6 are useful for milk purpose. They live from desert region to the region of higher attitude. Use of Goat and Cow milk is done from the ancient time for consumption from infants to adults. This is due to their nutritional value for human. Cow milk is use from the long time due to its better nutritional value, along this the goat milk stands as one of the best option or alternatives to cow milk due to its nutritional value and medicinal property, therefore it is superior to cow milk. Some people can do long fasting after consumption of goat milk. "Goat milk is a complete food according to the Journal of American Medicine" It contains enzymes, proteins, vitamins, fatty acids, electrolytes, minerals, that are used by our body perfectly that is why it takes only 20 to 30 minutes to digest goat milk while cow milk takes up to 3 hours. About one cup of goat milk supplies 33% of calcium, 19% of daily need of B2. Biochemically goat milk has greater concentrations of essential fatty acids such as linoleic and arachidonic acid, vitamin B3, B6, Vitamin A and Potassium (K) than cow milk.

VITAMINS:

Cow milk contains more Thiamine (B1) than goat milk. Caprine milk lacks the precursor carotenoid pigment, which is the characteristic of bovine milk, therefore causes the goat milk to be more whitish in color than cow milk as it contains the casein. Goat milk is having deficiency of B12, D, C , Folic Acid, Pyridoxine (Park, 1994) . Goat milk mainly supplies the Calcium and Phosphate. Goat milk contains 1.3 g of calcium 1g Phosphate per liter, these are similar to that of cow milk (Jennes,1980) According to experts Goat milk is made up of very small fat particles which form a softer, smaller curd in stomach. These small particles are easy to break by enzymes so goat milk is easy to digest. Goat milk has higher amount of fatty acid chain.

LACTOSE:

Carbohydrate that is identified in the goat milk is the lactose. Lactose concentration is usually found to be lesser amount than in cow milk. Lactose is the main carbohydrate in dairy products, but it is present in low amount in goat milk than cow milk. Therefore, goat milk is good option to consume to those people who don't like cow milk. Analyzing

methods of the lactose are in non-hydrated form or in mono-hydrated form. Thus, water of hydration may affect about five percent variation in reported concentration of the same actual amount

MINERAL SALT:

Minerals present in the goat milk are Fe, Cu, Co, Se, Mn, Zn, K, P, Mg, Na, Ca. Milk contains minerals which have many health benefits. The chloride content of goat milk was significantly higher ($p>0.05$) than that of the buffalo milk as well as cow milk. The calcium content determined in five replications ranged between 114.78 and 138.48 mg/100 ml with a mean value of 125.11 mg/100 ml in goat milk. In cow milk, range of calcium was 110.99-122.67 mg/100 ml with a mean value of 120.24 mg/100 ml. Goat milk contains about 134% more K elements. Calcium content of buffalo milk was significantly higher ($p>0.05$) than that of the goat milk as well as cow milk. The magnesium content was determined between 18.48 and 21.16 mg/100 ml with a mean value of 19.94 mg/100 ml in goat milk.

ALKALINITY:

Goat milk contains high amount of Potassium whereas cow milk has little less amount of potassium. High level of potassium in goat milk reacts in an alkaline way with our body as compare to cow milk which reacts in an acidic way due to minor amount of potassium. Many food leads to the health hazards. Goat milk has superb buffering action inside the human body. Cow milk, Goat milk, Antacids, Soy milk all have their buffering capacity, according to the Journal of Dairy Science. Here goat milk exceeds the buffering capacity of other three. Journal of Nutrition found that oligosaccharides from goat milk plays a major role in repair and protection of intestine as they act as prebiotic and have anti – infective property. Other milk products increase the blood pH as they do not contain the L-glutamine an alkalinizing amino acid, which is only present in higher amount in the goat milk. Goat milk smooths the digestive tract so it is use in the treatment of Ulcers.

DETERMINATION OF PH

Inside the mammals, carbon dioxide is present in the dissolved form in milk which makes it acidic. But when the milk is taken out, the carbon dioxide is released from it which makes it alkaline. pH should be taken after some time, so that to gases inside will pass out. In the preparation of cheese, the pH is determining so that to make sure that lactic acid is produce or not at desired rate by added microbes. pH deceases as increase in temperature. The pH of colostrums can be low as 5.8 and that of mastitis and end of lactation milk is as high as 7.5. High pH is due to increase in Na and Cl.

ENZYMES:

Peroxidase activity in cow and goat milk is similar. Xanthine oxidase level is lower in the milk of goat. Higher activity is observed in both ribonuclease and lysozymes. Enzymes heat susceptibility is same.

SPECIFIC GRAVITY:

Lactometer is used to measure the specific gravity. Temperature derivation of milk is taken into consideration and correction is applied the lactometer is called Correct lactometer reading (CLR) Fat is present in milk, which increases the specific gravity of milk than that of water. If milk composition is changed the specific gravity also changes. Specific gravity is increase as the fat is removed as the weight of fat is much lower than the water. Milk nutritive content is increase as the fat content is increase, while the specific gravity decreases.

SOLID NON- FAT (SNF):

Solid Non- Fat is the important thing in the milk. SNF includes the nitrogenous substance, mineral related matter, milk sugar. Minimum SNF is about 8.5 percent in whole milk. Lactometer is used to measure the SNF of milk at 40 degree Celsius. Increases in energy level and concentration of dairy cattle rations have usually resulted in increased SNF and protein in milk, presumedly through alteration of the YFA produced in the rumen. The usual pattern is an increase in the propionate content and a decrease in the acetate to-propionate ratio. It has been suggested that the increased propionate indirectly influences the synthesis of milk protein through control of amino acid metabolism in the liver. This may be due to the relatively large change in blood glucose required to influence milk lactose. Pelleting the hay portion of the ration has often resulted in higher milk SNF.

TABLE: 1 Fat, SNF, Protein values in Goat versus Cow

ANIMAL	FAT	SNF	PROTEIN
GOAT	6.3	8.96	4.35
COW	4.21	8.21	2.73

FAT CONTENT:

Fat occurs as the suspended globules. Fat present in milk is called as butterfat. It is seen via microscope. Fats present in all the ruminant species is nearly similar, but goat milk has more fat than the cow milk. There are some breeds having different composition of fat. The percentage of goat milk fat depends on the genetics, stages of lactation, and the quantity and quality of the feed

PROTEIN CONTENT:

Proteins are the major component essential for the body. The milk protein is nearly similar to the egg protein except for the amount of methionine and cystines are less. The limiting factors are the sulfur amino acids Protein content is an important feature

of milk. Milk contains of Lactoglobulin, Casein, Lactoglobulins. Casein is about 80 percent of the protein and remaining are the Whey proteins. Casein binds with the calcium and forms the Calcium- Casein ate complex. Rennet, alcohol and heat can precipitate this complex

ASH CONTENT:

Ash is inorganic residue. It mainly measures the mineral amount in food. It is the waste remain after organic matter and water are removed by heating in the presence of oxidizing agent. Minerals are distinguished from the other food contents and on the basis of analytical techniques one can find out total mineral content. Mineral are not been destroyed by heating and are less volatile as compare to other food component

TABLE: 2. Goat milk versus Cow milk. The Basic Composition of Goat and Cow Milk

Constituents	Goat	Cow
•Lactose (g/ 100 g)	4.2	4.8
Minerals (g/ 100 g)	0.7	0.6
Total Proteins g/ 100 g)	3.5	3.3
Food energy (Kcal)	69	61
Fat (g/ 100 g)	4.2	3.6
Ash content (g/ 100 g)	0.82	0.72
Total solids (g / 100 g)	12.61	13.2

CONDUCTIVITY:

Fat content is the important factor for the conductivity of milk. Decrease in E.C of cream and fresh milk with crease in fat. Electrical conductivity (E.C) is a measure of material's ability to carry an electrical current. E.C of normal whole milk is o.466 Sm-1. Salt in the milk determines the E.C of milk. Decrease in the pH results in the release of calcium ions from casein micelles. Colloidal calcium phosphate dissolve and equilibria of milk buffer system to change which causes in saturation of E.C due to decrease in pH. The protein hinderance is the main effect which depresses the E.C of milk.

MEDICINAL PROPERTY OF GOAT MILK:

Goat milk is referred as bio-organic Sodium animals. It is useful in keeping the joints mobile and tender. Goat milk also contains the trace mineral selenium, which keeps immune system strong. It is having antioxidant property too.

GOAT MILK IS LESS ALLERGIC:

Cow milk is more allergic. Cow milk contains 20 allergen proteins and these are not been recognized by the immune system so causes vomiting, abdominal cramps, skin rashes, diarrhoea, runny nose, etc. Alpha s1 casein is the main allergen present in cows milk. Goat milk contains less amount of Alphas1 than cows' milk, and has higher amount of Alpha s2, which is non allergic. Goat milk can improve the gastrointestinal tract allergies. Goat milk do not produce mucus as it contains smaller fat globules as a result it there are not immune response against it, while cow milk has bigger fat globules which causes the mucous forming and so gut irritation Due to shifting to goat milk from cow milk can cure the chronic enteropathy. Goat milk when used as a first source of protein after breastfeeding, was less allergic than cows milk.

GOAT MILK IS NATURALLY HOMOGENIZED:

When goat and cow milk are freshly refrigerated overnight, we can see that cow milk get separated into two phase with cream on top layer and skim milk at the bottom level which occurs naturally by a compound called agglutinin. To make or to keep the cow milk homogenous i.e to keep cream and skim milk together, the fat globule cells are destroyed by mechanical homogenization techniques. Released of superoxide (free radical) take place in Mechanical Homogenization, which causes lots of problems and even mutations. In case of goat milk, it remains as same as the original fresh milk. Goat milk have smaller fat globules, and due to absence of agglutinin it remains homogenous and also eliminates the drawbacks associated to the mechanical homogenization.

MILK IS RAPIDLY DIGESTED AND ABSORBED: GOAT

Goat milk contains the taurine 20-35 times than cow. Taurine plays the bile salt formation, osmoregulation, calcium transport and antioxidation. Medium chain and long chain fatty acids are more in goat milk as compare to cows milk. These chains having larger surface to volume ratio and are easily digested and absorbed quickly than long chain fatty acids chain. Goat milk contains taurine glycine and glutamic acid as free amino acid. Short and medium chain fatty acids such as caproic, caprylic, capric and lauric acids are higher in goat milk than cow. The number of fat globules measuring 4 µm is 84 percent in goat milk as compared to cow milk that is having 62 percent. Goat milk contains higher amount of energy rich substate adenosine triphosphate (ATP) than cow.

2. CONCLUSION:

The size of fat globule is bigger in cow milk and smaller in goat milk, which increases the digestibility and nutritive importance of goat milk to monitor the quality of dairy products and milk physico- chemical analysis. The basic composition (macronutrients) of goat milk is similar to that of cow milk in regards to total solid, casein, whey proteins, fat, vitamins, minerals, lactose. Goat milk comes out on top for protein and cholesterol, but cow milks fat

Impact Factor IIFS-2.875 ISRA JIF-1.312

E- ISSN 2582-5429

AKSHARA

Multidisciplinary Research Journal

Peer-Reviewed & Refereed International Research Journal
January - March 2021 Vol.02 ISSUE IV

20-21

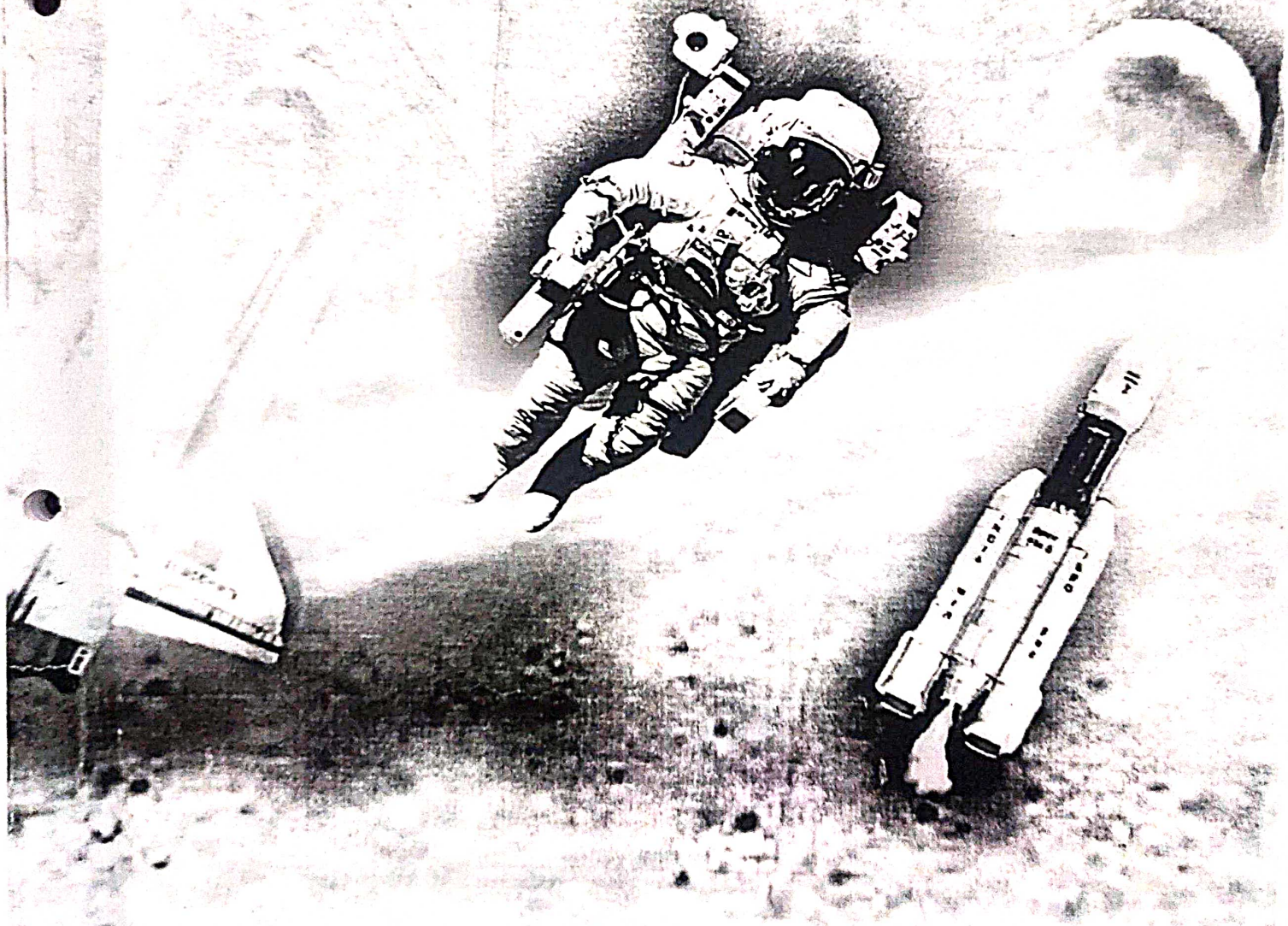

Chief Editor : Dr. Girish S. Koli, AMRJ, Yawal
For Details Visit To - www.aimrj.com

Akshara Publication

E- ISSN 2582-5429
AMRJ
Akshara Multidisciplinary Research Journal
Peer-Reviewed & Refereed International Research Journal
(IIFS- 2.875) (ISRA JIF- 1.312) January –March 2021 VOL.02. ISSUE IV

Sr.No	Title of the Paper	Author's Name	Page No.
30	उर्दू का महान कवि : डॉ. इकबाल	डॉ. शेख आफाक अंजुम	131-134
31	हिंदी दलित साहित्य में मूल्य संघर्ष	प्रा.डॉ.रविंद्र आर.खरे	135-139
32	राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 : एक समीक्षा	मीता विरमानी रीमा लांबा	140-145
33	`गाँव का मन` निबंध संग्रह में लोकजीवन और ग्राम्य प्रकृति चित्रण	डॉ. प्रमोद मनोहर चौधरी	146-149
34	मैत्रेयी पुष्पा के उपन्यासों में अभिव्यक्त भारतीय संस्कृति के अंतरंग	डॉ. संगिता सूर्यकांत चित्रकोटी	150-153
35	उत्तरशती यात्रा साहित्य में सौंदर्यात्मकता	डॉ. विक्रम रामचंद्र पवार	154-157
36	"पीटरपौलएक्का के उपन्यासों में चित्रित आदिवासी समस्यायों का समाजशास्त्रीय अध्ययन"	प्रा.एकनाथ गणपती जाधव	158-160
37	फाँस उपन्यास के संघर्षशील किसान स्त्री पात्र	प्राजकता पवार यादव	161-164
38	ग्रामीण एवं शहरी हाई स्कूल स्तर के विद्यार्थियों का विज्ञान विषय में उच्च मानसिक योग्यता का उनके शैक्षिक विकास पर पड़ने वाले प्रभाव का तुलनात्मक अध्ययन	डॉ. संगीता सराफ मोनिका चौबे	165-168
39	भारतीय वाङ्मय में नाट्यशास्त्र का महत्व एवं वैशिष्ट्य	डॉ. अंशुमान वल्लभ मिश्र	169-171
40	महानगरीय सभ्यता के बीच टूटते जीवन मूल्यों का चित्रण - 'नरक मसीहा'	डॉ. सुनीता नारायणराव कावळे	172-175
41	भ्रष्ट्राचार का जीवन्त दस्तावेज- उत्कोच	डॉ. विजय एकनाथ सोनजे	176-180
42	विधवा उपन्यास की त्रासदी : तापसी	डॉ. कामिनी तिवारी	181-184
43	"विजन" उपन्यास में स्त्री संवेदना	डॉ. वसंत माळी	185-187
44	नारी विमर्श का एक नया अध्याय: शकुंतिका	डॉ.गिरीष एस. कोळी	188-191
45	बिन्दु उपेक्षित स्त्री के जीवन की व्यथा	डॉ. कामिनि तिवारी	192-195
46	अक्षयवट नाटक में चाणक्य चित्रण	डॉ. प्रल्हाद विजयसिंग पावरा	196-198
47	समकालीन हिंदी आदिवासी उपन्यासों की भाषा शैली (`जंगल के आसपास` और `पिंजरे में पन्ना` के संदर्भ में)	डॉ. रमेश एस. जगताप प्रा. संतोष भिका तमखाने	199-203
48	अनामिका की कविताओं में सामाजिक बोध	डॉ. जगदीश बन्सीलाल चव्हाण	204-207
49	गुप्तोत्तर कालीन भूमि पद्धति (मध्यप्रदेश के 7 वीं सदी से 13 वीं सदी तक के विशेष संदर्भ में)	डॉ. (श्रीमति) पप्पी चैहान	208-212
50	हिन्दी की राष्ट्रीय काव्यधारा में माखनलाल चतुर्वेदी का योगदान	डॉ. कांबळे आशा दत्तात्रय	213-216

©Copyright 2021 AMRJ. All Rights Reserved

AMRJ
Akshara Multidisciplinary Research Journal
Peer-Reviewed & Refereed International Research Journal
(IIFS- 2.875) (ISRA JIF- 1.312) January –March 2021 VOL.02. ISSUE IV

46

अक्षयवट नाटक में चाणक्य चित्रण

डॉ. प्रल्हाद विजयसिंग पावरा
हिंदी विभाग
कला , विज्ञान एवं वाणिज्य महाविद्यालय, यावल जि. जलगाँव

हिंदी के बहुचर्चित नाटककारों में डॉ. सुरेश शुक्ल 'चंद्र' का नाम महत्वपूर्ण है। उनका जन्म सन 8 फरवरी 1936 को मध्य प्रदेश (राजापूर गढ़ेवा) में हुआ। डॉ. सुरेश शुक्ल 'चंद्र' अब तक बीस नाटक, तीस एकांकी, एक उपन्यास, दो कविता संग्रह, चार समीक्षा.ग्रंथ और आत्मकथा प्रकाशित हो चुकी है। डॉ. चन्द्र ने 1950 ई. में, कविता से अपना लेखन प्रारम्भ किया था। सन 1960 तक वे सभी विधाओं में लिखते रहे। इसके बाद उन्होंने विशेष रूप से नाटक में अपने को केन्द्रित किया और विशिष्ट स्थान बनाया। वृहत्तर मानव.मूल्यों की स्थापना एवं विश्व.कल्याण की भावना को लेकर चलने के कारण डॉ. सुरेश शुक्ल 'चंद्र' अपने समकालीन नाटककारों में एक अलग पहचान रखते हैं तथा इसी विशेषता के कारण समकालीन नाट्य.परिदृश्य में अपनी अमिट छाप छोड़ने में समर्थ हैं।

इनके प्रमुख नाटकों में 'आकाश झुक गया', ' भस्मासुर अभी जिंदा है', 'कुत्ते', 'लड़ाई जारी है', 'भूमि की ओर', 'समवेत', 'स्वप्न का सत्य', 'अर्ध्दनारीश्वर', 'अक्षयवट' आदि नाटक प्रकाशित हो चुके है। डॉ. सुरेश शुक्ल को विविध पुरस्कारों से सम्मानित किया गया है। प्रथम 1968 में उत्तर प्रदेश शासन द्वारा, इसके साथ–साथ 1998 में 'उत्कल युवा सांस्कृतिक संघ' कटक (उडिसा) ने 'नाटयभूषण' उपाधि से विभूषित किया। साहित्य मानव की विविधोन्मुखी भाव–भावनाओं की अभिव्यक्ती का सशक्त माध्यम हैं। अतः साहित्य की विधाओं में मन और जीवन के अत्यंत निकट की विधा है नाटक।

डॉ. सुरेश शुक्ल 'चंद्र' का 'अक्षयवट' नाटक का प्रकाशन सन 2008 में 'साहित्य रत्नालय' कानपूर द्वारा किया गया। 'अक्षयवट' का मंचन 24 मई 1983 को 'नवआयाम साहित्यिक सांस्कृतिक मंच' बिसलपूर द्वारा प्रथम बार किया गया। नाटककार ने हमारे सामाजिक–सांस्कृतिक जीवन के प्रति सजग है। भारतीय संस्कृति सारे विश्व में महान हैं। इसी संस्कृति को महान बनाने में कई भारतीय इतिहास में कई महान व्यक्तियों का योगदान हैं। इसी संस्कृति के सहारे नाटककार ने ऐतिहासिक जीवन की झलक 'अक्षयवट' नाटक में मूर्त रूप देने का सफल प्रयास किया है। अक्षयवट में चाणक्य का व्यक्ति अंकन किया गया है। ऐतिहासिक ग्रंथों में चाणक्य पर कई ग्रंथ लिखे गये है, लेकिन चाणक्य के अहम् एवं सामाजिक घात–प्रतिघात के बारे में प्रथम लिखा गया नाटक है। डॉ. सुरेश शुक्ल 'चंद्र' के अनुसार 'अक्षयवट' नाटक में चाणक्य की अहम् निर्मित करनेवाले स्त्रोतों की खोज की गई है, तथा चाणक्य पर पड़े व्यक्तित्व एवं सामाजिक घात–प्रतिघात और उस पर हुई प्रतिक्रिया को नाटक में उभारा गया है। प्रस्तुत नाटयकृति में चाणक्य के बचपन से लेकर नंदवंश का समूल नष्ट तक एवं मौय साम्राज्य की स्थापना का चित्रण नाटक में उपलब्ध है। उसमें चाणक्य मुख्य रूप से है। चाणक्य के जीवन में घटित घटनाओं के कारण चाणक्य का समाज की ओर देखने का दृष्टिकोण बदल जाता है, यही चित्रण नाटककार ने बड़े ही मार्मिक ढंग से प्रस्तुत किया है। जो नाटक रंगमंच की दृष्टि से, पठन और पाठन की दृष्टि से अभूतपूर्व रचना है। ऐतिहासिक कथानक होने के बावजूद भाषा को संस्कृतनिष्ठ एवं क्लिष्ट नहीं बनाया बल्कि नाटक की भाषा सरल एवं रोमांचक है।

भारतीय इतिहास में चाणक्य का नाम बड़े गौरव से लिया जाता है। मौर्य वंश की स्थापना आचार्य चाणक्य की एक महान उपलब्धि हैं, और नंदवंश के विनाश के प्रमुख सूत्रधार के रूप में प्रख्यात हैं। नाटककारने चाणक्य के अन्य गुणों के साथ–साथ राजनीतिक कौशल्यों का भी अंकन किया हैं। चाणक्य का नाम विष्णुगुप्त था, उनके पिता का नाम चणक। वह पश्चिमोत्तर क्षेत्र में जीविका की खोज में पाटलीपुत्र आए थे। चाणक्य अपने पिता के आचार–विचार एवं व्यवहार की झलक थे। चाणक्य स्वभाव से अभिमानी, चारित्र्य से संपन्न एवं विषय दोषो से रहीत, स्वरूप से कुरूप, बुध्दि से तीक्ष्ण, इरादे के पक्के, प्रतिभा के धनी थे।

©Copyright 2021 AMRJ. All Rights Reserved

E- ISSN 2582-5429
Akshara Multidisciplinary Research Journal
Peer-Reviewed & Refereed International Research Journal
(IIFS- 2.875) (ISRA JIF- 1.312) January –March 2021 VOL.02. ISSUE IV

अक्षयवट नाटक के पूर्वाध्द में नंद की सभा में चाणक्य का घोर अपमान से शुरूआत होती है। नंद के घर श्राध्द पर शटकार के कहने पर तेरह ब्राह्मणों को आमंत्रित कराया गया था। शटकार को अपने बच्चों का बदला लेने के लिए चाणक्य से बड़ा कोई नंद को नहीं हरा सकता यह पता था। इसलिए चाणक्य को सभा मण्डप में ब्राह्मणों के साथ अगली पंक्ति में विराजमान किया गया था। नंद को सबसे आगे काली और कुरूप आकृति देखकर क्रोध आ गया। शटकार की योजना नुसार चाणक्य का परिचय, चणक का पुत्र यह दिया। नंद ने चाणक्य को देखकर "राजद्रोही चणक का पुत्र ?"1 यह कहकर अपमान किया। चाणक्य का सभी ब्राह्मणों एवं समाज के सामने घोर अपमान किया। चाणक्य एक स्वाभिमानी ब्राह्मण थे। ब्राह्मणों के सम्मुख अपमान वे कभी बर्दाश्त नहीं कर सकते थे। चाणक्य के बचपन में चणक को कुशों से घाव हो गया, चाणक्य ने उसे कुशों को खोदकर मठा डालकर उसका समुल नष्ट कर दिया। आज भी चाणक्य अपने अपमान का बदला नंद वंश का समूल नष्ट करेगा।

चाणक्य बड़े सहृदयी थे। अपनी माता के झुलसती चिता पर कुद पड़े। वह अपनी माता से बड़ा प्रेम करते थे। उसी चिता में जलने की वजह से उनका चेहरा कुरूप बन गया। इसी कुरूप चेहरे के कारण उनका अपमान हो गया था। चाणक्य बिना प्रतिशोध लिए नहीं बैठ सकता, वह एक विशाल तुफान है। वह पेड़ो को जड़ो से हिला देगा। चाणक्य भावूक है तथा भावुक व्यक्ति ही प्रतिशोध लेता है। स्वाभिमान पर चाहे चोट लगने पर वह खौल उठता है। तक्षशिला में चाणक्य प्राध्यापक थे। वहा पर राजा, महाराजा, मंत्रीगणों को शिक्षा दी जाती है। उसी विद्यापीठ में नौकरी के लिए प्राध्यापक तरसते है। लेकिन चाणक्य ने वहा त्यागपत्र देकर पाटलीपुत्र में संस्कृत की पाठशाला शुरू की। वह भी तक्षशिला से उब गया था। चाणक्य पाटलीपुत्र में वररूचि की कन्या सुभाषिनी से विवाह कर स्थानबध्द होनेवाले थे।

नंदवंश विलासी एवं भोगवादी था। प्रजा को भूखा रखकर खुद भोग–विलास में लिप्त रहता था। अकाल की स्थिति में लोगों से लगान वसूल करता था। ऐसी स्थिति में लोग भूखे मर रहे थे। राक्षस एक स्वामीनिष्ठ सेवक था। राजा को प्रजा की स्थिति बताने के बाद उसका व्यवहार कुत्सित था। राजा कहता है – "कहीं से भी अपनी जायदाद बेचे, पर लगान उसे देना होगा।"2 चाणक्य प्रजाप्रेमी है। उसे यह मंजूर नहीं था। प्रजा का यह दुःख उससे देखा नहीं गया। राजा का धर्म प्रजा का पालन होता है, प्रजा की सेवा राजा का एकनिष्ठ धर्म होता है। लेकिन नंदवंश का साम्राज्य अधम एवं विनाशकारी था। एक व्यक्ति की सोलह वर्षीय वासंती नामक लडकी गूम हो गई थी। राजा के साथ–साथ सैनिक भी भ्रष्टाचार में लिप्त थे। बेटी गुम हो जाने की फिर्याद लिखने के लिए सैनिक सोने की मोहरे मॉगता है। अतः स्पष्ट है कि समकालीन परिवेश में भ्रष्टाचार व्याप्त था।

चाणक्य में दूरदृष्टि थी इसलिए उसने नंदवंश का विनाश करने के लिए षडयंत्र शुरू किया। शटकार से मिलकर राज्य के कामकाज के बारे में महत्वपूर्ण योजनाएँ मिलने लगी। शटकार को मंत्री पद से हटाने के लिए राक्षस ने षडयंत्र का शिकार बनाया। इसलिए शटकार नंदवंश से बदला लेना चाहता है। बदले की आग में वह भी झुलस रहा है – "मुझे सहपरिवार अंधकुप में डाला गया। वही मेरे सात बच्चे भूख से तडप–तडपकर मर गये। मैं जीवित रहा केवल नंद से प्रतिशोध लेने के लिए।"3 चाणक्य ने विशाखा और मंजरी को विषकन्या के रूप में बनाया। वह उसे वक्त आने पर नारी भोग के लालसी सैनिकों को खत्म कर सके।

चाणक्य का व्यक्तिमत्व राष्ट्रप्रेम के प्रति सजग था। राष्ट्र को एकजूट होना चाहिए, परकीय आक्रमणों से बचना चाहिए। सभी राज्यों को मिलजुलकर संघटित होकर दुश्मन का सामना करना चाहिए। लेकिन इतिहास साक्षी है सत्तापीपांसु राजा ने सिर्फ आपस में लड़ाई लड़कर मारे गये। सिंकदर ने भारत पर आक्रमण किया, पंचम नरेश ने सिंकदर के छक्के छुडवा दिये थे। एवं विवश होकर सिंकदर ने संधी कर ली। चाणक्य राजनीति में निपुण थे। वह जानते थे सिंकदर को वापिस जाने दिया तो वह फिर आक्रमण करेगा। चाणक्य कहते थे –"दुश्मन के प्रति सहृदयता अच्छी नहीं होती। सिंकदर को ऐसा सबक देना चाहिए कि वह भविष्य में कभी भारत पर आक्रमण न कर सके।"4 उन्होंने पश्चिमोत्तर गणराज्यों में दो गणराज्यों को आक्रमण के लिए तैयार कर लिया। सिंकदर की नौका झेलम एवं चिनाब के संगम पर पहुँची तो मालव एवं

©Copyright 2021 AMRJ. All Rights Reserved

E- ISSN 2582-5429
AMRJ
Akshara Multidisciplinary Research Journal
Peer-Reviewed & Refereed International Research Journal
(IIFS- 2.875) (ISRA JIF- 1.312) January –March 2021 VOL.02. ISSUE IV

शुद्रको ने आक्रमण कर दिया। चाणक्य के योजनानुसार सिंकदर युध्द में बुरी तरह घायल हो गया। घाव इतना गहरा था कि बगदाद आते–आते उसकी मृत्यु हो गई। उस महान विजेता सिंकदर का इतिहास पूरा हो गया। उसे चाणक्य के कूटनीति योजना ने सफल बनाया।

चाणक्य के पास अदम इच्छाशक्ति थी। नंदवंश को नष्ट करने के लिए सैनिक चाहिए। चाणक्य ने अपने दाव–पेंचों में कोई कमी नहीं रखना चाहते थे। नंदवंश का महामंत्री राक्षस भी राजनीति दाव–पेंचों में निपुण था। चाणक्य बुध्दि से तीक्ष्ण एवं वाक्पटुता के कारण डाकूओं को युध्द के लिए तैयार कर अपनी सेना में शामिल कर लिया। चाणक्य ने नंद साम्राज्य पर आक्रमण कर दिया। लेकिन नंदवंश के सैनिकों ने पीछे से वार किया। चाणक्य को पहली बार युध्द में हार हुई। हार के बाद भी वह निराश नहीं हुए। वह कहते है –"जय और पराजय दो ही परिणाम होते है, फिर दुःख क्यों, सफलता और असफलता सिक्के के दो पहलू है। कभी चित कभी पट। आज पराजित हुए है तो कल जितेंगे भी। युध्द में हार के बाद भी अटूट विश्वास के कारण वह फिर खड़े हुए। समाज में अच्छे करनेवालों की प्रशंसा होती है लेकिन हारे हुए व्यक्ति को मूर्ख की भॉति समझा जाता है। एक बच्चा खीर खा रहा था, वह जल गया। उसीसे मॉ कहती है –"तू भी चाणक्य की तरह बीच में हमला करता है। किनारे से क्यों नहीं खाता मूर्ख।"5 विद्वान व्यक्ति को अपनी गलती खुद समझ में आती है।

चाणक्य प्राचीन भारतीय सामाजिक एवं राजनीतिक मूल्यों के निर्वाद मापदंड व निर्धारक विकास किए गये ऐसे प्रतीक है। वह अपने नीतियों में जनता का पथप्रदर्शक का काम करते है। उन्होंने भारतीय इतिहास में राजनीति में कूटनीति तोड–जोड, दांव–पेंच जैसे चालों का सफलतापूर्वक प्रयास किया है। नंदवंश का साम्राज्य अनाचारी था। वह प्रजा का शोषण कर रही थी। चाणक्य कहते है – साम, दाम, दंड, भेद सभी नीतियों से हमें काम लेना है। अनाचारी को कूटनीति द्वारा मारने में कोई दोष नहीं। उनकी नीतियॉ हर व्यक्ति को प्रेरक साबित होती है। चाणक्य ने अपने विचारों से मौर्य साम्राज्य की नींव खड़ी की एवं अनाचारी, अधम नंदवंश का संहार किया।

चाणक्य एक आदर्श के रूप में समाज के सम्मुख है। वह संयमी तथा त्यागी थे। सुभाषिनी उनकी प्रेयसी थी उससे शादी करके जीवन बिताना उनका स्वप्न था। लेकिन अपमान का बदला लेना भी जरूरी था। चाणक्य बहुत हठी थे। जब तक नंदवंश का समूल नष्ट न हो जाए तब तक शादी नही करेंगे। सुभाषिनी के पिता के देहांत के बाद वह अकेली हो जाती है। राक्षस उसे सहारा देता है। वह डगमगा जाती है। क्या चाणक्य उसे अपनाएगा या नहीं ? सुभाषिनी को चाणक्य नंदवंश का समुल नष्ट कर पाएगा या नहीं ? यह विश्वास नहीं था। वह राक्षस से शादी कर लेती है। चाणक्य को प्रियसी के विरह का दुःख होता है। लेकिन वह चुप नहीं बैठता। अपने शिष्य एवं पर्वतेश्वर की सेना को लेकर पाटलीपुत्र की सीमा पर आक्रमण कर देता है। विषकन्या मंजरी एवं विशाखा, सेनापती एवं दूसरे पदाधिकारियों को काट लेती है। योजनानुसार राजभवन में विलक्षणा नंद के खाने में विष डाल देती है। नंद के साथ उसके नौ बच्चों की मौत हो जाती है। राक्षस को बंदी बना लिया जाता है। चाणक्य भावुक थे, सुभाषिनी का दुःख उनसे देखा नहीं गया। उसके कहने पर राक्षस को मंत्रीपद दिया।

नाटककार ने 'अक्षयवट' नाटयकृति के द्वारा चाणक्य के नीतिमूल्यों पर चर्चा के उपरान्त व्यक्तित्व का अंकन भी किया है। चाणक्य के अहं की निर्मिती एवं नंदवंश का समुल नष्ट होना यह इसका द्योतक है। नाटककार ने संपूर्ण नाटक के ऐतिहासिक कथानक को जनसामान्य के लिए बड़े सुंदर ढग से सरल एवं ग्राहय भाषा में प्रस्तुत किया है। इस नाटक में ऐतिहासिक कथानक के बावजूद भाषा को संस्कृतनिष्ठ एवं क्लिष्ट नहीं किया गया है। अक्षयवट का सफलतापूर्वक मंचन अनेक उच्चस्तरीय सांस्कृतिक संस्थाओं द्वारा किया गया है। अतः कहा जा सकता है कि नाटककार डॉ. सुरेश शुक्ल चंद्र अपनी नाटयकला में पूरी तरह से सफल हुए है।

संदर्भ ग्रंथ :

1) अक्षयवट– डॉ. सुरेश शुक्ल 'चन्द्र',नाटक प्रकाशन संस्थान,दयानन्द मार्ग, नयी दिल्ली सन 1983 पृ.13
2) पूर्ववत पृ. 23
3) पूर्ववत पृ. 09
4) पूर्ववत पृ. 51
5) पूर्ववत पृ. 49

□ □ □

©Copyright 2021 AMRJ. All Rights Reserved

सुधा खराटे

जन्म : 26 जानेवारी 1963

शिक्षण : एम. ए., बी.एड., एम. फिल., पीएच. डी.

प्रकाशित ग्रंथ :

1. अहिराणी ओवीगीतातील 'भ्रतार' (संशोधन)
2. अहिराणी ओवीगीते : आशय आणि अभिव्यक्ती (संशोधन)
3. अनोखी मैत्री (ललितगद्य)
4. नजराणा (कथासंग्रह)
5. संध्याछाया (ललितगद्य)
6. मनवा (ललितगद्य)
7. अबोल झाली सतार (कथासंग्रह)

संपादित ग्रंथ :

1. आवडीच्या बोधकथा
2. मनोरंजक नीतीकथा
3. छान–छान गोष्टींचा खजिना
4. गोष्टी संस्काराच्या

पुरस्कार : 'नजराणा' कथासंग्रहास सन 2016 चा स्व. बाबासाहेब के. नारखेडे राज्यस्तरीय प्रथम पुरस्कार

कार्यस्थळ : प्रमुख, मराठी विभाग
कला, वाणिज्य व विज्ञान महाविद्यालय, यावल
जिल्हा – जळगाव 425301

निवास : राजेश्वर नगर, फेज – 1, प्रोफेसर कॉलनी जवळ, भुसावळ
जिल्हा – जळगाव 425201

भ्रमणध्वनी : 9975163843

ई–मेल : sudhakharate4@gmail.com

विद्या प्रकाशन
'सी' 449 गुजैनी,
कानपुर–208 022

E-mail : vidyaprakashan.knp@gmail.com
Website : www.vidyaprakashankanpur.com

ISBN 978-81-948359-4-3

₹200.00

चिमणी

लेखक : भगवानदास मोरवाल
अनुवाद : सुधा खराटे

चिमणी

हिंदी कादंबरी 'शकुंतिका' चा मराठी अनुवाद

भगवानदास मोरवाल

अनुवाद
सुधा खराटे

माझे कुटुंब माझी जबाबदारी

सामाजिक बांधिलकी आणि जाणीव

- संपादक -

डॉ. पंकजकुमार एस. नन्नवरे

डॉ. अनिल आर. बारी । डॉ. प्रशांत डी. कसबे

Shot on realme 1

आपत्ती काळात मानसिक आधाराची गरज

डॉ. हेमंत घनश्याम भंगाळे
भौतिकशास्त्र विभागप्रमुख,
कला, वाणिज्य व विज्ञान महाविद्यालय,
यावल, जि. जळगाव

सूर्यप्रकाशाच्या वेगाने धावण्यासाठी धडपड करणारे मानवी जीवन एका क्षणार्धात अतिसूक्ष्म अशा विषाणूमुळे संपते, ही कल्पनाही करवत नाही. पण, ही वस्तुस्थिती आहे. २०२० मधील विश्वातील प्रमुख नेते, आपापल्या देशाचे प्रमुख मानवी जीवन वाचविण्यासाठी वारंवार आवाहन करीत असतात, प्रसंगी कठोर पावले उचलतात आणि अचानक सर्व चक्रे थांबविली जातात, अगदी विमानापासून तर सायकलीपर्यंत. आपल्या कर्तव्यात व्यस्त असणारी माणसे पायी प्रवास करीत आपल्या गावी, आपल्या घरी परत यायला निघतात आणि मग कुटुंबाची जाणीव होते. कुटुंब म्हणजे काय ते तेव्हा कळते.

आजपर्यंत बऱ्याच संकटांचा, महामारीचा वा नैसर्गिक आपत्तीचा सामना मानवाने यशस्वीपणे लढला आहे. या भूतलावरील आपले श्रेष्ठत्व (चाल डार्विनच्या म्हणण्यानुसारस या भूतलावरील श्रेष्ठ स्पेसिज ती जी बदलत्या परिस्थितीचा स्वीकार करून स्वतःमध्ये अनुकूल असे बदल घडवून आणि प्रतिकूल परिस्थितीवर मात करून जिवंत राहतात), संकटाच्या वेळीच खरे माणुसकीचे दर्शन घडत असते. एकमेकांकडे बघायला वेळ नसणारे एकमेकांना उपयोगी पडत असतात आणि आपले असेच इतरांचेही जीवन वाचविण्यासाठी प्रयत्न करीत असतात. तरीही शासन आपल्या पद्धतीने वेगवेगळ्या योजना राबवून नागरिकांमध्ये धैर्य, संयम वाढविण्यासाठी वेगवेगळ्या योजना राबवीत असते. त्यातीलच एक भाग म्हणून महाराष्ट्र शासनाने १५ सप्टेंबर ते १० ऑक्टोबर २०२० दरम्यान 'माझे कुटुंब-माझी जबाबदारी' ही योजना राबविली. या योजनेंतर्गत शासनाचे विविध क्षेत्रांतील कर्मचारी घरोघरी जाऊन सर्वेक्षण करून विषाणूबद्दल जनजागृती करून त्यांच्यामध्ये धैर्य व संयम ठेवण्याचे आवाहन करीत आहेत. नैसर्गिक असो किंवा कोणत्याही प्रकारची आपत्ती असो; मानवाने अतिशय शिताफीने समाजभावना जागृत ठेवून एकमेकांना

Dr. Hemant Ghansham Bhangale

माझे कुटुंब–माझी जबाबदारी

(सामाजिक बांधिलकी आणि जाणीव)

–: संपादक :–

डॉ. पंकजकुमार शांताराम नन्नवरे

डॉ. अनिल रामदास बारी

डॉ. प्रशांत धोंडिबा कसबे

Specimen Copy
For Recommendations.

अथर्व पब्लिकेशन्स

Shot on realme 1

-: अ नु क्र म णि का :-

- **माझे कुटुंब-माझी जबाबदारी** ३१
  प्राचार्य डॉ. अतुल साळुंके
- **'माझे कुटुंब-माझी जबाबदारी' उपक्रमात राष्ट्रीय सेवा योजनेचे योगदान** ३५
  डॉ. पंकजकुमार शांताराम नन्नवरे
- **'माझे कुटुंब-माझी जबाबदारी' मोहिमेत माझी जबाबदारी** ४३
  डॉ. उज्वला पंकज नन्नवरे
- **शासन ते कुटुंब...** ४९
  डॉ. अनिल रामदास बारी, सौ. प्राप्ती अनिल बारी
- **सामाजिक भान अन् जाणिवा** ५३
  डॉ. दीपक मोतीराम मराठे
- **नागरिकांनो, धैर्य अन् संयम ठेवा...** ५६
  डॉ. सचिन जयराम नांद्रे
- **मोहिमेत 'रासेयो'ची भूमिका** ६३
  प्रतिभा विश्वनाथ लोणारी
- **प्लाझ्मा सेल्स दान करण्याची गरज** ६८
  डॉ. राजेंद्रकुमार बन्सीलाल अहिरराव
- **समाजाप्रति हवे उत्तरदायित्व!** ८२
  डॉ. सर्जेराव गंगाधर गोल्डे
- **हे विश्वची माझे घर** ९१
  गणपत विलास माखणे

Shot on realme 1

- **मोहीम जाणीव–जागृतीची**.....
  डॉ. अक्षय किशोर घोरपडे
- **प्रत्येकाने राखले समाजभान** .....
  डॉ. कविता मुरारीलाल राजाभोज
- **शासनाची पालकत्वाची भूमिका**.....
  गौतमी आनंद जगदेव
- **त्रिसूत्रीचा उपयोग कराच**... .....
  डॉ. दिनेश नागराज सूर्यवंशी
- **आपत्ती काळात मानसिक आधाराची गरज** .....
  डॉ. हेमंत घनश्याम भंगाळे
- **सामाजिक भान अन् जाणीव**.....
  डॉ. प्रभाकर गणपतराव जाधव
- **घरी राहा, सुरक्षित राहा अन् काळजी घ्या**.. .....
  अमृता चव्हाण, ओमकार चव्हाण, डॉ. विलास कर्डिले
- **वाखाणण्याजोगी आरोग्य मोहीम**.....
  डॉ. प्रशांत धोंडिबा कसबे, डॉ. पंकजकुमार नन्नवरे
- **आरोग्याची महाचळवळ** .....
  डॉ. वंदना रवींद्र बडगुजर
- **घेऊया आरोग्याची खबरदारी**.....
  प्रा. अजय माणिक पाटील
- **माझे आरोग्य–माझी जबाबदारी**.....
  डॉ. दीपक पिराप्पा जाधव

Shot on realme 1

Journal of Research and Development | Volume 10, Special Issue 02
Title : Innovative Ideas in Chemical Science and Environment Science for Sustainable Development-2020
ISSN : 2230-9578
January 2020

Molecular Interaction studies of Binary Mixture of Alkanols with O-nitrotolune at 298.15 and 308.15

R.D.Pawar[1], S.R.Patil[2], and G.P.Waghulde*[3], M.D.Khairnar[4]
[1]Department of Chemistry, A.C.S. College, Yawal, M.S., India.
[2]P.G. Department of Chemistry, A.S.C. College, Chopda, M.S., India.
[3]P.G. Department of Chemistry, D.D.N.Bhole College, Bhusawal, M.S., India.
[4]Department of Chemistry, A.C.S. College ,Yawal, M.S., India.

Abstract :

The ultrasonic velocities, Viscosities and densities of binary liquid system of 2-Butanol and isodecanol with O-nitrotolune have been observed at 298.15 and 308.15 K over entire range of composition. The observed value were used to compute the excess molar volume , deviation in viscosity and isotropic compressibility. The result was interpreted the intermolecular interaction between solution with solvent.

Key Words : Ultrasonic velocity, Density, Viscosity, Excess molar volume, viscosity deviation, Isentropic Compressibility..

Introduction :

The studies of ultrasonic velocity, Viscosity and density are being increasingly used as tools for investigation of properties of pure component and the nature of intermolecular interaction between the binary liquid mixtures constituents.

Earlier we have studied the ultrasonic velocity , density and viscosity of some alkanols with different solvent (1-3). The experimental investigation of excess thermodynamic properties of industrially significant liquid mixtures .

In presence studied measurement of density, viscosity and ultrasonic velocities of 2 binary liquid mixtures of 2- Butanol and Isodecanol I with O Nitrotolune as a organic solvent have been observed at two temperatures 298.15 and 308.15 K

The study of ultrasonic velocity, density and viscosity measurement are widely used in characterising the phsico- chemical properties .The alcohols are strongly self associated liquid with three dimensional network of hydrogen bond [5]. The investigation regarding the molecular association in organic binary mixture having one of the alkanol group. Since alkanol group is highly polar and can be association with any other group having some degree of polar attraction

Experimental :

The chemicals used are of A.R. grade with minimum assay of 99.9 % obtained from Sigma Aldrich or s. d fine chemicals India. Bi-capillary pycnometer (10ml) was used to measured densities. An airtight stopper bottles were used to prepare and store the binary liquid mixtures of different known concentrations. The shimatzu electronic digital balance (± 0.1mg.) was used to measured weights of the samples. The Ubbelohde viscometer (20ml) was used to measure the viscosity. The efflux time was determined using a digital clock to within ±0.015 sec. The ultrasonic velocities (U) in liquid mixtures were measured using an ultrasonic interferometer (Mittal, F-81, 2 MHz, ±0.1 ms^{-1}).

Theory and Calculation :

Following equations been used to calculate different parameters in binary solutions

a) The molar excess volume

$$V^E = \frac{M_1X_1+M_2X_2}{\rho_{12}} - \frac{M_1X_1}{\rho_1} - \frac{M_2X_2}{\rho_2} \quad (1)$$

b) The viscosity deviation

$$\ln\eta_m = X_1\ln\eta_1 + X_2\ln\eta_2 \quad (2)$$

$$\Delta\eta_m = \eta_{12} - X_1\eta_1 - X_1\eta_2 \quad (3)$$

c) Deviation in isentropic compressibility

$$\Delta k_S = k_S - \Phi_1 k_{S1} - \Phi_2 k_{S2} \quad (4)$$

Where k_{S1}, k_{S2} and k_S are isentropic compressibility of liquid mixtures and Φ is volume fraction of pure i^{th} component in the mixture and is defined as

$$\phi = \frac{(Xi\ Vi)}{(\Sigma\ Xi\ Vi)} \quad (5)$$

Where x_1 and V_i are mole fraction and molar volume of i^{th} component in the mixture.

Result and Discussion :

The experimental values of density (ρ) viscosity (η) ultrasonic velocity (U), Excess volume (V^E), viscosity deviations and ($\Delta\eta$), deviation on isentropic compressibility (Δk_S) for binary Systems of 2-Butanol and Isodecanol (1) with o-nitro toluene (2) at 298.15K

and 308.15K are reported in Tables1 and 2 respectively. The variation of excess parameters with mole fraction of alkanols at 298.15K are plotted in Figure 1-4. shows that excess molar volume ,ultrasonic velocity, viscosity deviation and deviation isentropic compressibility are against mole fraction of alkanols at given temperature. In studied work the excess molar volume (V^E) values have been observed negative which attributed strong molecular interaction between the unlike molecules[6]. Generally when two solvents are mixed the molecular interaction held will be depend upon the type and nature of molecules. The positive excess volumes attribute structure breaking interactions while negative excess volumes attribute structure making interactions [7].

The observed V^E values may be analysed in terms of several effects which may be categorised as physical, chemical and geometrical contributions [12].The physical interactions compromise mainly dispersion forces and non specific physical interaction giving positive contribution. The chemical interaction involves the charge transfer complexes, resulting in contraction of volume, geometrical or structural contribution arising from the geometrical fitting of one component into other [4] The negative, viscosity deviation and deviation in isentropic compressibility may be attributed to existence of dispersion dipole forces between unlike molecules and related to the difference in size and shape of molecules [8]. Increase of temperature disturbs hetero and homo association of molecules which increase the fluidity of the liquid. The values of viscosity deviation are more negative for Isodecanol which provides additional evidences for existence of interaction of weak magnitude like dipole –induced dipole type between components of liquid[15]. The magnitude of viscosity deviation and deviation isentropic compressibility the sign and extent of deviation of these properties from idealist depends upon the strength of interaction between unlike molecules. According to fort et al. the excess viscosity gives the molecular interaction between interacting molecules. For the system where dispersion, induction and dipolar forces which are operated by values of excess viscosity are found to be negative, the large negative values of exc viscosity for the system can be attributed to th presence of dispersion, induction and dipolar force between the components. The positive isentropi compressibility which indicates loosely packe molecules in the binary system. The Isodecanol ha more negative viscosity deviation but less negativ isentropic compressibility values this is due to structura differences in these two alcohol molecules.

Conclusion :

The experimental data of density, viscosity and ultrasonic velocity are reported for binary mixtures of 2-Butanol and Isodecanol with O-nitro toluene over entire range of mole fractions at 298.15K and 308.15K. Calculated, viscosity deviation, excess molar volume and deviation in isentropic compressibility show large negative deviations for most investigated binary system This reveals the existence of molecular interaction in binary system. The present investigation shows that greater molecular interaction exist in Isodecanol and O-nitrotolune binary mixture which may be due to presence of more carbon –carbon linkage than 2-Butanol.

References :

1. Kinocid, *J.Am. Chem. Soc.* 51, 2950 (1929).
2. K. S. Mehara., *Indian J. Pure and Appl. Phys.*, 38,760 (2000).
3. R. J. Fortand W. R. Moore, *Trans Faraday Society*, 61, 2102 (1965)
4. Patil S. R., Deshpande. U. Gand Hiray. A. R Rasayan J. Chem, **2010**, 66-73
5. Alvarez, E.; Cancela, A.; Maceiras, R.; Navaza, J.M., Taboas, R.: Density, Viscosity, Excess molar volume, and Viscosity Deviations of Three amyl Alcohols + Ethanol Binary Mixtures from 293.15 to 323.15 K.J. Chem. Eng. Data **2006**, 51, 940-945.
6. S.B. Kasare and B.A.Patdai, *Indian J. Pure and Appl. Phys* **25** 180 (1987)
7. S. Jyostna, S. Nallani, *J.Chem. Thermodyn.*, **38(3)**, 272 (2006), DOI:10.1016/j.jct. 2005.05.06
8. A. Ali.A.K.Nain, *Indian J.Phys* **74B**, 63 (2000).
9. M.Dzida, J.Chem Eng Data, **52(2)** 521 (2007).

Printed by: PRASHANT PUBLICATIONS

ISSN : 2230-9578
January 2020

Table 1: Values of density (ρ) viscosity (η) ultrasonic velocity (U), Excess volume (V^E), viscosity deviations and ($\Delta\eta$), deviation on isentropic compressibility (Δk_S) for Binary System of 2-Butanol (1) with O-nitrotolune(2) at 298.15K and 308.15K.

Temp. (K)	x_1	ρ (gm/cm^3)	$\eta 10^3$ (Nsm^{-2})	U (MS^{-1})	$V^E \times 10^6$ (m^3 mole^{-1})	$\Delta\eta \times 10^3$ (Kg m^{-1} s^{-1})	$\Delta k_S \times 10^{11}$ (m^2 N^1)
298.15	0.0000	0.80210	2.95470	1451.0	0.0000	0.000	592.2
	0.0568	0.83140	2.37190	1483.9	-0.9900	-52.487	546.3
	0.1192	0.85680	2.08440	1500.7	-1.4098	-74.839	518.2
	0.1881	0.89150	1.97480	1517.3	-2.7197	-78.736	487.2
	0.2651	0.92200	1.83930	1565.2	-3.4087	-84.392	442.7
	0.3514	0.93510	1.55420	1625.0	-2.0673	-104.054	418.3
	0.4480	0.98870	1.63930	1650.5	-4.9552	-85.641	364.2
	0.5579	1.01290	1.60790	1700.7	-4.5311	-77.514	341.3
	0.6840	1.04240	1.51270	1714.3	-4.4814	-74.106	326.4
	0.8293	1.05410	1.43650	1730.5	-2.2514	-66.830	316.8
	1.0000	1.06920	1.92950	1932.0	0.0000	0.000	250.6
308.15	0.0000	0.79380	2.09760	1401.4	0.0000	0.000	641.5
	0.0568	0.82260	1.75580	1448.9	-0.9627	-31.418	579.1
	0.1192	0.84780	1.57690	1456.0	-1.3778	-46.250	556.4
	0.1881	0.88260	1.50860	1500.5	-2.7343	-49.704	503.2
	0.2651	0.91280	1.43760	1520.8	-3.4114	-53.031	473.7
	0.3514	0.92660	1.35960	1549.9	-2.1281	-56.602	449.3
	0.4480	0.97890	1.32270	1558.5	-4.9346	-55.559	420.6
	0.5579	1.00320	1.30330	1665.4	-4.5158	-52.114	359.4
	0.6840	1.04280	1.24830	1669.2	-5.5663	-51.435	344.2
	0.8293	1.05430	1.14580	1672.3	-3.3319	-54.565	339.2
	1.0000	1.06030	1.60760	1719.2	0.0000	0.000	319.1

Table 2 : Values of density (ρ) viscosity (η) ultrasonic velocity (U), Excess volume (V^E), viscosity deviations and ($\Delta\eta$), deviation on isentropic compressibility (Δk_S) for Binary System of Isodecanol () with O-nitrotolune(2) at 298.15K and 308.15K .

Temp. (K)	x_1	ρ (gm/cm^3)	$\eta 10^3$ (Nsm^{-2})	U (MS^{-1})	$V^E \times 10^6$ (m^3 mole^{-1})	$\Delta\eta \times 10^3$ (Kg m^{-1} s^{-1})	$\Delta k_S \times 10^{11}$ (m^2 N^1)
298.15	0.0000	0.85750	12.80620	1584.5	0.0000	0.000	464.5
	0.1142	0.88060	10.73480	1629.2	-1.1496	-83.056	427.8
	0.2254	0.91160	8.62750	1649.2	-3.4823	-172.837	403.3
	0.3309	0.92810	6.75690	1661.6	-2.9375	-245.148	390.3
	0.4344	0.95120	5.04190	1664.4	-3.3671	-304.074	379.5
	0.5355	0.98540	3.67280	1664.7	-5.2820	-331.021	366.2
	0.6338	1.01590	3.39130	1668.1	-6.2695	-252.253	353.8
	0.7291	1.03970	2.51920	1699.7	-6.1060	-235.808	332.9
	0.8221	1.07590	2.43480	1814.5	-7.3206	-143.095	282.3
	0.9128	1.15260	2.18490	1847.6	-12.5922	-69.433	254.2
	1.0000	1.06920	1.92950	1932.8	0.0000	0.000	250.4
308.15	0.0000	0.84560	7.89520	1546.7	0.0000	0.000	494.3
	0.1142	0.87300	7.66480	1596.0	-2.0320	48.686	449.7
	0.2254	0.90400	5.84310	1597.7	-4.3208	-63.567	433.4
	0.3309	0.92040	4.67200	1598.4	-3.6676	-114.342	425.3
	0.4344	0.94380	3.69300	1600.2	-4.0746	-147.166	413.8
	0.5355	0.97680	2.80820	1601.2	-5.7517	-172.078	399.3
	0.6338	1.00710	2.66070	1629.9	-6.6567	-125.021	373.8
	0.7291	1.03150	2.08260	1633.8	-6.5022	-122.910	363.2
	0.8221	1.06710	1.99230	1647.3	-7.5878	-73.465	345.3
	0.9128	1.14250	1.85440	1683.0	840.7976	-30.227	2477.5
	1.0000	1.06030	1.60760	1719.2	0.0000	0.000	319.1

Figure 1.

(a) V^E against mole fraction for 2-Butanol and Isodecanol with O-nitrotolune at 298.15 K

(b) Ultrasonic velocity against mole fraction for 2-Butanol and Isodecanol with O-nitrotolune at 298.15 K

(c) Δn against mole fraction for 2-Butanol and Isodecanol with O-nitrotolune at 298.15 K

(d) ΔKs against mole fraction for 2-Butanol and Isodecanol with O-nitrotolune at 298.15 K

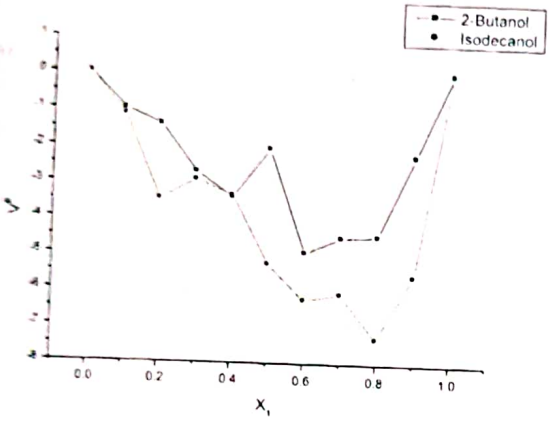

(a)

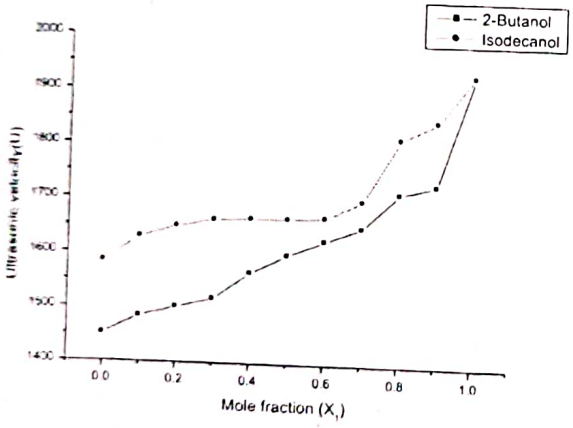

(b)

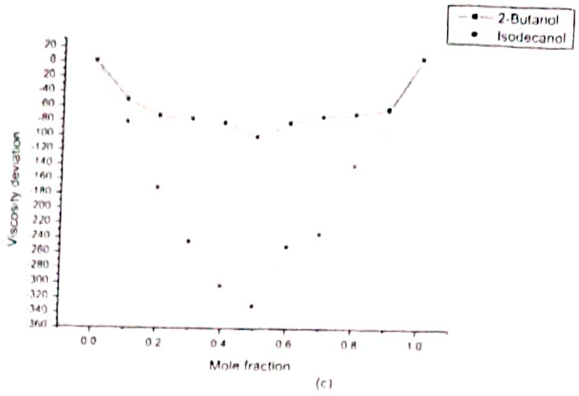

(c)

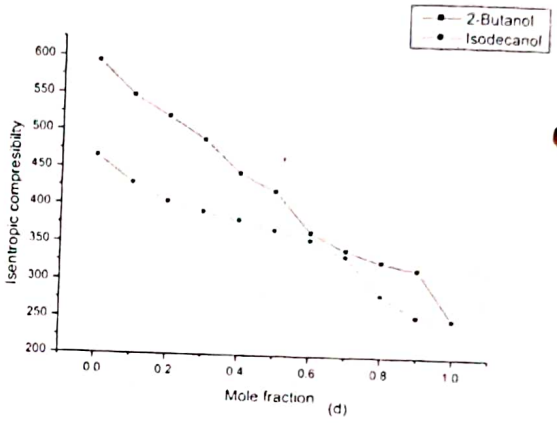

(d)

Introduction to Algebra

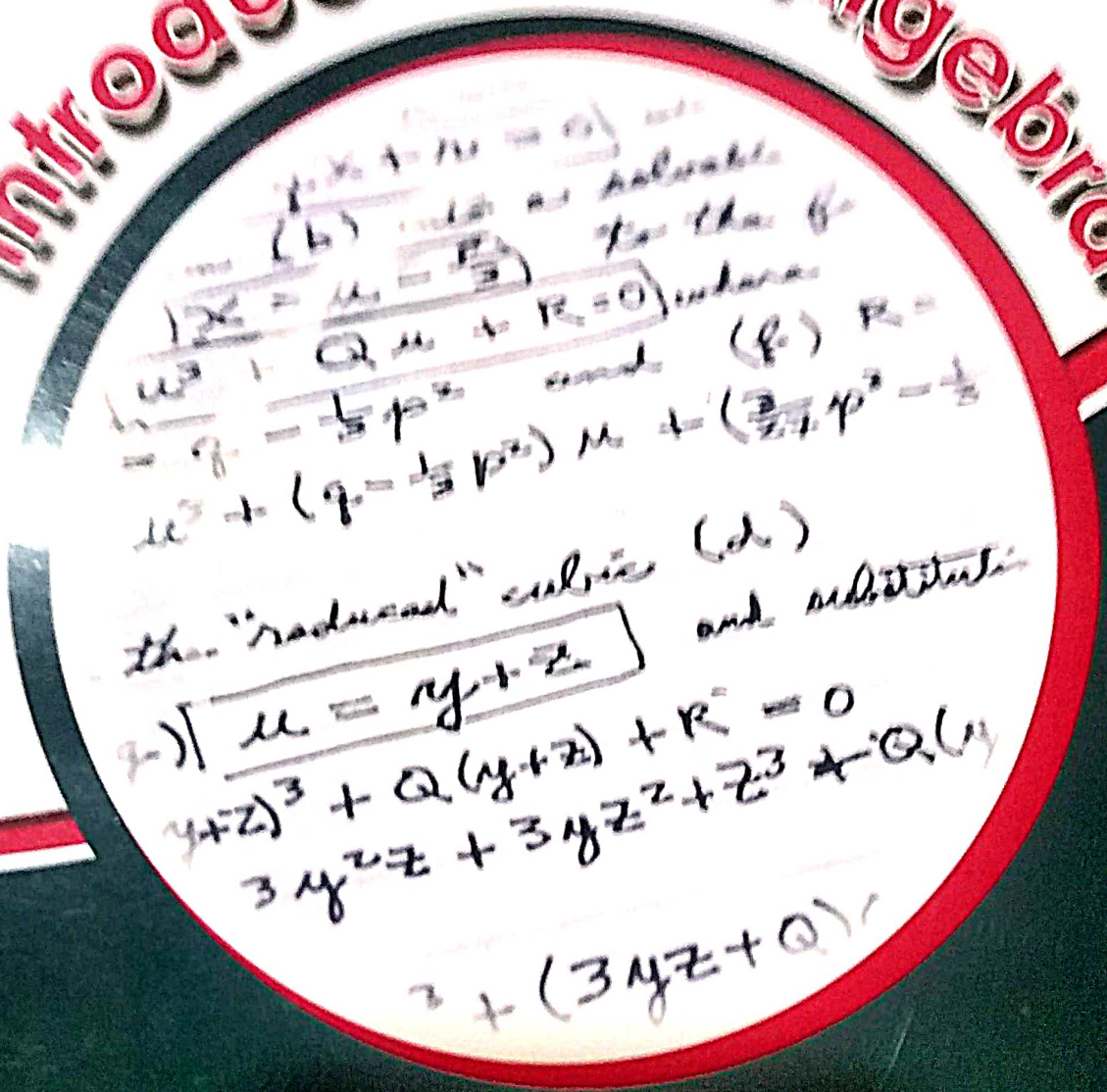

Mr. S. R. Gaikwad

अथर्व

28

INTRODUCTION TO ALGEBRA

Mr.S.R.Gaikwad
M.Sc.M.Phil.
Department of Mathematics
J.D.M.V.P. Co-op Samaj
Arts , Commerce and Science College,
Yawal. Dist Jalgaon

ATHARVA PUBLICATIONS

Introduction to Algebra
Mr. S. R. Gaikwad

© Reserved

ISBN : 978-93-88544-72-6

Publisher & Printer: Mr. Yuvraj Mali

Dhule : 17, Devidas Colony, Varkhedi Road, Dhule - 424001.
Contact: 9405206230

Jalgaon : Basement, Om Hospital, Near Anglo Urdu Highschool,
Dhake Colony, Jalgaon - 425001.
Contact : 0257-2239666, 9764694797

Email : atharvapublications@gmail.com
Website : www.atharvapublications.com

First Edition : 19 Feb. 2019
Type Setting : Atharva Publications
Price : 250/-

DIFFERENTIAL CALCULUS

27

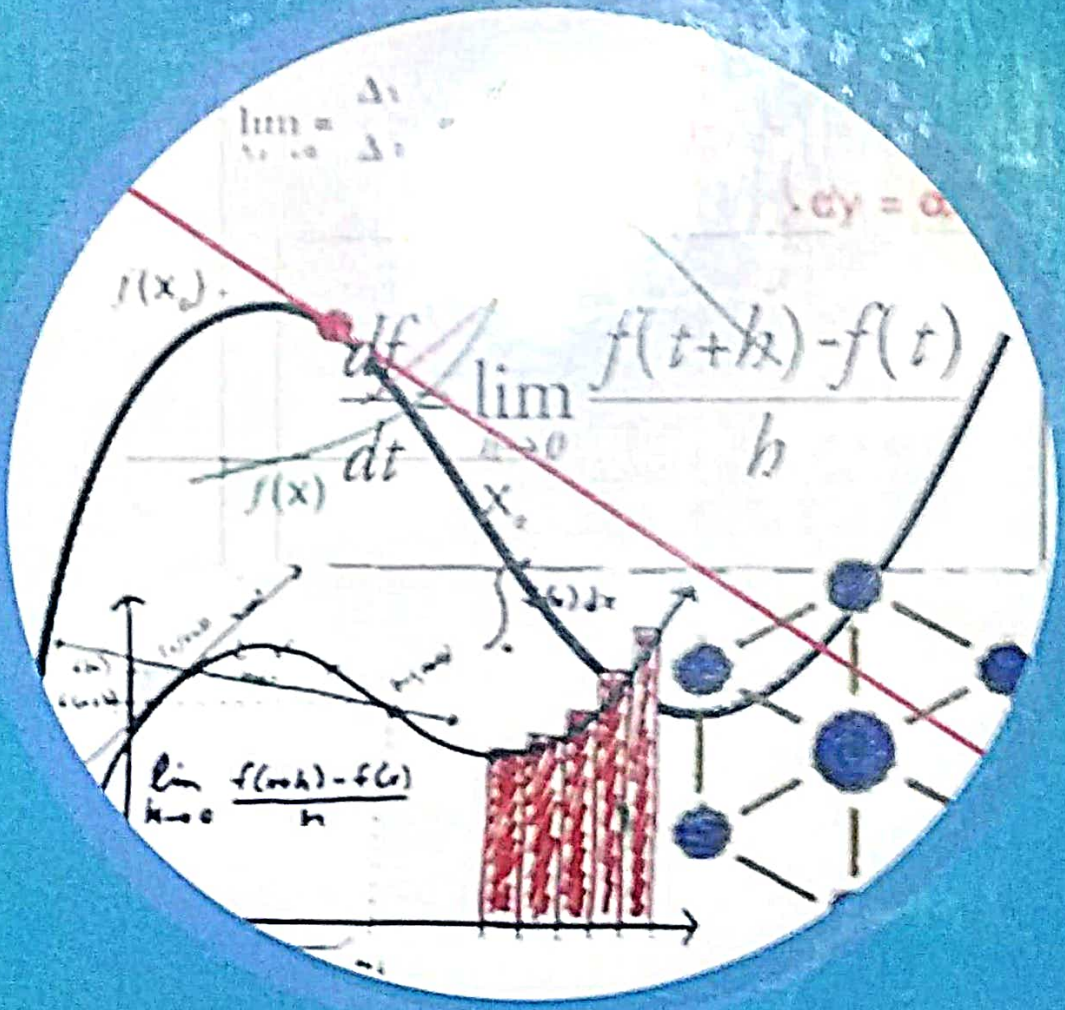

Mr. S. R. Gaikwad

Kumud Publications

27

DIFFERENTIAL CALCULUS

Mr. S. R. Gaikwad
Department of Mathematics,
J.D.M.V.P.Co-Op.Samaj's Arts, Commerce and Science College,
Yawal.

Kumud Publications

Edition: 2019

© All rights reserved.

All rights are reserved. No part(s) of this publication may be reproduced or distributed in any from by any means or stored in a database retrieval system without the prior written permission of the publisher.

ISBN: 978-93-88834-53-7

Published By:

Kumud Publications

2672, Front of Abhinav School, Dhake Colony, Pratap Nagar, Jalgaon - 425001.

Phone (0257) 2239666, 9405206230, 9923374822

Email:- kumudpublications@gmail.com

Price:

Rs. 450/-

Type Setting:

Kumud Publications

CBCS PATTERN

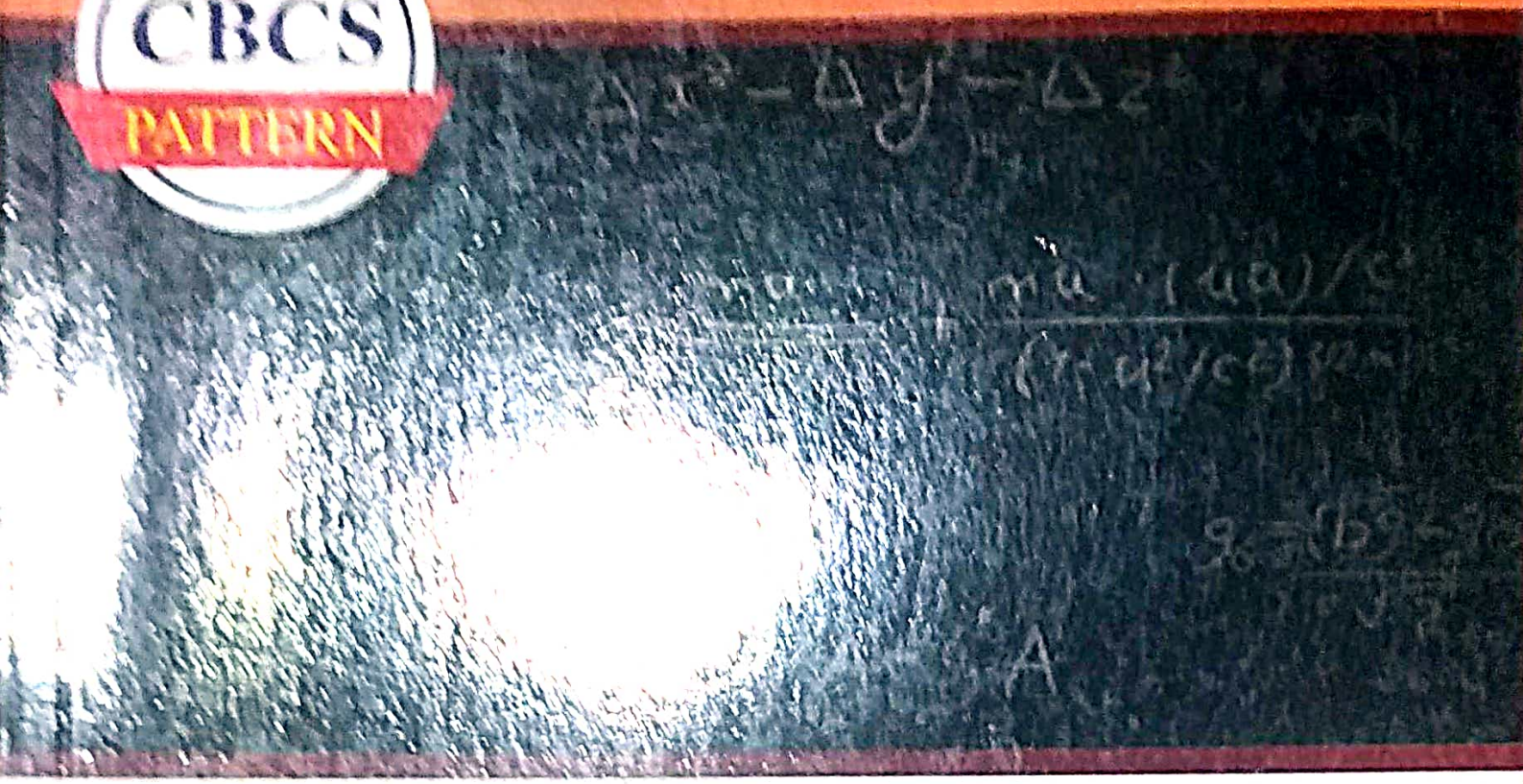

As per Syllabus of
Kavayitri Bahinabai Chaudhari North Maharashtra University, Jalgaon
With effect from June- 2018

F. Y. B. Sc. • Sem II • Paper-I • MTH - 202

Theory of Equations

Dr. A. R. Gotmare
Dr. S. G. Dapke
Dr. C. S. Sutar
S. R. Gaikwad
V. T. Bagul
I. M. Jadhav

नूतन | Kumud

As per Syllabus of Kavayitri Bahinabai Chaudhari North Maharashtra University, Jalgaon with effect from June-2018

Choice Based Credit System (CBCS)

A Text book of

MATHEMATICS

Theory of Equations

[MTH-202]

F.Y. B.Sc. (CBCS) Semester II

Paper – I

Dr. A. R. Gotmare
G. D. M. Arts, K. R. N. Commerce and M. D. Science College, Jamner, Dist. Jalgaon.

S. R. Gaikwad
J.D.M.V.P Arts, Commerce and Science College, Yawal Dist. Jalgaon

Dr. S. G. Dapke
H. J. Thim College of Arts and Science College Mehrun, Dist. Jalgaon.

V. T. Bagul
S.R.N.D. Arts, Commerce and Science College, Bhadgaon, Dist. Jalgaon

Dr. C. S. Sutar
PSGVPM's Shri S.I.Patil Arts, G.B. Patel Science and STKVS Commerce College Shahada Dist Nandurbar

I. M. Jadhav
G. D. M. Arts, K. R. N. Commerce and M. D. Science College, Jamner, Dist. Jalgaon

Kumud

वृंदा

(A Joint Venture)

Theory of Equations
MTH-202

SEMESTER – II

First Edition: 1st December

© All rights reserved.

All rights are reserved. No part(s) of this publication may be reproduced or distributed in any from by any means or stored in a database retrieval system without the prior written permission of the publisher.

ISBN: 978-81-93924-16-7

Published By:

Kumud Publications

2672, Front of Abhinav School, Dhake Colony, Pratap Nagar, Jalgaon - 425001.

Phone (0257) 2239666, 9405206230, 9923374822

Email:- kumudpublications@gmail.com

and

Vrinda Publications

M.G. Road, Jalgaon - 425001.

Phone (0257) 2225818

Email:- vrinda_publication@yahoo.com

Price: 50/-

Type Setting:

Vrinda Publications

RAVI BADGUJAR, JALGAON. M. 9422562360.

CBCS PATTERN

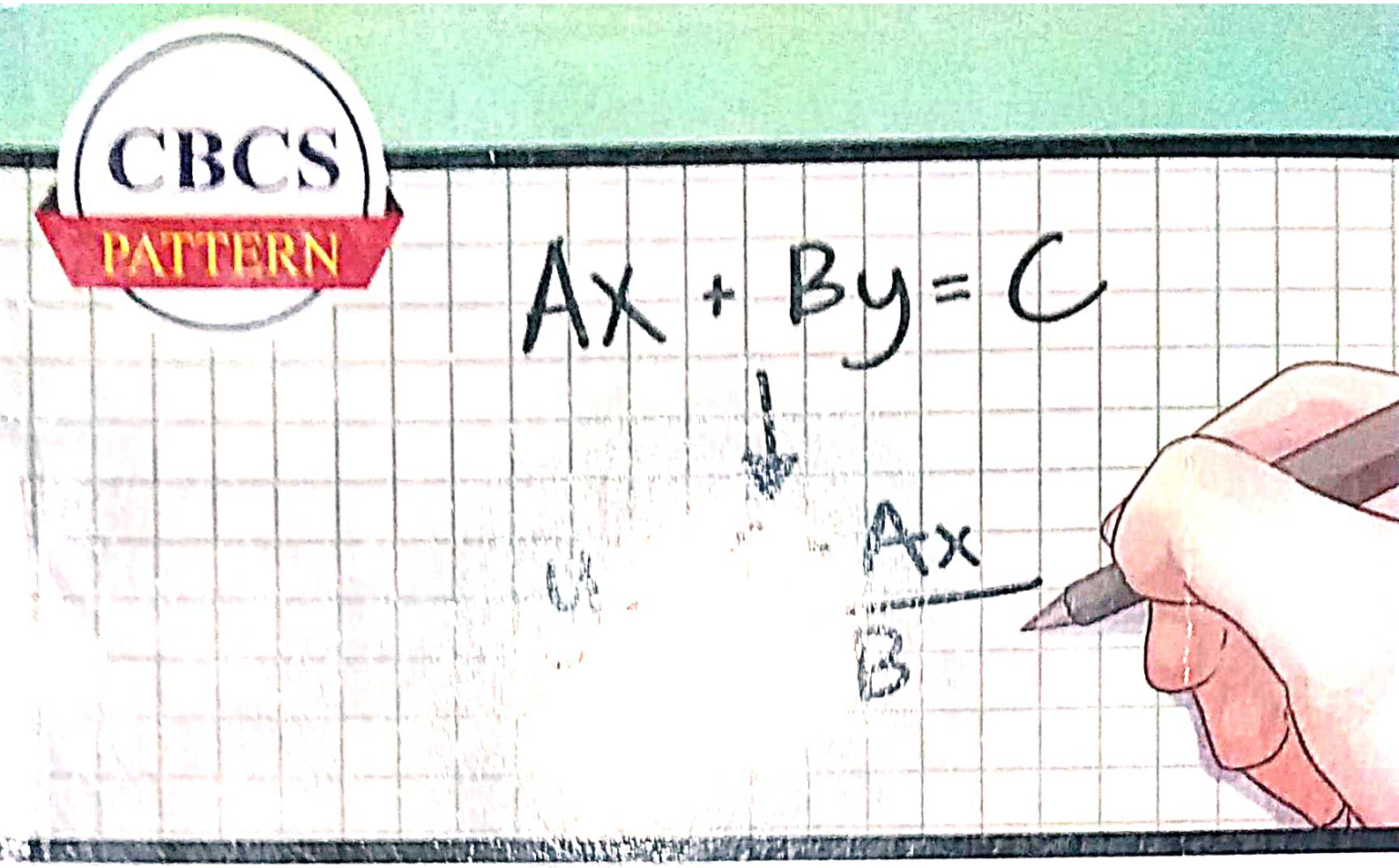

As per Syllabus of
Kavayitri Bahinabai Chaudhari North Maharashtra University, Jalgaon
With effect from June- 2018

F. Y. B. Sc. • Sem II • Paper-I • MTH - 201

Ordinary Differential Equations

Dr. A. R. Gotmare
Dr. S. G. Dapke
Dr. C. S. Sutar
S. R. Gaikwad
V. T. Bagul
I. M. Jadhav

वृंदा | Kumud

As per Syllabus of Kavayitri Bahinabai Chaudhari North Maharashtra University, Jalgaon
with effect from June-2018

Choice Based Credit System (CBCS)

A Text book of

MATHEMATICS

Ordinary Differential Equations

[MTH-201]

F.Y. B.Sc. (CBCS) Semester II

Paper – I

Dr. A. R. Gotmare
G. D. M. Arts, K. R. N. Commerce and M. D. Science College, Jamner, Dist. Jalgaon.

S. R. Gaikwad
J.D.M.V.P Arts, Commerce and Science College, Yawal Dist. Jalgaon

Dr. S. G. Dapke
H. J. Thim College of Arts and Science College Mehrun, Dist. Jalgaon.

V. T. Bagul
S.R.N.D. Arts , Commerce and Science College, Bhadgaon , Dist. Jalgaon

Dr. C. S. Sutar
PSGVPM's Shri S.I.Patil Arts, G.B. Patel Science and STKVS Commerce College Shahada Dist Nandurbar

I. M. Jadhav
G. D. M. Arts, K. R. N. Commerce and M. D. Science College, Jamner, Dist. Jalgaon

Kumud वृंदा

(A Joint Venture)

Ordinary Differential Equations
MTH-201

SEMESTER – II

First Edition: 1st December

© All rights reserved.

All rights are reserved. No part(s) of this publication may be reproduced or distributed in any from by any means or stored in a database retrieval system without the prior written permission of the publisher.

ISBN: 978-81-939241-5-0

Published By:

Kumud Publications

2672, Front of Abhinav School, Dhake Colony, Pratap Nagar, Jalgaon - 425001.

Phone (0257) 2239666, 9405206230, 9923374822

Email:- kumudpublications@gmail.com

and

Vrinda Publications

M.G. Road, Jalgaon - 425001.

Phone (0257) 2225818

Email:- vrinda_publication@yahoo.com

Price: 100/-

Type Setting:

Vrinda Publications

RAVI BADGUJAR, JALGAON. M. 9422562360.

As per Syllabus of
Kavayitri Bahinabai Chaudhari North Maharashtra University, Jalgaon
With effect from June- 2019

CBCS PATTERN

S.Y.B.Sc
Sem - III
MTH - 301

MATHEMATICS

Calculus of Several Variables

Dr. A. R. Gotmare
S. R. Gaikwad
S. G. Dapke
Dr. C. M. Jadhav

As per Syllabus of Kavayitri Bahinabai Chaudhari North Maharashtra University, Jalgaon
with effect from June 2019

Choice Based Credit System (CBCS)

A Text book of

MATHEMATICS

Calculus of Several Variables

(MTH 301)

S.Y.B.Sc. (CBCS) Semester III

Dr. A. R. Gotmare
G. D. M. Arts, K. R. N. Commerce
and M. D. Science College, **Jamner**
Dist. Jalgaon.

S. R. Gaikwad
J. D. M. V. P. Co-op Samaj's
Arts, Commerce and Science
College **Yawal** Dist. Jalgaon

S. G. Dapke
IES' S.H.J. Thim College of
Arts and Science, Mehrun,
Jalgaon.

Dr. C. M. Jadhav
Dadasaheb Rawal College of
Arts and Science, **Dondaicha**
Dist. Dhule

(A Joint Venture)

Calculus of Several Variables (MTH-301)

SEMESTER – III

First Edition: 1st August 2019

© All rights reserved.

All rights are reserved. No part(s) of this publication may be reproduced or distributed in any from by any means or stored in a database retrieval system without the prior written permission of the publisher.

ISBN: 978-93-88834-08-7

Published By:

Kumud Publications

2672, Front of Abhinav School, Dhake Colony, Pratap Nagar, Jalgaon - 425001.

Phone (0257) 2239666, 9405206230, 9923374822

Email:- kumudpublications@gmail.com

and

Vrinda Publications

M.G. Road, Jalgaon - 425001.

Phone (0257) 2225818

Email:- vrinda_publication@yahoo.com

Price: 75/-

Type Setting:
Vrinda Publications

As per Syllabus of
Kavayitri Bahinabai Chaudhari North Maharashtra University, Jalgaon
With effect from June- 2019

CBCS PATTERN

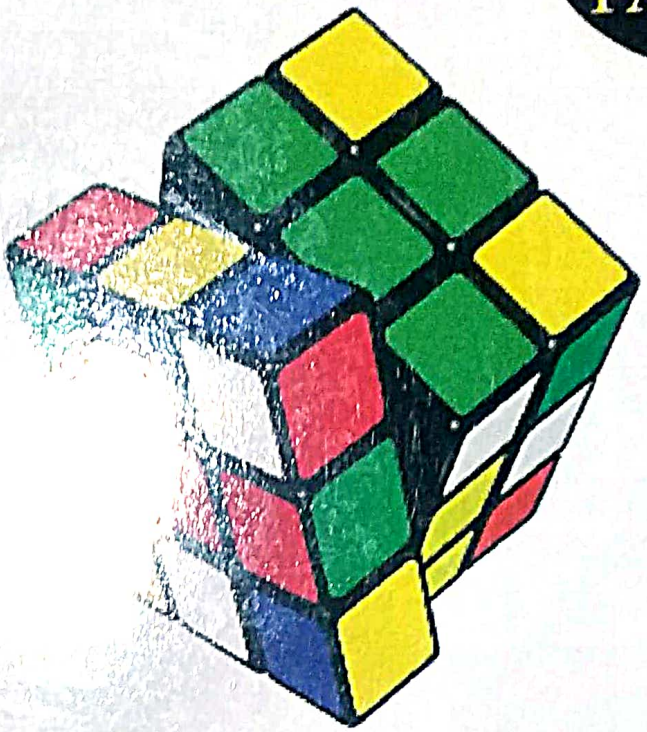

S.Y.B.Sc.
Sem - III
MTH - 302(A)

MATHEMATICS

GROUP THEORY

Dr. A. R. Gotmare
S. R. Gaikwad
S. G. Dapke
A. V. Patil

As per Syllabus of Kavayitri Bahinabai Chaudhari North Maharashtra University, Jalgaon with effect from **June-2019**

Choice Based Credit System (CBCS)

A Text book of

MATHEMATICS

Group Theory

(MTH 302-A)

S.Y.B.Sc. (CBCS) Semester III

Dr. A. R. Gotmare
G. D. M. Arts, K. R. N. Commerce and M. D. Science College, **Jamner** Dist. Jalgaon.

S. R. Gaikwad
Arts, Commerce and Science College **Yawal** Dist. Jalgaon

S. G. Dapke
IES' S H.J. Thim College of Arts and Science, Mehrun, **Jalgaon.**

A. V. Patil
Arts, Commerce and Science College, **Navapur** Dist. Dhule

Kumud

वृंदा

(A Joint Venture)

Group Theory (MTH 302-A)

25

SEMESTER – III

First Edition: 1st August 2019

© All rights reserved.

All rights are reserved. No part(s) of this publication may be reproduced or distributed in any from by any means or stored in a database retrieval system without the prior written permission of the publisher.

ISBN: 978-93-88834-06-3

Published By:

Kumud Publications

2672, Front of Abhinav School, Dhake Colony, Pratap Nagar, Jalgaon - 425001.

Phone (0257) 2239666, 9405206230, 9923374822

Email:- kumudpublications@gmail.com

and

Vrinda Publications

M.G. Road, Jalgaon - 425001.

Phone (0257) 2225818

Email:- vrinda_publication@yahoo.com

Price: 125/-

Type Setting:
Vrinda Publications

As per Syllabus of
Kavayitri Bahinabai Chaudhari North Maharashtra University, Jalgaon
With effect from June- 2019

CBCS PATTERN

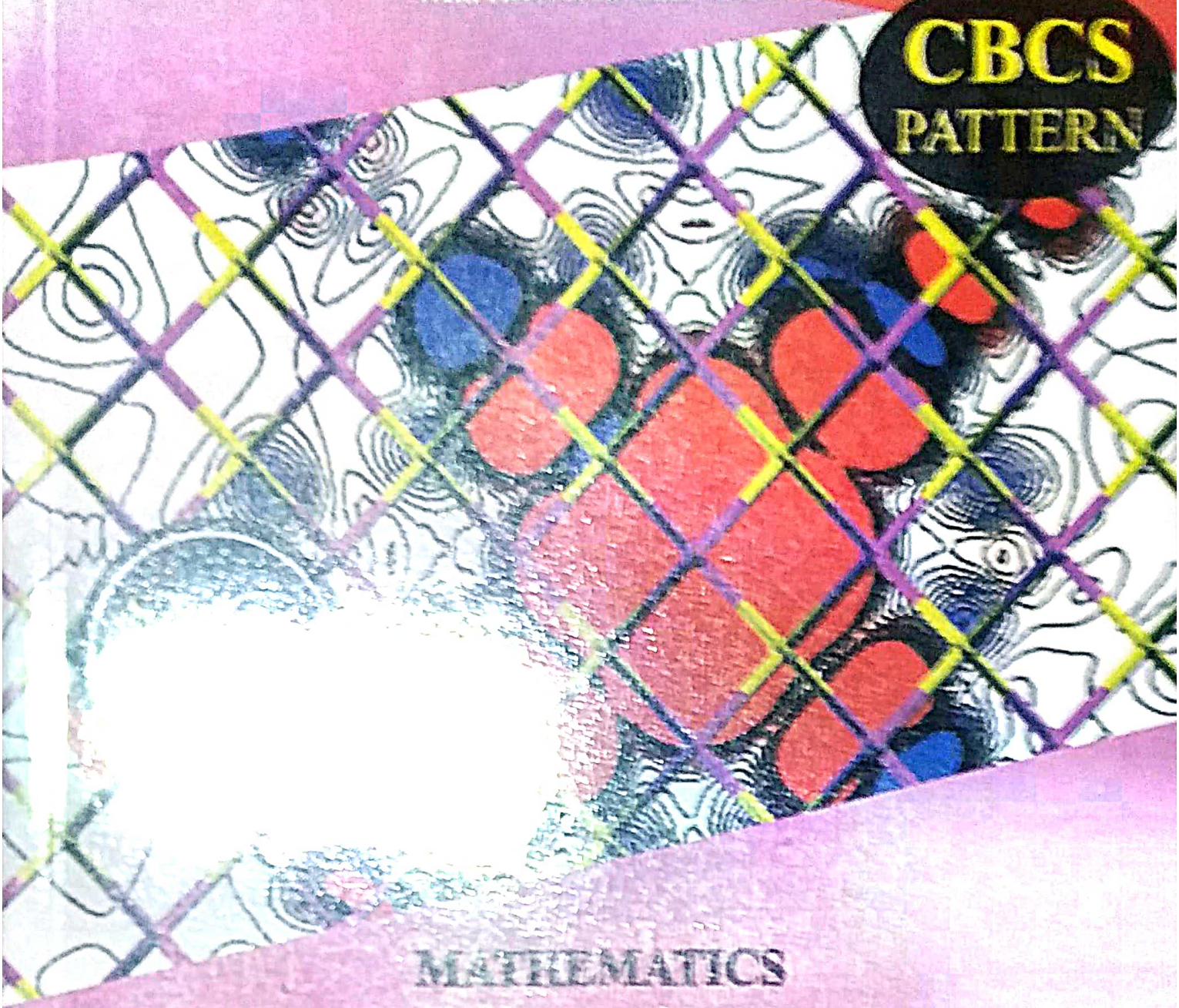

MATHEMATICS

Theory of Groups and Codes

Dr. A. R. Gotmare
S. R. Gaikwad
V. D. Patil
Dr. C. M. Jadhav

As per Syllabus of Kavayitri Bahinabai Chaudhari North Maharashtra University, Jalgaon with effect from **June-2019**

Choice Based Credit System (CBCS)

A Text book of

MATHEMATICS

Theory of Groups and Codes
(MTH 302-B)

S.Y.B.Sc. (CBCS) Semester III

Dr. A. R. Gotmare
G. D. M. Arts, K. R. N. Commerce and M. D. Science College, **Jamner**
Dist. Jalgaon.

S. R. Gaikwad
Arts, Commerce and Science College **Yawal**
Dist. Jalgaon

V. D. Patil
V. S. Naik, Arts, Commerce and Science College **Raver**
Dist. Jalgaon

Dr C. M. Jadhav
Dadasaheb Rawal College of Arts and Science, **Dondaicha**
Dist Dhule

Kumud

वृंदा

(A Joint Venture)

Theory of Groups and Codes (MTH 302-B)

24

SEMESTER – III

First Edition: 1st August 2019

© All rights reserved.

All rights are reserved. No part(s) of this publication may be reproduced or distributed any from by any means or stored in a database retrieval system without the prior writ permission of the publisher.

ISBN: 978-93-88834-07-0

Published By:

Kumud Publications

2672, Front of Abhinav School, Dhake Colony, Pratap Nagar, Jalgaon - 425001.

Phone (0257) 2239666, 9405206230, 9923374822

Email:- kumudpublications@gmail.com

and

Vrinda Publications

M.G. Road, Jalgaon - 425001.

Phone (0257) 2225818

Email:- vrinda_publication@yahoo.com

Price: 125/-

Type Setting:
Vrinda Publications

As per Syllabus of Kavayitri Bahinabai Chaudhari
North Maharashtra University, Jalgaon with effect from June - 2019

S.Y.B.Sc.
Sem - II

MTH - 401

CBCS
PATTERN

MATHEMATICS

COMPLEX VARIABLES

- Dr. A. R. Gotmare
- S. R. Gaikwad
- Dr. S. G. Dapke
- Dr. C. M. Jadhav

As per Syllabus of Kavayitri Bahinabai Chaudhari North Maharashtra University, Jalgaon with effect from June-2019

Choice Based Credit System (CBCS)

A Text book of

MATHEMATICS

Complex Variables

(MTH 401)

S.Y.B.Sc. (CBCS) Semester IV

Dr. A. R. Gotmare
G. D. M. Arts, K. R. N. Commerce and M. D. Science College, Jamner Dist. Jalgaon.

S. R. Gaikwad
J.D.M.V.P. Co-op Samaj's Arts, Commerce and Science College Varal Dist. Jalgaon

S. G. Dapke
IES' S H.J. Thim College of Arts and Science, Mehrun, **Jalgaon.**

Dr. C. M. Jadhav
Dadasaheb Rawal College of Arts and Science, Dondaicha Dist Dhule

Kumud

वृंदा

(A Joint Venture)

Complex Variables (MTH-401)

23

SEMESTER – IV

First Edition: 1st December 2019

© All rights reserved.

All rights are reserved. No part(s) of this publication may be reproduced or distributed any from by any means or stored in a database retrieval system without the prior written permission of the publisher.

ISBN: 978-93-88834-33-9

Published By:

Kumud Publications

2672, Front of Abhinav School, Dhake Colony, Pratap Nagar, Jalgaon - 425001.

Phone (0257) 2239666, 9405206230, 9923374822

Email:- kumudpublications@gmail.com

and

Vrinda Publications

M.G. Road, Jalgaon - 425001.

Phone (0257) 2225818

Email:- vrinda_publication@yahoo.com

Type Setting:

Vrinda Publications

[illegible] of Kavayitri Bahinabai Chaudhari
[illegible] University, Jalgaon with effect from June - 2019

S.Y.B.Sc.
Sem - IV
MTH - 402(A)

MATHEMATICS

DIFFERENTIAL EQUATIONS

• Dr. A. R. Gotmare
• S. R. Gaikwad
• Dr. S. G. Dapke
• Dr. C. M. Jadhav

As per Syllabus of Kavayitri Bahinabai Chaudhari North Maharashtra University, Jalgaon
with effect from June-2019

Choice Based Credit System (CBCS)

A Text book of

MATHEMATICS

Differential Equations

[MTH 402-A]

S.Y.B.Sc. (CBCS) Semester IV Paper II

Dr. A. R. Gotmare
G. D. M. Arts, K. R. N. Commerce and M. D. Science College, Jamner Dist. Jalgaon.

S. R. Gaikwad
J.D.M.V.P. Co-op Samaj's Arts, Commerce and Science College Yawal Dist. Jalgaon

Dr. S. G. Dapke
JES' S.H.J. Thim College of Arts and Science, Mehrun, Jalgaon.

Dr. C. M. Jadhav
Dadasaheb Rawal College of Arts and Science, Dondaicha Dist Dhule

(A Joint Venture)

22

Differential Equations [MTH 402-A]

SEMESTER – IV PAPER - II

First Edition: 1st December 2019

© All rights reserved.

All rights are reserved. No part(s) of this publication may be reproduced or distributed in any from by any means or stored in a database retrieval system without the prior written permission of the publisher.

ISBN: 978-93-88834-40-7

Published By:

Kumud Publications

2672, Front of Abhinav School, Dhake Colony, Pratap Nagar, Jalgaon - 425001.

Phone (0257) 2239666, 9405206230, 9923374622

Email:- kumudpublications@gmail.com

and

Vrinda Publications

M.G. Road, Jalgaon - 425001.

Phone (0257) 2225818

Email:- vrinda_publication@yahoo.com

Type Setting:

Vrinda Publications

As per Syllabus of Kavayitri Bahinabai Chaudhari
North Maharashtra University, Jalgaon with effect from June - 2019

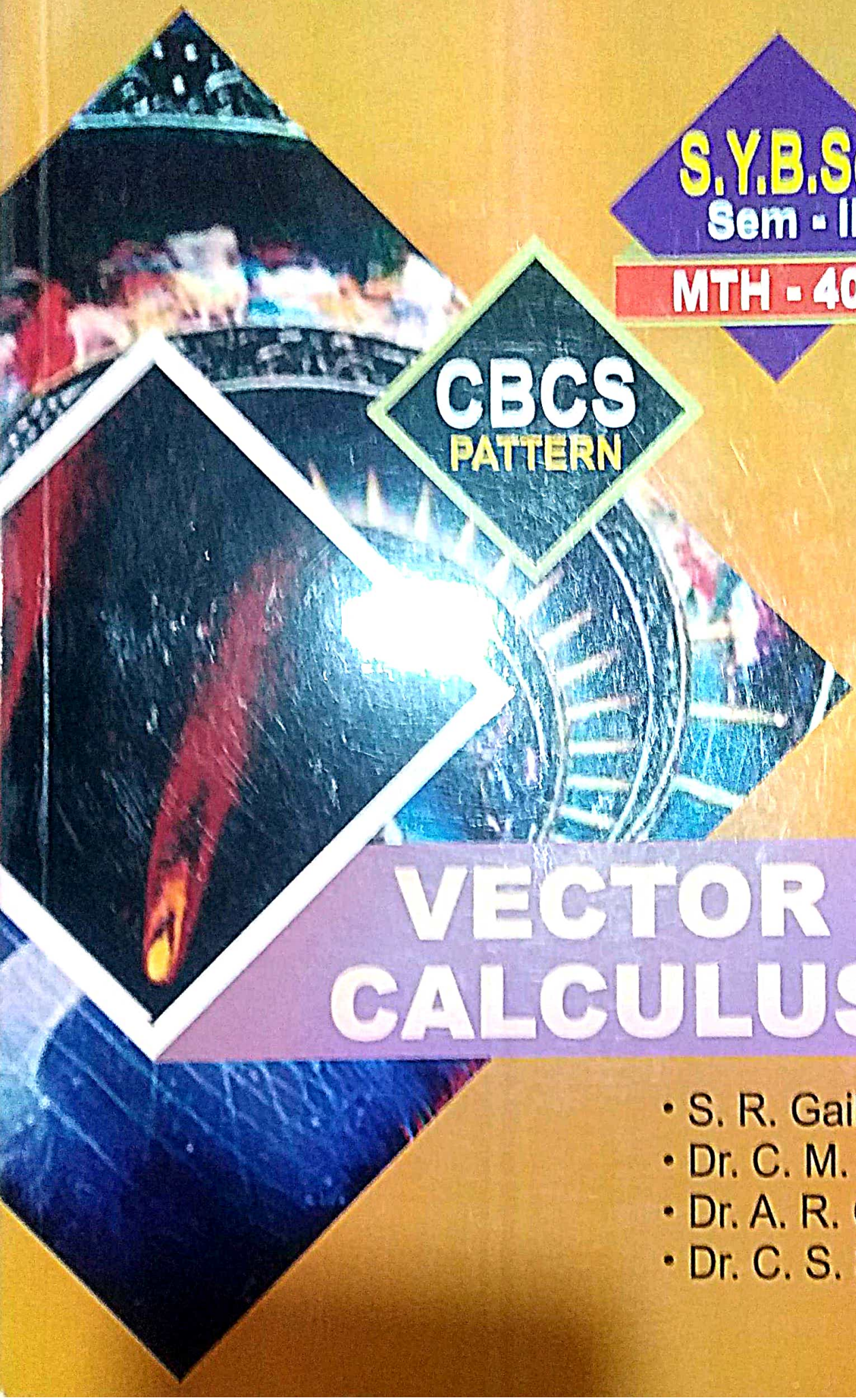

S.Y.B.Sc.
Sem - II
MTH - 404

CBCS
PATTERN

MATHEMATICS

VECTOR CALCULUS

- S. R. Gaikwad
- Dr. C. M. Jadhav
- Dr. A. R. Gotmare
- Dr. C. S. Sutar

As per Syllabus of Kavayitri Bahinabai Chaudhari North Maharashtra University, Jalgaon with effect from **June-2019**

Choice Based Credit System (CBCS)

A Text book of

MATHEMATICS

VECTOR CALCULUS

[MTH 404]

S.Y.B.Sc. (CBCS) Semester IV

SEC- II

S. R. Gaikwad
J.D.M.V.P. Co-op Samaj's
Arts, Commerce and Science College
Yawal Dist. Jalgaon

Dr. A. R. Gotmare
G. D. M. Arts, K. R. N. Commerce
and M. D. Science College, **Jamner**
Dist. Jalgaon.

Dr. C. M. Jadhav
Dadasaheb Rawal College of
Arts and Science, **Dondaicha**
Dist Dhule

Dr. C. S. Sutar
P.S.G.V.P.M.
Arts, Commerce and Science,
Shahada, Dist Dhule

Kumud Publications

वृंदा

(A Joint Venture)

Vector Calculus [MTH 404]

14

SEMESTER – IV SEC - II

First Edition: Feb. 2020

© All rights reserved.

All rights are reserved. No part(s) of this publication may be reproduced or distributed in any from by any means or stored in a database retrieval system without the prior written permission of the publisher.

ISBN: 978-93-88834-54-4

Published By:

Kumud Publications

2672, Front of Abhinav School, Dhake Colony, Pratap Nagar, Jalgaon - 425001.

Phone (0257) 2239666, 9405206230, 9923374822

Email:- kumudpublications@gmail.com

and

Vrinda Publications

M.G. Road, Jalgaon - 425001.

Phone (0257) 2225818

Email:- vrinda_publication@yahoo.com

Type Setting:
Vrinda Publications

As per Syllabus of
Kavayitri Bahinabai Chaudhari North Maharashtra University, Jalgaon
With effect from June- 2018

CBCS PATTERN

MTH - 102

MATHEMATICS | F.Y.B.Sc. / Sem - I / Paper-II

CALCULUS

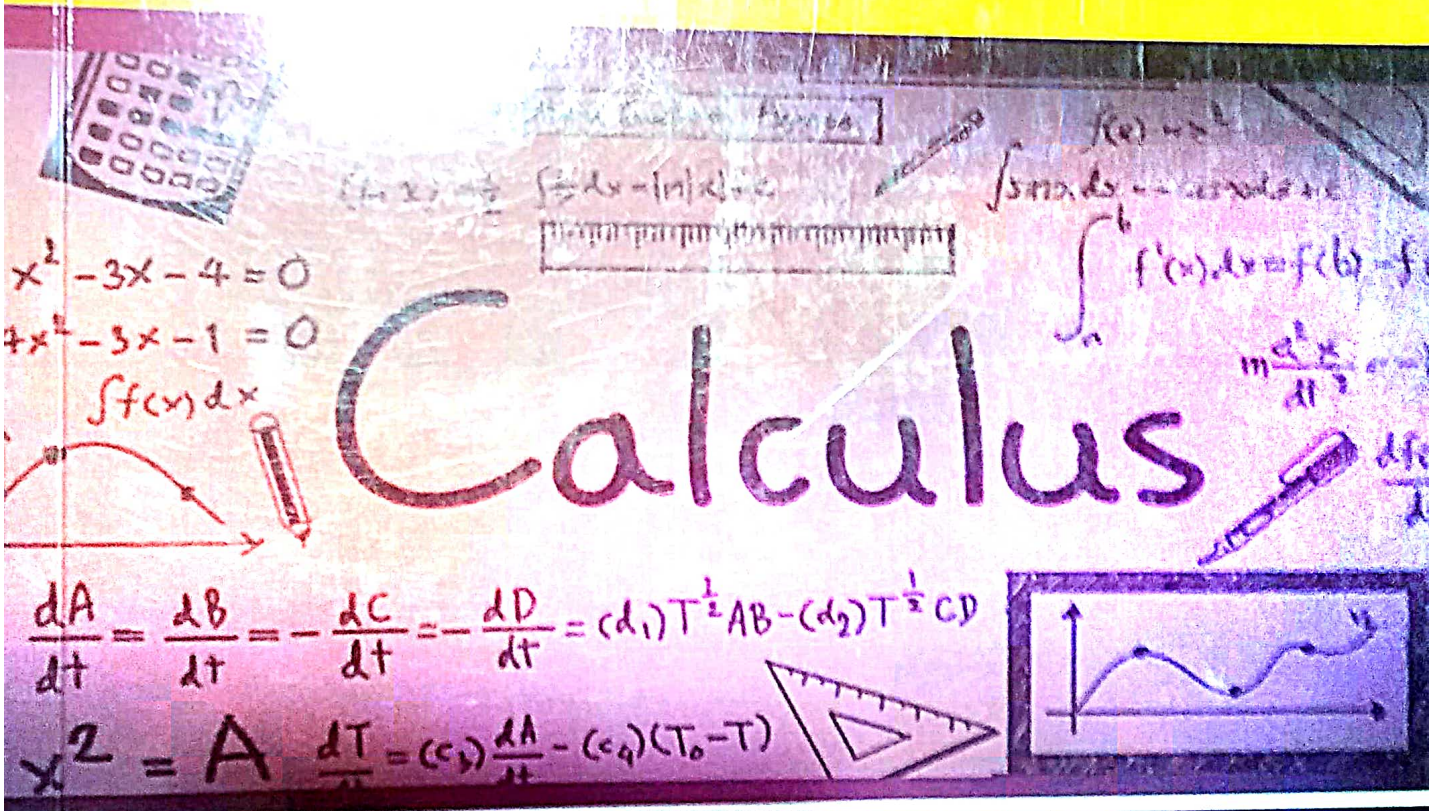

Dr. A. R. GOTMARE
S. R. GAIKWAD

I. M. JADHAV
S. G. DAPKE

Kumud

Joint Venture Publication

As per Syllabus of Kavayitri Bahinabai Chaudhari North Maharashtra University, Jalgaon
with effect from **June-2018**

Choice Based Credit System (CBCS)

A Text book of

MATHEMATICS

F.Y. B. Sc. Semester I

Paper – II

CALCULUS

[MTH : 102]

Co-ordinetor :

Dr. A. R. GOTMARE

G. D. M. Arts, K. R. N. Commerce
And M. D. Science College, Jamner
Dist. Jalgaon.

I. M. JADHAV

G. D. M. Arts, K. R. N. Commerce
And M. D. Science College, Jamner
Dist. Jalgaon.

S. R. GAIKWAD

JDMVP Co-op Samaj's Arts,
Science and Commerce College,
Yawal, Dist. Jalgaon.

S. G. DAPKE

IES' S H. J. Thim College of Arts
and Science, Mehrun,
Jalgaon.

Kumud Publications

वृंदा

(A Joint Venture)

CALCULUS
[MTH : 102]

SEMESTER-I PAPER - II

First Edition: 1st September

© All rights reserved.

All rights are reserved. No part(s) of this publication may be reproduced or distributed in any from by any means or stored in a database retrieval system without the prior written permission of the publisher.

ISBN: 978-93-85027-97-0

Published By:

Kumud Publications

2672, Front of Abhinav School, Dhake Colony, Pratap Nagar, Jalgaon - 425001.

Phone (0257) 2239666, 9405206230, 9923374822

Email:- kumudpublications@gmail.com

and

Vrinda Publications

M.G. Road, Jalgaon - 425001.

Phone (0257) 2225818

Email:- vrinda_publication@yahoo.com

Price: 125/-

Type Setting:

RAVI BADGUJAR, JALGAON. M. 9422562360.

As per Syllabus of
Kavayitri Bahinabai Chaudhari North Maharashtra University, Jalgaon
With effect from June- 2018

MTH - 101

CBCS PATTERN

MATHEMATICS | F.Y.B.Sc. / Sem - I / Paper-I

MATRIX ALGEBRA

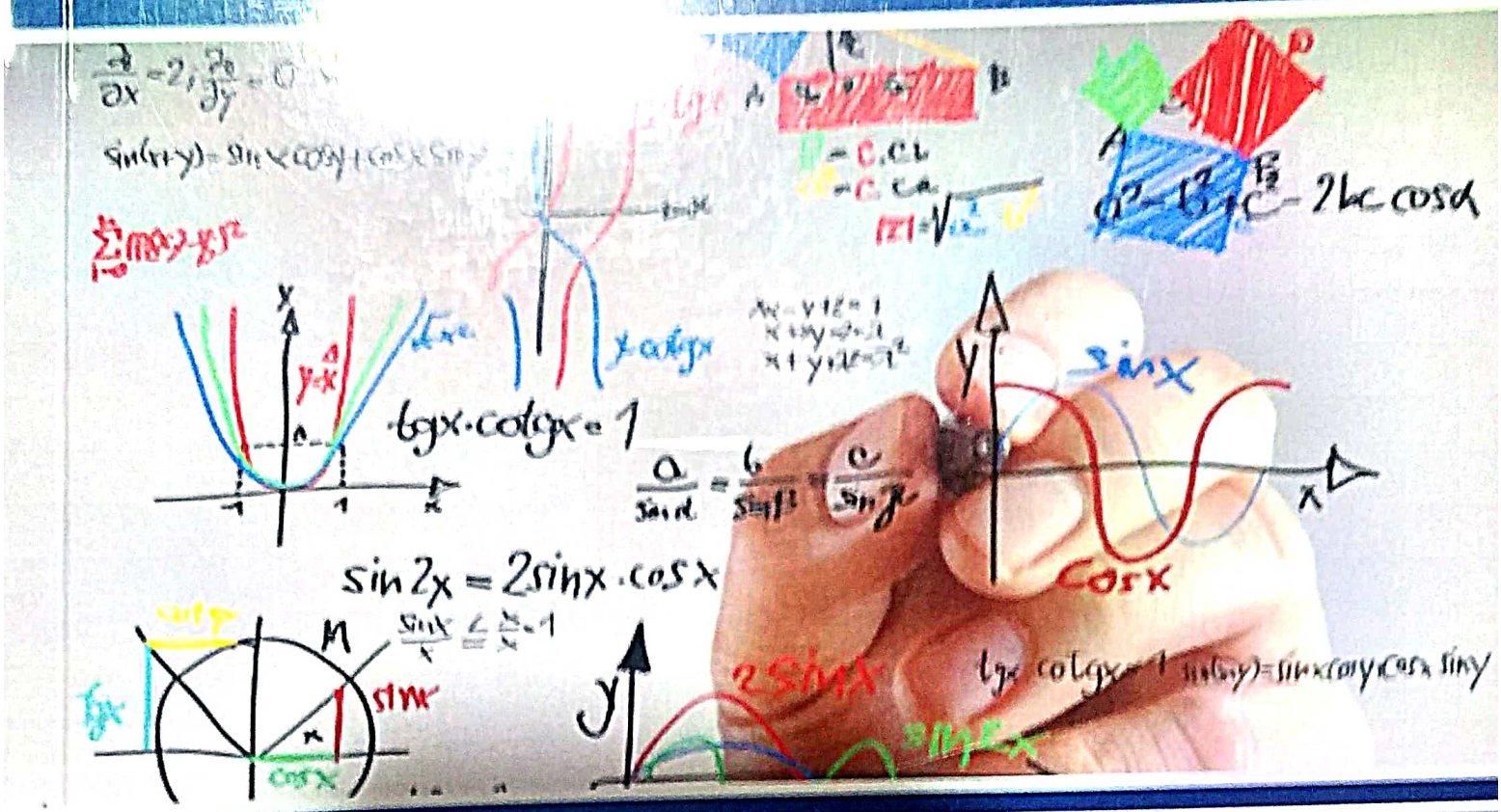

Dr. A. R. Gotmare
J. G. Chavan
S. R. Gaikwad
S. G. Dapke

Joint Venture Publication

As per Syllabus of Kavayitri Bahinabai Chaudhari North Maharashtra University, Jalgaon with effect from June-2019

Choice Based Credit System (CBCS)

A Text book of

MATHEMATICS

Matrix Algebra

(MTH 101)

F.Y.B.Sc. (CBCS) Semester I

Dr. A. R. Gotmare
G. D. M. Arts, K. R. N. Commerce and M. D. Science College, **Jamner** Dist. Jalgaon.

S. R. Gaikwad
Arts, Commerce and Science College **Yawal** Dist. Jalgaon

Retd. J. G. Chavan
Nanasaheb Y. N. Chavan Arts, Science and Commerce College, **Chalisgaon**, Dist. Jalgaon.

S. G. Dapke
IES' S.H.J. Thim College of Arts and Science, Mehrun, **Jalgaon.**

Kumud

वृंदा

(A Joint Venture)

Matrix Algebra (MTH 101)

SEMESTER – I

First Edition: 1st August 2019

© All rights reserved.

All rights are reserved. No part(s) of this publication may be reproduced or distributed in any from by any means or stored in a database retrieval system without the prior written permission of the publisher.

ISBN: 978-93-85027-98-7

Published By:

Kumud Publications

2672, Front of Abhinav School, Dhake Colony, Pratap Nagar, Jalgaon - 425001.

Phone (0257) 2239666, 9405206230, 9923374822

Email:- kumudpublications@gmail.com

and

Vrinda Publications

M.G. Road, Jalgaon - 425001.

Phone (0257) 2225818

Email:- vrinda_publication@yahoo.com

Price: 250/-

Type Setting:
Vrinda Publications

CBCS
PATTERN

$$Y(s)=\frac{s+1}{s(s^2+4s+4)} = \frac{A}{S} + \frac{B}{(s+2)}$$

(1st) (3rd)

$$A_k = \lim_{s \to r_k}(s-r_k)^m Y(s)$$

Syllabus of
Kavayitri Bahinabai Chaudhari North Maharashtra University, Jalgaon
With effect from June- 2018

F. Y. B. Sc. • Sem II • MTH - 203-A

Laplace Transform

S. R. Gaikwad
Dr. A. R. Gotmare
Dr. S. G. Dapke
I. M. Jadhav

वृंदा | Kumud Publications

As per Syllabus of Kavayitri Bahinabai Chaudhari North Maharashtra University, Jalgaon
with effect from **June-2019**

Choice Based Credit System (CBCS)

A Text book of

MATHEMATICS

Laplace Transform

(MTH 203-A)

F.Y.B.Sc. (CBCS) Semester - II Paper - III

S. R. Gaikwad
J.D.M.V.P Arts, Commerce and
Science College, Yawal
Dist. Jalgaon

Dr. S. G. Dapke
H. J. Thim College of Arts and
Science College Mehrun,
Dist. Jalgaon.

Dr. A. R. Gotmare
G. D. M. Arts, K. R. N. Commerce
and M. D. Science College, Jamner,
Dist. Jalgaon.

I. M. Jadhav
G. D. M. Arts, K. R. N. Commerce
and M. D. Science College,
Jamner, Dist. Jalgaon

Kumud Publications
वृंदा
(A Joint Venture)

Laplace Transform
(MTH 203-A)

SEMESTER – II PAPER – III

First Edition: January 2020

© All rights reserved.

All rights are reserved. No part(s) of this publication may be reproduced or distributed in any fromby any means or stored in a database retrieval system without the prior written permission of the publisher.

ISBN: 978-93-88834-57-5

Published By:
Kumud Publications
2672, Front of Abhinav School, Dhake Colony, Pratap Nagar, Jalgaon - 425001.
Phone (0257) 2239666, 9405206230, 9923374822
Email:- kumudpublications@gmail.com

and

Vrinda Publications
M.G. Road, Jalgaon - 425001.
Phone (0257)2225818
Email:- vrinda_publication@yahoo.com

Type Setting:
Vrinda Publications

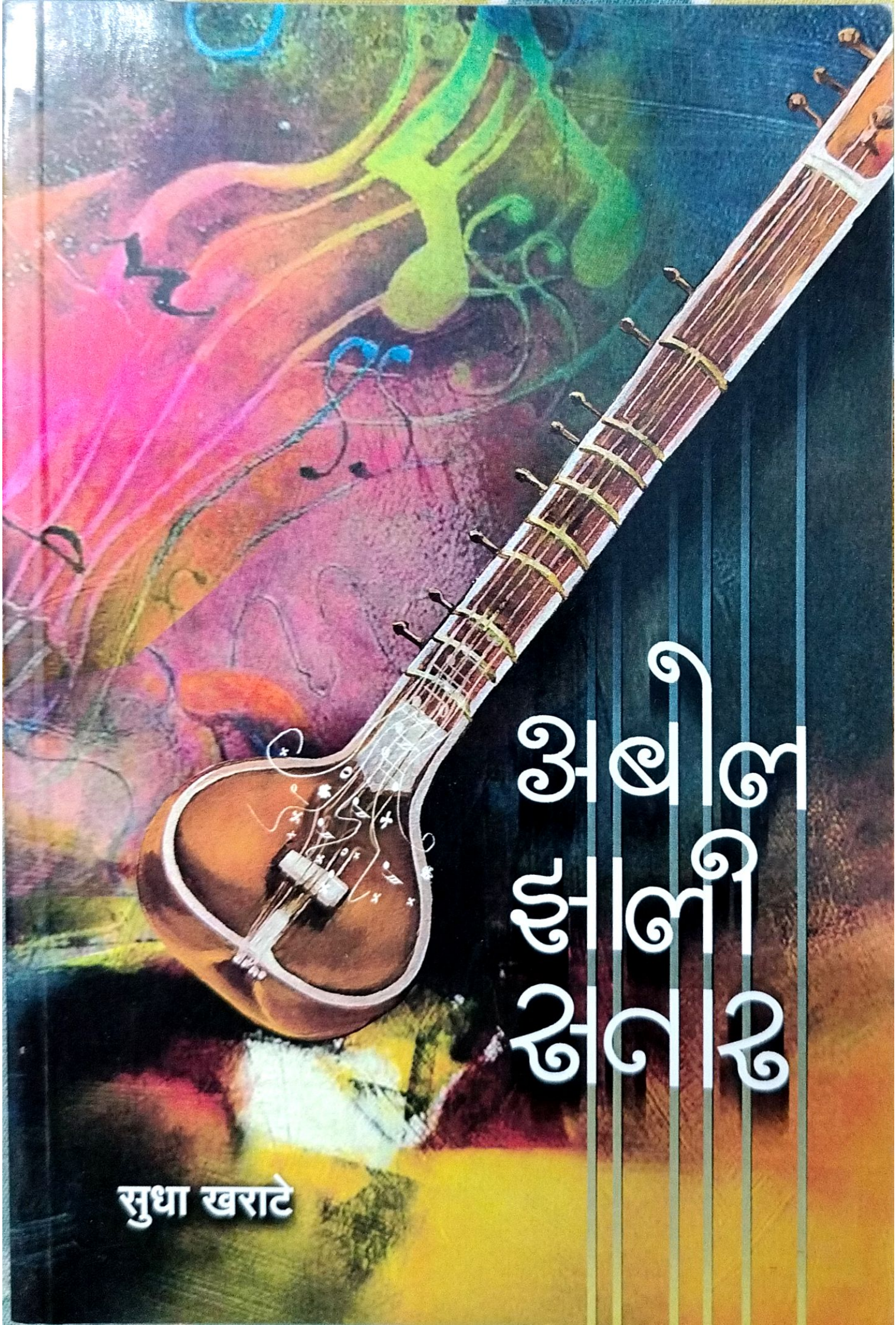

अबोल
झाली
सतार
सुधा खराटे

RESEARCH JOURNEY International Multidisciplinary E-Research Journal ISSN : 2348-7143
Impact Factor (SJIF) - 6.625 | Special Issue 214 (B) : हिंदी साहित्य : विविध विमर्श Jan. 2020

ज्ञानप्रकाश विवेक की कहानियों में चित्रित नारी विमर्श

प्रा. डॉ. प्रल्हाद विजयसिंग पावरा
सहायक प्राध्यापक, हिंदी विभाग,
कला, वाणिज्य एवं विज्ञान महाविद्यालय, यावल, जि. जलगाँव

यह एक वास्तविकता है कि किसी भी साहित्यकार का व्यक्तित्व एवं कृतित्व में अंतरंग संबंध होता है। उसके व्यक्तित्व का प्रतिबिंब उसकी सृजनधर्मिता में प्रत्यक्ष एवं परोक्ष रूप में होता ही है। व्यक्ति जिस परिवार, परिवेश, परिस्थिति में जीवन यापन करता है उसका प्रभाव एवं उसके संस्कार उसके व्यक्तित्व में दृष्टिगत होते हैं। अत: उसका व्यक्तित्व उनके कृतित्व में झलकता है। किसी भी साहित्यकार के व्यक्तित्व में उसकी स्वभावगत विशेषताएँ, उसके पारिवारिक संस्कार, परिवेशगत अनुभव विभिन्न प्रसंगों से उसके मन-मस्तिष्क में होनेवाली क्रिया-प्रतिक्रियाएँ समाहित रहती है। इसी कारण किसी भी साहित्यकार के अध्ययन एवं मूल्यांकन के पूर्व उसके व्यक्तित्व में अवगाहन करना आवश्यक हो जाता है। यथार्थत: ''व्यक्तित्व शब्द उन सभी बातों का बोध है जो किसी व्यक्ति में है और जिन पर उसे अभिमान होता है। इसके अंतर्गत व्यक्ति की संवेदनाएँ, प्रवृत्तियाँ, उद्वेग, प्रत्यक्ष ज्ञान, कल्पना, स्मृति, बुध्दि, विवेक आदि मानसिक शक्तियाँ एवं शारीरिक बनावट, अवस्था और दूसरे व्यक्ति से संबंध आदि ज्ञात होता है।''[१]

डॉ. नगेन्द्र का अभिमत है कि ''मैं ये मानता हूँ कि प्रत्येक साहित्यिक कृति का संबंध कृतिकार के व्यक्तित्व से है। कृतिकार का अपना रागात्मक जीवन और उसके आधारपर निर्मित जीवन दर्शन कृति में अनिवार्यत: प्रतिफलित होता है। यह प्रतिफलन प्रत्यक्ष हो यह आवश्यक नहीं है। प्राय: यह अप्रत्यक्ष और प्रच्छन्न ही होता है।''[२]

सम्प्रति, भौतिकवादी युग में नारी के प्रति समाज की दृष्टि भी भोगवादी बन चुकी है। नेमीचंद्र जैन ने ठीक ही कहा है ''अभी तक नारी की स्वाधीनता अधिकतर एक प्रकार की विशिष्टता के रूप में ही दिखाई पडती है, जीवन की सहज स्थिति के रूप में नहीं।''[३] आज नारी को वासना की पूर्ति का साधनमात्र माना जाता है। उसका शोषण आम बात हो गई है। 'बारात का सफर' कहानी में शरावी युवक नाचते हुए कुमुद से छेडछाड करते हैं, उसे पंछी, पकौडा जैसे विशेषणों के साथ छेडा जाता है। कुमुद इन सब बातों को चुपचाप झेलती है क्योंकि ये युवक बाराती बनकर आए हे। वह सोचती है कि 'कितनी नंगी है इन लोगों की आँखे!' कुमुद की त्रासदी यह है कि वह जिस वरूण से प्रेम करती थी उसी वरूण के पिता का स्थानान्तर हो जाने के कारण उसके प्रथम प्रेम के तमाम दस्तावेज अधूरे रह गए थे। वरूण के पश्चात कुमुद ने अनुभव किया कि वरूण जैसा शालिन, भावुक, संकुचित युवक मिलना कठिन हैं क्योंकि 'सबके सब व्यावसायिक धरातल पर टिके समीकरणों के पुतले लगते हैं।'

नारी विमर्श के अंतर्गत वेश्या जीवन को उभारा गया है। वास्तव में वेश्या जीवन एक आर्थिक विवशता है, नारी जीवन की त्रासदी है। 'अंत एक सूरज का' नामक कहानी में पारबती वेश्या है परंतु माँ बनकर उसे अपार सुख की अनुभूति होती है। वैसे माँ बनना वेश्या जीवन में अपराध ही है। चकला चलानेवाली दादी ने उसे गर्भ को रफा-दफा करने के लिए आग्रह किया क्योंकि बच्चे को पालना कठिन होगा। धंदा भी चौपट हो जाएगा। और यहाँ के वातावरण में रहकर वह दलाल या उठाईगीर बनेगा। परंतु पारबती नहीं मानी। स्कूल में वेश्यापुत्र होने के कारण उसकी उपेक्षा होती है। उसे स्कूल में पढने नहीं दिया जाता। जब मंगल तेरह वर्ष का हो गया तो उसने माँ के धंदे को देखकर आक्रोश व्यक्त किया। अंतत: मंगलू के साथ वही हुआ जो इस परिवेश में जीवन गुजारते है। वह चोरियाँ करता रहा, जेब काटता रहा, खून-खराबा करता रहा, लडाई-झगडे, गालीगलौज करता रहा। परंतु उसने किसी लडकी की तरफ आँख उठाकर भी नहीं देखा। एक दिन उसकी माँ की मृत्यु हो जाती है। कहानीकार की चिंता उन तमाम हजारों बच्चों के प्रति व्यक्त हुई है जो वेश्यालयों में नारकीय जीवन गुजारते है।

'काली लडकी' कहानी में समाज की मानसिकता व्यक्त हुई है। यद्यपि कामिनी नौकरी करती है फिर भी वह काली होने के कारण उपेक्षित है वह चाहती है कि उसके ऑफिस के युवा सहयोगी उससे बाते करें, उसके साथ चाय पिये, जिस प्रकार ऑफीस के अन्य महिला कर्मचारियों के साथ व्यवहार करते हैं। काली होने के कारण विवाह भी एक समस्या बनी हुई है। उसके साथ कार्य करनेवाली लगभग सभी लडकियों क विवाह भी हो गए और वे बच्चों की माँ भी बन गई परंतु कामिनी अकेलेपन की त्रासदी को भोगती रही। एक दिन वह अपने पिता से यह प्रश्न करती है कि -''क्या बदशक्ल लडकी को जीने का अधिकार नहीं? क्या वह सम्मानित ढंग से नहीं जी सकती? क्या समाज में सब सुंदर है, कुरूपता विद्यमान नहीं? फिर...फिर पिताजी मेरे हिस्से में इतना अपमान क्यों, इतने तिरस्कार क्यों? हर बार मैं लडके के सम्मुख जा बैठू, एक याचक की भाँति कि वह विवाह के लिए मुझे पसंद कर ले। ...आखिर कब तक अपनी भावनाओं का रक्तपात करके यह सब सहना होगा...?''[४] कहानीकार ने कामिनी के माध्यम से नारी जीवन की व्यथा-कथा प्रस्तुत की है।

'जलजला' कहानी में सविता के माध्यम से नारी शोषण को व्यक्त किया गया है। सविता पर महाविद्यालय के तीन विद्यार्थी बलात्कार करते हैं। फलस्वरूप उसका जीना मुश्किल हो जाता है। उसका दोष न होते हुए भी उसको लोग अलग नजर से देखते है। सविता के बडे भाई के मित्र पी. दयाल जो मनोचिकित्सक थे सविता को नॉरमल करने की जिम्मेदारी जिन्हें सौंपी गई थी वे भी सविता को समझाते हैं कि -'हमें अतीत भूल जाना चाहिए, वर्तमान को जीना है, खुबसूरत ढंग से जीना है' परंतु यह समझाते हुए वे चोर नजरों से सविता को देखते थे। उनकी दृष्टि और व्यवहार से सविता ने डॉक्टर

के यहाँ जाना बंद कर दिया। सविता का प्रेमी परेश भी सविता की उपेक्षा करने लगा। यदि विवाह के लिए लडक़ेवाले उनके घर आते तो पास-पडोसवाले पहले ही उन्हें आगाह कर देते थे कि लडक़ी चरित्रहीन है। चरित्रहीन का यह सर्टीफिकेट देकर उसे मर्मांतक पीडा दी जाती थी और वह यह निश्चय करती है कि अब वह विवाह नहीं करेगी। कहानी में नारी के यौन शोषण, समाज की मानसिकता, एक सीधी-सादी युवती के जीवन की नियति चित्रित हुई है।

समसामयिक युग में नारियों पर होने वाले अत्याचारों की संख्या बढ.रही है। प्रतिदिन के समाचार पत्रों से ज्ञात होता है कि नारी कहीं भी सुरक्षित नहीं है। महानगरों में तो यह स्थिति और भी भयानक है। पति-पत्नी रेस्तरा से खाना खाकर लौट रहे थे कि अचानक एक कार रूकी, चार लोग उतरे और पति के देखते-देखते पत्नी का अपहरण कर लिया। पति जडवत खडा रहा क्योंकि उन गुण्डों के हाथों में हत्यार थे। नारी का यौन शोषण का एक विदारक दृश्य विवेक जी ने प्रस्तुत किया है। जिसमें नारी को केवल भोग्या माना जाता है, ''दो दिन गुण्डों ने अपने पास रक्खा उस स्त्री को। इन घण्टो में वह स्त्री, स्त्री नहीं थी एक जिन्स थी, एक वस्तु थी जिसका इस्तेमाल करना था और वह इस्तेमाल होती रही। स्त्री के हिस्से में उत्पीडन था, तडप थी। छटपटापट थी। लेकिन और चार लोगों के लिए आनंद देने वाला पदार्थ थी वह।''[५] दो दिन बाद उसे रिहा तो कर दिया गया परंतु अब उसे कटघरे में खडा होना था। पति के द्वारा उसकी उपेक्षा होने लगी क्योंकि अब वह कुलटा थी। उसका अपना घर ही उसके ही यातना शिविर हो गया। और शाम को उस स्त्री ने अपने आपको पंखे के हुक के साथ लटकाकर आत्महत्या कर ली। कहानीकार को आश्चर्य एवं दु:ख यह होता है कि वह जो मर्द था उसने दो महिने बाद दूसरा विवाह कर लिया और उसकी पहली स्त्री तमाम तरह की पीडाएँ भोगकर इतिहास हो गई थी और पुरूष मानों उसने एक जूती उतारी हो, और दूसरी डाल ली हो। ज्ञानप्रकाश विवेक के द्वारा चित्रित यह दुखद प्रसंग नारी जाति की संपूर्ण संवेदना को उसके संबंध में पुरूष के सोच एवं व्यवहार को व्यक्त करता है।

अधिकांश नारियाँ अपने व्यवसाय के प्रति प्रतिबध्द रहती हैं। 'हमारे स्कूल की मैडम' नन्दिनी इसी प्रकार की स्त्री है। वह शिक्षिका है। पूरी कक्षा उसकी फैन है। वह सुंदर, सौम्य और शालीन है। उसका मन जितना उज्वल था उतना ही उसका चेहरा। गरीब बच्चों की वह फिस भर देती थी क्योंकि उसे मालूम था कि उन बच्चों के माँ-बाप भी नन्दिनी मैडम के मुरीद हो गए थे। विद्यार्थी उसकी प्रशंसा करते हुए कहते भी थे कि - ''नन्दिनी मैडम की यही छोटी-छोटी बातें उनकी शख्सियत को बडा करती थी। वह पूरे स्कूल में अलग-सी दिखाई देतीं। उन्होंने सचमुच में हमें शिक्षित किया। किताबों के कोर्स के अलावा भी कितने सारे सबक थे जो उन्होंने हमें याद कराये। उनमें गजब का धैर्य और इच्छाशक्ति थी।''[६] संक्षेप में नन्दिनी मैडम भारतीय नारी का उदात्त आदर्श है। शिक्षिका के रूप में उसका उदात्त व्यक्तित्व सराहनीय है।

''विद्रोहात्मक मूल्य किसी संस्था, सत्ता-प्रतिष्ठान, धार्मिक मठ या दर्शन की पोथी से प्राप्त नहीं किए जा सकते। हर सूरत में इन्हें जीवन-स्थितियों में से और तत्पश्चात उनका अतिक्रमण करते हुए, अर्जित किया जा सकता है।''[७] दाम्पत्य जीवन में नारी का त्याग शब्दातीत है। 'पहले यहाँ घर था' में डॉ देव की पत्नी विभा अपने पति के प्रति प्रतिबध्द है। डॉक्टर खाने-पीने के शौकिन थे। वे पीते रहते और बिचारी विभा बैठी रहती। स्वयं शाकाहारी होकर डॉक्टर साहब के लिए चिकन, मटन, फिश बनाती। जब वे नशे में होते तो डॉ देव के लिए विभा एक देह होती। विभा को अक्सर महसूस होता कि वह एक बर्फ की सील है। भले ही डॉक्टर उसे धूप में रखे या छाँव में -पिघलना उसकी नियति है। वास्तव में यह एक विभा की नहीं असंख्य नारियों की नियति है। नारी की यह विशेषता है कि वह परिस्थितियों के अनुसार अपने आपको ढाल लेती है। जीवन में समझौता करना उसका स्वभाव है। डॉ. देव से तलाक लेकर विभा एक डेढ.कमरे के एल. आई. जी. फ्लैट में आ गयी। डॉ. देव के साथ शानदार कोठी में सुख और ऐश्वर्य में रहनेवाली विभा एक छोटे-से मकान में भी खुश है। क्योंकि यहाँ वह एक स्त्री थी। अपने समूचेपन के साथ जी रही थी। डॉ. देव अकेली विभा को पत्र के माध्यम से चीढाते रहते थे। कभी उसको पत्र लिखते कि उन्होंने एक ऐसी कोठी बनायी है जिसका डिझाइन दुर्लभ है। पूरे शहर में यह कोठी चर्चा का विषय है, तुम देखोगी तो ईर्ष्या करोगी। तब विभा सोचती है कि डॉक्टर साहब बार-बार सोए हुए पानी में कंकर क्यों फेकते है। वह अकेलेपन की त्रासदी को भोगती है। विवेक जी के अनुसार - ''अकेली स्त्री के भीतर अकेलापन किसी शक्ति की तरह रहने लगता है। विभा ने इस बात को समझ लिया था कि उसके सारे युध्द अपने साथ होंगे। अपने-आपसे पराजित होगी और जीतेगी भी अपने-आपसे।...वह अकेली है इसलिए अपने साथ, हार-जीत का जश्न चलते रहेंगे।''[८] इस प्रकार 'पहले यहाँ घर था' कहानी में विभा के माध्यम से एक संपन्न नारी की नियति एवं त्रासदी उजागर की गई है।

'सेवानगर कहाँ है' कहानी में एक युवती का त्रासद जीवन चित्रित किया गया है। वह एक मध्यवर्ग की युवती है उसके लिए वर की तलाश चल रही है। वह सुंदर है और बहुत अच्छा गाती है। परंतु एक दिन वह बाजों के चँगुल में फँस गई। कुछ दरिंदे उसे उठाकर ले गए और जब वह वापिस आई तो पूर्ण रूप से उजड.गई थी। ना हँसती थी ना रोती थी। दीवारों को देखते-देखते वह स्वयं दीवार बन गई थी, और एक दिन उसने खुदकुशी कर ली। यह किसी एक युवती के जीवन की व्यथा नहीं है, देश में लाखों युवतियाँ दरिंदों की शिकार होती रहती हैं। यह नारी की विडम्बना एक चिंतनीय समस्या है।

'क्लब' कहानी में उच्चवर्ग की नारियों का चित्रण है। ये नारियाँ क्लब में जाती हैं, ताश खेलती हैं और जीवन का उपभोग करती है। इसी क्लब में मिसेस मित्रा है। पैंतीस साल की बेहद खुबसूरत स्त्री। वह अहंकारी है, बिनधास्त है। कंपनी के ए. जी. एम. साहब की पत्नी है। वह क्लब में किसी के साथ भी शराब पी सकती है, सिगरेट पीती है। यह बाजारवाद और उपभोक्तावाद का प्रभाव है कि नारी स्वच्छंद जीवन के प्रति आकर्षित होती जा रही है। इस संबंध में रामजी यादव लिखते है कि - ''संपन्नता अपने साथ बेहिसाब और अर्थहीन अहंकार, बिंदासपन और भय लेकर चलती है। इसे मिसेज

मित्रा के बहाने कथाकार ने खोला है। अंततः हम देखते हैं कि जिस क्लब की जीवंतता में अपनी घुटन से त्रस्त मिसेज मित्रा उल्लास के पल ढूंढती हुई शामिल होती हैं, वह क्लब एक दिन जर्जर इमारत में बदल जाता है।''[९]

भारतीय नारी शक्तिशाली है। पति की मृत्यु के बाद भी कई नारियाँ बिखरती-टूटती नहीं हैं। 'दश्त-ए-तन्हाई-में' नारी शक्ति का प्रतिपादन किया गया है। पति विपिन की मृत्यु के पश्चात सुजाता हमेशा संघर्षरत रही। अपने बच्चों के भविष्य के लिए उसने ट्यूशने की, कभी किसी प्राइव्हेट दफ्तरों में नौकरी की, कभी सेल्ज़गर्ल का कार्य किया। पति की मृत्यु के पश्चात अपने बच्चों का भविष्य घडने के लिए उसका संघर्ष करना नाही सक्षमीकरण का प्रमाण है।

उपरोक्त विवेचन से स्पष्ट होता है कि ज्ञानप्रकाश विवेक ने अपनी कहानियों में नारी की स्थिति एवं गति का विवेचन किया है। उनकी अधिकांश नारियाँ परिस्थितियों से हताश-निराश नहीं होती। वे परिस्थितियों का सामना करती है। वे जितनी सहनशील है उतनी संघर्षशील भी है।

संदर्भ सूची :

१. आधुनिक कथा साहित्य और चरित्र विकास - डॉ. बेचैन, पृ. ८६
२. आस्था के चरण - डॉ. नगेन्द्र, पृ. ८०
३. प्रतिनिधि महिला कहानीकारों में चित्रित नारी - डॉ. मीना जोशी, पृ. १०४
४. जोसफ चला गया - ज्ञानप्रकाश विवेक, पृ. ५०
५. उसकी जमीन - ज्ञानप्रकाश विवेक, पृ. ९२
६. सेवानगर कहाँ है - ज्ञानप्रकाश विवेक, पृ. ७०
७. समकालीन साहित्य चिंतन - डॉ. रामदरश मिश्र / डॉ. महीप सिंह, पृ. ५८
८. पूर्ववत्, पृ. ८२
९. इंडिया टुडे, जनवरी २०१०, पृ. ५८

Impact Factor – 6.625 | Special Issue – 232 | February 2020 | ISSN – 2348-7143

19-20.

INTERNATIONAL RESEARCH FELLOWS ASSOCIATION'S

RESEARCH JOURNEY

Multidisciplinary International E-Research Journal

PEER REVIEWED, INDEXED AND REFEREED JOURNAL

२१ वीं शताब्दी का हिंदी उपन्यास साहित्य

अतिथि संपादक
प्राचार्य डॉ. ए. एस. पैठणे

मुख्य संपादक
डॉ. धनराज टी. धनगर

कार्यकारी संपादक
डॉ. महेश गांगुर्डे

कार्यकारी सह-संपादक
प्रा. महेंद्र वसावे

For Details Visit To : www.researchjourney.net

Printed By : PRASHANT PUBLICATIONS, JALGAON

- अयोध्या में ध्वंसलीला : 'आखिरी कलाम' ८९
  डॉ. अमृत बिसन खाडपे
- मिथिलेश्वर के उपन्यासों में प्रेम एवं काम की अभिव्यक्ति ९१
  प्रा. डॉ. प्रल्हाद विजयसिंग पावरा
- नारी अस्मिता की पहचान कराता मधुर कपिला का उपन्यास – 'सातवां स्वर' ९५
  डॉ. अभयकुमार आर. खैरनार
- "गिलिगडु : बदलते मानवमूल्यों की कथा" ९७
  डॉ. अशोक शामराव मराठे
- समाज जीवन को उन्नत जीवन प्रदान करने वाली नवचैतन्य की निरंतर धारा – 'सुखदा' ९९
  डॉ. दिपक विश्वासराव पाटील
- "भगवानदास मोरवाल के उपन्यसों में स्त्री–विमर्श" १०२
  प्रा. डॉ. मनोहर हिलाल पाटील
- 'ग्लोबल गाँव के देवता' उपन्यास में आदिवासी विमर्श १०४
  प्रा. डॉ. प्रमोद गोकुळ पाटील
- 'विजन' उपन्यास में व्यक्त नारी विमर्श १०६
  प्रा. डॉ. पूनम त्रिवेदी
- 'गुनाह बेगुनाह' उपन्यास में अभिव्यक्त नारी संघर्ष १०८
  प्रा. डॉ. रविंद्र आर. खरे
- "सुरेन्द्र वर्मा के उपन्यासों में नारी चेतना" ('दो मुर्दो के लिए गुलदस्ता' एवं 'मुझे चाँद चाहिए' के विशेष संदर्भ में) १११
  डॉ. संजय प्रल्हाद महाजन
- गोविन्द मिश्र के उपन्यासों में चित्रित नारी विमर्श ११३
  प्रा. डॉ. विजय एकनाथ सोनजे
- जीवन की त्रासदी को दर्शाता उपन्यास – 'बेसबब' ११६
  डॉ. अशफ़ाक़ इब्राहिम सिकलगर
- उच्च शिक्षित कामयाब बच्चों के वृध्द माता–पिताओं के मन में 'डर' और 'भय' को व्यक्त करने वाला उपन्यास–"दौड" ११८
  डॉ. गोकुलदास सोनु ठाकरे
- "२१ वीं शताब्दी का हिन्दी उपन्यास साहित्य" १२०
  डॉ. विजय जी. गुरव
- कठगुलाब उपन्यास में नारी चित्रण (मृदूला गर्ग) १२३
  प्रा. शरद शेलार
- २१ वी सदी के महिला उपन्यासों में नारी चेतना १२५
  श्री. आमलपुरे सूर्यकांत विश्वनाथ
- 'मरंग गोडा नीलकंठ हुआ' उपन्यास में आदिवासी विमर्श १२७
  डॉ. निंबा लोटन वाल्हे
- नारी वेदना का दस्तावेज 'तिनका तिनके पास' १२८
  डॉ. ईश्वर ठाकुर
- "टूटा हुआ इंद्रधनुष" उपन्यास में पारिवारिक विघटन १३०
  डॉ. आनंद गुलाबराव खरात
- मैत्रेय पुष्पा का उपन्यास गुनाह–बेगुनाह में चित्रित नारी संघर्ष १३३
  प्रा. तुलसा मोची

18-19

स्वातंत्र्योत्तर मराठी साहित्य आणि स्त्री
स्वातंत्र्योत्तर हिंदी साहित्य और नारी
Post-Independence Indian English Literature and Women

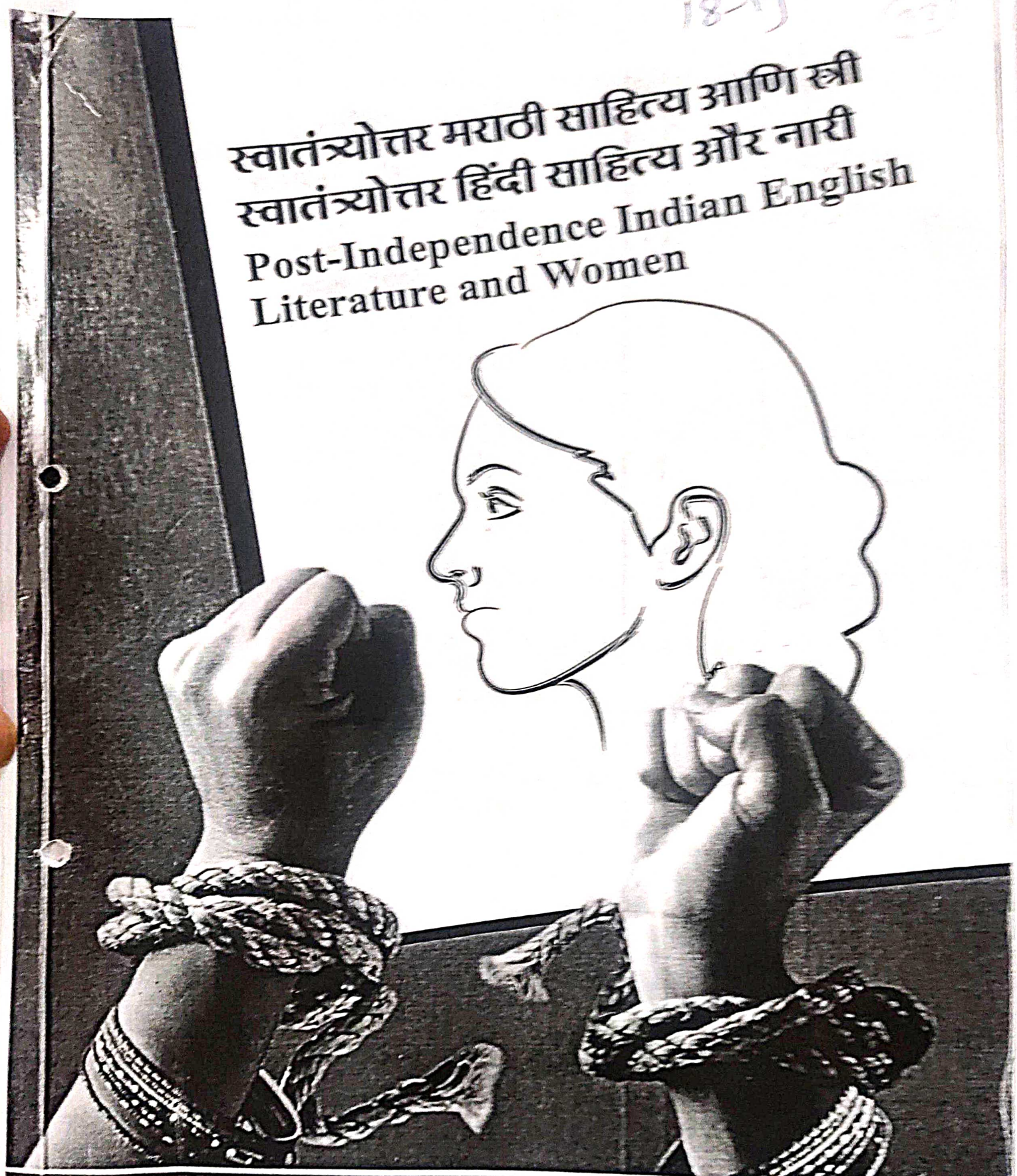

Smt. P. K. Kotecha Mahila Mahavidyalaya
Shanti Nagar, Bhusawal

- ममता कालिया के कथा-साहित्य में नारी-विमर्श .....
  - डॉ. सुनीति एस. आचार्य, शिरपुर
- रत्तिका के संघर्ष एवं अकेलेपन की कथा - सूरजमुखी अँधेरे के.....
  - डॉ. सुनीता नारायणराव कावळे, चालीसगाँव
- स्वातंत्र्योत्तर हिंदी कहानी में नारी .....
  - डॉ. सविता काशिराम तायडे, मुंबई
- स्वातंत्र्योत्तर हिंदी साहित्य और नारी .....
  - डॉ. शेख शहेनाज अहेमद, नांदेड
- स्वातंत्र्योत्तर हिंदी कहानी 'यही सच है' में नारी चित्रण .....
  - डॉ. शेखर घुंगरवार पी., नांदेड
- समकालीन महिला कथा साहित्य और नारी .....
  - प्रा. निलीमा दामोदर इंगळे, यावल
- स्वातंत्र्योत्तर हिंदी कहानी - साहित्य में नारी.....
  - प्रा. दिलीप पंडीत पाटील, चोपडा
- मधु काँकरिया की कहानियों में नारी-चित्रण.....
  - प्रा. प्रल्हाद विजयसिंग पावरा, यावल
- रामदरश मिश्रजी के उपन्यास में नारी .....
  - डॉ. यादव नामदेव मोरे, भोकरदन
- स्वातंत्र्योत्तर हिंदी कहानियों में नारी.....
  - प्रा. राजेश मेरसिंग खर्डे, जलगाँव
- हिन्दी उपन्यासों में नारी - 'आपका बंटी' और 'स्वामी' उपन्यासों के विशेष संदर्भ में .....
  - डॉ. अनिता भिमराव काकडे, भोकरदन
- स्वातंत्र्योत्तर नारी के विविध रूपों का चरित्रांकन : शशिप्रभा शास्त्री की कहानियाँ .....
  - डॉ. मनोज नामदेव पाटील, जलगाँव
- सुनीता जैन के उपन्यासों में नारी व्यथा.....
  - डॉ. गिरीष एस. कोळी, भुसावळ
- स्वातंत्र्योत्तर हिंदी ग़ज़लकारों की ग़ज़लों में नारी समस्याओं पर चिंतन.....
  - डॉ. दिपक विश्वासराव पाटील, धुले
- ज्ञानप्रकाश विवेक की कहानियों में नारी विषयक दृष्टि .....
  - डॉ. देवेंद्र नारायण बोंडे, जलगाँव
- स्वातंत्र्योत्तर हिंदी महिला उपन्यासकार और नारी चेतना .....
  - प्रा. डॉ. नितीन रंगनाथ गायकवाड, वैजापूर
- रूक्मिणी के संघर्ष एवं सक्षमीकरण की कथा : रेत .....
  - प्रा. लक्ष्मी मधुकर तायडे, भुसावल
- प्रवासी साहित्य में नारी .....
  - अनुपमा तिवारी, विशाखापट्टणम

ISBN : 978-97-87129-3

मधु काँकरिया की कहानियों में नारी-चित्रण

- प्रा. प्रल्हाद विजयसिंग पावरा
सहायक प्राध्यापक, हिंदी विभाग
कला, वाणिज्य एवं विज्ञान महाविद्यालय, यावल, जि. जलगाँव

बीसवीं शताब्दी के अंतिम दशक में महिला लेखन अत्यंत तीव्रता से उभरकर सामने आया। विशेषकर हिंदी कथा-साहित्य में महिलाओं को केंद्र में रखकर कई उपन्यास एवं कहानियाँ लिखी गईं। जिनके माध्यम से नारी-जीवन के विविध पक्षों पर प्रकाश डालने का प्रयास किया गया। नारी पर होनेवाले अन्याय-अत्याचार, शारीरिक और मानसिक शोषण, अस्तित्त्व बोध, आर्थिक स्वावलंबन, समानता का अधिकार, दहेज की समस्या आदि तमाम बातों का चित्रण हिंदी कथा-साहित्य में किया गया।

इक्कीसवीं सदी के प्रारंभ में स्त्रियों के विभिन्न प्रश्नों पर हिंदी कथा साहित्य में महिला लेखिकाओं ने नए सिरे से विचार-विमर्श प्रारंभ किया हैं। उन्होंने नारी जीवन से संबंधित सामाजिक, सांस्कृतिक, आर्थिक, धार्मिक, मनोवैज्ञानिक आदि आयामों को दृष्टि में रखकर अनुपम साहित्य लेखन उपन्यासों एवं कहानियों के माध्यम से किया है। इन महिला लेखिकाओं में मन्नु भंडारी, मालती जोशी, प्रभा खेतान, उषा प्रियंवदा, ममता कालिया, शिवानी, मेहरून्निसा परवेज, मृदुला गर्ग, कृष्णा सोबती, मैत्रेयी पुष्पा, सूर्यबाला, सुनीता जैन, राजी सेठ इन लेखिकाओं के साथ ही मधु काँकरिया का लेखन अपना महत्वपूर्ण स्थान रखता हैं। सूर्यबाला के अनुसार - अनुभव यही कहता है कि लेखिकाओं का क्षेत्र अधिकतर घर और नारी मन रहा है जबकि पुरूष लेखन का घर बाहर दोनों। लेकिन हम इस क्षति की पूर्ति भी तो कर लेती हैं। नारी मन की अथाह गहराइयों में पैठकर इतना तो मैं दावे के साथ कह सकती हूँ कि नारी के अंदर इतने गूढ, तिलस्म, गुफाएँ और प्राचीर हैं कि इन्हें भेद पाना आसान नहीं, जिनको जितनी सत्यता और ईमानदारी से भेद सकती है - पुरूष नहीं।[1]

मधु काँकरिया ने अपने कथा साहित्य में अपनी अनुभूतियों को बेबाक तरीके से अभिव्यक्त किया हैं। उन्होंने कथा-साहित्य में सदियों से चली आ रही दहेज प्रथा, बालविवाह, विधवा जीवन, वेश्या जीवन आदि विभिन्न पहलुओं का चित्रण किया हैं। इन्हीं समस्याओं का चित्रण मधु काँकरिया की कहानी चूहे को चूहा ही रहने दो, एक रूकी हुई स्त्री, दाखिला, आसमान कितनी दूर, कुल्ला आदि में नारी चित्रण दिखाई देता है। प्राचीन काल की नारी की तुलना में आज की आधुनिक नारी काँकरिया की कहानियों में विद्रोह करती हुई दिखाई देती हैं।

मधु काँकरियाँ के कुल तीन कहानी-संग्रह प्रकाशित हो चुके है। इनमें पहला कहानी-संग्रह भरी दोपहरी के अँधेरे में चूहे को चूहा ही रहने दो कहानी में कहानी की नायिका युवती अपने पति से प्रतिशोध लेना चाहती है कि, वह पति की पतिव्रता पत्नी नहीं रहीं। अपने मन की भडास निकालना चाहती है। क्योंकि पति ने उस पर कई बंधन डाल रखे थे। किसी हमउम्र इन्सान से बात तक करने को वह तरस जाती थी। इन्हीं परिस्थितियों के कारण कहानी की युवती अपने पति से बगावत करती है। कहानी में स्वयं युवती कहती है कि, इससे आगे बढ़ना मेरे एजेण्डा में नहीं था। आज की रात मेरे प्रतिशोध की रात थी।[2]

कहानी की नायिका दूसरे युवक को आमंत्रित कर जब चरमोत्कर्ष के क्षणों में खुद को उस ऐंद्रिय जाल में मुक्त कर लेती है तब युवती का प्रतिशोध कहीं न कहीं उसे आत्मसम्मान लौटाता हैं।

इस कहानी में मधु काँकरिया ने एक स्त्री की आंतरिक पीडा को बडी ही सजीवता से चित्रित किया है। उसके अंतर्द्वन्द्व का यह चित्रण शायद ही पहले कभी हुआ हो। पति के दबाव में जीती स्त्री का एक उन्मुक्त कदम। संवेदनशील मन को झकझोर देनेवाली यह कहानी हैं। यह कहानी एक नारी के मन का ज्वलंत चित्रण हैं।

मधु काँकरिया का दूसरा कहानी संग्रह बीतते हुए में एक रूकी हुई स्त्री कहानी में नायिका मानसी प्रेम में पागल एक ऐसी लडकी है, जो सालों अपने प्रेम को पाने के इंतजार में गुजार देती हैं। मेडिकल की पढाई करते-करते मानसी और सरबजीत प्रेमी-प्रेमिका बन जाते हैं। मानसी

ISBN : 978-97-87129-35-1

लहार, प्रतिभासंपन्न, उच्चशिक्षित होने के बावजूद प्रेम में सबकुछ समर्पित कर देती हैं। अपने प्रेमी के लिए मर मिटने को तैयार होकर अपना करियर तक दाँव पर लगा देती है। इसके विपरित सरबजीत अपने जीवन में करियर को महत्त्व देता है। इसलिए सरबजीत मानसी को छोड ऑल इंडिया मेडिकल इन्स्टिटयूट दिल्ली चला जाता हैं। इसके संदर्भ में मधु कहानी में लिखती है कि, यहाँ स्त्रियाँ बलात्कार की उतनी नहीं जितनी धोखे का शिकार होती है।[३]

मानसी सरबजीत से धोखा खाने के बाद भी अपने प्रेमी की राह देखती है। इस प्रकार आखिर तक मानसी सरबजीत के प्रेम के लिए तडपती हैं।

इस कहानी में मानसी अपने सर्वस्व को हासिल करने के लिए एक रूकी हुई स्त्री जीवन के कितने ही अंतराल के बाद भी उस व्यक्ति के लिए रूकी हैं। क्या सचमुच उसके जीवन में भी बहाव आयेगा यह सोचने पर मजबूर करनेवाली की यह कहानी नारी के संवेदनशील मन का चित्रण करती हैं।

इसी कहानी संग्रह की कहानी दाखिला में सुकीर्ति नामक युवती की व्यथा का चित्रण हैं। सुकीर्ति की व्यथा यह है कि उसका पति उसे छोडकर चला गया है। वह अपने बेटे विक्रम को अच्छे स्कूल में दाखिला दिलाना चाहती हैं। अपने बेटे के लिए तडप़ती माँ अपने भाई को ही पति बनाकर स्कूल में ले जाती हैं। किन्तु अपने बेटे को लाख सिखाने के बाद भी बेटा उसे पापा की जगह मामा कहकर पुकारता है। और सारा मामला बिगड जाता है। सुकीर्ति सोचती है कि उसके इतने होशियार-होनहार, कर्तव्यदक्ष बेटे को केवल उसकी वजह से स्कूल में दाखिला नहीं मिला तो वह अपने आपको कभी माफ नहीं कर पायेगी। कॉन्वेंट स्कूलों में दाखिले के वक्त माता-पिता दोनों का होना जरूरी होने के कारण दो-तीन बार उसका प्रयत्न असफल हो जाता हैं। इन सभी परिस्थितियों को देखता विक्रम अपनी माँ से कहता है कि, इस बार तुम गडबड नहीं करना। इंटरव्यू रूम में घुसते ही कह देना फादर को पापा हमारे साथ नहीं रहतें, नहीं तो पिछले इंटरव्यू की तरह इस बार भी मेरा दाखिला नहीं हो पायेगा।[४]

सुकीर्ति कहानी की नायिका की व्यथा अन्य नारियों से भिन्न हैं। लेखिका ने इस कहानी में परित्यक्ता नारी की समस्या का चित्रण किया है। एक परिवार, सुखी परिवार जीवन में कितना मायने रखता है कि बेटे को स्कूल में दाखिला दिलवाने के लिए उसे झूठ तक का सहारा लेना पडता है। अकेली स्त्री का जीवन बडा ही कठीण और संघर्ष से भरा होता हैं।

इसी कहानी-संग्रह की कहानी आसमान कितनी दूर में मंदा नामक स्त्री की छोटी-सी ख्वाहिश का चित्रण हैं। शादी से पहले ही सुहागरात का सपना सँजोए मंदा जब भैरोसिंग के घर आती है तो उसकी ख्वाहिश यही है कि सुहागरात के लिए एक पलंग खरीदूँ। लेकिन उसका यह सपना अधुरा रह जाता हैं। वह अपने पारिवारिक समस्याओं में इतनी उलझ जाती है कि अपने बेटे और बेटियों की शादी तक करा देती हैं। मंदा की बडी बेटी मंगला द्वारा यह सपना पूरा होने ही जा रहा था कि, बेटी की सौगात स्वीकार करना मंदा के पति भैरोसिंग की संस्कृति में नहीं था। किन्तु बेटी के आग्रह खातिर उन्होंने पलंग तो रख लिया, पर मंदा के लिए नहीं पुत्रवधू के लिए जिसपर मंदा एक-बार लेटने की ख्वाहिश रखती हैं। इसी ख्वाहिश के कारण जब वह पलंग पर लेटती है तब उसे एहसास होता है कि, कितना अपूर्व लग रहा था... जमीन से तीन फिट ऊँचा उठकर सोना। शरीर का अंग-अंग जैसे इस अद्‌भुत अनुभूति से अभिभूत था। विश्वास ही नहीं हा रहा था कि सचमुच वह ही सोई है पलंग पर। इसी एक पल के लिए जाने कितने स्वप्न देखे थे उसने।[५]

मंदा के द्वारा कहानी में मधु काँकरिया ने नारी के संवेदनशील रूप को चित्रित किया हैं। लेखिका ने इस कहानी में प्रस्तुत किया है कि, एक सामान्य किशोरी का सामान्य सपना उम्र के पडाव तक पूर्ण नहीं होता। परिवार के भरण-पोषण, कल्याण में वह अपने आपको ढाल देती है। इसका सजीव चित्रण हुआ हैं।

मधु काँकरिया का तीसरा कहानी-संग्रह और अंत में इशु है। इस संग्रह की कहानी कुल्ला में नारी का चित्रण व्यक्त हुआ है। इसमें नायिका प्रमिला को पति द्वारा हीनता से भरा बर्ताव मिलता है। दाम्पत्य जीवन में जहाँ पति-पत्नी दोनों एक-दूसरे के जीवन के रथ के पहिए होते हैं। प्रमिला पति के प्रेम में अपना सर्वस्व लुटा देने को तैयार। परंतु नयी ब्याहता पत्नी के साथ उसका पति उसके साथ आक्रोशपूर्ण व्यवहार करता हैं। प्रमिला पति का दिल जीतने के लिए बडे.चाव से पति के लिए रसोई में कुछ पन्ना ही रही थी कि उसकी पीठ पर पीछे से टूथपेस्ट के झाग का कुल्ला पति के ही द्वारा मादा जाता है। जूठे कुल्ले से प्रमिला खौल उठती हैं। अपमान से थरथराई वह पति पर बरस पडती है। प्रमिता सोचती है कि, इशश... किस कूडेदान की अर्चना करती

International Multilingual Research Journal

Vidyawarta®

MAH/MUL/03051/2012
ISSN-2319 9318

Special Issue

17-18

श्री शिवाजी विद्या प्रसारक संस्था का

भाऊसाहेब ना.स.पाटील साहित्य एवं मुल्ला फिदा अली मुल्ला अब्दुल अली वाणिज्य महाविद्यालय, देवपुर, धुले (महाराष्ट्र)

स्नातकोत्तर हिंदी विभाग

एवं

उत्तर महाराष्ट्र हिंदी प्राध्यापक परिषद

के संयुक्त तत्वावधान में आयोजित

वार्षिक अधिवेशन एवं राष्ट्रीय हिंदी संगोष्ठी

'इक्कीसवीं सदी का हिंदी कथा-साहित्य : विविध आयाम'

रविवार, ४ फरवरी २०१८

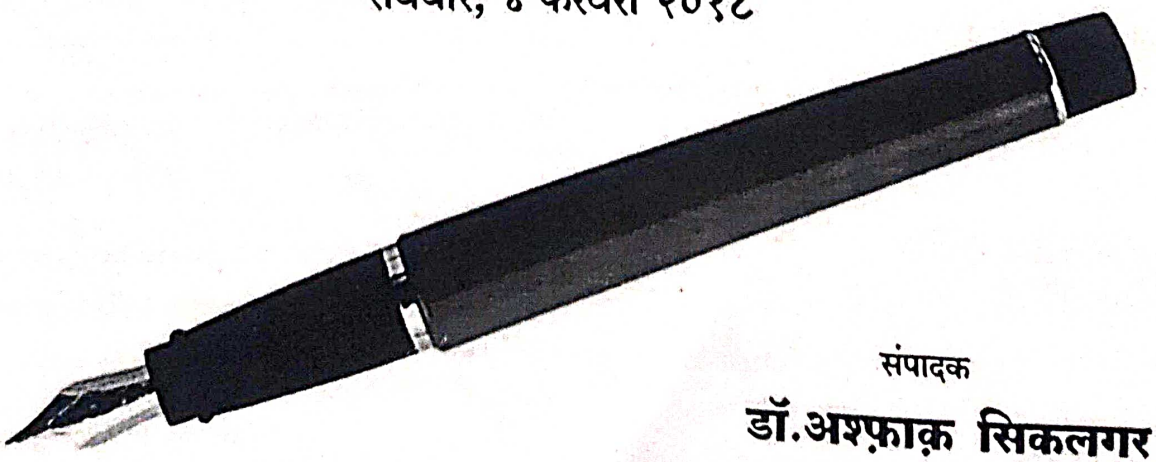

संपादक

डॉ.अश्फ़ाक़ सिकलगर

54) करुणा उपन्यास में चित्रित दलित चेतना || 173
इबरार खान

55) एक औरत : तीन बटा चार' कहानी संग्रह में चित्रित भौतिकता का यथार्थवादी चित्रण || 177
प्रा. संजय प्रल्हाद महाजन

56) काला पहाड़ उपन्यास में जनजातिय जीवन || 180
डॉ. मनोहर हिलाल पाटील

57) जहाँ जिन्दगी कैद है में मानवीय मूल्यों का विघटन || 183
प्रा.डॉ. कल्पना राजेंद्र पाटील

58) समयातीत गाथाएँ स्त्रियों की - मृणाल पांडे || 185
डॉ. राजेंद्र गणपत पाटील

59) आदिवासी कंजर समाज की नारी का जीवन्त दस्तावेज - रेत || 187
प्रा. शेख जाकीर एस.

60) अनामिका के कहानियों में चित्रित नारी || 190
प्रा. प्रल्हाद विजयसिंग पावरा

61) मृदुला गर्ग के मिलजुल मन उपन्यास में नारी चित्रण || 194
प्रा.डॉ.वनिता त्र्यंबक पवार

62) "ग्लोबल गाँव के देवता उपन्यास का मूल्यबोध" || 199
डॉ. अशोक एम. पवार

63) मानवीय संदर्भो को तलाशता यथार्थ — 'मुर्दहिया' || 202
प्रा.दिलीप पी.पाटील,जि.जलगांव

64) ``सुरजपाल चौहाण कृत `तिरस्कृत` में दलित चेतना`` || 204
प्रा. विष्णु जी. राठोड

65) `मोहनदास` कहानी में चिंतन के विविध आयाम || 206
प्रा. रविंद्र रामदास खरे

66) शिवानी की कहानियों में चित्रित सामाजिक समस्याएँ || 209
प्रा. निंबा लोटन वाल्हे

67) मार्च, माँ और साकुरा कहानी संग्रह के संदर्भ में || 211
तायडे राजाराम बाबुराव

https://sites.google.com/site/vidyawartajournal http://www.vidyawartajournal.blogspot.com

भी आज मॉडर्न और सभ्य समाज की औरतें जो कुछ नहीं पा सकती उसे एक खिलावड़ी रूक्मिणी पा लेती हैं। दांवपेंच, छल-प्रपंच के साथ अपनी देह को धरमपूरा सीट के चुनाव के लिए हथियार बनाकर जिस चतुराई के साथ वह चुनाव जीतती है और उपमंत्री पद की शपथ लेती है, वह विस्मयकारी है।[१०]

अतः भगवानदास मोरवाल जी का यह उपन्यास नारी अस्मिता और कंजरजाति के अस्तित्व को बचाएं रखने का प्रयास करता हैं। यह उपन्यास कंजर जाति की आस्था धार्मिक विश्वास, समाज, संस्कृति का आईना हैं। वास्तव में यह अनुपम हैं। इसमें कंजर जनजाति का इतिहास रीति-रिवाज और उनकी सामाजिक जीवन आदि का प्रामाणिक चित्रण हुआ है। जो निश्चित रूप से प्रशंनीय हैं।

सन्दर्भ ग्रन्थ :-

१) रेत - भगवानदास मोरवाल - पृष्ठ २२
२) पूर्ववत - पृष्ठ ५५
३) पूर्ववत - पृष्ठ ५५
४) पूर्ववत - पृष्ठ १४४
५) पूर्ववत - पृष्ठ १६३
६) पूर्ववत - पृष्ठ १२१
७) पूर्ववत - पृष्ठ १८२
८) पूर्ववत - पृष्ठ ११२
९) पूर्ववत - पृष्ठ १११
१०) समीक्षा संपा. गोपालराय अप्रैल-जून २००८, पृष्ठ १५
११) उपन्यासकार भगवानदास मोरवाल - डॉ. मधु खराटे
१२) आदिवासी केन्द्रित हिन्दी उपन्यास - डॉ. प्रमोद चौधरी

❑❑❑

60

अनामिका के कहानियों में चित्रित नारी

प्रा. प्रल्हाद विजयसिंग पावरा
हिंदी विभाग,
कला, विज्ञान एवं वाणिज्य महाविद्यालय, यावल, जि. जलगाँव

समाज की गतिशीलता में स्त्री-पुरूष की संयुक्त और महत्वपूर्ण भूमिका होती है। कहा जाता है यह दोनों परिवाररूपी रथ के पहिए है। इनमें से किसी एक की गति शिथिल होने का तात्पर्य यह है दोनों में विरोधाभास की स्थिति आ गई है। इसलिए स्त्री और पुरुष दोनों एक-दूसरे को पूरक है। आचार्य रामचंद्र वर्मा ने नारी के स्वरूप को स्पष्ट करते हुए मानक हिंदी कोश में अपना विचार इस प्रकार व्यक्त किया है, ``विशेषतः वह स्त्री जिसमें लज्जा, सेवा, त्याग आदि गुणों की प्रधानता हो वह नारी है।``[१] अनामिका के उपन्यास `विल्लू शेक्सपियर : द पोस्ट बस्तर` में मान्यता मैड़म के माध्यम से पारिवारिक स्थिति का चित्रण किया है। मान्यता मैड़म के बार में उदाहरण द्रष्टव्य हैं,``घरेलू मुकदमें, मेरी बदनामियाँ, राजनैतिक गिरफ्तारियाँ, अनिश्चिताएँ, गलतफहमियाँ और लम्बी बिमारियाँ. ....! घरेलू रगड़ो-झगडों और संकटों-तनावों की ये ही पेटेंट सूची हैं जिस पर टिक-टिक करता जीवन चुक जाता हैं।``[२] मान्यता मॅडम इन सारी समस्याओं के बावजूद भी अपने जीवन में संघर्षशील है। इस प्रकार अनामिक ने मान्यता मॅडम के जीवन में आई समस्याओं का चित्रण प्रस्तुत किया है।

समाज में प्रचलित प्रथाओं के अनुसार, नारी घर में, परिवार में और समाज में उपेक्षित थी। घर में सास-ससुर तथा पति की इच्छा के अनुसार ही रहती है। वह आर्थिक दृष्टि से परतंत्र और समाज में प्रताडित है। नारी को प्रेम करने का अधिकार नहीं था। नारी केवल उपभोग का साधन मानी जाती थी । पुरूषों की वासना का शिकार हो चुकी थी। इस सम्बन्ध में अरविंद जैन लिखते है ``सामंती व्यवस्था में नारी एक वस्तु है, संपत्ति है, संभोग और संतान की इच्छा पूरी करने वाली मादा है।``[३] परिवार में पितृसत्ता वर्चस्व के कारण नारी को घर में दुय्यम स्थान दिया जाता हैं। ऑफिस से आने पर स्त्री को पति के आज्ञा का पालन करना पड़ता हैं। अगर इसमें गलती होती है तो,

गालियों की बौछार सहनी पड़ती हैं। इस बारे में शीरीन कहती हैं, ``जैसे की हर घर में दूध और सब्जी का उठाना होता हैं न कि रोज इतना आना ही हैं, हमारे घर अब्बू की ढाई थोड़ी गोलाबारी, ढेर-सा कुआत रोज का उठाना था ! बाकी अलग से भी गाली-गलोज, डॉट-मार-मलामत ओर कोर्ट मार्शल के हजार प्रसंग !``[४] पुरूष अपने अधिकार का इस्तेमाल करता हैं। उसके मन के विरूध्द होनेवाली बातों पर अपनी भड़ास निकालता हैं। इतना ही नहीं बल्कि पशुता का व्यवहार करता हैं। शीरीन इस बारे में तारा से कहती है कि, ``अम्मी दरअसल अब्बू का बॉक्सिंग बैग हैं``[५] स्त्री को समाज में उपेक्षित पात्र के रूप में देखा गया है। यह किस्सा सिर्फ शीरीन के घर का ही नहीं बल्कि कई घरों का हैं। घर में स्त्री को मार-पीट, गाली-गलोज का शिकार होना पड़ता हैं। यह स्थिति सिर्फ घर में रहनेवाली स्त्रियों की ही नहीं बल्कि नौकरी करनेवाली स्त्री को भी शक की नजर से देखा जाता हैं। ऐसे घरो में किसी छुट्टी के दिन किसी व्यक्ति का फोन आता हैं तो वह उसे शक की नजर से देखता जाता हैं। इस बारें में शेफालिका कहती हैं कि, `हमारा संडे फंडे न होकर गनडें हो जाता। प्याले में तुफान उठते ही रहते।``[६] स्त्री को जीवन में संघर्ष करना पड़ता हैं। परिवार के किसी भी सदस्य की गलती होने से सारी मुसीबत माँ पर ही आती हैं। घर में पुरूष अपने अधिकारों का इस्तेमाल करके, घर से बाहर निकल जाने को कहता है। घर में स्त्री की औकात बता दी जाती हैं। शीरीन के पिताजी उसकी माँ को इसी तरह कहते हैं कि,``ये देखो- सफाई की है, जूठन की ट्रे से सड़ा पड़ा हैं चीनी का डब्बा !.... और इस कपड़े के वार्डरोब पर खरोंच कैसे पड़ी... देखो, अभी उठके देखो- और सुनों, ऐसे किराएदारों की तरह बेदिली से घर में रहना हैं तो अपना रहने का इतंजाम कहीं ओर करो !चली जाओं ``[७] लेकिन स्त्री के पास कोई दूसरा पर्याय नहीं होता। अगर वह प्रयास भी करेगी तो अपने भाई को कहती है और भाई बुध्द की तरह अपने वाक्य कह देते हैं। इसका उदाहरण परिलक्षित होता हैं। जैसे, वह कहता है, कि ``हिम्मत नहीं हारो.... जैसे गजराज रणक्षेत्र में हर ओर से तीर आता हूआ देखकर भी लक्ष्य विमुख नहीं होता, तुम भी डटो, अपनी राह नहीं छोडों, तुमसे बड़ा सवाल स्पंदन का हैं तुम्हे दूसरा पति-प्रेमी मिल जाएगा, उसे दूसरा पिता कहाँ मिलेगा ?``[८] क्या स्त्री का अस्तित्व सिर्फ दूसरों के लिए हैं ? उसका खुद का जीवन नहीं होता? क्या उसकी अस्मिता, सम्मान स्त्री के लिए नहीं है ? इसका उत्तर अनामिका ने अवंतिका देवी के माध्यम से देने का सफल प्रयास किया हैं। अवंतिका देवी पति व्दारा घर से निकाली जाती है। वह सीपीएम की सांसद होती है। वह अपने अनुभव तारा को कहती है, कि ``और बेटा, एक तरह कॉल गर्ल औरत होती हैं-व्याहता गृहस्थिन भी। कॉलगर्ल को यह छूट होती हैं कि हर कॉल पर वह प्रस्तुत न हो, पर गृहस्थिन की क्या मजाल। आगे याद हैं मुझे, कभी-कभी उनका प्रंचड क्रोध शांत करने के लिए या झगडे के संक्षिप्त समाधान के लिए खुद भी देह बिछा दी मैंने, एक ब्याहता के रूप में ही देह का उपयोग एक `ट्रेप` की तरह किया। जब कोई उपाय नहीं सूझा तो घर की `शांति` के लिए और अपने भी अज्ञात भयों से निजात पाने को एक `फंदे` की तरह देह बिछाई मैंने। जो बात सुनने को तैयार हो ही नहीं, उस पति के आगे एक `शॉर्टकट` की तरह अपनी देह बिछा देने को मजबूर पत्नियों की व्यथा-कथा किसी कॉलगर्ल से कम नहीं होती उस क्षण।``[९] घर में स्त्री शांति के लिए देह का इस्तेमाल करती है। इस प्रकार स्त्री जीवन में संघर्ष के साथ अपना मार्ग खोजने का प्रयास करती है।

अनामिका एक नारी के मन की करूण गाथा प्रस्तुत करती हैं। समाज में चलने वाली कुप्रवृत्तियों में घरेलु हिंसा भी महत्वपूर्ण हैं। घर के चार दीवारों के बीच चलनेवाली इन घटनाओं पर किसी का ध्यान नहीं जाता। स्त्री को पति रात को मार-पीटकर अपना वर्चस्व दिखाता है। इस तरह स्त्री शोषण का शिकार होती है। स्त्री अपने विचारों, भावानाओं का दमन करती है। दूसरे दिन अपने-अपने काम करती है। इस बारे में अनामिका लिखती है, ``पिट-पिटकर औरत क्या करेगी ? कुछ देर चिखेगी, फिर रोएगी-रुठेगी और उसके बाद धीरे-धीरे बिना मनाए मानकर काम-धाम में व्यवस्थित हो लेगी, पहले घर में मुस्कुराएगी और उसके बाद बाहर जाकर भी लगेगी हंसने, सभा में, मंच पर, हर जगह नजर आएगी औरत की हंसी, और कुछ नजर नहीं आएगी। क्या हंसी ही नये जमाने का घुघट हैं।``[१०] वह भी क्या कर सकती हैं। किसी के आगे वह नहीं बता सकती अगर ऐसा बता दिया तो लोग एक बुलाने पर दस आ जाते हैं। वह स्त्री की पीड़ा कम करने नहीं बल्कि अपनी भूख मिटाने का एक साधन मात्र के रूप में देखते हैं। किसी बेसहारा स्त्री को सिर्फ एक अच्छा मित्र चाहिए, पुरूष नहीं। इस संदर्भ में अनामिका लिखती है कि,``सर्वतोमुखी प्रेम का दावा ठोंकने वाले देह-लोलुप प्रेमी तो `तीन बुलावै, तेरहा आवै` की तरह थोक में राह-मिल जाते हैं मगर देह-निरपेक्ष कोई सच्चा दोस्त नहीं मिलता किसी अकेली स्त्री को।``[११] समाज में बेसहारा स्त्रियों के प्रति पुरुष कठोरता का व्यवहार करते है। उसे उपभोग का साधन मानते है।

स्त्री अपने दुख दूसरों के पास व्यक्त नहीं करती। मान्यता मैडम अपने पारिवारिक जीवन का रथ ढो रही थी लेकिन मान्यता मैडम और प्रो.आशिष बचपन से साथ में पढा-लिखा करते थे। ये दोनो शादी भी करने वाले थे, लेकिन प्रो. आशिष विदेश जाने के बाद उनका विवाह नहीं हो सका। लेकिन वह विदेश से लौटकर कहता है

कि, ``मैंने स्वयं को पूरा अर्पित कर रखा है, आपसे तो कुछ भी अपेक्षा नहीं की, पढ़िए-लिखिए, अपने दायित्व पूरा करीए, बस इतनी छूट दीजिए की हर दिन एक बार दस मिनट का खातिर फोन कर लिया करूँ !``[१३] समाज में ऐसे रिश्तों को क्या नाम देना चाहिए ? क्या एक स्त्री और पुरुष के बीच मित्रता नहीं हो सकती ? क्या वह सच्चा मित्र नहीं हो सकता ? ऐसे कई प्रश्न स्त्री के मन में उठते है। मान्यता मैड़म कहती है, ``मेरे स्वभाव में यही खराबी है कि स्नेह को लोग प्रेम समझ ा लेते हैं। और तरह-तरह की उम्मीदें लगते है करने जिनसे मेरा मन घबड़ा जाता हैं।.... अब इसे कैसे निबटूँ !``[१३] अनामिका ने मान्यता मैड़म के माध्यम से स्त्री की मनोदशा का चित्रण किया है।

प्रेम संसार को सरस बनाकर गतिशील रखने का मुख्य आधार है। प्रेम पर लोभ, द्वेष और वासना का उभरता रंग उसे विकृत करता जा रहा है। पूर्व समय में `प्रेमिका` शब्द पूर्ण सम्मान से लिया जाता था। क्योंकि दोनों पक्षों के प्रेम में सामायिक रंग, मान्यताओं को सम्मान, पारिवारिक सहजता और जीवन जीने का सहज मार्ग दिखाई देता था। लाल और रूनू दोनों प्रेम करते हैं। प्रेम के आवेग में उनके शारीरिक संबंध हो जाते हैं। जब शादी की बात आती है, तो लाल उसे अपने कर्तव्य की याद दिलाता हैं। लाल अन्य पुरुषों की तरह सपना समझकर भूला देना चाहता हैं। वह कहता है कि, ``तुम्हारी कोख में मेरा बीज तो है ही ! इसे ही उदात्त भाव से पालना या चाहो तो मुक्ति पाकर किसी अच्छे लड़के से ब्याह के लिए भी स्वंतत्र हो ! मेरी तरफ कोई बाधा नहीं देखते-देखते अपने नये घर-संसार में मुझे भूल जाओगी। समझना कि एक सपना देखा था..... ``[१४] क्या समाज में रहकर बिना विवाह के बच्चे को जन्म देना संभव है ? आज समाज में `प्रेम` शब्द विकृत हो गया है लेकिन अफजल जैसे भी पुरुष होते हैं जो रूनू को प्रेम करते है। लाला और रूनू दोनों के बीच आना नहीं चाहता था। लेकिन रूनू को कभी अकेला भी नहीं छोड़ा। लाल चले जाने के बाद अफजल ने दूसरी शादी भी नहीं की। अफजल ने कभी रूनू से कुछ नहीं चाहता लेकिन पिता की तरह रूनू की बेटी की जिम्मेदारी स्वयं संभालता है। अफजल कहता है कि,``रूनू छोटे बच्चों के स्कूल में पढ़ाती हैं। मेरी प्राविडेण्ड फण्ड के पैसे है हीं। मिला जुलाकर किसी तरह काम चल जाएगा।``[१५] अफजल रूनू से प्रेम करता था यह बात उसे कभी नहीं पता चलने दी। रूनू के देहांत के दिन ही अफजल ने आत्महत्या कर ली। समाज में ऐसे भी प्रेमी होते है, जो स्वयं के बारे में नहीं सोचते बल्कि अपने अतीत प्रेमी के प्रति अपना दायित्व निभाते हैं लेकिन टुन्नन जैसा व्यक्ति प्रेम को बता कर मीरा को अपने अस्मिता के प्रति जागरूक करता हैं। जब मीरा को अपने ससुरालवाले लोग तंग करते है, अपनी बीमार माँ से अंतिम समय मिलने नहीं जाने नहीं दिया जाता, तो टुन्नन कहता हैं कि, ``अन्याय सहना भी अन्याय ही है मीरा । तुम सारे बन्धनों को तोड़कर आ जाओं। मैं दुनिया की सारी खुशियों से तुम्हारा दामन भर दूँगा। रूनू मौसी भी हमारे साथ रहेंगी। जब दुनिया को हमारी परवाह नहीं तो हम दुनिया की परवाह क्यों करें ? हम अलग ही दुनिया क्यों नहीं बसाएँ ?``[१६] टुन्नन मीरा को अपने अधिकारों की याद दिलाने का प्रयास करता है। वह समाज के ऐसे रिश्तों को बोझ समझता है।

पति के पापाचार के विरूध्द खड़ी होती दीक्षा का दृढ निश्चय, उसका नन्ना के घर चली आती है। वे पारिवारिक जीवन की स्वार्थपूर्ण प्रवृत्ति से त्रस्त होकर कहती है, ``तूने ही ठीक किया, नन्ना कि पारिवारिक को जीवन की इकलौती केंद्रीय सच्चाई बनकर अपने पूरे हावी नहीं हो जाने दिया.... चार गज कपड़े से भी बदतर हो जाती है आदमी की जिन्दगी अगर कोई बड़ा सामाजिक उद्देश्य लेकर चला न जाए-बचपन में दर्जी के हाथ में रहती हैं, यौवन में शो-केस के हैंगरों में टंगी हुई और बुढापा आते-आते धूल-भरे बक्से में बंद-बंद लगती है, गुमसाइन महकने !``[१७] अनामिका ने स्त्री जीवन की सच्चाई को प्रस्तुत करने का प्रयास किया है।

नारी विवाह के कारण पति से जुड़ी होती है, परंतु कुछ परिस्थितियों में वह पति को छोड़कर किसी अन्य पुरूषों के प्रति आकृष्ट होती है। यह आकर्षण वासना की भूख मिटाने के लिए किया जाता है। फैनी पावर्स के पति को पागलपन के दौरे पड़ते है वह उसे नौकरों के सहारे छोड़कर चली आती हैं। अपने पति से उसे शारीरिक सुख नहीं मिलता हैं तो वह दूसरों के माध्यम से पूरा करती है ``.... इस तरह मैंने पूरा भारत देखा.... कई रजवाड़े में राही-राजा से लेकर फकीर तक-मेरे जितने प्रेमी हैं-उनसे मेरा सुख और दुःख-दोनों का साथ हैं।``[१८] फैनी पावर्स के माध्यम से अनामिका पाश्चात्य संस्कृति के स्त्री का चित्रण करती है। अनामिका फैनी पावर्स के माध्यम से पूरे विश्व में एक अलग विचार को प्रस्तुत करना चाहती हैं। उपन्यास में फैनी पावर्स ने इतने लोगों के साथ अपनी प्रणय क्रीडा की, लेकिन किसी का परिवार उजड़ने नहीं दिया। इस बारें में फैनी कहती है कि, ``इतना मैंने ध्यान रखा कि मेरे चलते किसी का घोंसला न उजडें ! उसको ही पास फटकने दिया जो मेरी तरह बिल्कुल निस्संग था।``[१९] लेकिन यह आकर्षण जब घनिष्ट होता है तब विवाह बाह्य दाम्पत्य भाव का स्वरूप धारण कर लेता है।

वेश्या समाज की लिए एक ज्वलंत समस्या है। वेश्या के मूल में हमारे समाज की आर्थिक स्थिति है। समाज में कोई भी स्त्री वेश्या व्यवसाय को अपनाने के लिए तैयार नहीं होती। इस संदर्भ में डॉ. रामेश्वर नारायण लिखते है, ``वेश्यावृत्ति का विकास सामाजिक

नैतिकता के अध:पतन का सूचक है। पाश्चात्य देशों में वेश्यावृत्ति उपेक्षित नहीं क्योंकि वहाँ यौनेच्छा पूर्ति की स्वतंत्रता है। भारतीय संदर्भ में अभी तक यह संभव नहीं है कि यौनभावना को स्वच्छंद छोड़ दिया जाए, इसलिए इस पर सामाजिक अंकुश के साथ-साथ सरकारी अंकुश भी है, किन्तु वेश्याओं के पक्ष में अगर विचार किया जाए तो यह निष्कर्ष निकलता है, कि वेश्यावृत्ति उनके लिए एक समस्या है क्योंकि यह वृत्ति अपनाने के लिए वेश्याएँ स्वच्छंद नहीं है।''[२०] अत: अपनी आजीविका चलाने के लिए उनकी मज़बूरी है। नारी इस जन्म में क्या किसी भी जन्म में लड़की बनने की चाहत नहीं करेगी। जो नारी वेश्या व्यवसाय में जुड़ी होती है, उसका घर, परिवार, बच्चे आदि की कामना करना मुश्किल है। नारीत्व के सभी गुण होने के बाद भी वह अपना खुद का परिवार नहीं कर सकती। समाज के भेड़ियो की कामवासना को उसी को मिटाना हैं। उसका पूरा जीवन इसी दलदल में व्यतीत हो जाता है। समाज इस वर्ग को उपेक्षित करने के बाद आम व्यक्ति जैसे इनका जीवन नहीं होता। समाज में ऐसे कोने में रखा है, कि कभी कोई भी प्रकाश उनकी और नहीं आएगा। साहित्यकार अपनी रचना में ऐसे ही वर्ग की बात साहित्य के माध्यम से समाज के सामने लाने का प्रयास करता है।

अनामिका द्वारा स्त्री के कोमल भावों के साथ-साथ उसके जीवन की कठिनाइयों को चित्रित करने का सफल प्रयास किया गया हैं। उनके पात्र हमें समाज में, मुहल्ले में, गाँव में कहीं भी देख सकते हैं। अनामिका के उपन्यासों में देह व्यापार करनेवाली नारी का चित्रण यथार्थ धरातल पर दृष्टिगत होता हैं। बचपन का एक उदाहरण तारा अपनी मां का चित्रण प्रस्तुत करती है, ``चलना कहाँ हैं ? चार-पाँच की ही रही होऊँगी तब, अम्मी को ऐसा ही करते देखा थी ! सों बातों में वक्त जाया नहीं करतीं, झट कहती हैं-`चलना कहाँ हैं ? जाने को जगह नहीं होती तो अक्सर मुझको ही खटिया के नीचे सुलाकर ऊपर वह आँधी-तुफान झेलती और फिर झट पल्लू से जाँघें पोंछती हुई, कहती-`चला आ बहार आ जा, बेटी, चलते हैं चौक पर, जलेबी खिला लाऊँ।''[२१] हमेशा साहित्यकार ऐसा अछूत और अंधेरा कोना समाज के सामने लाता है। बचनप में माँ को जीवन को देखकर तारा कॉलगर्ल बन जाती है। इस सम्बन्ध में अनामिका लिखती है,``अम्मा ने मिशनरी स्कूल में पढाया था। देखने में ठीक थी, इसलिए अक्सर विदेशी मेहमानों को सप्लाई होती ! और उमर कम थी, इसलिए मुझमें वात्सल्य के सूत्र भी ढूंढ लेते वे कभी-कभी ! मेरी उमर की अक्सर उनकी बेटियां होती जिनकी याद भी आती । एक साहब तो,खैर, इतना दयालू था कि प्यार-प्यार करने के बाद उसने मुझे बिस्कुट खरीद दिए और किताबें भी !उसका पता मैंने बहुत दिन संभाल कर रखा। ऐसी ने कहा था कि कभी कोई काम शुरू करना चाहें तो ढेर-सा पैसा भेजेगा।''[२२] वेश्या व्यापार करनेवाली स्त्रियों के पास अलग-अलग व्यक्ति ग्राहक बनकर आते हैं। जब कोई विवाहित अपनी पत्नी के साथ जो देती है वासना पूरी नहीं कर पाता वह भडास इन वेश्याओं के देह पर निकालता है। इस संदर्भ में तारा कहती है, कि ``अब अपने जीवन का रोना रोएगा, अब अपने फ्रश्ट्रेशन मुझ पर निकलेगा, अब अपनी फैंटेसी आजमाएगा.... कभी-कभी तो ऐसा लगता है कि मैं बस ऊर्जा बोर्ड हूँ और तरह-तरह की आत्माएँ मुझ पर उतरती हैं।..''[२३] समाज भूल जाता है कि यह भी एक स्त्री है। समाज में वेश्याओं को सिर्फ उपभोग का साधन माना जाता है। पुरुष धन के बल उसके मन के विरूध्द देह के साथ खेलता है। वेश्याओं के प्रति इतना पशुता का व्यवहार किया जाता हैं। अनामिका ने नारी मन का ऐसा कोई कोना अछूता नहीं छोड़ा जो किसी वेश्या के जीवन में ना घटा हो। किसी दिन अगर वहीं ग्राहक आने पर प्रतिरोध किया तो सिर्फ गालियों के बिना कुछ नहीं मिलता। वह महाक्रूर हँसी हँसकर बोलता है कि, ``तेरी औकात ही क्या हैं ? रंडी ? रंडी ही है न तू ? चुपचाप मेरा कहना मान !''[२४]

समाज में वेश्या व्यवसाय के कारण अनैतिक घटनाएँ कम होती हैं। स्त्री के शोषण में बलात्कार जैसी घटनाएँ दिखाई देती है। पुरुष अपनी वासना की हवस मिटाने के लिए वेश्याओं के पास जाता है। समाज में वेश्याओं के प्रति उदासीनता दिखाई देती हैं। पुरुष वेश्याओं को तुच्छ मानते है। अनामिका इस संदर्भ में लिखती है कि,``रण्डी-रणचण्डी- बचपन में एक सहेली के घर जाती थी तो चिढ़ाते थे उसके भाई..... उस समय तो मैं कटकर रह जाती थी, बहुत जल्द ही उसके घर आना-जाना छोड़ दिया.... पर आज कहीं मिले तो नज़रे मिलाकर जबाब दूँ- तुम्हारी माँ-बहने सुरक्षित है तो हमारे ही कारण ! मरद की हवस के बहुत रंग देख लिए ! सारी लल्लो-चप्पो एक ही नरक कुण्ड में जाकर गिरती हैं.... ''[२५] अनामिका के उपन्यास में वेश्याओ के जीवन का सत्य सामने लाने का प्रयास किया हैं। समाज में यह ऐसा कटा वर्ग है लेकिन इसके बिना समाज नहीं चलेगा।

निष्कर्षत: हम देख सकते है कि परिवार में पत्नी का प्रेमी अथवा पति की प्रेमिका समस्या की जड़ है। परिवार में नारी पति से भौतिक समृध्दि की अपेक्षा उससे एक आत्मीय भाव, प्रेम और विश्वास चाहती है। वह पुरूष के सहद्यता की प्यासी है। ससुरालवालों ने मीरा को घर से निकाल दिया। आस-पड़ोस मित्र-मण्डली कान्त से सीधे-मुँह बात नहीं करते। समाज में विवाहित पुरुष किसी विधवा स्त्री को घर में रखता है तो समाज उसे अनैतिक व्यवहार मानकर बाधा उत्पन्न करते है। ऐसे परिस्थिति में वह स्त्री समाज के सामने उपभोग

Impact Factor – 6.261 Special Issue - 131 Feb. 2019 ISSN – 2348-7143

INTERNATIONAL RESEARCH FELLOWS ASSOCIATION'S

RESEARCH JOURNEY

UGC Approved Journal

Multidisciplinary International E-research Journal

18-19

हिंदी साहित्य में विविध विमर्श

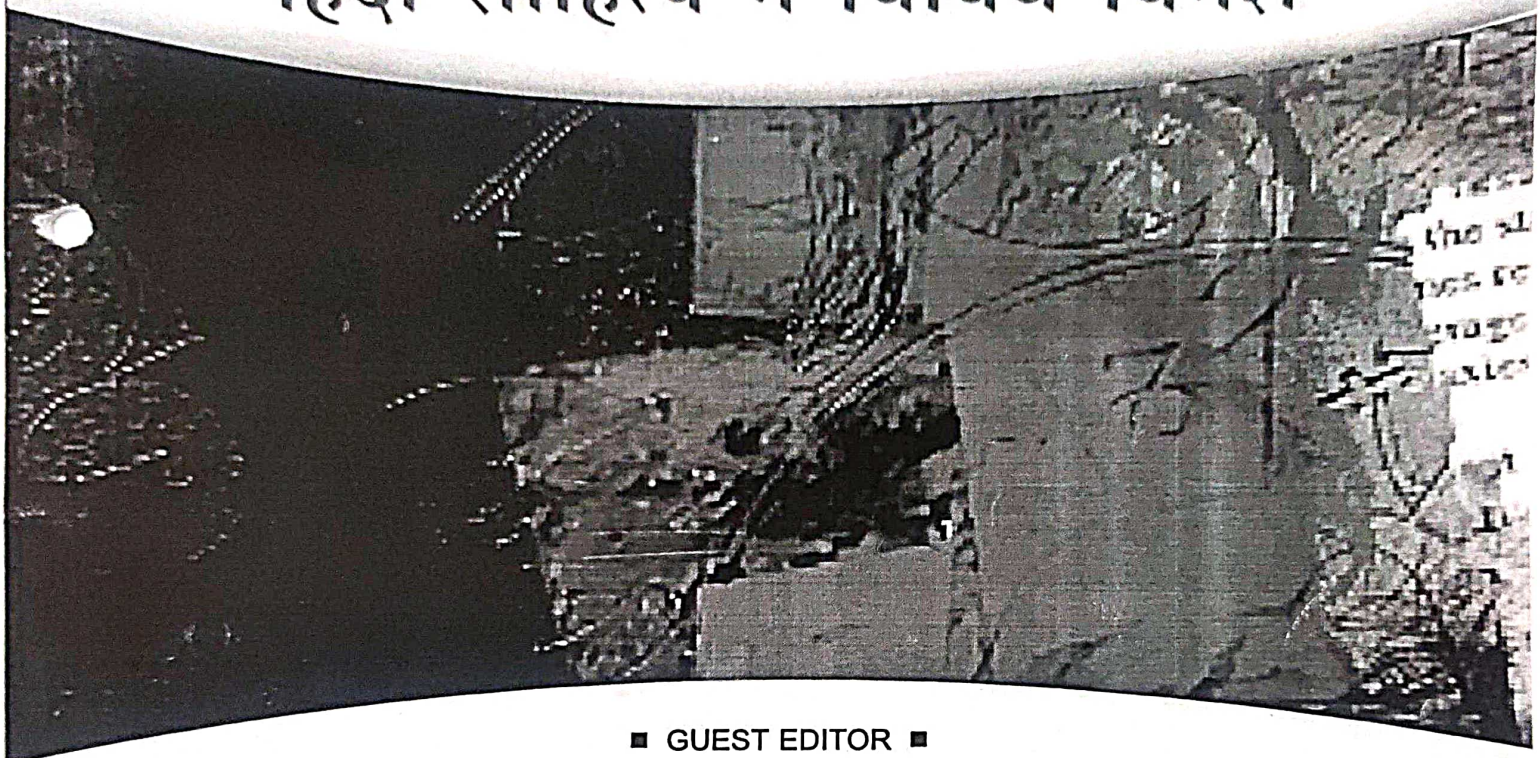

■ GUEST EDITOR ■
Principal Dr. P. R. Chaudhari

■ EXECUTIVE EDITOR ■
Dr. Vijay A. Sonje

■ ASSOCIATE EDITOR ■
Dr. Kalpana L. Patil
Dr. Ishwar P. Thakur
Dr. Satish D. Patil

■ CHIEF EDITOR ■
Mr. Dhanraj T. Dhangar

This Journal is indexed in :

- Scientific Journal Impact Factor (SJIF)
- Cosmoc Impact Factor (CIF)
- Global Impact Factor (GIF)
- Universal Impact Factor (UIF)
- International Impact Factor Services (IIFS)
- Indian Citation Index (ICI)
- Dictionary of Research Journal Index (DRJI)

For Details Visit To : www.researchjourney.net

SWATIDHAN PUBLICATIONS

४४	'त्यागपत्र' उपन्यास में स्त्री-विमर्श हबीब खान	१०० १०२
४५	नारी विमर्श और समकालीन महिला कथाकार देवेन्द्रसिंह ठाकुर	१०५
४६	विमर्शों के दौर में हिन्दी कविता (दलित, स्त्री, आदिवासी विमर्श के विशेष संदर्भ में) डॉ. गजानन सुरेश वानखेडे	१०९
४७	आदिम कला 'ललमनियाँ' कहानी में स्त्री विमर्श प्रा.डॉ. लता नामदेव पेंडलवाड	१११
४८	अंतिम दशक की हिंदी कविता में व्यक्त पारिवारिक विमर्श प्रा. अनिल बाबुलाल सूर्यवंशी	११४
४९	प्रभा खेतान के काव्य में चित्रित लैंगिक संवेदना डॉ. प्रल्हाद विजयसिंग पावरा	११८
५०	समकालीन हिंदी गजल के विविध आयाम प्रा.डॉ. मुकेश दामोदर गायकवाड 'मुकेशराजे'	१२१
५१	'सलाम आखिरी' उपन्यास में चित्रित वेश्या समस्या और समाधान प्रा. नटवर संपत तडवी	१२३
५२	आदिवासी भील्ल जनजाति का सामाजिक एवं सांस्कृतिक अध्ययन प्रा. अंजीर नथ्थू भील	१२५
५३	डॉ. सुरेंद्र विक्रम के साहित्य में बालमनोवैज्ञानिकता का चित्रण डॉ. अशफ़ाक़ इब्राहिम सिकलगर	१२७
५४	भगवानदास मोरवाल के उपन्यासों में स्त्री-विमर्श प्रा.डॉ. मनोहर हिलाल पाटील	१२९
५५	आदिवासियों के शोषण का चित्रण करता दस्तावेज- 'पोस्टर' प्रा.डॉ. मनोज महाजन	१३१
५६	२१ वी सदी में हिंदी महिला उपन्यास लेखन प्रा.डॉ. मंजु पु. तरडेजा (सिंधाणी)	१३३
५७	'मुझे चाँद चाहिए' उपन्यास में नारी विमर्श प्रा. माधुरी सुरेष ठाकरे	१३५
५८	निरूपमा सेवती के कहानियों में 'वृध्द विमर्श' डॉ. राहुल सुरेश भदाणे	१३७
५९	हिंदी ग़ज़लकारों की ग़ज़लों में नारी विमर्श डॉ. दिपक विश्वासराव पाटील	१३९
६०	अवधी लोकगीतों में नारी जीवन के विविध आयाम प्रा. सौ. स्वाती व्ही. शेलार	१४१
६१	कृष्णा सोबती का उपन्यास 'दिलो दानिष' में अभिव्यक्त नारी-विमर्श डॉ. आशा दत्तात्रय कांबळे	१४३
६२	गीतांजलि श्री का उपन्यास 'रेत-समाधि' में वृद्ध विमर्श तायडे राजाराम बाबुराव	१४५
६३	धार्मिकता एवं सांस्कृतिकता से भरी मिथिलेश्वर की कहानियाँ डॉ. मनोज नामदेव पाटील	१४७
६४	भगवानदास मोरवाल के उपन्यासों में मुस्लिम स्त्री विमर्श प्रा. डिम्पल एस. पाटील	१५०
६५	अनामिका की कविताओं में स्त्री विमर्श डॉ. रेखा गाजरे, भावना बडगुजर	

ISSN : 2348-7143
Feb. 2019

प्रभा खेतान के काव्य में चित्रित लैंगिक संवेदना

डॉ. प्रल्हाद विजयसिंग पावरा
हिंदी विभागाध्यक्ष, कला, वाणिज्य एवं विज्ञान महाविद्यालय, यावल, जि. जलगाँव

सदियों से पुरूष नारी का यौन-शोषण एवं वह शोषित रही है। मध्यकाल में नारी का यौन शोषण अत्यधिक मात्रा में होने लगा। वे भोग्या बन गई एवं व्यक्ति से वस्तु बना दी गई फलस्वरूप उनकी खरीदी-बिक्री होने लगी। डॉ. अमरनाथ ने लिखा है कि मुसलमानों के सत्ता संभालते ही हिन्दुस्तान से नारियाँ पकड़-पकड़कर बाहर ले जाई जाने लगी और मध्य एशिया के बाजारों में उनका क्रय-विक्रय होने लगा। हिन्दुस्तान के राजाओं ने यवन दासियाँ विशेष रूप से पसंद की। हिन्दुस्तानी बादशाह और सामंत देश-विदेश की खूबसूरत लड़कियों से अपने हरमों को सजाने लगे।१ इस युग से नारी पुरूष की व्यक्तिगत संपत्ति बना दी गई। भौतिकता के युग में पूँजीवादी व्यवस्था में स्त्री उपभोक्ता की वस्तु बन गयी। बाजारवाद के युग में वह यौन दृष्टि से देखी गयी। अरविंद जैन ने लिखा है कि - पितृसत्ता अभी भी घर में अपनी बहू-बेटियों को घूँघट या बुर्के में कैद रखना चाहती है। मगर घर के बाहर उसे बिकनीवाली सुंदरियाँ चाहिए जो उसके सेवा, उद्योग, मनोरंजन, व्यवसाय चला सके और रोज नए ब्रांड बेच सके।२ पुरूष मानसिकता में नारी का शरीर शोषण का प्राइम साईट रहा है। आज के बाजारवाद एवं कार्पोरेट जगत में उसे विज्ञापन के लिए मॉडिल बनाकर देह प्रदर्शन के लिए विवश किया जाता है और धन के लोभ में कभी वह स्वयं इसे स्वीकारती है। अरविंद जैन ने लिखा है कि - पूंजी के स्वर्ग बाजार में 'औरत का गोष्त' सबसे सस्ता है। 'सेक्स सैरगाहों' में 'सेक्स टॉय' या नग्न प्रदर्शन से लेकर हर प्रकार की यौन गुलामी के लिए विवश औरतों का वधस्थल बनते जा रहे है। वे स्वतंत्र बाजार, यौन रोग ही नहीं यौन हिंसा के आकडे भी लगातार बढ़ रहे है। पूंजी के इस शर्मनाक खेल में औरत को भोग-उपभोग की 'सुंदर' वस्तु बनाया जा रहा है।३ इन सभी स्थितियों का साहित्यकारों ने चित्रण किया है।

नारी के हो रहे लैंगिक शोषण के संदर्भ में श्री. जगदीष्वर चतुर्वेदी सुधासिंह लिखते हैं कि, तब क्या औरत के संदर्भ में सारे निर्णय केवल उसकी देह से संबंधित हैं, देह पवित्र है या देह उच्छिष्ठ...देह से बाहर औरत की कोई हस्ती नहीं।४ आज के युग में स्त्री को केवल हवसभरी दृष्टि से देखनेवाले लोगों की संख्या बढ़ रही हैं। इस संदर्भ में प्रभा ने पछिन्नमस्ताण की प्रिया की त्रासदी व्यक्त की है कि, प्रिया निरंतर शोषित होती रही है। समाज की जर-जर मान्यताओं से भी पुरूष की आदिम भूख से भी, टूट जाने की हद तक, लेकिन टूटती नहीं।५

नारी केवल देह नहीं उसका भी अपना एक अस्तित्त्व हैं। वह भी पुरूष की तरह प्रभा खेतान अपने काव्य संग्रह में स्त्री पर होनेवाले लैंगिक शोषण का अंकन किया हैं। समसामयिक युग में महिला साहित्यकारों ने यौन शोषण का बेबाक चित्रण किया हैं। आज की स्थिति में यथार्थवादिता के लिए इस तरह का चित्रण कविताओं में हुआ हैं।

नारी जिससे प्रेम करती है, उसको देह तक समर्पित करने का तत्पर रहती है। इसके बदले उसका प्रेमी यौन शोषण करके उसे दुत्कार देता हैं। उसे अंधेरी गलियों में छोंड़ देता है। 'अपरिचित उजाले' इस काव्य संग्रह की कविता 'मिलने को बढ़े हुए हाथ' में प्रभा लिखती हैं कि,

मित्र कहने को
खुले ओंठ
आँखों में तैरते हुए स्वप्नों को
नोंच कर फेंक देना
हर मोड पर वापस। ६

सम्प्रति, प्रेम की परिभाषा ही बदल गई हैं। स्त्री-पुरूश के प्रेम का सच्चा रूप समाज व्यवस्था में दिखाई नहीं देता। आज का पुरूष इस्तेमाल करनेवाली वस्तुओं की तरह नारी को बहला-फुसलाकर उसे प्रेम के वादों में जकड लेता हैं। उसका लैंगिक शोषण करके जलती हुई सिगरेट की तरह जूते की नोक के नीचे मसल देता हैं। फिर भी अपने प्रेमी से प्रेमिका तहेदिल से प्रेम करती हैं। इसलिए उसके यौन शोषण में वह कुछ शेष नही रहना चाहती और समर्पित हो जाती हैं। प्रभा खेतान अपनी कविता 'तुम्हारे ओंठो पर' में लिखती हैं कि,

तुम्हारे ओंठोपर जल रही है - सिगरेट
मेरा मन
अधजली तीलियों से
फिर से जला दो
जूते की नोंक के नीचे मसल दो
मैं सिर्फ 'होना' चाहती हुं,
शेष न रहने के लिए७

प्रेमी अपनी प्रेमिका से किसी पार्क, सिनेमा, रेस्तरों में मिलकर प्यार के वादे-कसमें खाता हैं। प्रेमिका से यौन संबंध साधता हैं। उसका मन प्रेमिका के प्रति कुछ अंतराल के बाद ऊबने लगता है। अब प्रेमी अपनी प्रेमिका और दूसरी लडकी में फर्क ढूंढने लगा हैं। उसकी हवस का शिकार हुई प्रेमिका फिर से दुत्कार दी जाती है। नारी छटपटाती हुई किसी अन्य की बाँहों में सुरक्षा खोजने लगती हैं। किन्तु फिर से उसे दुत्कार दिया जाता है। प्रभा अपनी कविता 'प्यार की तलाश में' लिखती हैं कि,

तुम एक लड़की से दूसरी लड़की का
फर्क ढूंढते हुए
मैं हर घेरनेवाली बाँह में
सुरक्षा खोजती हुई
अपने जिस्मों की खुली टकराहट में

हम केवल दुहराया झूठ बोलते हैं। ८

व्यक्ति के जीवन में प्रेम एक भावनात्मक स्थिति है। प्रेम आँखों के माध्यम से व्यक्त होता है। प्रेम की पावनता सर्वमान्य है। इसे 'ढाई आखर' कहा गया है। प्रेमिका की भावना इस प्रकार व्यक्त होती है -

तुम्हारी प्रेम भरी आँखे
मुझे खोजती हुई
मेरी आँखों में विश्राम लेती है
और हम दोनों के बीच
ठहरा हुआ वक्त
बस एक तिनके की दूरी सा
थरथरा उठता है। ९

नारी प्रेमिका के रूप में प्रेमी की हर इच्छा-आकांक्षा को पूरा करने के लिए अपने आपको न्यौछावर कर देती हैं। समाज में उसका प्रेम कुछ पल के लिए ही रहता हैं। अपने प्रेमी की प्रतीक्षा में प्रेमिका विरह में तडपती रहती हैं। वह अपने प्रेमी की प्रतीक्षा में लगी रहती हैं कि, आज नहीं तो कल उसकी तलाश में उसका प्रेमी आयेगा। प्रभा खेतान अपनी कविता 'आखिर कब तक लटकी रहूँ' में लिखती हैं कि,

आखिर कब तक लटकी रहूँ
सारी-सारी शाम
सूखते कपडों-सी-बरामदे में
प्रतीक्षा करू तुम्हारे आने की
एक क्षण से
दूसरे क्षण तक। १०

प्रेमिका अपने प्रेमी के साथ यौन संबंध रखते हुए तन-मन-से समर्पित हो जाती हैं। परंतु प्रेमी के मन में प्रेमिका के प्रति सच्चा प्रेम नहीं रहता। वह उसके लिए उपयोग-उपभोग की वस्तु हो जाती है जैसे घर में पर्दे, सोफा, चादर, बिस्तर होता है। प्रेमिका अत्यंत व्यथित होकर कहती है -

मैं तुम्हारे गमले का फूल बनूँ
उगूँ तुम्हारी बरौनियों के सूरज को देख
तुम चाहते हो
मैं बनू तुम्हारे ड्राइंग-रूम का कालीन
पर्दे, सोफा
या बैड-कवर
फैली रहूँ बिस्तर पर। ११

आज के बाजारवाद में वस्तुओं के प्रमोशन के लिए उसकी देह के गठन, उभार का उपयोग किया जा रहा है उसे एक जड़ वस्तु में तब्दील कर दिया गया है जैसा कि कवयित्री ने 'नियति' कविता में लिखा है -

उसकी जिन्दगी
नियोन लाइट में
जगमगाता हुआ विज्ञापन
कुछ बनने के दौर में
वह जो बनकर
सामने आई
महज एक चीज। १२

प्रेमिका अपने प्रिय के प्रति मानसिक एवं देहिक स्तर पर सम्पृक्त हो चुकी है इसलिए प्रिय के पास खींची चली आती है -

मैं फिर तुम्हारे पास
लौट आई हूँ
नर्म बिस्तर की
पूरी गर्माहट लिए
मैं एक नयी उम्मीद बन
फिर लौट आई हूँ
पास। १३

जो स्त्री-पुरूष का नाता है वह जन्मों-जन्मों से चला आ रहा हैं। नारी इस नाते को जानते हुए अपने आपको प्रेमिका के रूप में पेश किया हैं। नारी प्रेमिका बनती है परंतु प्रेम के बदले केवल यौन शोषण ही मिला हैं। इस शोषण में वह केवल वस्तू के रूप में देखी जाती हैं। आज नारी भोग्या बन चुकी है। भोगवादी युग की सचाई भी यही है। नारी पुरूश की दासी, उसकी जूती बन गई है -

पहनाया तुम्हारे पाँवों में
जूती बन,
बिछी बिस्तरे पर

चादर बन,
कभी टँगी खूँटी पर
तुम्हारा मुखौटा बन
मैं बनी वस्तु
तुम रहे भोक्ता। १४

कवयित्री ने 'मछली पकडने मछुए जाल फेंक रहे है कविता में' नारी को देखने की हवस दृष्टि का चित्रण किया है। जब मछुए मछलियाँ पकड़ने के लिए जा रहे है तब उन्हें यही किनारे पर औंधी पड़ी एक लड़की दिखाई देती है। यह स्थिति विदेशों में आम बात है। परंतु जब वह देखती है कि उसे देखनेवालों की आँखों में हवस, वासना है तब उसे नफरत होती है उन घूरनेवाली शिकारी आँखों से। अतएव वह अचानक पानी में कूद पड़ती है।

मछूआरे अब जाल डाल चुके हैं।
तैरती हुई मछलियों का जिस्म
भीगा हुआ है नमकीन पानी से।
यकायक वह लड़की
निकल आती...लहरों को चीरकर। १५

नारी दुनिया में रहनेवाले लोगों की नियत को जानती हैं। पुरूष-स्त्री में जो भेद पाया जाता हैं। उसमें से नारी ही केवल भोग्य वस्तू बन जाती है और पुरूष उसका भोग्ता बन जाता हैं। अन्य लोगों की तरह नारी भी आझाद हुई हैं। इसलिए अपनी आझाद जिंदगी में वह जीवन जीना चाहती हैं। पर पुरूश की सत्ता में नारी का केवल लैंगिक शोषण होता रहा हैं।

प्रभा खेतान ने 'कृष्णधर्मा मैं' कविता में नारी के कौमार्य, उसकी आत्मा के संदर्भ में यह प्रतिपादित किया है कि विवाह कन्या के कौमार्य को भंग करता है इसके बाद इस मायावी संसार में उसे वस्तु बनकर किमत चुकानी पड़ी है।

टूट गया कुआराँपन
वर्षों पहले शादी की पहली रात
पर आज भी कुँआरी है आत्मा
प्रतीक्षारत
हर अनुभव के लिए
परखती रही अनुभव
चुकाती रही कीमत
और होकर रह गई वस्तु।
पाने के बाद
आकर्षण समाप्त
एक ही शरीर
कभी रूक्मिणी
कभी राधा। १६

कवयित्री ने पौराणिक मिथक के माध्यम से नारी के देहिक प्रदर्शन एवं शोषण को अभिव्यक्त किया है। सर्वविदित है कि महाभारत में द्रौपदी को जुए में दाँव पर लगाना उसे पण्य वस्तु बना देना था और उसके पश्चात उसका चीरहरण होने लगा परंतु कृष्ण ने बचा लिया परंतु आज की स्थिति यही है कि नारी का देहिक शोषण तो है परंतु कृष्ण नहीं है। औरत होने का अर्थ - असुरक्षित होना है। यह चौतरफा असुरक्षा है जिसके साथ औरत पैदा होती है और मर जाती है - आर्थिक, भावात्मक, शारीरिक। जब सुरक्षा के लिए लगाई बाड़ भी पौधे को खा जाती है तब हाट, बाट, घाट का जिक्र क्या।१७ द्रौपदी को भरी सभा में अपमानित, निवसा करना उसको अपमानित करना ही है। व्यथा यही है कि वह अपने ही स्वजनों द्वारा तिरस्कृत हुई है।

नहीं किया मैंने ऐसा कुछ भी
झेलती रही क्रमशः निरावरण होने की यातना
चबाती रही दुःख और अपमान का दर्द
बनती रही वासनाओं के खूनी स्वाद की खुराक। १८

नारी का यौन शोषण सनातन समस्या है। इन्द्र ने गौतम ऋषि की पत्नी के साथ यौन संबंध स्थापित किया वह भी धोखा देकर। प्रभा जी ने 'अहल्या' में लिखा है कि - 'क्या तुम अहल्या हो ? वही अहल्या, जो इन्द्र के मायाजाल में उलझ गई थी और उन्होंने शाप देकर तुम्हें पत्थर बना दिया।' -

पत्थरों का नग्न शरीर बना
गौतम ने किया
आदमियत का आखिरी अपमान। १९

इन्द्र ने अहल्या पर मोहित होकर जब गौतम भोर में नदी पर नहाने गये थे, देहिक शोषण किया था। इन्द्र के द्वारा नारी का अपमान है इस संदर्भ में कवयित्री ने लिखा है -

कौन था वह पुरूष, अहल्या,
जो लाँघकर सतीत्व की सीमा
कर गया नारीत्व का अपमान ?
क्या था तुम्हारी आँखों में

इसके लिए,
जो डोल गया इन्द्रासन ?
बदल गया शरीर
नहीं पहचान सकी तुम
क्या दोष था तुम्हारा केवल। २०

अहल्या ने पुरूष के मायावी रूप को पहचाना नहीं। इन्द्र उसके साथ यौन संबंध बनाकर उसे अकेला ही छोड़कर चला गया हैं। प्रभा अपनी कविता 'अहल्या' में लिखती हैं कि,

निष्पाप होती हुई तुम
कर दी गई प्रवंचित
भोक्ता के पलायन के बाद
समझ पायी तुम
पुरूष का मायावी रूप। २१

इन्द्र ने अपनी उद्दाम वासना को तृप्त करने के लिए 'अहल्या' को भोगा फलस्वरूप उसके पति गौतम ने उसे शाप देकर पत्थर बना दिया यह पुरूषों की प्रवृत्ति आज भी जारी है, विवाहिता अपने पर हुए अत्याचार के कारण आत्महत्या कर लेती है या जड़ बन जाती है। प्रभा खेतान इसी यथार्थ को व्यक्त करती है -

जानती हूँ पुरूषों की हिंस्र कामुकता
एक हा अहल्या से
तुष्ट नहीं होती है
आत्मा के सत्व को
जलाती इस आग से
मैं भी सहमती हूँ, अहल्या ! २२

प्रभा खेतान अपने काव्य संग्रहों की कविताओं में नारी के लैंगिक शोषण में स्त्री का प्रेमिका रूंप, पुरूष का वासनाभरा रूंप, पुरूष का मायावी रूंप, प्रेमी से दुत्कार जाना आदि कई समस्याओं का चित्रण किया हैं। प्रभा नारी के प्रति आत्मीय सहानुभूति रखते हुए अपनी कविताओं में उनका हो रहा यौन शोषण, यौन पीड़ा, प्रेमी से दुत्कारी गई नारी, उनके अपमान और अत्याचार का वर्णन करती है। नारी का लैंगिक शोषण में प्रभा खेतान की कविताओं में लैंगिक शोषण में स्त्री का प्रेमिका रूप, नारी हवस का शिकार, अकेले जीवन व्यतीत करनेवाली स्त्री का यौन शोषण, पुरूष का वासना से भरा रूंप, पुरूष का मायावी रूप, प्रेमी से दुत्कारी जाना आदि समस्याओं का अंकन किया हैं। प्रभा नारी के प्रति आत्मीय सहानुभूति रखते हुए अपनी कविताओं में उनका हो रहा यौन शोषण, यौन पीड़ा से त्रस्त नारी और प्रेमी से दुत्कारी गयी नारी के रूप का चित्रण पूरी प्रामाणिकता के साथ किया हैं।

प्रभा खेतान ने अपनी कविताओं में नारी की स्थिति में सदियों से चले आ रहे घर के बंधन पति द्वारा मिली पीड़ा में नारी के सपनों की टूटन, परिवार को संभालने में, उसकी त्रासदी में, वेदना, विवशता, पीड़ा, भय, परित्यक्ता को सहना, चुनौतियों का सामना करने में, आदमीयत की सत्ता आदि समस्याओं का अंकन किया हैं। प्रभा खेतान ने नारी की परिवार में जो स्थिति रही हैं उसके प्रति उनकी कविताओं में सहानुभूति को उभारा हैं। इस सहानुभूति को उन्होंने बड़ी मार्मिक ढंग से कविताओं में चित्रित किया हैं।

संदर्भ सूची

१) नारी मुक्ति संघर्ष - डॉ. अमरनाथ, पृ. ७५
२) औरत होने की सजा - अरविंद जैन, पृ. ३०
३) हंस - अरविंद जैन, मई १९९८, पृ. ९६
४) स्त्री अस्मिता साहित्य और विचारधारा - जगदीश्वर चतुर्वेदी, पृ. ३४७
५) छिन्नमस्ता - प्रभा खेतान, पृ. १४५
६) अपरिचित उजाले - प्रभा खेतान, पृ. ११
७) वही, पृ. १४
८) वही, पृ. १७
९) एक और आकाश की खोज में - प्रभा खेतान, पृ. ४
१०) अपरिचित उजाले - प्रभा खेतान, पृ. २१
११) वही, पृ. २५
१२) सीढ़ियाँ चढ़ती हुई मैं - प्रभा खेतान, पृ. २६
१३) वही, पृ. ३५
१४) एक और आकाश की खोज में - प्रभा खेतान, पृ. ५
१५) वही, पृ. ३
१६) कृष्णधर्मा मैं - प्रभा खेतान, पृ. २६
१७) अस्मिता विमर्श का स्त्री स्वर - अर्चना वर्मा, पृ. १८७
१८) वही, पृ. २७
१९) अहल्या - प्रभा खेतान, पृ. २५
२०) वही, पृ. ३९
२१) वही, पृ. ३९
२२) वही, पृ. ७६

IOSR Journal Of Pharmacy www.iosrphr.org
(e)-ISSN: 2250-3013, (p)-ISSN: 2319-4219
Volume 8, Issue 7 Version. II (July 2018), PP. 21-27

Effect of heavy metal Copper sulphate on Glycogen activity of Bivalve L. marginalis.....

Sandhya M. Sonawane, Mayur Sonawane
Department of Zoology, Nutan Maratha College, Jalgaon, Dist. Jalgaon. (M.S.) Mobile No. 9422977824
Department of Zoology, M.J. College, Jalgaon, Dist. Jalgaon. (M.S.) Mobile No.9405918053
Corresponding Author:Sandhya M. Sonawane

ABSTRACT: Heavy metal and pesticide pollutants cause stress to the aquatic organism and change its metabolic activity. The heavy metal pollutants give rise to alterations in the metabolic and physiological activity both after short and long term exposures. To investigate the physiological changes after pesticide and heavy metal treatment the most fundamental one would be the study of change in the biochemical constituents. Carbohydrates, proteins and lipids are the important metabolites which provide energy to different vital processes.

They glycogen content in freshwater bivalve, L. marginalis was altered indicating the effects of heavy metals. The average glycogen content in acute and chronic treatment by heavy metal copper sulphate was decreased in the whole body. The depletion of glycogen content was greater in the digestive gland as compared to the foot and mantle of the bivalve, when exposed to pollutants. This indicates that the digestive gland is the principal metabolic center for various metabolic functions. During acute and chronic exposures a significant decrease in the glycogen content of the digestive gland suggests greater glycolytic activity in the gland than the mantle and foot. The greater breakdown of glycogen may suggest the need of high energy to animal in stress conditions caused due to pollutants.

Keywords: Heavy metals $CuSO_4$, L. marginalis, Glycogen, digestive gland, acute, chronic.

Date of Submission: 29-06-2018 Date of acceptance: 16-07-2018

I. INTRODUCTION

Most information about the effect of environmental pollutants on aquatic animals has been obtained from mortality studies. Often very little is known about damage to different internal organs or about disturbed physiological and biochemical processes within an organism following exposure to environmental poisons. Consequently knowledge about the mode of action of toxicants and causes of death in poisoned aquatic animals is often lacking. A better understanding of these mechanisms is necessary if we want to predict the potential harmfulness of various chemicals to the environment.

Since different environment pollutants are likely to affect biological systems in different ways according to their respective chemical properties, the sum of physiological changes created by a particular pollutant is likely to be characteristic of that pollutant. Thus by observing the effects of pollutants on a set of physiological parameters, it might be possible to establish specific responses of that pollutant, and may take it possible to identify a pollutant on the basis of its physiological effect pattern.

The higher concentrations of toxicants bring the adverse effects on aquatic organisms, at cellular level or molecular level and ultimately lead to disorder in biochemical composition which is useful in determining different toxicants and protective mechanism of the body to resist the toxic effects of the substances.

The toxic chemicals (pollutants) act as one kind of stress to organism and organism responds to it by developing necessary potential to counter act that stress. The biochemical changes occurring act that stress. The biochemical changes occurring in the body give first indication of stress. During stress the organism needs sufficient energy which is supplied from reserve materials (glycogen, lipid and protein). If the stress is mild then only stored glycogen is used, as a source of energy, but if the stress is strong then the energy stored in lipid and protein may be used.

The heavy metals cause metabolic derangement in the living system, when come in contact. Heavy metals due to their potential toxicity produce biochemical changes in the tissues of animals.

Even though there is much work on the toxic effects of pesticides and heavy metals on specific target animals, little attention was paid to study the physiological and biochemical changes on non target aquatic species. Since Lamellidens Marginalis are fresh water bivalves an attempt was made to study the changes in biochemical composition in different heavy metal copper sulphate. Carbohydrates (glycogen) constitute the vital

Estimation of Biochemical components from tissues :

(1) Glycogen

The colorimetric estimation of glycogen present in the tissue was done by anthrone reagent method (Dezwaan and Zandee, 1972). 50 mg. of wet tissue was taken in 1 ml of 30% KOH solution. The mixture was boiled in water bath for 5-10 minutes, till the tissue was completely dissolved. The solution was cooled and to it 0.2 ml 2% Na_2SO_4 and 6 ml of absolute alcohol were added. This solution was kept in refrigerator for overnight. It was then centrifuged for 15 minutes at 3000 rpm. The supernatant was discarded and the residue cake was dissolved in 10 ml of distilled water 0.1 ml of this solution was taken and to it 0.9 ml of distilled water were added. The solution was heated in boiling water bath for 5 minutes and then cooled. The intensity of the colour developed was measured with the colorimeter (Erma) at 620 mu (Red Filter) filter. Anthrone, reagent was prepared by dissolving 50 mg anthrone powder and 1 gm Thiourea in 100 ml of 72% H_2SO_4. The amount of glycogen was calculated by referring to a standard graph value, where glucose was used as a standard. The glycogen value was calculated by multiplying with the conversion factor 0.927 to glucose value. The amount of glycogen was expressed in terms of Mg. of glycogen/100 mg of wet tissue.

III. OBSERVATION AND RESULTS

Biochemical components such as carbohydrates (glycogen) were studied in the normal (control) and pollutant copper sulphate treated whole body, foot, digestive gland and mantle of freshwater bivalve, L. marginalis the results are summarized in Tables .

Acute treatment-The acute treatment was given upto 72 hours by heavy metal pollutants, copper sulphate. After the acute treatment by pollutant, biochemical composition of the bivalve was altered and the results are summarized in the table.

The glycogen content of the whole body, foot digestive gland and mantle decreased after acute treatment by heavy metal. After copper sulphate acute treatment at 72 hours, the glycogen in the whole body, foot, digestive gland and mantle decreased from 2.08% to 1.22%, 2.53% to 2.13%, 2.78% to 1.62% and 1.13% to 0.86% respectively. The glycogen content of the foot and mantle depleted more as compared to the digestive gland.A significant change in the glycogen content was found .The maximum depletion occurred in the digestive gland of L. Marginalis.

Chronic treatment-The biochemical components such as glycogen was observed after chronic treatment in control and treated freshwater mussels, Lamellidens marginalis. The biochemical components of the whole body foot, digestive gland and mantle were observed and recorded in the table.

The glycogen content of the whole body, foot, digestive gland and mantle decreased in chronic (5, 10, 15 and 20 days) treatment by heavy metals. After copper sulphate chronic treatment, the glycogen in the whole body foot, digestive gland and mantle decreased. A significant change in the glycogen content was found. The maximum depletion occurred in the digestive gland of Lamellidens marginalis.

Table – 1: Glycogen content in selected tissues of the control and $CuSO_4$ exposed Lamellidens marginalis as a function of exposure period

Treatment	Sr. No.	Body Organ	Total glycogen content (%) + S.D.		
			24 hours	48 hours	72 hours
Control	1	Whole body	2.2874 ± 0.0713	2.1475 ± 0.002	2.0879 ± 0.0711
	2	Foot	2.8725 ± 0.00520	2.9675 ± 0.0578	2.5324 ± 0.0307
	3	Digestive gland	3.2035 ± 0.0036	3.0234 ± 0.0128	2.7852 ± 0.0787
	4	Mantle	1.2242 ± 0.0179	1.2542 ± 0.0427	1.1342 ± 0.0126
Acute treatment by $CuSO_4$	1	Whole body	1.7529 ± 0.0438 P<0.01	1.6432 ± 0.0189 P<0.001	1.1272 ± 0.0234 P<0.001
	2	Foot	2.6435 ± 0.0374 NS	2.6720 ± 0.2203 NS	2.1382 ± 0.01156 P<0.05
	3	Digestive gland	2.2705 ± 0.1328 P<0.001	2.0035 ± 0.0857 P<0.001	1.6240 ± 0.1239 P<0.001

The mode of action of pollutants may be responsible for cellular dis-organization offering the storage and metabolism of the glycogen. Decrease in glycogen content indicates disrupted carbohydrate metabolism. The pollutants give the heavy physical irritate stress causing rapid movement and increased respiration rate thus increased utilization of reserved glycogen to meet higher energy demand of body causing decrease in glycogen content (Bhagyalaxmi, 1981). Many worker support the above results in vertebrate and invertebrate animals. A change in serum protein and glycogen content of rainbow trout exposed to endrin was studied by Grant and Mahrle (1973). Koundinya and Ramamurthi (1978) observed the effect of lethal concentration of sumethion on carbohydrate metabolism in Tilapia mossambica. Baner and Ghosh (1978) have recorded the alterations in the levels of serum glucose, liver glycogen and glucose-6-phosphate of the fish, Clarius batrachus when exposed to cadmium. Banerjee et al. (1978) reported an increase in blood glucose level in the fish Tilapia mossambica when exposed to cadmium. Kabeer (1979) stated that decrease in glycogen content in Malathion exposed tissues can also be due to decrease in glycogen synthesis. Koundinya and Ramamurthi (1979) have observed that sumethion leads to an increase in blood glucose level in decrease in glycogen content. Rao and Rao (1979) studied the effect of methyl parathion on the fish Sarotherodon mossambica and noted a significant decrease in glycogen content, Gill and Pant (1981) studied the effect of Nickel intoxication of carbohydrate metabolism i.e. blood glucose and liver glycogen which were measure to assess the magnitude of biochemical stress. Bhagyalakshmi (1981) studied the levels of certain carbohydrate metabolites in the tissue of field crab, Oxiotelphusa senex senex after exposure it to an organophosphate pesticide sumithion, and recorded an increase in haemolymph glucose level and decrease in total carbohydrate level.

Nagabhushanam and Kulkarni (1981) observed increased haemolymph glucose and a decrease in midgut gland, when the prawns, Macrobrachium Kistensis were exposed to $ZnSO_4$ and $CuSO_4$. Srivastava and Singh (1981) studied the acute effect of methyl parathion on carbohydrate metabolism of the Indian carfish, heteropheustes fossilis. Forooqui (1982) observed a insignificant increase of glycogen in the ovary of Barytelphusa cunicularis after two days exposure to sevimol and a significant decrease after seven days exposure and concluded that glycogen breadwon provides the immediate energy source in stress condition. Natarajan (1982) studied the effect of various concentration of $ZnSO_4$ on glycogen content of river, muscle, brain, kidney and gills of the fish Anabas Scands. Bhagyalkshmi et al. (1984) observed a decrease in glycogen and elevated phosphorylase activity in the crab, Oxiotelphusa senex senex exposed to sumithion, suggesting onset of glycogenolysis forming free glucose and the possible exist of these glucose molecules in the haemolymph resulting in the hyperglycemia condition. Patil (1986) studied the effects of pesticides on the glycogen content of Mythimna (P) separate and found decreased glycogen content ater treatment.

Many workers studied the effects of pollutants on mollusks in Mandal and Ghose (1970) observed glycogen depletion in the digestive gland of the snail, Achatina fulica (Bawdich) when exposed to calcium arsenate. Ramana Rao and Ramamurthi (1980) studied the effect of sublethal concentration of sumithion on some biochemical constituents of the snail, Pila globosa and found a decrease in glycogen content. Lomte and Alam (1982) observed the stable level of glycogen in the foot and mantle but very sharp fall of glycogen in the digestive gland during sublethal exposure for 24 hours to organophosphate pesticide, malathion. Swami et al. (1983) found increased haemolymph glucose and decreased stored glycogen in Lamellindens marginalis when treated with Flodit and Metacid. Kulkarni et al. (1984) studied the impact of endosulfan on the apple snail, Pila globosa and found an elevation of blood glucose level after treatment. Chaudhari (1988) studied the effect of pesticides on biochemical composition of the snail Bellamya (viiparous) bengalensis and found decreased glycogen content after treatment.

SUMMARY

1. The biochemical composition of Lamellidens marginalis after acute and chronic treatment of heavy metals copper sulphate was studied to better understand the mechanism of action of pollutant, by observing the time bound and tissue specific alterations of biochemical component glycogen.
2. After acute treatment of heavy metals glycogen content of the whole body, foot, digestive gland and mantle was altered very prominently, glycogen depletion was significant.
3. The glycogen content of the whole body, foot, digestive gland and mantle decreased after chronic treatment of heavy metal pollutants, much glycogen content decreased in digestive gland which was followed by mantle and foot.

REFERENCES

[1]. Abel, P.D. (1974) : Toxicity of synthetic detergent to fish and aquatic vertebrates. J. Fish. Biol., 6 : 279-298.
[2]. Banerjee, S.K. and Ghosh, S.D. (1978) : Toxicity of cadmium : A comparative study in the air breathing fish Clarius bactrachus (Linn.) and in the non air breathing one, Tilapia mossambica (Peters). Ind. J. Exp. Biol., 16 : 1274.

[30]. Nagabhushanam, R. and Kulkarni, G.K. (1981) : Freshwater Palaemonid Prawn, Macrobrachium Kistensis (Tiwari) – Effect of heavy metal pollutants. Proc. Indian Metal Sci. Acad. 547 (3) : 380-386.

[31]. Natrajan, G.M. (1983) : Metasystox toxicity effects of lethal (LC 50/48 hrs.) concentration on free amino acid and glutamate dehydrogenase in some tissues in the air breathing fish, Channa striatus (Bleeker). Comp. Physiol. Ecol., 8(4) : 254-257.

[32]. Patil, P.N. (1986) : Impact of different pesticides on some physiological and neuroendocrinological aspects of Mythima (Pseudaletia) separate, Ph.D. Thesis, Marathwada University, Aurangabad, M.S., India.

[33]. Peter, M. (1973) : Metabolism of Carbohydrates. In : Review of physiological chemistry, Ed. By Harper, H.A. Lange Medical Publication, 14th Edn, pp. 232-267.

[34]. Ramana Rao, M.V. and Ramamurthi, R. (1978) : Studies on the metabolism of the apple snail, Pila globosa (Swainson in relation to pesticide impact). Ind. J. Her. 11 : 10.

[35]. Rao, K.R., D.A. Kulkarni, K.S.Pillai and U.H.Mane (1987) : Effect of fluoride on the fresh water bivalve mollusks, Indonaia caeruleus (Prashad, 1918) in relation to the effect of pH biochemical approach. Proc. Nat. Symp. Ecotoxic, pp. 13-20.

[36]. Sekeri, K.E., C.E. Sekeris, and P. Karlson, (1968) : Protein synthesis in Subcellular fractions of the blofly during different development stages. J. Insect. Physiol., 14 : 425-431.

[37]. Shigmatus, H. and H. Takeshita (1959) : On the change in the weight of the fat body and its chief constituents in the silkworm, Bombyx mori L. during metamorphosis. Apl. Ent. Zool. Japan, 3(2) : 123-126.

[38]. Shivaprasad Rao, K. and K.V. Ramana Rao, (1979) : Effect of sublethal oxidative enzymes and organic constituents in the tissue of the fresh water fish, Tilapia mossambica (Peters), Curr. Sci. 48 (12) : 526-528.

[39]. Shivaprasad Rao, K., Satyaprasad, K. and Ramana Rao, K.V. (1980 a) Freshwater snails – Effect of insecticides Telugu Vyghanika Patrika (Telugu Academic Publication) 9 : 27-32

[40]. Shivaprasad Rao, K., Satyaprasad, K. and Ramana Rao, K.V. (1980 b) : Sublethal effect of methyl parathion on tissue proteolysis in the freshwater mussels, Lamellidens marginalis (Lamark). Proc. Ind. Nat. Sci. Acad., 46B : 164-167.

[41]. Suryanarayanan, H. and Alexander, K.M. (1972) : Biochemical investigation on edible mollusks of Kerala I. Study on the nutritional value of some bivalves. Fish. Technol., 9(1) : 42-47.

[42]. Suryanarayanan H. and Alexander, K.M. (1971) : Fuel reserves of Molluscan muscles. Comp. Biochem. Physio., 40 : 55-60.

[43]. Swami, K.S., K.S. Jagannath Rao, K. Satyavelu Reddy, K. Shrinivasmoorthy, G. Lingamurthy, C.S., Chetty and K. Indira (1983) : The possible metabolic diversions adopted by the freshwater mussel to consumer the toxic metabolic effect of seleced pesticides. Indian J. Comp. Anim. Physiol., 1(1) : 95-106.

[44]. Thurberg, L.V. and Manchester, K.L. (1972) : Effect of dinervation on the glycogen content and on the activities of enzymes glucose and glycogen metabolism in rat diaphragm muscle. Biochem. J. 128 : 789.

[45]. Ventakaraman, R. and Chary, S.T. (1951) : Studies on oysters and Clams, Biochemical Variations. Indi. J. Med. Res., 39(4) : 533-541.

Sandhya M. Sonawane Effect of heavy metal Copper sulphate on Glycogen activity of Bivalve L. marginalis....." IOSR Journal of Pharmacy (IOSRPHR), vol. 8, no. 07, 2018, pp. 21-27.

Impact Factor – 6.625 | Special Issue – 232 | February 2020 | ISSN – 2348-7143

19-20.

INTERNATIONAL RESEARCH FELLOWS ASSOCIATION'S

RESEARCH JOURNEY

Multidisciplinary International E-Research Journal

PEER REVIEWED, INDEXED AND REFEREED JOURNAL

२१ वीं शताब्दी का हिंदी उपन्यास साहित्य

अतिथि संपादक
प्राचार्य डॉ. ए. एस. पैठणे

मुख्य संपादक
डॉ. धनराज टी. धनगर

कार्यकारी संपादक
डॉ. महेश गांगुर्डे

कार्यकारी सह-संपादक
प्रा. महेंद्र वसावे

For Details Visit To : www.researchjourney.net

Printed By : PRASHANT PUBLICATIONS, JALGAON

- अयोध्या में ध्वंसलीला : 'आखिरी कलाम' ८९
  डॉ. अमृत बिसन खाडपे
- प्रिथिलेश्वर के उपन्यासों में प्रेम एवं काम की अभिव्यक्ति ९१
  प्रा. डॉ. प्रल्हाद विजयसिंग पावरा
- नारी अस्मिता की पहचान कराता मधुर कपिला का उपन्यास – 'सातवां स्वर' ९५
  डॉ. अभयकुमार आर. खैरनार
- "गिलिगडु : बदलते मानवमूल्यों की कथा" ९७
  डॉ. अशोक शामराव मराठे
- समाज जीवन को उन्नत जीवन प्रदान करने वाली नवचैतन्य की निरंतर धारा – 'सुखदा' ९९
  डॉ. दिपक विश्वासराव पाटील
- "भगवानदास मोरवाल के उपन्यसों में स्त्री–विमर्श" १०२
  प्रा. डॉ. मनोहर हिलाल पाटील
- 'ग्लोबल गाँव के देवता' उपन्यास में आदिवासी विमर्श १०४
  प्रा. डॉ. प्रमोद गोकुळ पाटील
- 'विजन' उपन्यास में व्यक्त नारी विमर्श १०६
  प्रा. डॉ. पूनम त्रिवेदी
- 'गुनाह बेगुनाह' उपन्यास में अभिव्यक्त नारी संघर्ष १०८
  प्रा. डॉ. रविंद्र आर. खरे
- "सुरेन्द्र वर्मा के उपन्यासों में नारी चेतना" ('दो मुर्दो के लिए गुलदस्ता' एवं 'मुझे चाँद चाहिए' के विशेष संदर्भ में) १११
  डॉ. संजय प्रल्हाद महाजन
- गोविन्द मिश्र के उपन्यासों में चित्रित नारी विमर्श ११३
  प्रा. डॉ. विजय एकनाथ सोनजे
- जीवन की त्रासदी को दर्शाता उपन्यास – 'बेसबब' ११६
  डॉ. अशफ़ाक़ इब्राहिम सिकलगर
- उच्च शिक्षित कामयाब बच्चों के वृध्द माता–पिताओं के मन में 'डर' और 'भय' को व्यक्त करने वाला उपन्यास–"दौड" ११८
  डॉ. गोकुलदास सोनु ठाकरे
- "२१ वीं शताब्दी का हिन्दी उपन्यास साहित्य" १२०
  डॉ. विजय जी. गुरव
- कठगुलाब उपन्यास में नारी चित्रण (मृदूला गर्ग) १२३
  प्रा. शरद शेलार
- २१ वी सदी के महिला उपन्यासों में नारी चेतना १२५
  श्री. आमलपुरे सूर्यकांत विश्वनाथ
- 'मरंग गोडा नीलकंठ हुआ' उपन्यास में आदिवासी विमर्श १२७
  डॉ. निंबा लोटन वाल्हे
- नारी वेदना का दस्तावेज 'तिनका तिनके पास' १२८
  डॉ. ईश्वर ठाकुर
- "टूटा हुआ इंद्रधनुष" उपन्यास में पारिवारिक विघटन १३०
  डॉ. आनंद गुलाबराव खरात
- मैत्रेय पुष्पा का उपन्यास गुनाह–बेगुनाह में चित्रित नारी संघर्ष १३३
  प्रा. तुलसा मोची

Journal of Research and Development

A Multidisciplinary International Journal

PEER REFEREED AND INDEXED JOURNAL

COSMOS IMPACT FACTOR 4.270

NATIONAL SEMINAR
ON
RECENT TRENDS IN CHEMICAL, ENVIRONMENTAL AND LIFE SCIENCES

Volume 10, Issue 01, January 2020

ISSN - 2230-9578

Editor

Dr. R. V. Bhole

Special Issue Editor

Dr. Jaswant B. Anjane

Principal, Sardar Vallabhbhai Patel Arts and Science College, Ainpur

— Editorial Board Members: —

Dr. J. P. Nehete
Dr. R. V. Bhole
Dr. S. N. Vaishnav
Mr. H. M. Baviskar
Mr. S. S. Salunke

'Ravichandram' Survey No-101/1, Plot No 23, Mundada Nagar, Jalgaon (M.S.) 425102

20	Study of Enthalpy, Entropy and Free Energy of Activation of L-Alaline& L-Valine With Distilled Water At Different Temperatures.. *-S.S. Nandre*	109
21	Disaster Management In India.. *- P. P. Ladhe , R.B. Khedkar*	115
22	Response on yield of Hyacinth bean (*Lablab purpureus* L.) using compost, Vermicompost verses synthetic fertilizers and growth regulator.........................*-Pandey, P.O. and Deshattiwar M. K.*	121
23	Isolation and characterization of halophilic bacteria from Soil........................... *Vasim .K.Patel, Vaishali M. Songire, and ShabnambiA. Mirza*	127
24	Seasonal Variation in Density and Diversity of Zooplankton of Ranipur dam Shahada Taluka District Nandurbar (M.S.) India..............................*-Patil Ravindra. And Dr. Patil Rajendra.*	134
25	Volumetric, Viscometic and Ultrasonic Velocity Studies of Binary Mixtures of 2- Propanol And 1-Heptanol With O-Nitrotolune At 298.15 And 308.15k...*-R.D. Pawar, S.R. Patil,and G.P. Waghulde*	144
26	State of the Employment among Muslims in Jalgaon: A Geographical Analysis.............. *-Gaware Raju Suresh, Pratiksha D. Nandeshwar*	152
27	Some Very Severe Fungal Disease of Economically important Trees of, Jalgaon District's....... *S. A. Firdousi*	162
28	Role of Coriander (*Coriandrum sativium L.*) on Accumulation and Depuration of Cadmium in *Bellamyabengalensis(L.)* ....................................*-S.G. Chinchore and I.S. Ahirrao*	167
29	Role of Solar, Wind and Biomass Energy Resources in Rural Development of India........... *-P. A. Savale*	174
30	Problems and Remedies to Control Noise Pollution in the Areas of Jalgaon City.............. *-Shaikh Irfan Shaikh Bashir*	186
31	In-vivo bio-control of fungal pathogens through antagonistic fungi.......*-Vishal Narayan Shinde*	191
32	Synthesis and Luminescent, Electrical Resistivity Properties of CdTe Thick Film .... *-B.Y.Bagul, P.S.Sonawane*	196
33	A preliminary survey on algae (Euglenineae and Myxophyceae) from sewage from Bhusawal city. *- J. S. Dhande*	200
34	A study temporal variation in landuse pattern of Muktainagar tehsil at Jalgaon district. *Dr. Atul C. Badhe,Dr. R. V. Bhole*	203
35	A study temporal variation in landuse pattern of Yawal tehsil at Jalgaon district. *Prof. S. N. Patil, Dr. R. V. Bhole*	207

For print - page - 148-155 - (check if req.) from pdf

Volumetric, Viscometic and Ultrasonic Velocity studies of Binary mixtures of 2- Propanol and 1-Heptanol with o-Nitrotolune at 298.15 and 308.15k

R.D. Pawar[1] S.R. Patil[2] G.P. Waghulde[3].
1- Arts, Science and Commerce. College, Yawal , (Jalgaon), M.S. India.
2- Arts, Science and Commerce. College, Chopda , (Jalgaon), M.S. India.
3- D.D.N. Bhole College Bhusawal (M.S)

Abstract :

The physicochemical properties like ultrasonic velocities, viscosities and densities of binary liquid mixtures of 2-propanol and 1-heptanol with o-nitrotolune were reported at 298.15 and 308.15 K. The Excess molar volume (V^E), Isentropic compressibility(ΔKs) and viscosity deviation ($\Delta\eta$) have been calculated. These values were fitted with Redlich –Kister type polynomial equation. The results were interpreted in terms of molecular interaction between the components of the mixtures.

Keyword: Ultrasonic velocity, viscosity, density, Excess molar volume (V^E), Isentropic compressibility(Ks) viscosity deviation ($\Delta\eta$) molecular interactions.

Introduction

The viscosity ,Density and Ultrasonic velocities measured find various application in chararacterising the physico-chemical properties of liquid mixtures [1-3] and the study of molecular interaction . The ultrasonic velocity of liquid is related to the binding forces between atoms in the molecules .Ultrasonic velocity has been also employed in understanding the nature of molecular interactions in pure liquid [4]and binary mixtures .The method studying the molecular interaction from the knowledge of variation thermodynamics parameters and their excess value with composition gives an insight into the molecular process [5-7] . The investigation regarding the molecular association in organic binary mixtures having one alkanol group as one of the components is of particular interest since 1- alkanol is highly polar and can associate with any other group having some degree of polar attraction. O-nitrotolune is strongly associated due to highly polar N=0 gro

In view of the importance mentioned , an attempt has been made to elucidate the molecular interactions the mixture of O-nitrotolune with 2- propanol and 1 – heptanol respectively at 298.15 and 308.15K further in the excess values of some of associated ultrasonic velocity , density and viscosity of mixture

Materials and Methods:

The chemicals O-nitrotolune with 2- propanol and 1-heptanol used were of analytical grade (A.R) minimum assay of 99.9% obtained from s. d. fine chemicals India. Which are used as such without further purification. The densities of pure components and binary

mixtures were measured by using a Bi-capillary pycnometer. The purities of the above chemicals were checked density determination. The binary liquid mixtures of different known concentration were prepared in stopper measuring flask. The weight of the sample was measured using electronic digital balance with an accuracy of ± 0.1mg. The viscosity was measured using ubbelohde viscometer (20ml) and the efflux time was determined using a digital clock to within ± 0.015. The ultrasonic velocity (U) in liquid mixtures have been measured using an ultrasonic interferometer (Mittal type, model F-81) working at 2 MHz frequency The accuracy of sound velocity was ±0.1 ms^{-1}

Theory and Calculations:

Excess volumes of the mixtures have been calculated using density and mole fraction data given by equation:

$$V^E = (M_1X_1+M_2X_2)/\rho_{12} -(M_1X_1) /\rho_1 - (M_2X_2) / \rho_2 \quad \text{-- (1)}$$

Viscosity of Binary Mixtures is calculated by:

$$\ln\eta_m=X_1\ln\eta_1+X_2\ln\eta_2 \quad \text{--(2)}$$

The measured viscosities of the mixtures have been used to obtain deviation in Viscosity parameters on the basis of linearity in following way,

Deviation in Viscosity of Binary Mixtures is calculated by :

$$\Delta\eta_m=\eta_{12}-X_1\eta_1-X_2\eta_2 \quad \text{--(3)}$$

Deviation in isentropic compressibility have been evaluated by using the equation

$$\Delta k_S=k_S-(\Phi_1 k_{S1} + \Phi_2 k_{S2}) \quad \text{--(4)}$$

where k_{S1}, k_{S2} and K_S are isentropic compressibility of liquid mixtures and Φ is volume fraction of pure i^{th} component in the mixture and is defined as

$$\phi= (xi\ Vi) / (\Sigma\ xi\ Vi) \quad \text{--(5)}$$

where x_1 and V_i are mole fraction and molar volume of ith component in the mixture

Results and Discussion

In pure state , the self association of alkanols decreases with increasing chain length , when alkanols mixed with o- nitrotolune then there is interaction between their individual functional groups (-OH and $-NO_2$) . The presence of electron withdrawing group on benzene ring decreases electron densities. The polarity of alkanols is less hence there is degrees of self association is less an compare to nitrotolune[9].

The experimental values of density , viscosity and ultrasonic velocity and value of excess volume , viscosity deviation and deviation in isentropic compatibility parameter for the two binary liquid system at 298.15 and 308.15are given table 1 and 2 .

The excess volume and viscosity deviation are negative over the entire mole fraction of alkanol 298.15 and 308.15K temperature.

The excess of parameter of particular mole fraction of alkanols becomes less negative with increases of temperature. The negative value may be attributed to existence of dispersion and dipolar forces between unlike molecules and related to the differences in size and shape of molecules [10].

The magnitude of Δn and ΔKs, the sign and the extent of deviation of these properties depends on the strength of interaction between unlike molecules. According to Fort et.al. the excess viscosity gives the strength of the molar interaction between in molecules .

It is found that for the solution a good agreement was found in between Redlich - Kister parameters the solution of the fifth degree polynomial obtained with V^E , Δn and ΔKs .

The measurement of viscosity in binary mixture yield some reliable in the study of molecular interaction from the given table it shows that the value of excess viscosity and deviation in isentropic compressibility decreases with increases in concentration of alkanols but however it found to increases with elevation of temperature.

Conclusion

The experimental data of ultrasonic velocity, density and viscosity are reported by binary mixture of 2- propanol and 1- heptanol with 0-nirotolune over entire range of mole fraction at 298.15 and 308.15 K calculated viscosity deviation , excess molar volume and the change with isentropic compressibility are fitted with Redlich –Kister type polynomial equation . Very large negative deviation are observed for the both the investigated system. This reveals the existence of molecular interaction in the binary mixtures . The present investigation shown that greater molar interaction exist in binary mixtures.

Table.1. Values of densities,viscosities,ultrasonic velocity,Excess molar volumes and Deviation in viscocity and deviation in isentropic compressibility for binary system of 2-propanol and O-nitrotolune at 298.15 and 308.15 K.

Temp K	X_1	P (gm /cm^3)	$\eta 10^3$ (Nsm^{-2})	U (M S^{-1})	$V^E x10^6$(m^3/mole)	Δ $\eta x10^3$(K g $m^{-1}s^{-1}$)	$\Delta ksx10^{11}$ (m^2N^{-1})
	0.0000	0.78350	2.08560	1387.7	0.0000	0.000	0.00
	0.0466	0.81010	1.85160	1400.8	-0.4924	-22.694	-2.59
	0.0991	0.83560	1.69940	1443.6	-0.7602	-37.094	-24.57
	0.1583	0.86810	1.61090	1483.2	-1.5956	-45.020	-40.65
	0.2270	0.89470	1.52700	1582.5	-1.6993	-52.337	-80.88
298.15	0.3049	0.93150	1.50610	1623.2	-2.7000	-53.211	-81.07
	0.3972	0.97230	1.49910	1655.7	-3.9114	-52.471	-71.67
	0.5058	1.02060	1.46730	1681.7	-5.7272	-53.955	-56.33
	0.6375	1.02880	1.45500	1699.1	-3.4271	-53.130	-18.65
	0.7980	1.04500	1.35240	1715.9	-1.5128	-60.884	20.14
	1.0000	1.06920	1.92950	1932.0	0.0000	0.000	0.00
	0.0000	0.77480	1.45920	1365.8	0.0000	0.000	0.00
	0.0466	0.80130	1.41450	1389.5	-0.5004	-5.176	-17.48
	0.0991	0.82700	1.31860	1399.2	-0.8000	-15.545	-16.55
	0.1583	0.85910	1.28920	1450.0	-1.6187	-19.364	-49.36
	0.2270	0.88530	1.22250	1480.2	-1.6889	-27.053	-53.93
308.15	0.3049	0.92190	1.20010	1496.9	-2.6927	-30.449	-50.46
	0.3972	0.96180	1.18030	1590.2	-3.8401	-33.799	-85.70
	0.5058	1.01040	1.17260	1637.8	-5.7178	-36.181	-88.01
	0.6375	1.01870	1.16990	1642.0	-3.3734	-38.405	-49.95
	0.7980	1.04940	1.13030	1666.4	-3.0338	-44.747	-25.17
	1.0000	1.06030	1.60760	1719.2	0.0000	0.000	0.00

Table.2. Values of densities,viscosities,ultrasonic velocity,Excess molar volumes and Deviation in viscocity and deviation in isentropic compressibility for binary system of 1-heptanol and O-nitrotolune at 298.15 and 308.15 K.

Temp K	X_1	P (gm/cm^3)	$\eta 10^3$ (Nsm^{-2})	U ($M S^{-1}$)	$V^E x10^6$ (m^3/mole)	$\Delta\eta x10^3$ ($Kg m^{-1}s^{-1}$)	$\Delta ksx10^{11}$ (m^2N^{-1})
298.15	0.0000	0.82070	5.74700	1600.2	0.0000	0.000	0.00
	0.0863	0.85270	4.98620	1613.2	-2.0436	-43.193	-7.49
	0.1750	0.87130	4.26110	1567.8	-1.6845	-81.841	27.38
	0.2662	0.89940	3.77290	1616.1	-2.6439	-95.846	5.55
	0.3609	0.93350	3.28970	1633.5	-4.2036	-108.014	1.83
	0.4585	0.95640	2.88330	1653.3	-3.9412	-111.395	4.43
	0.5599	1.01500	2.09660	1672.4	-8.0920	-151.356	-3.01
	0.6640	1.08070	2.40630	1682.7	-12.3500	-80.646	-4.56
	0.7716	1.08630	2.10070	1707.4	-9.4644	-70.129	9.68
	0.8841	1.09700	2.02170	1717.3	-7.0081	-35.082	30.02
	1.0000	1.06920	1.92950	1932.0	0.0000	0.000	0.00
308.15	0.0000	0.81390	4.22880	1553.9	0.0000	0.000	0.00
	0.0863	0.84550	3.72660	1574.4	-2.0388	-27.641	-16.76
	0.1750	0.86380	3.21210	1599.5	-1.6543	-55.841	-25.78
	0.2662	0.89150	2.86000	1604.8	-2.5988	-67.146	-26.40
	0.3609	0.92700	2.51220	1612.2	-4.4185	-77.103	-29.63
	0.4585	0.94830	2.29520	1660.9	-3.9518	-73.220	-44.23
	0.5599	1.00610	1.70280	1664.7	-8.1005	-105.881	-48.62
	0.6640	1.07170	1.99200	1669.6	-12.4513	-49.675	-52.42
	0.7716	1.07700	1.76820	1682.9	-9.5132	-43.851	-38.04
	0.8841	1.08800	1.70680	1689.2	-7.0812	-20.502	-21.02
	1.0000	1.06030	1.60760	1719.2	0.0000	0.000	0.00

REFERANCES :-

1 Kinocid, *J.Am. Chem.Soc.*S1,2950(1929).

2 K.S.Mehara.,*Indian J.Pure and Appi. Phys.*,38,760(2000).

3 R.J.Fortand W.R.Moore,*Trans Faraday Society*,61,2102(1965)

4 Eyring, H.& Kincaid, J.F.(1938).Free volumes and free angles rarios of molecules in liquids.J.Chem.Phys.,6,220-229

5 Mehta, S.K.& Chauhan,R.K.(1996).Ultrasonic velocity and apparent isentropic compressibilitys in mixtures of non-electrolytes.J.Sol.Chem.,26,295-308

6 Dewan,R.K.,Gupta,C.M.& Mehta,S.K.(1988). Ultrasonic study of ethyl benzene + n-alkanols.Acoustica, 65,245.

7 Granberg L. and Nissan, Nature, **1946**, 164, 799

8 Patil S.R., Deshpande.U.Gand Hiray.A.RRasayan J. Chem, **2010**, 66-73.

9 Wankhede,D.S.;Lande,M.K.;Arbad,B.R.Densities&viscocities of Binary Mixtures of Paraldehyde + Propylene Carbonate at (288.15,293.15,298.15,303.15 & 308.15) K.J. Chem.Eng.Data**2005**,50,261-263.

10 Daakua,V.K.;Sinha,B.;Roy,M.N.Thermophysical Properties of N-N-Dimethylformamide with isometric butanols at 298.15,308.15 & 318.15 K.J. Ind.Chem.Soc.**2007**,24,37-45.

11 Alvarez,E.;Cancela,A.;Maceiras,R.;Navaza,J.M.;Taboas,R.;Density,Viscosity,Excess molar volume, and Viscosity Deviations of Three amyl Alcohols + Ethanol Binary Mixtures from 293.15 to 323.15 K.J. Chem.Eng.Data**2006**,51,940-945.

12 S.B. Kasare and B.A.Patdai,*Indian J.Pure & Appl.Phys* **25** 180 (1987)

13 S.Jyostna,S. Nallani,*J.Chem. Thermodyn.*,**38(3)**,272 (2006),DOI:10:1016/j.jct.2005.05.06

14 A. Ali.A.K.Nain,*Indian J.Phys***74B**,63(2000).

15 M.Dzida,*J.*ChemEng Data,**52(2)**521 (2007).

16 Pramod P Patil , Rupali S Patil, S.R.Patil, Amulrao U Borse *Rasayan J. Chem. 2018., 1103-1112*

Fig. 1) Ultrasonic velocity against mole fraction for 2-propanol and 1-heptanol at 298.15 K

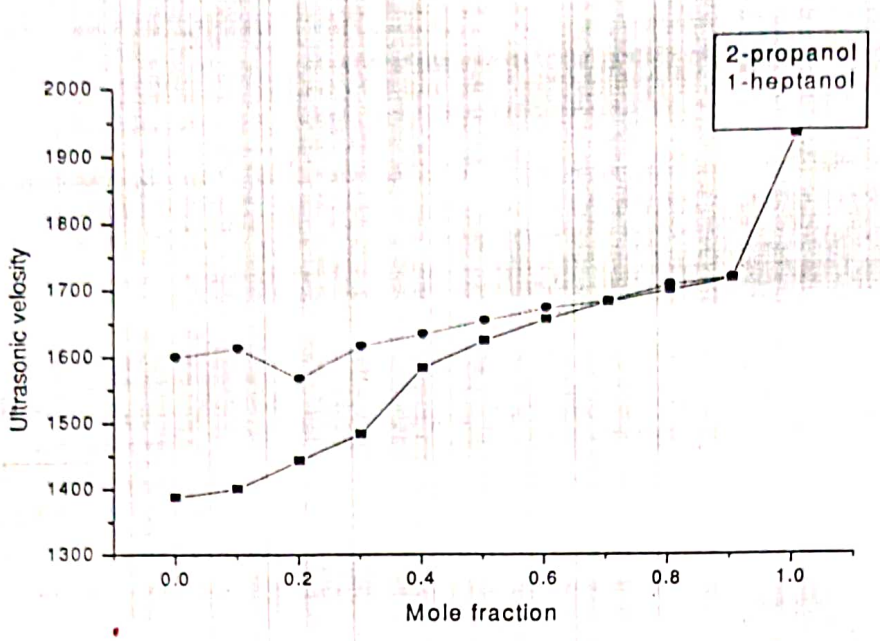

Fig. 2) Excess molar volume against mole fraction for 2-propanol and 1-heptanol at 298.15 K

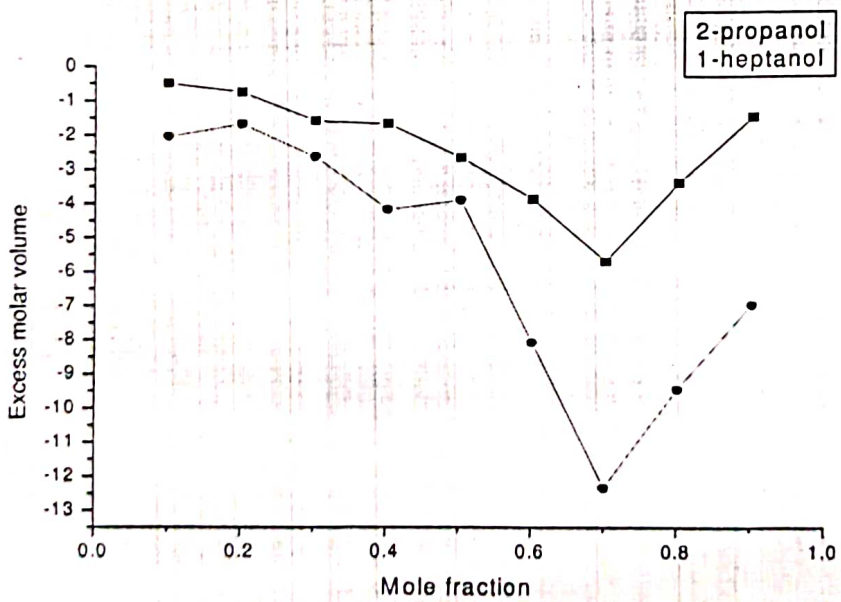

Fig. 3) Viscosity deviation against mole fraction for 2-propanol and 1-heptanol at 298.15 K

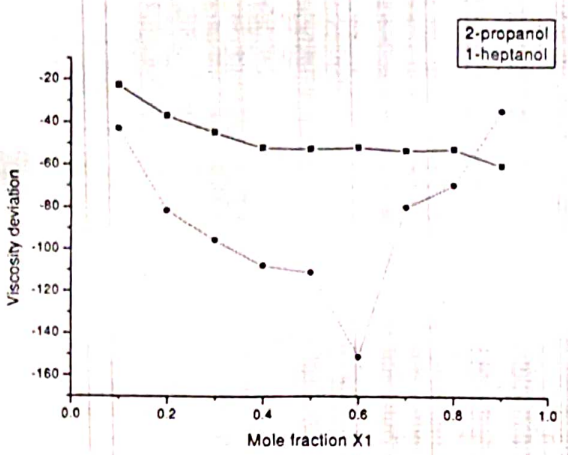

Fig. 4) Viscosity deviation against mole fraction for 2-propanol and 1-heptanol at 298.15 K

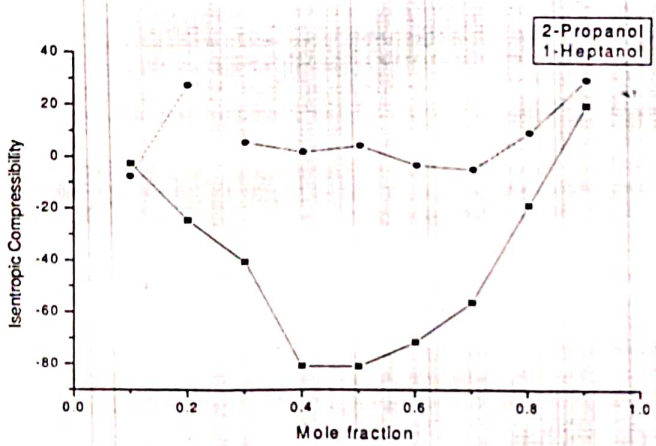

सुवर्ण महोत्सवी वर्षानिमित्त अनुभवी तज्ज्ञांच्या लेखणीतून साकारलेले...

राष्ट्रीय सेवा योजना
समाज जीवनातील योगदान

राष्ट्रीय सेवा योजना
NATIONAL SERVICE SCHEME

- संपादक :
डॉ. पंकजकुमार नन्नवरे
डॉ. संतोष खिराडे

– : अनुक्रमणिका :–

- **राष्ट्रीय सेवा योजना : एक सामाजिक चळवळ** १३
  – *डॉ. पंकजकुमार नन्नवरे*
- **राष्ट्रविकासाकरिता राष्ट्रीय सेवा योजना** २२
  – *डॉ. संतोष खिराडे*
- **महात्मा गांधीजींचे तत्त्वज्ञान आणि राष्ट्रीय सेवा योजना** ३१
  – *प्रा. डॉ. सचिन जे. नांद्रे*
- **महात्मा गांधीजीचे तत्त्वज्ञान आणि राष्ट्रीय सेवा योजना** ३९
  – *डॉ. शर्वरी रत्नाकर कुलकर्णी*
- **राष्ट्रीय सेवा योजनेतून व्यक्तिमत्व विकास**..... ४५
  – *सहा. प्रा. डॉ. तक्षशिला मोटघरे*
- **राष्ट्रीय सेवा योजना : व्यक्तिमत्व विकासाचे खुले व्यासपीठ** ... ५५
  – *डॉ. जी. आर. ढेंबरे*
- **युवकांच्या विकासात राष्ट्रीय सेवा योजनेची भूमिका** ६३
  – *डॉ. जयदीप रामकृष्ण सोळुंके*
- **राष्ट्रीय सेवा योजना : व्यक्तिमत्त्व विकासाचे खुले व्यासपीठ** ... ६९
  – *प्रा. डॉ. सुधा मधुकर खराटे*
- **आपत्तीचे व्यवस्थापन व रा.से.यो. ची भूमिका** ७७
  – *प्रा. जी. जे. गावित*
- **रासेयो आणि आपत्ती व्यवस्थापन** ८१
  : केरळ मदतकार्य – एक अनुभव
  – *सहा. प्रा. रत्नदीप भीमराव गंगाळे*
- **आपत्ती व्यवस्थापनात राष्ट्रीय सेवा योजनेची भूमिका** ९२
  – *प्रा. डॉ. सुनिल अजाबराव पाटील*
- **राष्ट्रीय सेवा योजना आणि महिला सबलीकरण** ९९
  – *प्रा. डॉ. मृणाल जोगी*
- **महिला सक्षमीकरणात राष्ट्रीय सेवा योजनेची भूमिका** १०३
  – *प्रा. डॉ. शुभांगी दिनेश राठी*

राष्ट्रीय सेवा योजना : व्यक्तिमत्त्व विकासाचे खुले व्यासपीठ

– डॉ. सुधा मधुकर खराटे

महाविद्यालयीन विद्यार्थ्यांच्या मनात सामाजिक जाणीव निर्माण करणे व त्यांचा सर्वांगीण व्यक्तिमत्व विकास घडून आणणे या उद्देशाने राष्ट्रीय सेवा योजनेची स्थापना झाली. स्वावलंबन, चारित्र्य संवर्धन व सामाजिक बांधिलकी या मूल्यांचा समन्वय नवीन शिक्षण पद्धतीत घडवून आणण्यासाठी महात्मा गांधींच्या जन्मशताब्दी वर्षापासून म्हणजे २४ सप्टेंबर १९६९ या दिवशी महाविद्यालयीन विद्यार्थ्यांसाठी राष्ट्रीय सेवा योजना भारत सरकारच्या युवा कार्य व क्रीडा मंत्रालयांतर्गत राबविण्यात येत आहे.

राष्ट्रीय सेवा योजनेची उद्दिष्टे पुढीलप्रमाणे आहेत

१. ज्या समाजाचा आपण एक भाग आहोत त्याला समजून घेणे.
२. समाजाच्या गरजा, प्रश्न अडचणी समजून घेऊन त्या दूर करण्यासाठी सक्रिय बनविणे.
३. युवांमध्ये सामाजिक बांधिलकीची जाणीव निर्माण करून तिचा विकास करणे.
४. समाजात मिसळण्यासाठी ज्या गुणांची गरज असते. त्या गुणांचा आपल्यामध्ये विकास करणे.
५. राष्ट्रीय एकात्मतेचा प्रसार व विकास करणे.
६. साक्षर व निरक्षर यातील दरी कमी करणे.
७. युवांमध्ये नेतृत्वगुण निर्माण करून लोकशाही प्रवृत्तीचा विकास करणे.
८. आपण घेत असलेल्या शिक्षणाचा व त्यातून मिळणाऱ्या ज्ञानाचा, माहितीचा उपयोग समाजासाठी करणे.

राष्ट्रीय सेवा योजनेचे बोधवाक्य व चिन्ह खूपच प्रभावी आहे. 'Not Me But You' हे बोधवाक्य असून त्याचा अर्थ 'माझ्यासाठी नव्हे तर तुमच्यासाठी' असा होतो. म्हणजे आपल्या जन्म केवळ स्वत:करिता नसून इतरांकरिता म्हणजे समाजाकरिता आहे. स्वत: करिता जगणारा हा आत्मकेंद्री असतो. ज्या समाजाचा आपण एक भाग आहोत, जो समाज आपल्यावर विविध प्रकारे उपकार करतो, त्याची परतफेड करणे हे आपले कर्तव्य आहे. त्या कर्तव्याला जागण्यासाठी, त्यातून उतराई होण्यासाठी आपल्याकडून होईल तेवढे समाजासाठी योगदान

देणे, राष्ट्राची सेवा करणे गरजेचे आहे. तरच आपल्या जगण्याला अर्थ प्राप्त होईल.

'माझ्यासाठी नव्हे तर तुमच्यासाठी' हे बोधवाक्य आपल्याला लोकशाही, सामाजिक बांधिलकीची जाणीव करून देते. निरपेक्ष, नि:स्वार्थी सेवेची गरज दाखवून देते. या बोध वाक्यातून मानवतेचं मूल्य व्यक्त होतं. कवयित्री बहिणाबाई चौधरी उत्तर महाराष्ट्र विद्यापीठ, जळगावचे कुलगुरू मा. डॉ. पी. पी. पाटील राष्ट्रीय सेवा योजनेविषयी म्हणतात, ''विद्यार्थ्यांच्या सर्वांगीण विकासाच्या दृष्टीने राष्ट्रीय सेवा योजना अतिशय महत्त्वपूर्ण भूमिका पार पाडत असते. विद्यार्थ्यांमधील उपजत नेतृत्वगुणांना अधिकाधिक विकसित करणे तसेच त्यांच्यात राष्ट्र सेवेची भावना वृध्दिंगत करणे या दृष्टीने 'राष्ट्रीय सेवा योजना' हे तीनही शब्द अतिशय महत्त्वपूर्ण आहेत.''[१]

या विधानावरून लक्षात येते की, विद्यार्थ्यांमध्ये उपजत काही क्षमता असतात. नेतृत्वगुण असतात. या गुणांचा विकास करण्यामध्ये राष्ट्रीय सेवा योजनेची महत्त्वाची भूमिका असते. राष्ट्रीय सेवा योजनेचे चिन्ह हे ओरिसा राज्यातील कोणार्क येथील सूर्य मंदिराच्या रथाच्या चाकावर आधारित आहे. चक्र हे गतीचे प्रतीक आहे. गतीमुळे सामाजिक परिवर्तन होऊ शकते व त्यासाठी आजच्या महाविद्यालयीन युवक-युवतींना राष्ट्रीय सेवा योजना हे प्रभावी माध्यम आहे. त्या माध्यमातून परिवर्तन करण्यासाठी हे चिन्ह घेतले आहे.

राष्ट्रीय सेवा योजना हे व्यक्तिमत्त्व विकासाचे खुले व्यासपीठ आहे. या योजनेत विद्यार्थ्यांचा सहभाग दोन वर्षाचा असतो. प्रवेश घेतल्यापासून प्रवेश संपेपर्यंत विद्यार्थी विविध कार्यक्रमांमध्ये भाग घेऊन व्यक्तिमत्व विकास घडवीत असतो. या योजनेतून खऱ्या अर्थाने विद्यार्थी स्व अनुभवातून घडत असतो. व्यक्तिमत्व विकासात पुढील घटक समाविष्ट असतात.

१. शारीरिक विकास
२. मानसिक विकास
३. बौद्धिक विकास
४. भावनिक विकास
५. भाषिक विकास

१) शारीरिक विकास

राष्ट्रीय सेवा योजनेचे महाविद्यालय स्तरावर तीन वेळा शिबिराचे आयोजन होते. दोन्ही सत्रात दत्तकगावी एक दिवसीय दोन शिबिरं व सात दिवसाचे निवासी विशेष हिवाळी श्रमसंस्कार शिबिर. अनेकदा महाविद्यालय परिसर स्वच्छतेकरिता श्रमदान केले जाते. शिबीर स्थळी जलसंवर्धनासाठी लहान-

लहान बांध बांधण्यासाठी श्रमदान केले जाते.श्रमातून शरीर विकसित होते. निवासी शिबिरात रोज सकाळी कवायतीच्या स्वरूपात व्यायाम घेतले जातात. त्यातून शरीर सुदृढ होते. संध्याकाळी विविध प्रकारचे मैदानी खेळ खेळले जातात. या खेळांमधून शरीराच्या विविध प्रकारे हालचाली होऊन शारीरिक विकास तर होतोच पण याचा होणारा लाभ विद्यार्थ्यांना फलदायी ठरतो.

२) मानसिक विकास

शिबिरात पहाटे योगा केला जातो. २१ जून हा दिवस महाविद्यालयात आंतरराष्ट्रीय योग दिवस म्हणून साजरा केला जातो. योगाच्या माध्यमातून स्वयंसेवकांचा मानसिक विकास केला जातो. विपश्यना किंवा ध्यानातून विद्यार्थ्यांमधील सर्व ताणतणाव कमी होतात. वर्षभर राबविण्यात येणाऱ्या कार्यक्रमातून स्वयंशिस्तीचा संस्कार केला जातो. वेळोवेळी होणाऱ्या उपक्रमांमधून जीवनमूल्य संस्कारित करून मनाला सशक्त केले जाते. विद्यार्थ्यांच्या मनात मोठ्या प्रमाणात भीती असते. न्यूनगंडाची भावना असते. प्रत्येक मुलांमध्ये उपजत काही क्षमता असतात पण त्यांना या क्षमतांची जाणीव नसते. प्रत्येक कार्यक्रमात विद्यार्थ्यांवर विविध प्रकारची जबाबदारी सोपवली जाते. यातून त्यांना मनातील भीतीवर मात करता येते. विविध दाखले देऊन मनातील न्यूनगंडाची भावना कमी केली जाते. अनेक मुलांमध्ये आत्मविश्वासाचा अभाव असतो. अशी मुलं स्वत:हून कधीच पुढे येत नाही. कार्यक्रम अधिकारी व इतर सदस्य अशा विद्यार्थ्यांना हेरून त्यांना बोलत करण्याचा प्रयत्न करतात त्यामुळे अशी मुलं भाग घेऊ लागतात विद्यार्थ्यांना स्वत:कडे व इतरांकडे बघण्याचा सकारात्मक दृष्टीकोन विविध उपक्रमांच्या माध्यमातून विकसित केला जातो. चिंतनशील, संवेदनशील, आत्मविश्वासाने, परिपूर्ण सकारात्मक विचारांचा युवा यातून घडत असतो.

३) बौद्धिक विकास

वर्षभर राष्ट्रीय सेवा योजना विभाग विविध कार्यक्रम राबवीत असतो. कर्तृत्ववान व्यक्ती आणि महान विभूतींची जयंती व पुण्यतिथी साजरी केली जाते. विविध विषयांवर व्याख्याने आयोजित केली जातात. निबंध स्पर्धा, वादविवाद स्पर्धा, वक्तृत्व स्पर्धा घेतल्या जातात. या स्पर्धांमध्ये स्वयंसेवक प्रत्यक्ष भाग घेऊन तसेच त्यांचे विचार ऐकून आपल्या बुद्धिमत्तेचा विकास करीत असतो. विशेष हिवाळी श्रमसंस्कार शिबिरात समाजातील ज्वलंत विषयावर, समस्येवर व्याख्यानांचे आयोजन बौद्धिक सत्रात असते. वेगवेगळ्या क्षेत्रातील व्याख्याते विविध विषयांवर मार्गदर्शन करतात. जातीमुक्त भारत, अंधश्रद्धानिर्मूलन, लेक वाचवा लेक शिकवा, जैवविविधता, नेट बँकिंग, पर्यावरण संवर्धन, ग्राम

विकास, व्यसनमुक्ती, आरोग्य, स्पर्धा परीक्षा तयारी इत्यादी विषयावर व्याख्याने आयोजित केली जातात. व्याख्याते त्या-त्या विषयात तज्ज्ञ असल्याने स्वयंसेवक कधी चर्चेतून तर कधी प्रश्न विचारून माहिती प्राप्त करीत असतात. यातून त्यांचा बौद्धिक विकास होत असतो. ज्या विषयांची माहिती नसते ती माहिती होऊन ज्ञानात भर पडत असते. याशिवाय गट चर्चेतून देखील विद्यार्थ्यांची बौद्धिक विचारसरणी विकसित होत असते.

४) भावनिक विकास

राष्ट्रीय सेवा योजनेतून विद्यार्थ्यांचा भावनिक विकास होत असतो. त्यांची स्वत:कडे बघण्याची भावना तर बदलतेच शिवाय समोरच्या व्यक्तीकडे बघण्याचा दृष्टिकोनही बदलतो. शिबिरातून त्यांच्यात संघभावना निर्माण होते. तसेच सहकार्य भावना देखील विकसित होते. सुरुवातीला मुला-मुलींचा एकमेकांकडे बघण्याचा संकुचित दृष्टिकोन असतो. विविध उपक्रमांमधून व एकत्रित काम केल्याने ही दृष्टी व्यापक बनते.

५) भाषिक विकास

भाषा व्यक्तिमत्त्वाचा प्रमुख भाग आहे. व्यक्तीची ओळख त्याच्या भाषेतून होत असते. व्यक्ती काय बोलते, कशी बोलते, त्याची शैली कशी आहे यातून तिचे अंतरंग दिसून येते. संत तुकाराम महाराज म्हणतात, 'अंतरीचे धावे स्वभावे बाहेरी' अंतरात म्हणजे हृदयात अथवा मनात जे असते ते सहजपणे बाहेर येते. विविध उपक्रमातून मुलं जेव्हा बोलू लागतात तेव्हा त्यांचा भाषिक विकास होत असतो. सुरुवातीला शंभर मुलांसमोर बोलण्याची, व्यक्त होण्याची मनात प्रचंड भीती असते. शिवाय न्यूनगंडाची भावना असते त्यातून नकारात्मकता वाढते. परंतु आत्मविश्वासाने बोलायला सुरुवात केल्यानंतर भीती कमी होत जाते. इतरांसमोर बोलण्याचा स्वयंसेवकांचा पहिला प्रसंग असतो. सुरुवातीला भीतीमुळे हातपायाला कंप सुटतो..शब्द न सुचल्याने अडखळणे होते. हळूहळू भीती नाहीशी होऊन बोलण्यात सुधारणा होते. पहिल्या दिवशी न बोलणारा विद्यार्थी शेवटच्या समारोपात मनोगत व्यक्त करतो. मुलांसमोर बोलायचे म्हणजे योग्य तेच बोलले गेले पाहिजे. विचारपूर्वक बोलावे लागत असल्याने त्याचा भाषिक विकास होतो. पाहुण्यांचा परिचय जर विद्यार्थ्यांना दिला असेल तर अपरिचित श्रेष्ठ पदावर काम करणाऱ्या व्यक्तींशी कसा संवाद साधायचा याची त्याला चांगली माहिती होते. भाषिक विकासाला पूरक अशा अनेक गोष्टी राष्ट्रीय सेवा योजनेच्या माध्यमातून विद्यार्थ्यांना मिळत असतात. त्यातून त्यांचे भाषिक कौशल्य वाढते त्यांचा फायदा व्यक्तिमत्व विकासात होतो.

राष्ट्रीय सेवा योजनेतून मनातील भीती जाऊन आत्मविश्वास वाढून व्यक्तिमत्व

कसे विकसित झाले याविषयी सातपुड्याच्या दुर्गम भागातील राज्या पावरा अभिमानाने म्हणतो, ''राष्ट्रीय सेवा योजनेतून माझ्या व्यक्तिमत्वाचा खरा विकास झाला. एकदा शिबिरात श्रमदानानंतर, श्रमपरिहारासाठी मनोरंजनाचा कार्यक्रम होता. मी काढलेल्या चिठ्ठीत 'नृत्य करणे' असे लिहिले होते. मला नाचता येत नव्हते, कधीही नृत्य केले नव्हते. सर्व विद्यार्थी जोर-जोरात ओरडत होते राज्या, राज्या, राज्या. नाचणं सक्तीचं होतं पण नाचायचं कसं हा मला पडलेला प्रश्न होता. माझा मित्र उभा राहिला. त्याने कसं नाचायचं हे मला शिकवलं. तो सोबत नाचत असल्याने त्याच्याकडे पाहून जमेल तसे हात-पाय व कंबर हलविली. मुलांनी टाळ्यांचा गजर केला. तेव्हापासून आत्मविश्वास वाढला. तोपर्यंत मी कोणाशीही बोलत नव्हतो नंतर स्वत:हून बोलू लागलो. चर्चेत भाग घेऊ लागलो. धडगाव महाविद्यालयात तीन वर्ष होतो. तीन वर्षे राष्ट्रीय सेवा योजनेत सक्रिय सहभाग होता. सर सर्व जबाबदारी आम्हा विद्यार्थ्यांवर टाकत. त्यामुळे किराणा आणणे, स्वयंपाक करणे, कार्यक्रमाचे नियोजन करणे या सर्व गोष्टी स्वयंसेवक सांभाळीत. यातून मला खूप शिकायला मिळाले. मी आदिवासी भागातील विद्यार्थी. शिक्षण आश्रम शाळेत पार पडले. त्यामुळे बोलण्यावर बोली भाषेचा प्रभाव होता. त्यामुळे इतरांशी मराठी बोलताना कुठेतरी न्यूनगंडाची भावना होती. ती हळूहळू कमी होत गेली. बोलीचा प्रभाव कमी झाला. मराठीवर प्रभुत्व आले. आत्मविश्वास वाढल्याने सभाधीटपणा वाढला. महाविद्यालयाच्यावतीने विद्यापीठ स्तरीय मैत्री शिबिर, साहस शिबिर, नेतृत्व विकास शिबिर, आदिवासी विद्यार्थी व्यक्तिमत्व विकास शिबिर अशा अनेक शिबिरांमध्ये सहभागी होण्याची संधी महाविद्यालयाने दिली. यातून खूप शिकायला मिळाले. अनुभवानं समृद्ध झालो. मित्र मिळाले. माहितीची देवाण-घेवाण होऊ लागली. माझ्या सर्वांगीण विकासामध्ये राष्ट्रीय सेवा योजनेचा खूप मोठा भाग आहे. मी आज जो काही आहे तो या योजनेमुळे आहे.''[२]

राज्या पावरा राष्ट्रीय सेवा योजनेविषयी मनापासून बोलत होता. त्याच्या मनात या योजनेविषयी कृतज्ञता होतीच. ती बोलण्यातून व्यक्त झाली. नेतृत्वगुण, संघटनकौशल्य, उत्तम वक्तृत्व शैली, समाजसेवेची भावना प्रबळ असलेले समृद्ध व्यक्तिमत्त्व कवयित्री बहिणाबाई चौधरी उत्तर महाराष्ट्र विद्यापीठाचे कला व ललित कला शाखेचे माजी अधिष्ठाता डॉ. मधुकर खराटे यांना मी प्रश्न विचारला, '' कोणत्या कारणांनी तुमचं व्यक्तिमत्व समृद्ध झालं?'' यावर त्यांनी प्रामाणिकपणे व अभिमानाने उत्तर दिले, ''एफ. वाय. बी. ए. ला असताना मी राष्ट्रीय सेवा योजनेत प्रवेश घेतला. डॉ. मनोहर सराफ सर हे कार्यक्रम अधिकारी होते. माझ्यामध्ये सुप्त अवस्थेत काही गुण होते. त्या गुणांना व्यक्त होण्यासाठी व

विकासाकरिता राष्ट्रीय सेवा योजनेचं खुलं व्यासपीठ मिळालं. वर्षभर होणारे कार्यक्रम व दहा दिवसीय निवासी शिबिर यातून खूप शिकायला मिळाले. अनेकांशी परिचय झाला. स्वत: घडत गेलो. कार्यक्रमांची सर्व जबाबदारी सर आमच्यावर टाकत असत. त्यामुळे नियोजन व व्यवस्थापन कळलं. राष्ट्रीय सेवा योजनेचे विद्यार्थ्यांचा सर्वांगीण विकास करणे हे प्रमुख उद्दिष्ट आहे. शिबिरात दत्तक गावातील नागरिकांचा आपलेपणाचा, प्रेमाचा अनुभव येई. ग्रामीण भागातील लोकांचे जीवन, त्यांच्या समस्या, गरजा, प्रश्न यासाठी आपण काय करू शकतो याची जाणीव निर्माण होई. या योजनेतील माझा सहभाग म्हणजे माझ्या आयुष्यातील अविस्मरणीय आठवणींचा अनमोल ठेवा आहे. माझ्या व्यक्तिमत्व विकासात या योजनेचा खूप मोठा भाग आहे. महाविद्यालयातील विद्यार्थ्यांनी या खुल्या व्यासपीठाचा निश्चितपणे व्यक्तिमत्त्व विकासासाठी लाभ घ्यावा. या शिबिरातून नेतृत्व गुण विकसित झाल्यामुळे जी. एस. होण्याची संधी महाविद्यालयात मिळाली. त्यानंतर युवक बिरादरी भुसावळ शाखेची जबाबदारी मिळाली. हे सर्व घडलं ते राष्ट्रीय सेवा योजनेमुळे.''[३]

राष्ट्रीय सेवा योजनेतून घडत असलेल्या प्रभावी व्यक्तिमत्त्वामुळे विद्यार्थ्यांमध्ये सामाजिक भान निर्माण होते. याविषयी कवयित्री बहिणाबाई चौधरी उत्तर महाराष्ट्र विद्यापीठ राष्ट्रीय सेवा योजनेचे संचालक डॉ. पंकजकुमार नन्नवरे म्हणतात, ''अंधारमय काळोखात एक छोटीशी पणती आपल्या पेटलेल्या ज्योती द्वारे ज्याप्रमाणे आशादायी प्रकाश देण्याचा प्रयत्न करते. अगदी त्याचप्रमाणे राष्ट्रीय सेवा योजना ही समाजातील युवकांना सामाजिकतेचे भान देऊन त्यांच्याद्वारे समाजाला दिशा देण्याचे, वळण लावण्याचे पवित्र कार्य करत आहे.''[४]

ही योजना संस्काराची खूप मोठी शिदोरी आहे. या शिदोरीचा लाभ विद्यार्थ्यांना तर होतोच शिवाय समाजालाही होतो. कारण 'माझ्यासाठी नव्हे तर तुमच्यासाठी' हे ब्रीदवाक्य स्वयंसेवकांच्या मनात कायमस्वरूपी कोरले जाते. काहींना तर महाविद्यालयीन स्तर, विद्यापीठ स्तर, राज्यस्तरीय व राष्ट्रीय स्तरावरील वेगवेगळ्या शिबिरांमध्ये जाण्याची सुवर्णसंधी मिळते. त्यातून व्यक्तिमत्वाला विविध पैलू पडतात. सुरुवातीला विद्यार्थी हा केवळ एक दगड असतो. याचं रूपांतर शोभिवंत, तेजस्वी व चकाकणाऱ्या हिऱ्यात करण्याचे सामर्थ्य राष्ट्रीय सेवा योजनेत आहे. अशा हिऱ्यांमध्ये समाज परिवर्तन करण्याची ताकद असते.

या योजनेतून केवळ विद्यार्थ्यांचा व्यक्तिमत्त्व विकास होतो असे नव्हे तर समितीत कार्य करणाऱ्या प्राध्यापकांचाही विकास होत असतो. ते देखील अनुभवातून घडत असतात. नवीन गोष्टी शिकत असतात. त्यांच्यामध्ये सुप्तावस्थेत विविध गुण असतात. त्या गुणांना विकसित होण्याची संधी मिळत असते. याचा

अर्थ विद्यार्थ्यांसोबत प्राध्यापकांचाही व्यक्तिमत्व विकास होत असतो.

राष्ट्रीय सेवा योजनेतून स्वयंसेवकाला सर्वांगीण व्यक्तिमत्त्व विकासाकरिता पुढील गोष्टी प्राप्त होतात.

१. विद्यार्थ्यांना श्रमदानातून श्रम प्रतिष्ठा कळते.
२. कार्यक्रमात प्रत्यक्ष सहभाग घेतल्याने नियोजन क्षमता वाढते.
३. विद्यार्थ्यांची वक्तृत्वशैली विकसित होते. प्रस्तावना, परिचय, सूत्रसंचालन, आभार प्रदर्शन व भाषण कला यातून संवाद कौशल्य विकसित होते.
४. गट प्रमुखाची जबाबदारी मिळाल्याने नेतृत्वगुण विकसित होतो.
५. विद्यार्थ्यांचा जनसंपर्क वाढीस लागतो.
६. राष्ट्रीय सेवा योजनेत वेगवेगळ्या शाखेतील विद्यार्थ्यांचा सहभाग असतो. त्यामुळे दृष्टी व्यापक होते.
७. शिबिरात मुले-मुली सोबत राहत असल्याने एकमेकांकडे बघण्याचा दृष्टिकोन बदलतो.
८. गटचर्चेमुळे तार्किक संवाद करण्याची क्षमता वाढीस लागते.
९. विविध उपक्रमातून होणाऱ्या विविध संस्कारातून सुज्ञ जाणकार नागरिक निर्माण होण्यास मदत होते.
१०. सांस्कृतिक कार्यक्रमांमुळे विद्यार्थ्यांमधील गायन, वादन, नृत्य, वक्तृत्व कला, मिमिक्री व अभिनय या सुप्त गुणांचा विकास होतो.
११. विद्यार्थ्यांमध्ये राष्ट्रभक्ती व देशाभिमान वाढतो.
१२. शिबिरामुळे ग्रामीण जीवनातील समस्यांची जाण निर्माण होते.
१३. विद्यार्थ्यांची निर्णय क्षमता विकसित होते.
१४. स्वयंशिस्त व स्वावलंबन वृत्ती वाढीस लागते.
१५. आत्मविश्वास वाढून आव्हान स्वीकारण्याची भावना निर्माण होते.
१६. आहे त्या परिस्थितीचा स्वीकार करण्याच्या समायोजन वृत्तीचा विकास होतो.

निष्कर्ष

१. राष्ट्रीय सेवा योजनेतून विद्यार्थ्यांमधील सुप्त कलागुणांचा विकास होतो
२. विद्यार्थ्याचा सर्वांगीण विकास होतो.
३. आत्मविश्वास वाढल्याने तक्रारींचा सूर कमी होऊन सकारात्मक दृष्टी वाढते.
४. विचारांना योग्य वळण लागते.

५. संस्कारी व्यक्तिमत्व घडते.
६. सामाजिक बांधिलकी असलेला युवा तयार होतो.
७. प्रत्यक्ष अनुभवातून अनेक कौशल्य प्राप्त करता येतात.
८. राष्ट्रीय सेवा योजना विद्यार्थी-विद्यार्थिनींचे निकोप व्यक्तिमत्त्व घडवणारे खुले व्यासपीठ आहे.
९. विद्यार्थ्यांची समायोजन क्षमता विकसित करणारी ही प्रभावी योजना आहे.

वरील विवेचनावरून असे लक्षात येते की, राष्ट्रीय सेवा योजना ही अत्यंत महत्वाची योजना असून विद्यार्थ्यांच्या सर्वांगीण विकासामध्ये तिची मोलाची भूमिका दिसून येते.

संदर्भ

१. स्वयंसेवक कार्यदिनदर्शिका-मा. डॉ. पी. पी. पाटील यांचा शुभेच्छा संदेश राष्ट्रीय सेवा योजना, कवयित्री बहिणाबाई चौधरी उत्तर महाराष्ट्र विद्यापीठ, जळगाव
२. राज्या पावरा - प्रत्यक्ष संभाषण
३. डॉ. मधु खराटे-प्रत्यक्ष संभाशण
४. स्वयंसेवक कार्यदिनदर्शिका-डॉ. पंकजकुमार नन्नवरे यांचा शुभेच्छा संदेश राष्ट्रीय सेवा योजना, कवयित्री बहिणाबाई चौधरी उत्तर महाराष्ट्र विद्यापीठ, जळगाव

RESEARCH JOURNEY International Multidisciplinary E-Research Journal ISSN : 2348-7143
Impact Factor (SJIF) - 6.625 | Special Issue 214 (B) : हिंदी साहित्य : विविध विमर्श Jan. 2020

ज्ञानप्रकाश विवेक की कहानियों में चित्रित नारी विमर्श

प्रा. डॉ. प्रल्हाद विजयसिंग पावरा
सहायक प्राध्यापक, हिंदी विभाग,
कला, वाणिज्य एवं विज्ञान महाविद्यालय, यावल, जि. जलगाँव

यह एक वास्तविकता है कि किसी भी साहित्यकार का व्यक्तित्व एवं कृतित्व में अंतरंग संबंध होता है। उसके व्यक्तित्व का प्रतिबिंब उसकी सृजनधर्मिता में प्रत्यक्ष एवं परोक्ष रूप में होता ही है। व्यक्ति जिस परिवार, परिवेश, परिस्थिति में जीवन यापन करता है उसका प्रभाव एवं उसके संस्कार उसके व्यक्तित्व में दृष्टिगत होते हैं। अत: उसका व्यक्तित्व उनके कृतित्व में झलकता है। किसी भी साहित्यकार के व्यक्तित्व में उसकी स्वभावगत विशेषताएँ, उसके पारिवारिक संस्कार, परिवेशगत अनुभव विभिन्न प्रसंगों से उसके मन-मस्तिष्क में होनेवाली क्रिया-प्रतिक्रियाएँ समाहित रहती है। इसी कारण किसी भी साहित्यकार के अध्ययन एवं मूल्यांकन के पूर्व उसके व्यक्तित्व में अवगाहन करना आवश्यक हो जाता है। यथार्थत: ''व्यक्तित्व शब्द उन सभी बातों का बोध है जो किसी व्यक्ति में है और जिन पर उसे अभिमान होता है। इसके अंतर्गत व्यक्ति की संवेदनाएँ, प्रवृत्तियाँ, उद्वेग, प्रत्यक्ष ज्ञान, कल्पना, स्मृति, बुध्दि, विवेक आदि मानसिक शक्तियाँ एवं शारीरिक बनावट, अवस्था और दूसरे व्यक्ति से संबंध आदि ज्ञात होता है।''[१]

डॉ. नगेन्द्र का अभिमत है कि ''मैं ये मानता हूँ कि प्रत्येक साहित्यिक कृति का संबंध कृतिकार के व्यक्तित्व से है। कृतिकार का अपना रागात्मक जीवन और उसके आधारपर निर्मित जीवन दर्शन कृति में अनिवार्यत: प्रतिफलित होता है। यह प्रतिफलन प्रत्यक्ष हो यह आवश्यक नहीं है। प्राय: यह अप्रत्यक्ष और प्रच्छन्न ही होता है।''[२]

सम्प्रति, भौतिकवादी युग में नारी के प्रति समाज की दृष्टि भी भोगवादी बन चुकी है। नेमीचंद्र जैन ने ठीक ही कहा है ''अभी तक नारी की स्वाधीनता अधिकतर एक प्रकार की विशिष्टता के रूप में ही दिखाई पडती है, जीवन की सहज स्थिति के रूप में नहीं।''[३] आज नारी को वासना की पूर्ति का साधनमात्र माना जाता है। उसका शोषण आम बात हो गई है। 'बारात का सफर' कहानी में शरावी युवक नाचते हुए कुमुद से छेडछाड करते हैं, उसे पंछी, पकौडा जैसे विशेषणों के साथ छेडा जाता है। कुमुद इन सब बातों को चुपचाप झेलती है क्योंकि ये युवक बाराती बनकर आए हे। वह सोचती है कि 'कितनी नंगी है इन लोगों की आँखे!' कुमुद की त्रासदी यह है कि वह जिस वरूण से प्रेम करती थी उसी वरूण के पिता का स्थानान्तर हो जाने के कारण उसके प्रथम प्रेम के तमाम दस्तावेज अधूरे रह गए थे। वरूण के पश्चात कुमुद ने अनुभव किया कि वरूण जैसा शालिन, भावुक, संकुचित युवक मिलना कठिन हैं क्योंकि 'सबके सब व्यावसायिक धरातल पर टिके समीकरणों के पुतले लगते हैं।'

नारी विमर्श के अंतर्गत वेश्या जीवन को उभारा गया है। वास्तव में वेश्या जीवन एक आर्थिक विवशता है, नारी जीवन की त्रासदी है। 'अंत एक सूरज का' नामक कहानी में पारबती वेश्या है परंतु माँ बनकर उसे अपार सुख की अनुभूति होती है। वैसे माँ बनना वेश्या जीवन में अपराध ही है। चकला चलानेवाली दादी ने उसे गर्भ को रफा-दफा करने के लिए आग्रह किया क्योंकि बच्चे को पालना कठिन होगा। धंदा भी चौपट हो जाएगा। और यहाँ के वातावरण में रहकर वह दलाल या उठाईगीर बनेगा। परंतु पारबती नहीं मानी। स्कूल में वेश्यापुत्र होने के कारण उसकी उपेक्षा होती है। उसे स्कूल में पढने नहीं दिया जाता। जब मंगल तेरह वर्ष का हो गया तो उसने माँ के धंदे को देखकर आक्रोश व्यक्त किया। अंतत: मंगलू के साथ वही हुआ जो इस परिवेश में जीवन गुजारते है। वह चोरियाँ करता रहा, जेब काटता रहा, खून-खराबा करता रहा, लडाई-झगडे, गालीगलौज करता रहा। परंतु उसने किसी लडकी की तरफ आँख उठाकर भी नहीं देखा। एक दिन उसकी माँ की मृत्यु हो जाती है। कहानीकार की चिंता उन तमाम हजारों बच्चों के प्रति व्यक्त हुई है जो वेश्यालयों में नारकीय जीवन गुजारते है।

'काली लडकी' कहानी में समाज की मानसिकता व्यक्त हुई है। यद्यपि कामिनी नौकरी करती है फिर भी वह काली होने के कारण उपेक्षित है वह चाहती है कि उसके ऑफिस के युवा सहयोगी उससे बाते करें, उसके साथ चाय पिये, जिस प्रकार ऑफीस के अन्य महिला कर्मचारियों के साथ व्यवहार करते हैं। काली होने के कारण विवाह भी एक समस्या बनी हुई है। उसके साथ कार्य करनेवाली लगभग सभी लडकियों क विवाह भी हो गए और वे बच्चों की माँ भी बन गई परंतु कामिनी अकेलेपन की त्रासदी को भोगती रही। एक दिन वह अपने पिता से यह प्रश्न करती है कि -''क्या बदशक्ल लडकी को जीने का अधिकार नहीं? क्या वह सम्मानित ढंग से नहीं जी सकती? क्या समाज में सब सुंदर है, कुरूपता विद्यमान नहीं? फिर...फिर पिताजी मेरे हिस्से में इतना अपमान क्यों, इतने तिरस्कार क्यों? हर बार मैं लडके के सम्मुख जा बैठू, एक याचक की भाँति कि वह विवाह के लिए मुझे पसंद कर ले। ...आखिर कब तक अपनी भावनाओं का रक्तपात करके यह सब सहना होगा...?''[४] कहानीकार ने कामिनी के माध्यम से नारी जीवन की व्यथा-कथा प्रस्तुत की है।

'जलजला' कहानी में सविता के माध्यम से नारी शोषण को व्यक्त किया गया है। सविता पर महाविद्यालय के तीन विद्यार्थी बलात्कार करते हैं। फलस्वरूप उसका जीना मुश्किल हो जाता है। उसका दोष न होते हुए भी उसको लोग अलग नजर से देखते है। सविता के बडे भाई के मित्र पी. दयाल जो मनोचिकित्सक थे सविता को नॉरमल करने की जिम्मेदारी जिन्हें सौंपी गई थी वे भी सविता को समझाते हैं कि -'हमें अतीत भूल जाना चाहिए, वर्तमान को जीना है, खुबसूरत ढंग से जीना है' परंतु यह समझाते हुए वे चोर नजरों से सविता को देखते थे। उनकी दृष्टि और व्यवहार से सविता ने डॉक्टर

के यहाँ जाना बंद कर दिया। सविता का प्रेमी परेश भी सविता की उपेक्षा करने लगा। यदि विवाह के लिए लडक़ेवाले उनके घर आते तो पास-पडोसवाले पहले ही उन्हें आगाह कर देते थे कि लडक़ी चरित्रहीन है। चरित्रहीन का यह सर्टीफिकेट देकर उसे मर्मांतक पीडा दी जाती थी और वह यह निश्चय करती है कि अब वह विवाह नहीं करेगी। कहानी में नारी के यौन शोषण, समाज की मानसिकता, एक सीधी-सादी युवती के जीवन की नियति चित्रित हुई है।

समसामयिक युग में नारियों पर होने वाले अत्याचारों की संख्या बढ.रही है। प्रतिदिन के समाचार पत्रों से ज्ञात होता है कि नारी कहीं भी सुरक्षित नहीं है। महानगरों में तो यह स्थिति और भी भयानक है। पति-पत्नी रेस्तरा से खाना खाकर लौट रहे थे कि अचानक एक कार रूकी, चार लोग उतरे और पति के देखते-देखते पत्नी का अपहरण कर लिया। पति जडवत खडा रहा क्योंकि उन गुण्डों के हाथों में हत्यार थे। नारी का यौन शोषण का एक विदारक दृश्य विवेक जी ने प्रस्तुत किया है। जिसमें नारी को केवल भोग्या माना जाता है, ''दो दिन गुण्डों ने अपने पास रक्खा उस स्त्री को। इन घण्टो में वह स्त्री, स्त्री नहीं थी एक जिन्स थी, एक वस्तु थी जिसका इस्तेमाल करना था और वह इस्तेमाल होती रही। स्त्री के हिस्से में उत्पीडन था, तडप थी। छटपटापट थी। लेकिन और चार लोगों के लिए आनंद देने वाला पदार्थ थी वह।''[५] दो दिन बाद उसे रिहा तो कर दिया गया परंतु अब उसे कटघरे में खडा होना था। पति के द्वारा उसकी उपेक्षा होने लगी क्योंकि अब वह कुलटा थी। उसका अपना घर ही उसके ही यातना शिविर हो गया। और शाम को उस स्त्री ने अपने आपको पंखे के हुक के साथ लटकाकर आत्महत्या कर ली। कहानीकार को आश्चर्य एवं दु:ख यह होता है कि वह जो मर्द था उसने दो महिने बाद दूसरा विवाह कर लिया और उसकी पहली स्त्री तमाम तरह की पीडाएँ भोगकर इतिहास हो गई थी और पुरूष मानों उसने एक जूती उतारी हो, और दूसरी डाल ली हो। ज्ञानप्रकाश विवेक के द्वारा चित्रित यह दुखद प्रसंग नारी जाति की संपूर्ण संवेदना को उसके संबंध में पुरूष के सोच एवं व्यवहार को व्यक्त करता है।

अधिकांश नारियाँ अपने व्यवसाय के प्रति प्रतिबध्द रहती हैं। 'हमारे स्कूल की मैडम' नन्दिनी इसी प्रकार की स्त्री है। वह शिक्षिका है। पूरी कक्षा उसकी फैन है। वह सुंदर, सौम्य और शालीन है। उसका मन जितना उज्वल था उतना ही उसका चेहरा। गरीब बच्चों की वह फिस भर देती थी क्योंकि उसे मालूम था कि उन बच्चों के माँ-बाप भी नन्दिनी मैडम के मुरीद हो गए थे। विद्यार्थी उसकी प्रशंसा करते हुए कहते भी थे कि - ''नन्दिनी मैडम की यही छोटी-छोटी बातें उनकी शख्सियत को बडा करती थी। वह पूरे स्कूल में अलग-सी दिखाई देतीं। उन्होंने सचमुच में हमें शिक्षित किया। किताबों के कोर्स के अलावा भी कितने सारे सबक थे जो उन्होंने हमें याद कराये। उनमें गजब का धैर्य और इच्छाशक्ति थी।''[६] संक्षेप में नन्दिनी मैडम भारतीय नारी का उदात्त आदर्श है। शिक्षिका के रूप में उसका उदात्त व्यक्तित्व सराहनीय है।

''विद्रोहात्मक मूल्य किसी संस्था, सत्ता-प्रतिष्ठान, धार्मिक मठ या दर्शन की पोथी से प्राप्त नहीं किए जा सकते। हर सूरत में इन्हें जीवन-स्थितियों में से और तत्पश्चात उनका अतिक्रमण करते हुए, अर्जित किया जा सकता है।''[७] दाम्पत्य जीवन में नारी का त्याग शब्दातीत है। 'पहले यहाँ घर था' में डॉ देव की पत्नी विभा अपने पति के प्रति प्रतिबध्द है। डॉक्टर खाने-पीने के शौकिन थे। वे पीते रहते और बिचारी विभा बैठी रहती। स्वयं शाकाहारी होकर डॉक्टर साहब के लिए चिकन, मटन, फिश बनाती। जब वे नशे में होते तो डॉ देव के लिए विभा एक देह होती। विभा को अक्सर महसूस होता कि वह एक बर्फ की सील है। भले ही डॉक्टर उसे धूप में रखे या छाँव में -पिघलना उसकी नियति है। वास्तव में यह एक विभा की नहीं असंख्य नारियों की नियति है। नारी की यह विशेषता है कि वह परिस्थितियों के अनुसार अपने आपको ढाल लेती है। जीवन में समझौता करना उसका स्वभाव है। डॉ. देव से तलाक लेकर विभा एक डेढ.कमरे के एल. आई. जी. फ्लैट में आ गयी। डॉ. देव के साथ शानदार कोठी में सुख और ऐश्वर्य में रहनेवाली विभा एक छोटे-से मकान में भी खुश है। क्योंकि यहाँ वह एक स्त्री थी। अपने समूचेपन के साथ जी रही थी। डॉ. देव अकेली विभा को पत्र के माध्यम से चीढाते रहते थे। कभी उसको पत्र लिखते कि उन्होंने एक ऐसी कोठी बनायी है जिसका डिझाइन दुर्लभ है। पूरे शहर में यह कोठी चर्चा का विषय है, तुम देखोगी तो ईर्ष्या करोगी। तब विभा सोचती है कि डॉक्टर साहब बार-बार सोए हुए पानी में कंकर क्यों फेकते है। वह अकेलेपन की त्रासदी को भोगती है। विवेक जी के अनुसार - ''अकेली स्त्री के भीतर अकेलापन किसी शक्ति की तरह रहने लगता है। विभा ने इस बात को समझ लिया था कि उसके सारे युध्द अपने साथ होंगे। अपने-आपसे पराजित होगी और जीतेगी भी अपने-आपसे।...वह अकेली है इसलिए अपने साथ, हार-जीत का जश्न चलते रहेंगे।''[८] इस प्रकार 'पहले यहाँ घर था' कहानी में विभा के माध्यम से एक संपन्न नारी की नियति एवं त्रासदी उजागर की गई है।

'सेवानगर कहाँ है' कहानी में एक युवती का त्रासद जीवन चित्रित किया गया है। वह एक मध्यवर्ग की युवती है उसके लिए वर की तलाश चल रही है। वह सुंदर है और बहुत अच्छा गाती है। परंतु एक दिन वह बाजों के चँगुल में फँस गई। कुछ दरिंदे उसे उठाकर ले गए और जब वह वापिस आई तो पूर्ण रूप से उजड.गई थी। ना हँसती थी ना रोती थी। दीवारों को देखते-देखते वह स्वयं दीवार बन गई थी, और एक दिन उसने खुदकुशी कर ली। यह किसी एक युवती के जीवन की व्यथा नहीं है, देश में लाखों युवतियाँ दरिंदों की शिकार होती रहती हैं। यह नारी की विडम्बना एक चिंतनीय समस्या है।

'क्लब' कहानी में उच्चवर्ग की नारियों का चित्रण है। ये नारियाँ क्लब में जाती हैं, ताश खेलती हैं और जीवन का उपभोग करती है। इसी क्लब में मिसेस मित्रा है। पैंतीस साल की बेहद खुबसूरत स्त्री। वह अहंकारी है, बिनधास्त है। कंपनी के ए. जी. एम. साहब की पत्नी है। वह क्लब में किसी के साथ भी शराब पी सकती है, सिगरेट पीती है। यह बाजारवाद और उपभोक्तावाद का प्रभाव है कि नारी स्वच्छंद जीवन के प्रति आकर्षित होती जा रही है। इस संबंध में रामजी यादव लिखते है कि - ''संपन्नता अपने साथ बेहिसाब और अर्थहीन अहंकार, बिंदासपन और भय लेकर चलती है। इसे मिसेज

मित्रा के बहाने कथाकार ने खोला है। अंततः हम देखते हैं कि जिस क्लब की जीवंतता में अपनी घुटन से त्रस्त मिसेज मित्रा उल्लास के पल ढूंढती हुई शामिल होती हैं, वह क्लब एक दिन जर्जर इमारत में बदल जाता है।''[९]

भारतीय नारी शक्तिशाली है। पति की मृत्यु के बाद भी कई नारियाँ बिखरती-टूटती नहीं हैं। 'दश्त-ए-तन्हाई-में' नारी शक्ति का प्रतिपादन किया गया है। पति विपिन की मृत्यु के पश्चात सुजाता हमेशा संघर्षरत रही। अपने बच्चों के भविष्य के लिए उसने ट्यूशने की, कभी किसी प्राइव्हेट दफ्तरों में नौकरी की, कभी सेल्ज़गर्ल का कार्य किया। पति की मृत्यु के पश्चात अपने बच्चों का भविष्य घडने के लिए उसका संघर्ष करना नाही सक्षमीकरण का प्रमाण है।

उपरोक्त विवेचन से स्पष्ट होता है कि ज्ञानप्रकाश विवेक ने अपनी कहानियों में नारी की स्थिति एवं गति का विवेचन किया है। उनकी अधिकांश नारियाँ परिस्थितियों से हताश-निराश नहीं होती। वे परिस्थितियों का सामना करती है। वे जितनी सहनशील है उतनी संघर्षशील भी है।

संदर्भ सूची :

१. आधुनिक कथा साहित्य और चरित्र विकास - डॉ. बेचैन, पृ. ८६
२. आस्था के चरण - डॉ. नगेन्द्र, पृ. ८०
३. प्रतिनिधि महिला कहानीकारों में चित्रित नारी - डॉ. मीना जोशी, पृ. १०४
४. जोसफ चला गया - ज्ञानप्रकाश विवेक, पृ. ५०
५. उसकी जमीन - ज्ञानप्रकाश विवेक, पृ. ९२
६. सेवानगर कहाँ है - ज्ञानप्रकाश विवेक, पृ. ७०
७. समकालीन साहित्य चिंतन - डॉ. रामदरश मिश्र / डॉ. महीप सिंह, पृ. ५८
८. पूर्ववत्, पृ. ८२
९. इंडिया टुडे, जनवरी २०१०, पृ. ५८

Impact Factor – 6.625 | Special Issue – 232 | February 2020 | ISSN – 2348-7143

19-20.

INTERNATIONAL RESEARCH FELLOWS ASSOCIATION'S

RESEARCH JOURNEY

Multidisciplinary International E-Research Journal

PEER REVIEWED, INDEXED AND REFEREED JOURNAL

२१ वीं शताब्दी का हिंदी उपन्यास साहित्य

अतिथि संपादक
प्राचार्य डॉ. ए. एस. पैठणे

मुख्य संपादक
डॉ. धनराज टी. धनगर

कार्यकारी संपादक
डॉ. महेश गांगुर्डे

कार्यकारी सह-संपादक
प्रा. महेंद्र वसावे

For Details Visit To : www.researchjourney.net

Printed By : PRASHANT PUBLICATIONS, JALGAON

- अयोध्या में ध्वंसलीला : 'आखिरी कलाम' ८९
  डॉ. अमृत बिसन खाडपे
- मिथिलेश्वर के उपन्यासों में प्रेम एवं काम की अभिव्यक्ति ९१
  प्रा. डॉ. प्रल्हाद विजयसिंग पावरा
- नारी अस्मिता की पहचान कराता मधुर कपिला का उपन्यास – 'सातवां स्वर' ९५
  डॉ. अभयकुमार आर. खैरनार
- "गिलिगडु : बदलते मानवमूल्यों की कथा" ९७
  डॉ. अशोक शामराव मराठे
- समाज जीवन को उन्नत जीवन प्रदान करने वाली नवचैतन्य की निरंतर धारा – 'सुखदा' ९९
  डॉ. दिपक विश्वासराव पाटील
- "भगवानदास मोरवाल के उपन्यसों में स्त्री–विमर्श" १०२
  प्रा. डॉ. मनोहर हिलाल पाटील
- 'ग्लोबल गाँव के देवता' उपन्यास में आदिवासी विमर्श १०४
  प्रा. डॉ. प्रमोद गोकुळ पाटील
- 'विजन' उपन्यास में व्यक्त नारी विमर्श १०६
  प्रा. डॉ. पूनम त्रिवेदी
- 'गुनाह बेगुनाह' उपन्यास में अभिव्यक्त नारी संघर्ष १०८
  प्रा. डॉ. रविंद्र आर. खरे
- "सुरेन्द्र वर्मा के उपन्यासों में नारी चेतना" ('दो मुर्दो के लिए गुलदस्ता' एवं 'मुझे चाँद चाहिए' के विशेष संदर्भ में) १११
  डॉ. संजय प्रल्हाद महाजन
- गोविन्द मिश्र के उपन्यासों में चित्रित नारी विमर्श ११३
  प्रा. डॉ. विजय एकनाथ सोनजे
- जीवन की त्रासदी को दर्शाता उपन्यास – 'बेसबब' ११६
  डॉ. अशफ़ाक़ इब्राहिम सिकलगर
- उच्च शिक्षित कामयाब बच्चों के वृध्द माता–पिताओं के मन में 'डर' और 'भय' को व्यक्त करने वाला उपन्यास–"दौड" ११८
  डॉ. गोकुलदास सोनु ठाकरे
- "२१ वीं शताब्दी का हिन्दी उपन्यास साहित्य" १२०
  डॉ. विजय जी. गुरव
- कठगुलाब उपन्यास में नारी चित्रण (मृदूला गर्ग) १२३
  प्रा. शरद शेलार
- २१ वी सदी के महिला उपन्यासों में नारी चेतना १२५
  श्री. आमलपुरे सूर्यकांत विश्वनाथ
- 'मरंग गोडा नीलकंठ हुआ' उपन्यास में आदिवासी विमर्श १२७
  डॉ. निंबा लोटन वाल्हे
- नारी वेदना का दस्तावेज 'तिनका तिनके पास' १२८
  डॉ. ईश्वर ठाकुर
- "टूटा हुआ इंद्रधनुष" उपन्यास में पारिवारिक विघटन १३०
  डॉ. आनंद गुलाबराव खरात
- मैत्रेय पुष्पा का उपन्यास गुनाह–बेगुनाह में चित्रित नारी संघर्ष १३३
  प्रा. तुलसा मोची

18-19

स्वातंत्र्योत्तर मराठी साहित्य आणि स्त्री
स्वातंत्र्योत्तर हिंदी साहित्य और नारी
Post-Independence Indian English Literature and Women

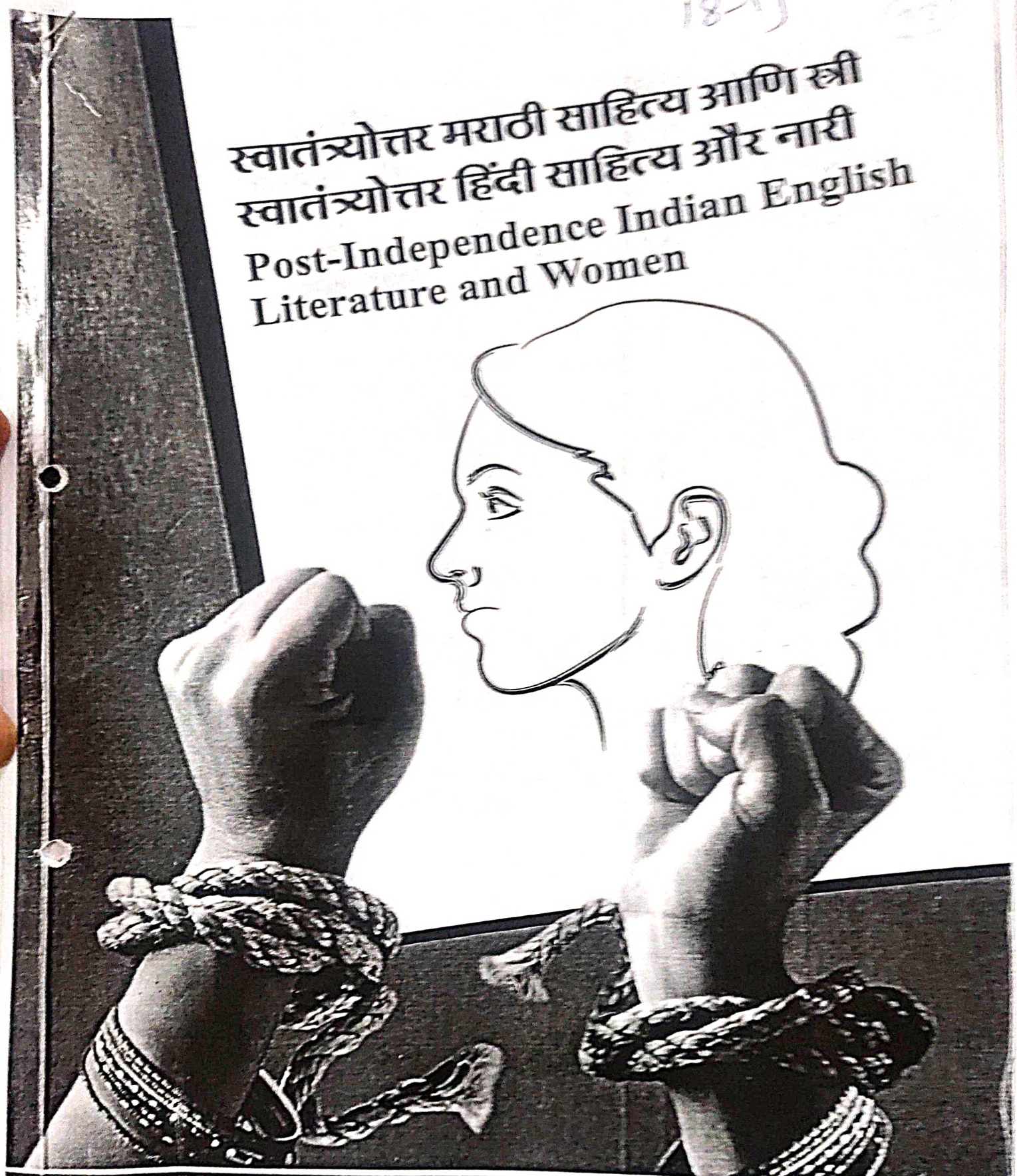

Smt. P. K. Kotecha Mahila Mahavidyalaya
Shanti Nagar, Bhusawal

- ममता कालिया के कथा-साहित्य में नारी-विमर्श .....
  - डॉ. सुनीति एस. आचार्य, शिरपुर
- रत्तिका के संघर्ष एवं अकेलेपन की कथा - सूरजमुखी अँधेरे के.....
  - डॉ. सुनीता नारायणराव कावळे, चालीसगाँव
- स्वातंत्र्योत्तर हिंदी कहानी में नारी .....
  - डॉ. सविता काशिराम तायडे, मुंबई
- स्वातंत्र्योत्तर हिंदी साहित्य और नारी .....
  - डॉ. शेख शहेनाज अहेमद, नांदेड
- स्वातंत्र्योत्तर हिंदी कहानी 'यही सच है' में नारी चित्रण .....
  - डॉ. शेखर घुंगरवार पी., नांदेड
- समकालीन महिला कथा साहित्य और नारी .....
  - प्रा. निलीमा दामोदर इंगळे, यावल
- स्वातंत्र्योत्तर हिंदी कहानी - साहित्य में नारी.....
  - प्रा. दिलीप पंडीत पाटील, चोपडा
- मधु काँकरिया की कहानियों में नारी-चित्रण.....
  - प्रा. प्रल्हाद विजयसिंग पावरा, यावल
- रामदरश मिश्रजी के उपन्यास में नारी .....
  - डॉ. यादव नामदेव मोरे, भोकरदन
- स्वातंत्र्योत्तर हिंदी कहानियों में नारी.....
  - प्रा. राजेश मेरसिंग खर्डे, जलगाँव
- हिन्दी उपन्यासों में नारी - 'आपका बंटी' और 'स्वामी' उपन्यासों के विशेष संदर्भ में .....
  - डॉ. अनिता भिमराव काकडे, भोकरदन
- स्वातंत्र्योत्तर नारी के विविध रूपों का चरित्रांकन : शशिप्रभा शास्त्री की कहानियाँ .....
  - डॉ. मनोज नामदेव पाटील, जलगाँव
- सुनीता जैन के उपन्यासों में नारी व्यथा.....
  - डॉ. गिरीष एस. कोळी, भुसावळ
- स्वातंत्र्योत्तर हिंदी ग़ज़लकारों की ग़ज़लों में नारी समस्याओं पर चिंतन.....
  - डॉ. दिपक विश्वासराव पाटील, धुले
- ज्ञानप्रकाश विवेक की कहानियों में नारी विषयक दृष्टि .....
  - डॉ. देवेंद्र नारायण बोंडे, जलगाँव
- स्वातंत्र्योत्तर हिंदी महिला उपन्यासकार और नारी चेतना .....
  - प्रा. डॉ. नितीन रंगनाथ गायकवाड, वैजापूर
- रूक्मिणी के संघर्ष एवं सक्षमीकरण की कथा : रेत .....
  - प्रा. लक्ष्मी मधुकर तायडे, भुसावल
- प्रवासी साहित्य में नारी .....
  - अनुपमा तिवारी, विशाखापट्टणम

ISBN : 978-97-87129-3

मधु काँकरिया की कहानियों में नारी-चित्रण

- प्रा. प्रल्हाद विजयसिंग पावरा
सहायक प्राध्यापक, हिंदी विभाग
कला, वाणिज्य एवं विज्ञान महाविद्यालय, यावल, जि. जलगाँव

बीसवीं शताब्दी के अंतिम दशक में महिला लेखन अत्यंत तीव्रता से उभरकर सामने आया। विशेषकर हिंदी कथा-साहित्य में महिलाओं को केंद्र में रखकर कई उपन्यास एवं कहानियाँ लिखी गईं। जिनके माध्यम से नारी-जीवन के विविध पक्षों पर प्रकाश डालने का प्रयास किया गया। नारी पर होनेवाले अन्याय-अत्याचार, शारीरिक और मानसिक शोषण, अस्तित्त्व बोध, आर्थिक स्वावलंबन, समानता का अधिकार, दहेज की समस्या आदि तमाम बातों का चित्रण हिंदी कथा-साहित्य में किया गया।

इक्कीसवीं सदी के प्रारंभ में स्त्रियों के विभिन्न प्रश्नों पर हिंदी कथा साहित्य में महिला लेखिकाओं ने नए सिरे से विचार-विमर्श प्रारंभ किया हैं। उन्होंने नारी जीवन से संबंधित सामाजिक, सांस्कृतिक, आर्थिक, धार्मिक, मनोवैज्ञानिक आदि आयामों को दृष्टि में रखकर अनुपम साहित्य लेखन उपन्यासों एवं कहानियों के माध्यम से किया है। इन महिला लेखिकाओं में मन्नु भंडारी, मालती जोशी, प्रभा खेतान, उषा प्रियंवदा, ममता कालिया, शिवानी, मेहरून्निसा परवेज, मृदुला गर्ग, कृष्णा सोबती, मैत्रेयी पुष्पा, सूर्यबाला, सुनीता जैन, राजी सेठ इन लेखिकाओं के साथ ही मधु काँकरिया का लेखन अपना महत्वपूर्ण स्थान रखता हैं। सूर्यबाला के अनुसार - अनुभव यही कहता है कि लेखिकाओं का क्षेत्र अधिकतर घर और नारी मन रहा है जबकि पुरूष लेखन का घर बाहर दोनों। लेकिन हम इस क्षति की पूर्ति भी तो कर लेती हैं। नारी मन की अथाह गहराइयों में पैठकर इतना तो मैं दावे के साथ कह सकती हूँ कि नारी के अंदर इतने गूढ, तिलस्म, गुफाएँ और प्राचीर हैं कि इन्हें भेद पाना आसान नहीं, जिनको जितनी सत्यता और ईमानदारी से भेद सकती है - पुरूष नहीं।[1]

मधु काँकरिया ने अपने कथा साहित्य में अपनी अनुभूतियों को बेबाक तरीके से अभिव्यक्त किया हैं। उन्होंने कथा-साहित्य में सदियों से चली आ रही दहेज प्रथा, बालविवाह, विधवा जीवन, वेश्या जीवन आदि विभिन्न पहलुओं का चित्रण किया हैं। इन्हीं समस्याओं का चित्रण मधु काँकरिया की कहानी चूहे को चूहा ही रहने दो, एक रूकी हुई स्त्री, दाखिला, आसमान कितनी दूर, कुल्ला आदि में नारी चित्रण दिखाई देता है। प्राचीन काल की नारी की तुलना में आज की आधुनिक नारी काँकरिया की कहानियों में विद्रोह करती हुई दिखाई देती हैं।

मधु काँकरियाँ के कुल तीन कहानी-संग्रह प्रकाशित हो चुके है। इनमें पहला कहानी-संग्रह भरी दोपहरी के अँधेरे में चूहे को चूहा ही रहने दो कहानी में कहानी की नायिका युवती अपने पति से प्रतिशोध लेना चाहती है कि, वह पति की पतिव्रता पत्नी नहीं रहीं। अपने मन की भडास निकालना चाहती है। क्योंकि पति ने उस पर कई बंधन डाल रखे थे। किसी हमउम्र इन्सान से बात तक करने को वह तरस जाती थी। इन्हीं परिस्थितियों के कारण कहानी की युवती अपने पति से बगावत करती है। कहानी में स्वयं युवती कहती है कि, इससे आगे बढ़ना मेरे एजेण्डा में नहीं था। आज की रात मेरे प्रतिशोध की रात थी।[2]

कहानी की नायिका दूसरे युवक को आमंत्रित कर जब चरमोत्कर्ष के क्षणों में खुद को उस ऐंद्रिय जाल में मुक्त कर लेती है तब युवती का प्रतिशोध कहीं न कहीं उसे आत्मसम्मान लौटाता हैं।

इस कहानी में मधु काँकरिया ने एक स्त्री की आंतरिक पीडा को बडी ही सजीवता से चित्रित किया है। उसके अंतर्द्वन्द्व का यह चित्रण शायद ही पहले कभी हुआ हो। पति के दबाव में जीती स्त्री का एक उन्मुक्त कदम। संवेदनशील मन को झकझोर देनेवाली यह कहानी हैं। यह कहानी एक नारी के मन का ज्वलंत चित्रण हैं।

मधु काँकरिया का दूसरा कहानी संग्रह बीतते हुए में एक रूकी हुई स्त्री कहानी में नायिका मानसी प्रेम में पागल एक ऐसी लडकी है, जो सालों अपने प्रेम को पाने के इंतजार में गुजार देती हैं। मेडिकल की पढाई करते-करते मानसी और सरबजीत प्रेमी-प्रेमिका बन जाते हैं। मानसी

ISBN : 978-97-87129-35-1

लहार, प्रतिभासंपन्न, उच्चशिक्षित होने के बावजूद प्रेम में सबकुछ समर्पित कर देती हैं। अपने प्रेमी के लिए मर मिटने को तैयार होकर अपना करियर तक दाँव पर लगा देती है। इसके विपरित सरबजीत अपने जीवन में करियर को महत्त्व देता है। इसलिए सरबजीत मानसी को छोड ऑल इंडिया मेडिकल इन्स्टिटयूट दिल्ली चला जाता हैं। इसके संदर्भ में मधु कहानी में लिखती है कि, यहाँ स्त्रियाँ बलात्कार की उतनी नहीं जितनी धोखे का शिकार होती है।[३]

मानसी सरबजीत से धोखा खाने के बाद भी अपने प्रेमी की राह देखती है। इस प्रकार आखिर तक मानसी सरबजीत के प्रेम के लिए तडपती हैं।

इस कहानी में मानसी अपने सर्वस्व को हासिल करने के लिए एक रूकी हुई स्त्री जीवन के कितने ही अंतराल के बाद भी उस व्यक्ति के लिए रूकी हैं। क्या सचमुच उसके जीवन में भी बहाव आयेगा यह सोचने पर मजबूर करनेवाली की यह कहानी नारी के संवेदनशील मन का चित्रण करती हैं।

इसी कहानी संग्रह की कहानी दाखिला में सुकीर्ति नामक युवती की व्यथा का चित्रण हैं। सुकीर्ति की व्यथा यह है कि उसका पति उसे छोडकर चला गया है। वह अपने बेटे विक्रम को अच्छे स्कूल में दाखिला दिलाना चाहती हैं। अपने बेटे के लिए तडप़ती माँ अपने भाई को ही पति बनाकर स्कूल में ले जाती हैं। किन्तु अपने बेटे को लाख सिखाने के बाद भी बेटा उसे पापा की जगह मामा कहकर पुकारता है। और सारा मामला बिगड जाता है। सुकीर्ति सोचती है कि उसके इतने होशियार-होनहार, कर्तव्यदक्ष बेटे को केवल उसकी वजह से स्कूल में दाखिला नहीं मिला तो वह अपने आपको कभी माफ नहीं कर पायेगी। कॉन्वेंट स्कूलों में दाखिले के वक्त माता-पिता दोनों का होना जरूरी होने के कारण दो-तीन बार उसका प्रयत्न असफल हो जाता हैं। इन सभी परिस्थितियों को देखता विक्रम अपनी माँ से कहता है कि, इस बार तुम गडबड नहीं करना। इंटरव्यू रूम में घुसते ही कह देना फादर को पापा हमारे साथ नहीं रहतें, नहीं तो पिछले इंटरव्यू की तरह इस बार भी मेरा दाखिला नहीं हो पायेगा।[४]

सुकीर्ति कहानी की नायिका की व्यथा अन्य नारियों से भिन्न हैं। लेखिका ने इस कहानी में परित्यक्ता नारी की समस्या का चित्रण किया है। एक परिवार, सुखी परिवार जीवन में कितना मायने रखता है कि बेटे को स्कूल में दाखिला दिलवाने के लिए उसे झूठ तक का सहारा लेना पडता है। अकेली स्त्री का जीवन बडा ही कठीण और संघर्ष से भरा होता हैं।

इसी कहानी-संग्रह की कहानी आसमान कितनी दूर में मंदा नामक स्त्री की छोटी-सी ख्वाहिश का चित्रण हैं। शादी से पहले ही सुहागरात का सपना सँजोए मंदा जब भैरोसिंग के घर आती है तो उसकी ख्वाहिश यही है कि सुहागरात के लिए एक पलंग खरीदूँ। लेकिन उसका यह सपना अधुरा रह जाता हैं। वह अपने पारिवारिक समस्याओं में इतनी उलझ जाती है कि अपने बेटे और बेटियों की शादी तक करा देती हैं। मंदा की बडी बेटी मंगला द्वारा यह सपना पूरा होने ही जा रहा था कि, बेटी की सौगात स्वीकार करना मंदा के पति भैरोसिंग की संस्कृति में नहीं था। किन्तु बेटी के आग्रह खातिर उन्होंने पलंग तो रख लिया, पर मंदा के लिए नहीं पुत्रवधू के लिए जिसपर मंदा एक-बार लेटने की ख्वाहिश रखती हैं। इसी ख्वाहिश के कारण जब वह पलंग पर लेटती है तब उसे एहसास होता है कि, कितना अपूर्व लग रहा था... जमीन से तीन फिट ऊँचा उठकर सोना। शरीर का अंग-अंग जैसे इस अद्‌भुत अनुभूति से अभिभूत था। विश्वास ही नहीं हा रहा था कि सचमुच वह ही सोई है पलंग पर। इसी एक पल के लिए जाने कितने स्वप्न देखे थे उसने।[५]

मंदा के द्वारा कहानी में मधु काँकरिया ने नारी के संवेदनशील रूप को चित्रित किया हैं। लेखिका ने इस कहानी में प्रस्तुत किया है कि, एक सामान्य किशोरी का सामान्य सपना उम्र के पडाव तक पूर्ण नहीं होता। परिवार के भरण-पोषण, कल्याण में वह अपने आपको ढाल देती है। इसका सजीव चित्रण हुआ हैं।

मधु काँकरिया का तीसरा कहानी-संग्रह और अंत में इशु है। इस संग्रह की कहानी कुल्ला में नारी का चित्रण व्यक्त हुआ है। इसमें नायिका प्रमिला को पति द्वारा हीनता से भरा बर्ताव मिलता है। दाम्पत्य जीवन में जहाँ पति-पत्नी दोनों एक-दूसरे के जीवन के रथ के पहिए होते हैं। प्रमिला पति के प्रेम में अपना सर्वस्व लुटा देने को तैयार। परंतु नयी ब्याहता पत्नी के साथ उसका पति उसके साथ आक्रोशपूर्ण व्यवहार करता हैं। प्रमिला पति का दिल जीतने के लिए बडे.चाव से पति के लिए रसोई में कुछ पन्ना ही रही थी कि उसकी पीठ पर पीछे से टूथपेस्ट के झाग का कुल्ला पति के ही द्वारा मादा जाता है। जूठे कुल्ले से प्रमिला खौल उठती हैं। अपमान से थरथराई वह पति पर बरस पडती है। प्रमिता सोचती है कि, इशश... किस कूडेदान की अर्चना करती

International Multilingual Research Journal

Vidyawarta®

MAH/MUL/03051/2012
ISSN-2319 9318

Special Issue

17-18

श्री शिवाजी विद्या प्रसारक संस्था का

भाऊसाहेब ना.स.पाटील साहित्य एवं मुल्ला फिदा अली मुल्ला अब्दुल अली वाणिज्य महाविद्यालय, देवपुर, धुले (महाराष्ट्र)

स्नातकोत्तर हिंदी विभाग

एवं

उत्तर महाराष्ट्र हिंदी प्राध्यापक परिषद

के संयुक्त तत्वावधान में आयोजित

वार्षिक अधिवेशन एवं राष्ट्रीय हिंदी संगोष्ठी

'इक्कीसवीं सदी का हिंदी कथा-साहित्य : विविध आयाम'

रविवार, ४ फरवरी २०१८

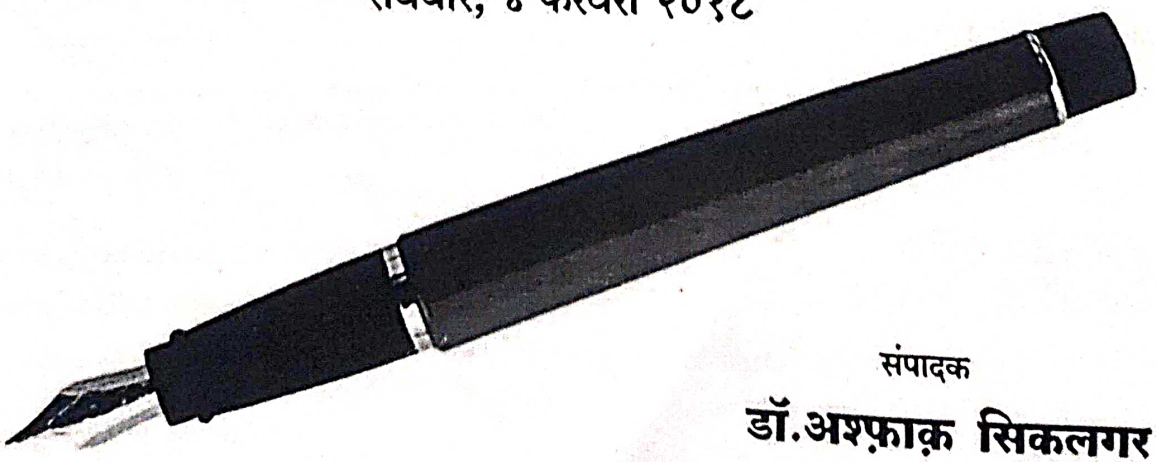

संपादक

डॉ.अश्फ़ाक़ सिकलगर

54) करुणा उपन्यास में चित्रित दलित चेतना || 173
इबरार खान

55) एक औरत : तीन बटा चार' कहानी संग्रह में चित्रित भौतिकता का यथार्थवादी चित्रण || 177
प्रा. संजय प्रल्हाद महाजन

56) काला पहाड़ उपन्यास में जनजातिय जीवन || 180
डॉ. मनोहर हिलाल पाटील

57) जहाँ जिन्दगी कैद है में मानवीय मूल्यों का विघटन || 183
प्रा.डॉ. कल्पना राजेंद्र पाटील

58) समयातीत गाथाएँ स्त्रियों की - मृणाल पांडे || 185
डॉ. राजेंद्र गणपत पाटील

59) आदिवासी कंजर समाज की नारी का जीवन्त दस्तावेज - रेत || 187
प्रा. शेख जाकीर एस.

60) अनामिका के कहानियों में चित्रित नारी || 190
प्रा. प्रल्हाद विजयसिंग पावरा

61) मृदुला गर्ग के मिलजुल मन उपन्यास में नारी चित्रण || 194
प्रा.डॉ.वनिता त्र्यंबक पवार

62) "ग्लोबल गाँव के देवता उपन्यास का मूल्यबोध" || 199
डॉ. अशोक एम. पवार

63) मानवीय संदर्भो को तलाशता यथार्थ — 'मुर्दहिया' || 202
प्रा.दिलीप पी.पाटील,जि.जलगांव

64) ``सुरजपाल चौहाण कृत `तिरस्कृत` में दलित चेतना`` || 204
प्रा. विष्णु जी. राठोड

65) `मोहनदास` कहानी में चिंतन के विविध आयाम || 206
प्रा. रविंद्र रामदास खरे

66) शिवानी की कहानियों में चित्रित सामाजिक समस्याएँ || 209
प्रा. निंबा लोटन वाल्हे

67) मार्च, माँ और साकुरा कहानी संग्रह के संदर्भ में || 211
तायडे राजाराम बाबुराव

https://sites.google.com/site/vidyawartajournal http://www.vidyawartajournal.blogspot.com

भी आज मॉडर्न और सभ्य समाज की औरतें जो कुछ नहीं पा सकती उसे एक खिलावड़ी रूक्मिणी पा लेती हैं। दांवपेंच, छल-प्रपंच के साथ अपनी देह को धरमपूरा सीट के चुनाव के लिए हथियार बनाकर जिस चतुराई के साथ वह चुनाव जीतती है और उपमंत्री पद की शपथ लेती है, वह विस्मयकारी है।[१०]

अतः भगवानदास मोरवाल जी का यह उपन्यास नारी अस्मिता और कंजरजाति के अस्तित्व को बचाएं रखने का प्रयास करता हैं। यह उपन्यास कंजर जाति की आस्था धार्मिक विश्वास, समाज, संस्कृति का आईना हैं। वास्तव में यह अनुपम हैं। इसमें कंजर जनजाति का इतिहास रीति-रिवाज और उनकी सामाजिक जीवन आदि का प्रामाणिक चित्रण हुआ है। जो निश्चित रूप से प्रशंनीय हैं।

सन्दर्भ ग्रन्थ :-

१) रेत - भगवानदास मोरवाल - पृष्ठ २२
२) पूर्ववत - पृष्ठ ५५
३) पूर्ववत - पृष्ठ ५५
४) पूर्ववत - पृष्ठ १४४
५) पूर्ववत - पृष्ठ १६३
६) पूर्ववत - पृष्ठ १२१
७) पूर्ववत - पृष्ठ १८२
८) पूर्ववत - पृष्ठ ११२
९) पूर्ववत - पृष्ठ १११
१०) समीक्षा संपा. गोपालराय अप्रैल-जून २००८, पृष्ठ १५
११) उपन्यासकार भगवानदास मोरवाल - डॉ. मधु खराटे
१२) आदिवासी केन्द्रित हिन्दी उपन्यास - डॉ. प्रमोद चौधरी

❑❑❑

60

अनामिका के कहानियों में चित्रित नारी

प्रा. प्रल्हाद विजयसिंग पावरा
हिंदी विभाग,
कला, विज्ञान एवं वाणिज्य महाविद्यालय, यावल, जि. जलगाँव

समाज की गतिशीलता में स्त्री-पुरूष की संयुक्त और महत्वपूर्ण भूमिका होती है। कहा जाता है यह दोनों परिवाररूपी रथ के पहिए है। इनमें से किसी एक की गति शिथिल होने का तात्पर्य यह है दोनों में विरोधाभास की स्थिति आ गई है। इसलिए स्त्री और पुरुष दोनों एक-दूसरे को पूरक है। आचार्य रामचंद्र वर्मा ने नारी के स्वरूप को स्पष्ट करते हुए मानक हिंदी कोश में अपना विचार इस प्रकार व्यक्त किया है, ``विशेषतः वह स्त्री जिसमें लज्जा, सेवा, त्याग आदि गुणों की प्रधानता हो वह नारी है।``[१] अनामिका के उपन्यास `विल्लू शेक्सपियर : द पोस्ट बस्तर` में मान्यता मैड़म के माध्यम से पारिवारिक स्थिति का चित्रण किया है। मान्यता मैड़म के बार में उदाहरण द्रष्टव्य हैं,``घरेलू मुकदमें, मेरी बदनामियाँ, राजनैतिक गिरफ्तारियाँ, अनिश्चिताएँ, गलतफहमियाँ और लम्बी बिमारियाँ. ....! घरेलू रगड़ो-झगडों और संकटों-तनावों की ये ही पेटेंट सूची हैं जिस पर टिक-टिक करता जीवन चुक जाता हैं।``[२] मान्यता मॅडम इन सारी समस्याओं के बावजूद भी अपने जीवन में संघर्षशील है। इस प्रकार अनामिक ने मान्यता मॅडम के जीवन में आई समस्याओं का चित्रण प्रस्तुत किया है।

समाज में प्रचलित प्रथाओं के अनुसार, नारी घर में, परिवार में और समाज में उपेक्षित थी। घर में सास-ससुर तथा पति की इच्छा के अनुसार ही रहती है। वह आर्थिक दृष्टि से परतंत्र और समाज में प्रताडित है। नारी को प्रेम करने का अधिकार नहीं था। नारी केवल उपभोग का साधन मानी जाती थी । पुरूषों की वासना का शिकार हो चुकी थी। इस सम्बन्ध में अरविंद जैन लिखते है ``सामंती व्यवस्था में नारी एक वस्तु है, संपत्ति है, संभोग और संतान की इच्छा पूरी करने वाली मादा है।``[३] परिवार में पितृसत्ता वर्चस्व के कारण नारी को घर में दुय्यम स्थान दिया जाता हैं। ऑफिस से आने पर स्त्री को पति के आज्ञा का पालन करना पड़ता हैं। अगर इसमें गलती होती है तो,

गालियों की बौछार सहनी पड़ती हैं। इस बारे में शीरीन कहती हैं, ``जैसे की हर घर में दूध और सब्जी का उठाना होता हैं न कि रोज इतना आना ही हैं, हमारे घर अब्बू की ढाई थोड़ी गोलाबारी, ढेर-सा कुआत रोज का उठाना था ! बाकी अलग से भी गाली-गलोज, डॉट-मार-मलामत ओर कोर्ट मार्शल के हजार प्रसंग !``[४] पुरूष अपने अधिकार का इस्तेमाल करता हैं। उसके मन के विरूध्द होनेवाली बातों पर अपनी भड़ास निकालता हैं। इतना ही नहीं बल्कि पशुता का व्यवहार करता हैं। शीरीन इस बारे में तारा से कहती है कि, ``अम्मी दरअसल अब्बू का बॉक्सिंग बैग हैं``[५] स्त्री को समाज में उपेक्षित पात्र के रूप में देखा गया है। यह किस्सा सिर्फ शीरीन के घर का ही नहीं बल्कि कई घरों का हैं। घर में स्त्री को मार-पीट, गाली-गलोज का शिकार होना पड़ता हैं। यह स्थिति सिर्फ घर में रहनेवाली स्त्रियों की ही नहीं बल्कि नौकरी करनेवाली स्त्री को भी शक की नजर से देखा जाता हैं। ऐसे घरो में किसी छुट्टी के दिन किसी व्यक्ति का फोन आता हैं तो वह उसे शक की नजर से देखता जाता हैं। इस बारें में शेफालिका कहती हैं कि, `हमारा संडे फंडे न होकर गनडें हो जाता। प्याले में तुफान उठते ही रहते।``[६] स्त्री को जीवन में संघर्ष करना पड़ता हैं। परिवार के किसी भी सदस्य की गलती होने से सारी मुसीबत माँ पर ही आती हैं। घर में पुरूष अपने अधिकारों का इस्तेमाल करके, घर से बाहर निकल जाने को कहता है। घर में स्त्री की औकात बता दी जाती हैं। शीरीन के पिताजी उसकी माँ को इसी तरह कहते हैं कि,``ये देखो- सफाई की है, जूठन की ट्रे से सड़ा पड़ा हैं चीनी का डब्बा !.... और इस कपड़े के वार्डरोब पर खरोंच कैसे पड़ी... देखो, अभी उठके देखो- और सुनों, ऐसे किराएदारों की तरह बेदिली से घर में रहना हैं तो अपना रहने का इतंजाम कहीं ओर करो !चली जाओं ``[७] लेकिन स्त्री के पास कोई दूसरा पर्याय नहीं होता। अगर वह प्रयास भी करेगी तो अपने भाई को कहती है और भाई बुध्द की तरह अपने वाक्य कह देते हैं। इसका उदाहरण परिलक्षित होता हैं। जैसे, वह कहता है, कि ``हिम्मत नहीं हारो.... जैसे गजराज रणक्षेत्र में हर ओर से तीर आता हूआ देखकर भी लक्ष्य विमुख नहीं होता, तुम भी डटो, अपनी राह नहीं छोडों, तुमसे बड़ा सवाल स्पंदन का हैं तुम्हे दूसरा पति-प्रेमी मिल जाएगा, उसे दूसरा पिता कहाँ मिलेगा ?``[८] क्या स्त्री का अस्तित्व सिर्फ दूसरों के लिए हैं ? उसका खुद का जीवन नहीं होता? क्या उसकी अस्मिता, सम्मान स्त्री के लिए नहीं है ? इसका उत्तर अनामिका ने अवंतिका देवी के माध्यम से देने का सफल प्रयास किया हैं। अवंतिका देवी पति व्दारा घर से निकाली जाती है। वह सीपीएम की सांसद होती है। वह अपने अनुभव तारा को कहती है, कि ``और बेटा, एक तरह कॉल गर्ल औरत होती हैं-व्याहता गृहस्थिन भी। कॉलगर्ल को यह छूट होती हैं कि हर कॉल पर वह प्रस्तुत न हो, पर गृहस्थिन की क्या मजाल। आगे याद हैं मुझे, कभी-कभी उनका प्रंचड क्रोध शांत करने के लिए या झगडे के संक्षिप्त समाधान के लिए खुद भी देह बिछा दी मैंने, एक ब्याहता के रूप में ही देह का उपयोग एक `ट्रेप` की तरह किया। जब कोई उपाय नहीं सूझा तो घर की `शांति` के लिए और अपने भी अज्ञात भयों से निजात पाने को एक `फंदे` की तरह देह बिछाई मैंने। जो बात सुनने को तैयार हो ही नहीं, उस पति के आगे एक `शॉर्टकट` की तरह अपनी देह बिछा देने को मजबूर पत्नियों की व्यथा-कथा किसी कॉलगर्ल से कम नहीं होती उस क्षण।``[९] घर में स्त्री शांति के लिए देह का इस्तेमाल करती है। इस प्रकार स्त्री जीवन में संघर्ष के साथ अपना मार्ग खोजने का प्रयास करती है।

अनामिका एक नारी के मन की करूण गाथा प्रस्तुत करती हैं। समाज में चलने वाली कुप्रवृत्तियों में घरेलु हिंसा भी महत्वपूर्ण हैं। घर के चार दीवारों के बीच चलनेवाली इन घटनाओं पर किसी का ध्यान नहीं जाता। स्त्री को पति रात को मार-पीटकर अपना वर्चस्व दिखाता है। इस तरह स्त्री शोषण का शिकार होती है। स्त्री अपने विचारों, भावानाओं का दमन करती है। दूसरे दिन अपने-अपने काम करती है। इस बारे में अनामिका लिखती है, ``पिट-पिटकर औरत क्या करेगी ? कुछ देर चिखेगी, फिर रोएगी-रुठेगी और उसके बाद धीरे-धीरे बिना मनाए मानकर काम-धाम में व्यवस्थित हो लेगी, पहले घर में मुस्कुराएगी और उसके बाद बाहर जाकर भी लगेगी हंसने, सभा में, मंच पर, हर जगह नजर आएगी औरत की हंसी, और कुछ नजर नहीं आएगी। क्या हंसी ही नये जमाने का घुघट हैं।``[१०] वह भी क्या कर सकती हैं। किसी के आगे वह नहीं बता सकती अगर ऐसा बता दिया तो लोग एक बुलाने पर दस आ जाते हैं। वह स्त्री की पीड़ा कम करने नहीं बल्कि अपनी भूख मिटाने का एक साधन मात्र के रूप में देखते हैं। किसी बेसहारा स्त्री को सिर्फ एक अच्छा मित्र चाहिए, पुरूष नहीं। इस संदर्भ में अनामिका लिखती है कि,``सर्वतोमुखी प्रेम का दावा ठोंकने वाले देह-लोलुप प्रेमी तो `तीन बुलावै, तेरहा आवै` की तरह थोक में राह-मिल जाते हैं मगर देह-निरपेक्ष कोई सच्चा दोस्त नहीं मिलता किसी अकेली स्त्री को।``[११] समाज में बेसहारा स्त्रियों के प्रति पुरुष कठोरता का व्यवहार करते है। उसे उपभोग का साधन मानते है।

स्त्री अपने दुख दूसरों के पास व्यक्त नहीं करती। मान्यता मैडम अपने पारिवारिक जीवन का रथ ढो रही थी लेकिन मान्यता मैडम और प्रो.आशिष बचपन से साथ में पढा-लिखा करते थे। ये दोनो शादी भी करने वाले थे, लेकिन प्रो. आशिष विदेश जाने के बाद उनका विवाह नहीं हो सका। लेकिन वह विदेश से लौटकर कहता है

कि, ``मैंने स्वयं को पूरा अर्पित कर रखा है, आपसे तो कुछ भी अपेक्षा नहीं की, पढ़िए-लिखिए, अपने दायित्व पूरा करीए, बस इतनी छूट दीजिए की हर दिन एक बार दस मिनट का खातिर फोन कर लिया करूँ !``[१३] समाज में ऐसे रिश्तों को क्या नाम देना चाहिए ? क्या एक स्त्री और पुरुष के बीच मित्रता नहीं हो सकती ? क्या वह सच्चा मित्र नहीं हो सकता ? ऐसे कई प्रश्न स्त्री के मन में उठते है। मान्यता मैड़म कहती है, ``मेरे स्वभाव में यही खराबी है कि स्नेह को लोग प्रेम समझ ा लेते हैं। और तरह-तरह की उम्मीदें लगते है करने जिनसे मेरा मन घबड़ा जाता हैं।.... अब इसे कैसे निबटूँ !``[१३] अनामिका ने मान्यता मैड़म के माध्यम से स्त्री की मनोदशा का चित्रण किया है।

प्रेम संसार को सरस बनाकर गतिशील रखने का मुख्य आधार है। प्रेम पर लोभ, द्वेष और वासना का उभरता रंग उसे विकृत करता जा रहा है। पूर्व समय में `प्रेमिका` शब्द पूर्ण सम्मान से लिया जाता था। क्योंकि दोनों पक्षों के प्रेम में सामायिक रंग, मान्यताओं को सम्मान, पारिवारिक सहजता और जीवन जीने का सहज मार्ग दिखाई देता था। लाल और रूनू दोनों प्रेम करते हैं। प्रेम के आवेग में उनके शारीरिक संबंध हो जाते हैं। जब शादी की बात आती है, तो लाल उसे अपने कर्तव्य की याद दिलाता हैं। लाल अन्य पुरुषों की तरह सपना समझकर भूला देना चाहता हैं। वह कहता है कि, ``तुम्हारी कोख में मेरा बीज तो है ही ! इसे ही उदात्त भाव से पालना या चाहो तो मुक्ति पाकर किसी अच्छे लड़के से ब्याह के लिए भी स्वंतत्र हो ! मेरी तरफ कोई बाधा नहीं देखते-देखते अपने नये घर-संसार में मुझे भूल जाओगी। समझना कि एक सपना देखा था..... ``[१४] क्या समाज में रहकर बिना विवाह के बच्चे को जन्म देना संभव है ? आज समाज में `प्रेम` शब्द विकृत हो गया है लेकिन अफजल जैसे भी पुरुष होते हैं जो रूनू को प्रेम करते है। लाला और रूनू दोनों के बीच आना नहीं चाहता था। लेकिन रूनू को कभी अकेला भी नहीं छोड़ा। लाल चले जाने के बाद अफजल ने दूसरी शादी भी नहीं की। अफजल ने कभी रूनू से कुछ नहीं चाहता लेकिन पिता की तरह रूनू की बेटी की जिम्मेदारी स्वयं संभालता है। अफजल कहता है कि,``रूनू छोटे बच्चों के स्कूल में पढ़ाती हैं। मेरी प्राविडेण्ड फण्ड के पैसे है हीं। मिला जुलाकर किसी तरह काम चल जाएगा।``[१५] अफजल रूनू से प्रेम करता था यह बात उसे कभी नहीं पता चलने दी। रूनू के देहांत के दिन ही अफजल ने आत्महत्या कर ली। समाज में ऐसे भी प्रेमी होते है, जो स्वयं के बारे में नहीं सोचते बल्कि अपने अतीत प्रेमी के प्रति अपना दायित्व निभाते हैं लेकिन टुन्नन जैसा व्यक्ति प्रेम को बता कर मीरा को अपने अस्मिता के प्रति जागरूक करता हैं। जब मीरा को अपने ससुरालवाले लोग तंग करते है, अपनी बीमार माँ से अंतिम समय मिलने नहीं जाने नहीं दिया जाता, तो टुन्नन कहता हैं कि, ``अन्याय सहना भी अन्याय ही है मीरा । तुम सारे बन्धनों को तोड़कर आ जाओं। मैं दुनिया की सारी खुशियों से तुम्हारा दामन भर दूँगा। रूनू मौसी भी हमारे साथ रहेंगी। जब दुनिया को हमारी परवाह नहीं तो हम दुनिया की परवाह क्यों करें ? हम अलग ही दुनिया क्यों नहीं बसाएँ ?``[१६] टुन्नन मीरा को अपने अधिकारों की याद दिलाने का प्रयास करता है। वह समाज के ऐसे रिश्तों को बोझ समझता है।

पति के पापाचार के विरूध्द खड़ी होती दीक्षा का दृढ निश्चय, उसका नन्ना के घर चली आती है। वे पारिवारिक जीवन की स्वार्थपूर्ण प्रवृत्ति से त्रस्त होकर कहती है, ``तूने ही ठीक किया, नन्ना कि पारिवारिक को जीवन की इकलौती केंद्रीय सच्चाई बनकर अपने पूरे हावी नहीं हो जाने दिया.... चार गज कपड़े से भी बदतर हो जाती है आदमी की जिन्दगी अगर कोई बड़ा सामाजिक उद्देश्य लेकर चला न जाए-बचपन में दर्जी के हाथ में रहती हैं, यौवन में शो-केस के हैंगरों में टंगी हुई और बुढापा आते-आते धूल-भरे बक्से में बंद-बंद लगती है, गुमसाइन महकने !``[१७] अनामिका ने स्त्री जीवन की सच्चाई को प्रस्तुत करने का प्रयास किया है।

नारी विवाह के कारण पति से जुड़ी होती है, परंतु कुछ परिस्थितियों में वह पति को छोड़कर किसी अन्य पुरूषों के प्रति आकृष्ट होती है। यह आकर्षण वासना की भूख मिटाने के लिए किया जाता है। फैनी पावर्स के पति को पागलपन के दौरे पड़ते है वह उसे नौकरों के सहारे छोड़कर चली आती हैं। अपने पति से उसे शारीरिक सुख नहीं मिलता हैं तो वह दूसरों के माध्यम से पूरा करती है ``.... इस तरह मैंने पूरा भारत देखा.... कई रजवाड़े में राही-राजा से लेकर फकीर तक-मेरे जितने प्रेमी हैं-उनसे मेरा सुख और दुःख-दोनों का साथ हैं।``[१८] फैनी पावर्स के माध्यम से अनामिका पाश्चात्य संस्कृति के स्त्री का चित्रण करती है। अनामिका फैनी पावर्स के माध्यम से पूरे विश्व में एक अलग विचार को प्रस्तुत करना चाहती हैं। उपन्यास में फैनी पावर्स ने इतने लोगों के साथ अपनी प्रणय क्रीडा की, लेकिन किसी का परिवार उजड़ने नहीं दिया। इस बारें में फैनी कहती है कि, ``इतना मैंने ध्यान रखा कि मेरे चलते किसी का घोंसला न उजडें ! उसको ही पास फटकने दिया जो मेरी तरह बिल्कुल निस्संग था।``[१९] लेकिन यह आकर्षण जब घनिष्ट होता है तब विवाह बाह्य दाम्पत्य भाव का स्वरूप धारण कर लेता है।

वेश्या समाज की लिए एक ज्वलंत समस्या है। वेश्या के मूल में हमारे समाज की आर्थिक स्थिति है। समाज में कोई भी स्त्री वेश्या व्यवसाय को अपनाने के लिए तैयार नहीं होती। इस संदर्भ में डॉ. रामेश्वर नारायण लिखते है, ``वेश्यावृत्ति का विकास सामाजिक

नैतिकता के अध:पतन का सूचक है। पाश्चात्य देशों में वेश्यावृत्ति उपेक्षित नहीं क्योंकि वहाँ यौनेच्छा पूर्ति की स्वतंत्रता है। भारतीय संदर्भ में अभी तक यह संभव नहीं है कि यौनभावना को स्वच्छंद छोड़ दिया जाए, इसलिए इस पर सामाजिक अंकुश के साथ-साथ सरकारी अंकुश भी है, किन्तु वेश्याओं के पक्ष में अगर विचार किया जाए तो यह निष्कर्ष निकलता है, कि वेश्यावृत्ति उनके लिए एक समस्या है क्योंकि यह वृत्ति अपनाने के लिए वेश्याएँ स्वच्छंद नहीं है।''[२०] अत: अपनी आजीविका चलाने के लिए उनकी मज़बूरी है। नारी इस जन्म में क्या किसी भी जन्म में लड़की बनने की चाहत नहीं करेगी। जो नारी वेश्या व्यवसाय में जुड़ी होती है, उसका घर, परिवार, बच्चे आदि की कामना करना मुश्किल है। नारीत्व के सभी गुण होने के बाद भी वह अपना खुद का परिवार नहीं कर सकती। समाज के भेड़ियो की कामवासना को उसी को मिटाना हैं। उसका पूरा जीवन इसी दलदल में व्यतीत हो जाता है। समाज इस वर्ग को उपेक्षित करने के बाद आम व्यक्ति जैसे इनका जीवन नहीं होता। समाज में ऐसे कोने में रखा है, कि कभी कोई भी प्रकाश उनकी और नहीं आएगा। साहित्यकार अपनी रचना में ऐसे ही वर्ग की बात साहित्य के माध्यम से समाज के सामने लाने का प्रयास करता है।

अनामिका द्वारा स्त्री के कोमल भावों के साथ-साथ उसके जीवन की कठिनाइयों को चित्रित करने का सफल प्रयास किया गया हैं। उनके पात्र हमें समाज में, मुहल्ले में, गाँव में कहीं भी देख सकते हैं। अनामिका के उपन्यासों में देह व्यापार करनेवाली नारी का चित्रण यथार्थ धरातल पर दृष्टिगत होता हैं। बचपन का एक उदाहरण तारा अपनी मां का चित्रण प्रस्तुत करती है, ``चलना कहाँ हैं ? चार-पाँच की ही रही होऊँगी तब, अम्मी को ऐसा ही करते देखा थी ! सों बातों में वक्त जाया नहीं करतीं, झट कहती हैं-`चलना कहाँ हैं ? जाने को जगह नहीं होती तो अक्सर मुझको ही खटिया के नीचे सुलाकर ऊपर वह आँधी-तुफान झेलती और फिर झट पल्लू से जाँघें पोंछती हुई, कहती-`चला आ बहार आ जा, बेटी, चलते हैं चौक पर, जलेबी खिला लाऊँ।''[२१] हमेशा साहित्यकार ऐसा अछूत और अंधेरा कोना समाज के सामने लाता है। बचनप में माँ को जीवन को देखकर तारा कॉलगर्ल बन जाती है। इस सम्बन्ध में अनामिका लिखती है,``अम्मा ने मिशनरी स्कूल में पढाया था। देखने में ठीक थी, इसलिए अक्सर विदेशी मेहमानों को सप्लाई होती ! और उमर कम थी, इसलिए मुझमें वात्सल्य के सूत्र भी ढूंढ लेते वे कभी-कभी ! मेरी उमर की अक्सर उनकी बेटियां होती जिनकी याद भी आती । एक साहब तो,खैर, इतना दयालू था कि प्यार-प्यार करने के बाद उसने मुझे बिस्कुट खरीद दिए और किताबें भी !उसका पता मैंने बहुत दिन संभाल कर रखा। ऐसी ने कहा था कि कभी कोई काम शुरू करना चाहें तो ढेर-सा पैसा भेजेगा।''[२२] वेश्या व्यापार करनेवाली स्त्रियों के पास अलग-अलग व्यक्ति ग्राहक बनकर आते हैं। जब कोई विवाहित अपनी पत्नी के साथ जो देती है वासना पूरी नहीं कर पाता वह भडास इन वेश्याओं के देह पर निकालता है। इस संदर्भ में तारा कहती है, कि ``अब अपने जीवन का रोना रोएगा, अब अपने फ्रश्ट्रेशन मुझ पर निकलेगा, अब अपनी फैंटेसी आजमाएगा.... कभी-कभी तो ऐसा लगता है कि मैं बस ऊर्जा बोर्ड हूँ और तरह-तरह की आत्माएँ मुझ पर उतरती हैं।..''[२३] समाज भूल जाता है कि यह भी एक स्त्री है। समाज में वेश्याओं को सिर्फ उपभोग का साधन माना जाता है। पुरुष धन के बल उसके मन के विरूध्द देह के साथ खेलता है। वेश्याओं के प्रति इतना पशुता का व्यवहार किया जाता हैं। अनामिका ने नारी मन का ऐसा कोई कोना अछूता नहीं छोड़ा जो किसी वेश्या के जीवन में ना घटा हो। किसी दिन अगर वहीं ग्राहक आने पर प्रतिरोध किया तो सिर्फ गालियों के बिना कुछ नहीं मिलता। वह महाक्रूर हँसी हँसकर बोलता है कि, ``तेरी औकात ही क्या हैं ? रंडी ? रंडी ही है न तू ? चुपचाप मेरा कहना मान !''[२४]

समाज में वेश्या व्यवसाय के कारण अनैतिक घटनाएँ कम होती हैं। स्त्री के शोषण में बलात्कार जैसी घटनाएँ दिखाई देती है। पुरुष अपनी वासना की हवस मिटाने के लिए वेश्याओं के पास जाता है। समाज में वेश्याओं के प्रति उदासीनता दिखाई देती हैं। पुरुष वेश्याओं को तुच्छ मानते है। अनामिका इस संदर्भ में लिखती है कि,``रण्डी-रणचण्डी- बचपन में एक सहेली के घर जाती थी तो चिढ़ाते थे उसके भाई..... उस समय तो मैं कटकर रह जाती थी, बहुत जल्द ही उसके घर आना-जाना छोड़ दिया.... पर आज कहीं मिले तो नज़रे मिलाकर जबाब दूँ- तुम्हारी माँ-बहने सुरक्षित है तो हमारे ही कारण ! मरद की हवस के बहुत रंग देख लिए ! सारी लल्लो-चप्पो एक ही नरक कुण्ड में जाकर गिरती हैं.... ''[२५] अनामिका के उपन्यास में वेश्याओ के जीवन का सत्य सामने लाने का प्रयास किया हैं। समाज में यह ऐसा कटा वर्ग है लेकिन इसके बिना समाज नहीं चलेगा।

निष्कर्षत: हम देख सकते है कि परिवार में पत्नी का प्रेमी अथवा पति की प्रेमिका समस्या की जड़ है। परिवार में नारी पति से भौतिक समृध्दि की अपेक्षा उससे एक आत्मीय भाव, प्रेम और विश्वास चाहती है। वह पुरूष के सहद्यता की प्यासी है। ससुरालवालों ने मीरा को घर से निकाल दिया। आस-पड़ोस मित्र-मण्डली कान्त से सीधे-मुँह बात नहीं करते। समाज में विवाहित पुरुष किसी विधवा स्त्री को घर में रखता है तो समाज उसे अनैतिक व्यवहार मानकर बाधा उत्पन्न करते है। ऐसे परिस्थिति में वह स्त्री समाज के सामने उपभोग

Impact Factor – 6.261 Special Issue - 131 Feb. 2019 ISSN – 2348-7143

INTERNATIONAL RESEARCH FELLOWS ASSOCIATION'S

RESEARCH JOURNEY

UGC Approved Journal

Multidisciplinary International E-research Journal

18-19

हिंदी साहित्य में विविध विमर्श

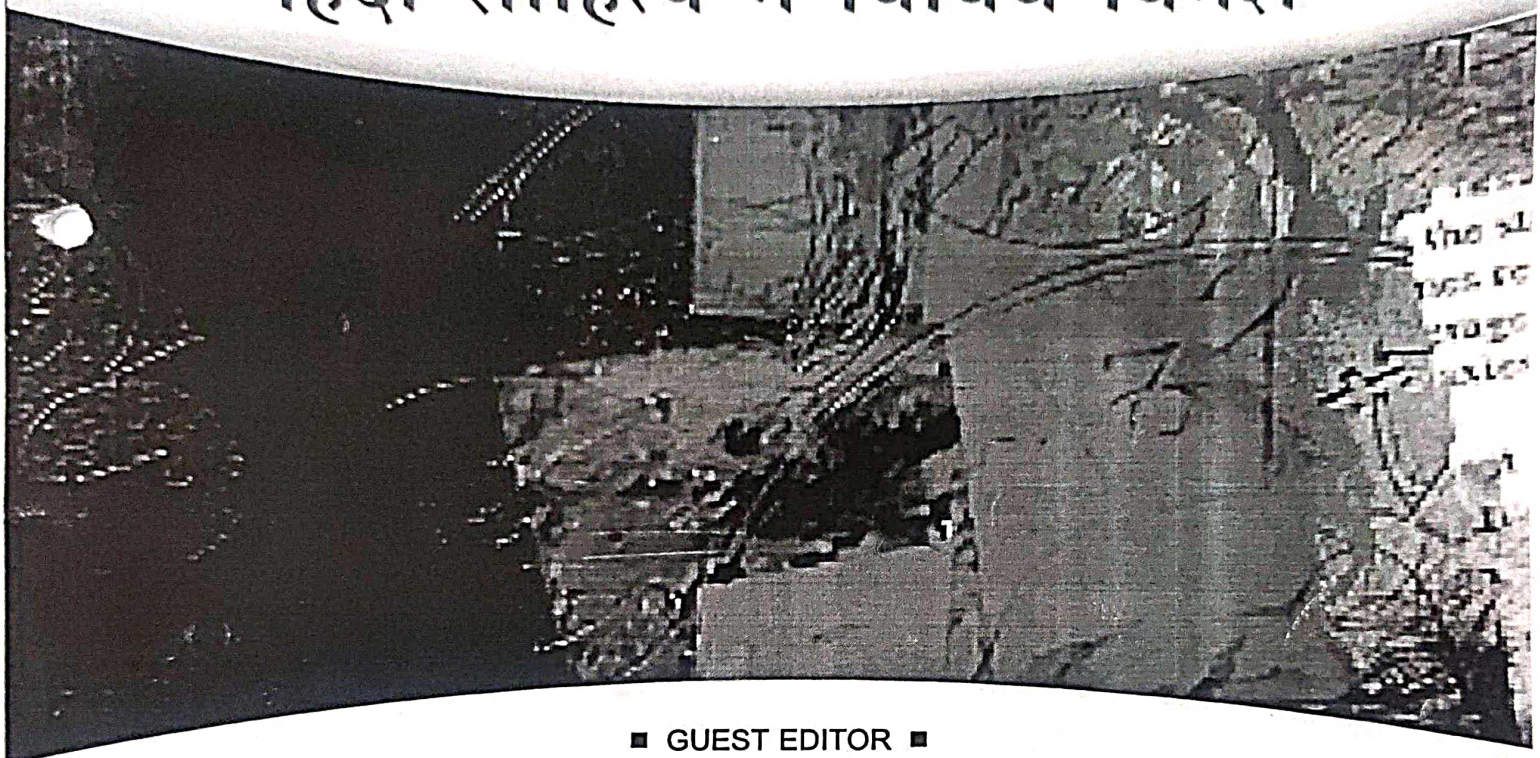

■ GUEST EDITOR ■
Principal Dr. P. R. Chaudhari

■ EXECUTIVE EDITOR ■
Dr. Vijay A. Sonje

■ ASSOCIATE EDITOR ■
Dr. Kalpana L. Patil
Dr. Ishwar P. Thakur
Dr. Satish D. Patil

■ CHIEF EDITOR ■
Mr. Dhanraj T. Dhangar

This Journal is indexed in :

- Scientific Journal Impact Factor (SJIF)
- Cosmoc Impact Factor (CIF)
- Global Impact Factor (GIF)
- Universal Impact Factor (UIF)
- International Impact Factor Services (IIFS)
- Indian Citation Index (ICI)
- Dictionary of Research Journal Index (DRJI)

For Details Visit To : www.researchjourney.net

SWATIDHAN PUBLICATIONS

४४	'त्यागपत्र' उपन्यास में स्त्री-विमर्श हबीब खान	१०० १०२
४५	नारी विमर्श और समकालीन महिला कथाकार देवेन्द्रसिंह ठाकुर	१०५
४६	विमर्शों के दौर में हिन्दी कविता (दलित, स्त्री, आदिवासी विमर्श के विशेष संदर्भ में) डॉ. गजानन सुरेश वानखेडे	१०९
४७	आदिम कला 'ललमनियाँ' कहानी में स्त्री विमर्श प्रा.डॉ. लता नामदेव पेंडलवाड	१११
४८	अंतिम दशक की हिंदी कविता में व्यक्त पारिवारिक विमर्श प्रा. अनिल बाबुलाल सूर्यवंशी	११४
४९	प्रभा खेतान के काव्य में चित्रित लैंगिक संवेदना डॉ. प्रल्हाद विजयसिंग पावरा	११८
५०	समकालीन हिंदी गजल के विविध आयाम प्रा.डॉ. मुकेश दामोदर गायकवाड 'मुकेशराजे'	१२१
५१	'सलाम आखिरी' उपन्यास में चित्रित वेश्या समस्या और समाधान प्रा. नटवर संपत तडवी	१२३
५२	आदिवासी भील्ल जनजाति का सामाजिक एवं सांस्कृतिक अध्ययन प्रा. अंजीर नथ्थू भील	१२५
५३	डॉ. सुरेंद्र विक्रम के साहित्य में बालमनोवैज्ञानिकता का चित्रण डॉ. अशफ़ाक़ इब्राहिम सिकलगर	१२७
५४	भगवानदास मोरवाल के उपन्यासों में स्त्री-विमर्श प्रा.डॉ. मनोहर हिलाल पाटील	१२९
५५	आदिवासियों के शोषण का चित्रण करता दस्तावेज- 'पोस्टर' प्रा.डॉ. मनोज महाजन	१३१
५६	२१ वी सदी में हिंदी महिला उपन्यास लेखन प्रा.डॉ. मंजु पु. तरडेजा (सिंधाणी)	१३३
५७	'मुझे चाँद चाहिए' उपन्यास में नारी विमर्श प्रा. माधुरी सुरेष ठाकरे	१३५
५८	निरूपमा सेवती के कहानियों में 'वृध्द विमर्श' डॉ. राहुल सुरेश भदाणे	१३७
५९	हिंदी ग़ज़लकारों की ग़ज़लों में नारी विमर्श डॉ. दिपक विश्वासराव पाटील	१३९
६०	अवधी लोकगीतों में नारी जीवन के विविध आयाम प्रा. सौ. स्वाती व्ही. शेलार	१४१
६१	कृष्णा सोबती का उपन्यास 'दिलो दानिष' में अभिव्यक्त नारी-विमर्श डॉ. आशा दत्तात्रय कांबळे	१४३
६२	गीतांजलि श्री का उपन्यास 'रेत-समाधि' में वृद्ध विमर्श तायडे राजाराम बाबुराव	१४५
६३	धार्मिकता एवं सांस्कृतिकता से भरी मिथिलेश्वर की कहानियाँ डॉ. मनोज नामदेव पाटील	१४७
६४	भगवानदास मोरवाल के उपन्यासों में मुस्लिम स्त्री विमर्श प्रा. डिम्पल एस. पाटील	१५०
६५	अनामिका की कविताओं में स्त्री विमर्श डॉ. रेखा गाजरे, भावना बडगुजर	

ISSN : 2348-7143
Feb. 2019

प्रभा खेतान के काव्य में चित्रित लैंगिक संवेदना

डॉ. प्रल्हाद विजयसिंग पावरा
हिंदी विभागाध्यक्ष, कला, वाणिज्य एवं विज्ञान महाविद्यालय, यावल, जि. जलगाँव

सदियों से पुरूष नारी का यौन-शोषण एवं वह शोषित रही है। मध्यकाल में नारी का यौन शोषण अत्यधिक मात्रा में होने लगा। वे भोग्या बन गई एवं व्यक्ति से वस्तु बना दी गई फलस्वरूप उनकी खरीदी-बिक्री होने लगी। डॉ. अमरनाथ ने लिखा है कि मुसलमानों के सत्ता संभालते ही हिन्दुस्तान से नारियाँ एकड़-पकड़कर बाहर ले जाई जाने लगी और मध्य एशिया के बाजारों में उनका क्रय-विक्रय होने लगा। हिन्दुस्तान के राजाओं ने यवन दासियाँ विशेष रूप से पसंद की। हिन्दुस्तानी बादशाह और सामंत देश-विदेश की खूबसूरत लड़कियों से अपने हरमों को सजाने लगे।१ इस युग से नारी पुरूष की व्यक्तिगत संपत्ति बना दी गई। भौतिकता के युग में पूँजीवादी व्यवस्था में स्त्री उपभोक्ता की वस्तु बन गयी। बाजारवाद के युग में वह यौन दृष्टि से देखी गयी। अरविंद जैन ने लिखा है कि - पितृसत्ता अभी भी घर में अपनी बहू-बेटियों को घूँघट या बुर्के में कैद रखना चाहती है। मगर घर के बाहर उसे बिकनीवाली सुंदरियाँ चाहिए जो उसके सेवा, उद्योग, मनोरंजन, व्यवसाय चला सके और रोज नए ब्रांड बेच सके।२ पुरूष मानसिकता में नारी का शरीर शोषण का प्राइम सोर्स रहा है। आज के बाजारवाद एवं कार्पोरेट जगत में उसे विज्ञापन के लिए मॉडिल बनाकर देह प्रदर्शन के लिए विवश किया जाता है और धन के लोभ में कभी वह स्वयं इसे स्वीकारती है। अरविंद जैन ने लिखा है कि - पूंजी के स्वर्ग बाजार में 'औरत का गोष्त' सबसे सस्ता है। 'सेक्स सैरगाहों' में 'सेक्स गांव' या नग्न प्रदर्शन से लेकर हर प्रकार की यौन गुलामी के लिए विवश औरतों का वधस्थल बनते जा रहे है। वे स्वतंत्र बाजार, यौन रोग ही नहीं यौन हिंसा के आकडे भी लगातार बढ़ रहे है। पूंजी के इस शर्मनाक खेल में औरत को भोग-उपभोग की 'सुंदर' वस्तु बनाया जा रहा है।३ इन सभी स्थितियों का साहित्यकारों ने चित्रण किया है।

नारी के हो रहे लैंगिक शोषण के संदर्भ में श्री. जगदीष्वर चतुर्वेदी सुधासिंह लिखते हैं कि, तब क्या औरत के संदर्भ में सारे निर्णय केवल उसकी देह से संबंधित हैं, देह पवित्र है या देह उच्छिष्ट...देह से बाहर औरत की कोई हस्ती नहीं।४ आज के युग में स्त्री को केवल हवसभरी दृष्टि से देखनेवाले लोगों की संख्या बढ़ रही हैं। इस संदर्भ में प्रभा ने पछिन्नमस्ताष्' की प्रिया की त्रासदी व्यक्त की है कि, प्रिया निरंतर शोषित होती रही है। समाज की जर-जर मान्यताओं से भी पुरूष की आदिम भूख से भी, टूट जाने की हद तक, लेकिन टूटती नहीं।५

नारी केवल देह नहीं उसका भी अपना एक अस्तित्त्व हैं। वह भी पुरूष की तरह प्रभा खेतान अपने काव्य संग्रह में स्त्री पर होनेवाले लैंगिक शोषण का अंकन किया हैं। समसामयिक युग में महिला साहित्यकारों ने यौन शोषण का बेबाक चित्रण किया हैं। आज की स्थिति में यथार्थवादिता के लिए इस तरह का चित्रण कविताओं में हुआ हैं।

नारी जिससे प्रेम करती है, उसको देह तक समर्पित करने का तत्पर रहती है। इसके बदले उसका प्रेमी यौन शोषण करके उसे दुत्कार देता हैं। उसे अंधेरी गलियों में छोंड़ देता है। 'अपरिचित उजाले' इस काव्य संग्रह की कविता 'मिलने को बढ़े हुए हाथ' में प्रभा लिखती हैं कि,

मित्र कहने को
खुले ओंठ
आँखों में तैरते हुए स्वप्नों को
नोंच कर फेंक देना
हर मोड पर वापस। ६

सम्प्रति, प्रेम की परिभाषा ही बदल गई हैं। स्त्री-पुरूश के प्रेम का सच्चा रूप समाज व्यवस्था में दिखाई नहीं देता। आज का पुरूष इस्तेमाल करनेवाली वस्तुओं की तरह नारी को बहला-फुसलाकर उसे प्रेम के वादों में जकड लेता हैं। उसका लैंगिक शोषण करके जलती हुई सिगरेट की तरह जूते की नोक के नीचे मसल देता हैं। फिर भी अपने प्रेमी से प्रेमिका तहेदिल से प्रेम करती हैं। इसलिए उसके यौन शोषण में वह कुछ शेष नही रहना चाहती और समर्पित हो जाती हैं। प्रभा खेतान अपनी कविता 'तुम्हारे ओंठो पर' में लिखती हैं कि,

तुम्हारे ओंटोपर जल रही है - सिगरेट
मेरा मन
अधजली तीलियों से
फिर से जला दो
जूते की नोंक के नीचे मसल दो
मैं सिर्फ 'होना' चाहती हुं,
*शेष न रहने के लिए*७

प्रेमी अपनी प्रेमिका से किसी पार्क, सिनेमा, रेस्तरों में मिलकर प्यार के वादे-कसमें खाता हैं। प्रेमिका से यौन संबंध साधता हैं। उसका मन प्रेमिका के प्रति कुछ अंतराल के बाद ऊबने लगता है। अब प्रेमी अपनी प्रेमिका और दूसरी लडकी में फर्क ढूँढने लगा हैं। उसकी हवस का शिकार हुई प्रेमिका फिर से दुत्कार दी जाती है। नारी छटपटाती हुई किसी अन्य की बाँहों में सुरक्षा खोजने लगती हैं। किन्तु फिर से उसे दुत्कार दिया जाता है। प्रभा अपनी कविता 'प्यार की तलाश में' लिखती हैं कि,

तुम एक लड़की से दूसरी लड़की का
फर्क ढूँढते हुए
मैं हर घेरनेवाली बाँह में
सुरक्षा खोजती हुई
अपने जिस्मों की खुली टकराहट में

हम केवल दुहराया झूठ बोलते हैं। ८

व्यक्ति के जीवन में प्रेम एक भावनात्मक स्थिति है। प्रेम आँखों के माध्यम से व्यक्त होता है। प्रेम की पावनता सर्वमान्य है। इसे 'ढाई आखर' कहा गया है। प्रेमिका की भावना इस प्रकार व्यक्त होती है -

तुम्हारी प्रेम भरी आँखे
मुझे खोजती हुई
मेरी आँखों में विश्राम लेती है
और हम दोनों के बीच
ठहरा हुआ वक्त
बस एक तिनके की दूरी सा
थरथरा उठता है। ९

नारी प्रेमिका के रूप में प्रेमी की हर इच्छा-आकांक्षा को पूरा करने के लिए अपने आपको न्यौछावर कर देती हैं। समाज में उसका प्रेम कुछ पल के लिए ही रहता हैं। अपने प्रेमी की प्रतीक्षा में प्रेमिका विरह में तडपती रहती हैं। वह अपने प्रेमी की प्रतीक्षा में लगी रहती हैं कि, आज नहीं तो कल उसकी तलाश में उसका प्रेमी आयेगा। प्रभा खेतान अपनी कविता 'आखिर कब तक लटकी रहूँ' में लिखती हैं कि,

आखिर कब तक लटकी रहूँ
सारी-सारी शाम
सूखते कपडों-सी-बरामदे में
प्रतीक्षा करू तुम्हारे आने की
एक क्षण से
दूसरे क्षण तक। १०

प्रेमिका अपने प्रेमी के साथ यौन संबंध रखते हुए तन-मन-से समर्पित हो जाती हैं। परंतु प्रेमी के मन में प्रेमिका के प्रति सच्चा प्रेम नहीं रहता। वह उसके लिए उपयोग-उपभोग की वस्तु हो जाती है जैसे घर में पर्दे, सोफा, चादर, बिस्तर होता है। प्रेमिका अत्यंत व्यथित होकर कहती है -

मैं तुम्हारे गमले का फूल बनूँ
उगूँ तुम्हारी बरौनियों के सूरज को देख
तुम चाहते हो
मैं बनू तुम्हारे ड्राइंग-रूम का कालीन
पर्दे, सोफा
या बैड-कवर
फैली रहूँ बिस्तर पर। ११

आज के बाजारवाद में वस्तुओं के प्रमोशन के लिए उसकी देह के गठन, उभार का उपयोग किया जा रहा है उसे एक जड़ वस्तु में तब्दील कर दिया गया है जैसा कि कवयित्री ने 'नियति' कविता में लिखा है -

उसकी जिन्दगी
नियोन लाइट में
जगमगाता हुआ विज्ञापन
कुछ बनने के दौर में
वह जो बनकर
सामने आई
महज एक चीज। १२

प्रेमिका अपने प्रिय के प्रति मानसिक एवं देहिक स्तर पर सम्पृक्त हो चुकी है इसलिए प्रिय के पास खींची चली आती है -

मैं फिर तुम्हारे पास
लौट आई हूँ
नर्म बिस्तर की
पूरी गर्माहट लिए
मैं एक नयी उम्मीद बन
फिर लौट आई हूँ
पास। १३

जो स्त्री-पुरूष का नाता है वह जन्मों-जन्मों से चला आ रहा हैं। नारी इस नाते को जानते हुए अपने आपको प्रेमिका के रूप में पेश किया हैं। नारी प्रेमिका बनती है परंतु प्रेम के बदले केवल यौन शोषण ही मिला हैं। इस शोषण में वह केवल वस्तू के रूप में देखी जाती हैं। आज नारी भोग्या बन चुकी है। भोगवादी युग की सचाई भी यही है। नारी पुरूश की दासी, उसकी जूती बन गई है -

पहनाया तुम्हारे पाँवों में
जूती बन,
बिछी बिस्तरे पर

चादर बन,
कभी टँगी खूँटी पर
तुम्हारा मुखौटा बन
मैं बनी वस्तु
तुम रहे भोक्ता। १४

कवयित्री ने 'मछली पकडने मछुए जाल फेंक रहे है कविता में' नारी को देखने की हवस दृष्टि का चित्रण किया है। जब मछुए मछलियाँ पकड़ने के लिए जा रहे है तब उन्हें यही किनारे पर औंधी पड़ी एक लड़की दिखाई देती है। यह स्थिति विदेशों में आम बात है। परंतु जब वह देखती है कि उसे देखनेवालों की आँखों में हवस, वासना है तब उसे नफरत होती है उन घूरनेवाली शिकारी आँखों से। अतएव वह अचानक पानी में कूद पड़ती है।

मछूआरे अब जाल डाल चुके हैं।
तैरती हुई मछलियों का जिस्म
भीगा हुआ है नमकीन पानी से।
यकायक वह लड़की
निकल आती...लहरों को चीरकर। १५

नारी दुनिया में रहनेवाले लोगों की नियत को जानती हैं। पुरूष-स्त्री में जो भेद पाया जाता हैं। उसमें से नारी ही केवल भोग्य वस्तू बन जाती है और पुरूष उसका भोग्ता बन जाता हैं। अन्य लोगों की तरह नारी भी आझाद हुई हैं। इसलिए अपनी आझाद जिंदगी में वह जीवन जीना चाहती हैं। पर पुरूश की सत्ता में नारी का केवल लैंगिक शोषण होता रहा हैं।

प्रभा खेतान ने 'कृष्णधर्मा मैं' कविता में नारी के कौमार्य, उसकी आत्मा के संदर्भ में यह प्रतिपादित किया है कि विवाह कन्या के कौमार्य को भंग करता है इसके बाद इस मायावी संसार में उसे वस्तु बनकर किमत चुकानी पड़ी है।

टूट गया कुआराँपन
वर्षों पहले शादी की पहली रात
पर आज भी कुँआरी है आत्मा
प्रतीक्षारत
हर अनुभव के लिए
परखती रही अनुभव
चुकाती रही कीमत
और होकर रह गई वस्तु।
पाने के बाद
आकर्षण समाप्त
एक ही शरीर
कभी रूक्मिणी
कभी राधा। १६

कवयित्री ने पौराणिक मिथक के माध्यम से नारी के देहिक प्रदर्शन एवं शोषण को अभिव्यक्त किया है। सर्वविदित है कि महाभारत में द्रौपदी को जुए में दाँव पर लगाना उसे पण्य वस्तु बना देना था और उसके पश्चात उसका चीरहरण होने लगा परंतु कृष्ण ने बचा लिया परंतु आज की स्थिति यही है कि नारी का देहिक शोषण तो है परंतु कृष्ण नहीं है। औरत होने का अर्थ - असुरक्षित होना है। यह चौतरफा असुरक्षा है जिसके साथ औरत पैदा होती है और मर जाती है - आर्थिक, भावात्मक, शारीरिक। जब सुरक्षा के लिए लगाई बाड़ भी पौधे को खा जाती है तब हाट, बाट, घाट का जिक्र क्या।१७ द्रौपदी को भरी सभा में अपमानित, निवसा करना उसको अपमानित करना ही है। व्यथा यही है कि वह अपने ही स्वजनों द्वारा तिरस्कृत हुई है।

नहीं किया मैंने ऐसा कुछ भी
झेलती रही क्रमशः निरावरण होने की यातना
चबाती रही दुःख और अपमान का दर्द
बनती रही वासनाओं के खूनी स्वाद की खुराक। १८

नारी का यौन शोषण सनातन समस्या है। इन्द्र ने गौतम ऋषि की पत्नी के साथ यौन संबंध स्थापित किया वह भी धोखा देकर। प्रभा जी ने 'अहल्या' में लिखा है कि - 'क्या तुम अहल्या हो ? वही अहल्या, जो इन्द्र के मायाजाल में उलझ गई थी और उन्होंने शाप देकर तुम्हें पत्थर बना दिया।' -

पत्थरों का नग्न शरीर बना
गौतम ने किया
आदमियत का आखिरी अपमान। १९

इन्द्र ने अहल्या पर मोहित होकर जब गौतम भोर में नदी पर नहाने गये थे, देहिक शोषण किया था। इन्द्र के द्वारा नारी का अपमान है इस संदर्भ में कवयित्री ने लिखा है -

कौन था वह पुरूष, अहल्या,
जो लाँघकर सतीत्व की सीमा
कर गया नारीत्व का अपमान ?
क्या था तुम्हारी आँखों में

इसके लिए,
जो डोल गया इन्द्रासन ?
बदल गया शरीर
नहीं पहचान सकी तुम
क्या दोष था तुम्हारा केवल। २०

अहल्या ने पुरूष के मायावी रूप को पहचाना नहीं। इन्द्र उसके साथ यौन संबंध बनाकर उसे अकेला ही छोड़कर चला गया हैं। प्रभा अपनी कविता 'अहल्या' में लिखती हैं कि,

निष्पाप होती हुई तुम
कर दी गई प्रवंचित
भोक्ता के पलायन के बाद
समझ पायी तुम
पुरूष का मायावी रूप। २१

इन्द्र ने अपनी उद्दाम वासना को तृप्त करने के लिए 'अहल्या' को भोगा फलस्वरूप उसके पति गौतम ने उसे शाप देकर पत्थर बना दिया यह पुरूषों की प्रवृत्ति आज भी जारी है, विवाहिता अपने पर हुए अत्याचार के कारण आत्महत्या कर लेती है या जड़ बन जाती है। प्रभा खेतान इसी यथार्थ को व्यक्त करती है -

जानती हूँ पुरूषों की हिंस्र कामुकता
एक हा अहल्या से
तुष्ट नहीं होती है
आत्मा के सत्व को
जलाती इस आग से
मैं भी सहमती हूँ, अहल्या ! २२

प्रभा खेतान अपने काव्य संग्रहों की कविताओं में नारी के लैंगिक शोषण में स्त्री का प्रेमिका रूंप, पुरूष का वासनाभरा रूंप, पुरूष का मायावी रूंप, प्रेमी से दुत्कार जाना आदि कई समस्याओं का चित्रण किया हैं। प्रभा नारी के प्रति आत्मीय सहानुभूति रखते हुए अपनी कविताओं में उनका हो रहा यौन शोषण, यौन पीड़ा, प्रेमी से दुत्कारी गई नारी, उनके अपमान और अत्याचार का वर्णन करती है। नारी का लैंगिक शोषण में प्रभा खेतान की कविताओं में लैंगिक शोषण में स्त्री का प्रेमिका रूप, नारी हवस का शिकार, अकेले जीवन व्यतीत करनेवाली स्त्री का यौन शोषण, पुरूष का वासना से भरा रूंप, पुरूष का मायावी रूप, प्रेमी से दुत्कारी जाना आदि समस्याओं का अंकन किया हैं। प्रभा नारी के प्रति आत्मीय सहानुभूति रखते हुए अपनी कविताओं में उनका हो रहा यौन शोषण, यौन पीड़ा से त्रस्त नारी और प्रेमी से दुत्कारी गयी नारी के रूप का चित्रण पूरी प्रामाणिकता के साथ किया हैं।

प्रभा खेतान ने अपनी कविताओं में नारी की स्थिति में सदियों से चले आ रहे घर के बंधन पति द्वारा मिली पीड़ा में नारी के सपनों की टूटन, परिवार को संभालने में, उसकी त्रासदी में, वेदना, विवशता, पीड़ा, भय, परित्यक्ता को सहना, चुनौतियों का सामना करने में, आदमीयत की सत्ता आदि समस्याओं का अंकन किया हैं। प्रभा खेतान ने नारी की परिवार में जो स्थिति रही हैं उसके प्रति उनकी कविताओं में सहानुभूति को उभारा हैं। इस सहानुभूति को उन्होंने बड़ी मार्मिक ढंग से कविताओं में चित्रित किया हैं।

संदर्भ सूची

१) नारी मुक्ति संघर्ष - डॉ. अमरनाथ, पृ. ७५
२) औरत होने की सजा - अरविंद जैन, पृ. ३०
३) हंस - अरविंद जैन, मई १९९८, पृ. ९६
४) स्त्री अस्मिता साहित्य और विचारधारा - जगदीश्वर चतुर्वेदी, पृ. ३४७
५) छिन्नमस्ता - प्रभा खेतान, पृ. १४५
६) अपरिचित उजाले - प्रभा खेतान, पृ. ११
७) वही, पृ. १४
८) वही, पृ. १७
९) एक और आकाश की खोज में - प्रभा खेतान, पृ. ४
१०) अपरिचित उजाले - प्रभा खेतान, पृ. २१
११) वही, पृ. २५
१२) सीढ़ियाँ चढ़ती हुई मैं - प्रभा खेतान, पृ. २६
१३) वही, पृ. ३५
१४) एक और आकाश की खोज में - प्रभा खेतान, पृ. ५
१५) वही, पृ. ३
१६) कृष्णधर्मा मैं - प्रभा खेतान, पृ. २६
१७) अस्मिता विमर्श का स्त्री स्वर - अर्चना वर्मा, पृ. १८७
१८) वही, पृ. २७
१९) अहल्या - प्रभा खेतान, पृ. २५
२०) वही, पृ. ३९
२१) वही, पृ. ३९
२२) वही, पृ. ७६

IOSR Journal Of Pharmacy www.iosrphr.org
(e)-ISSN: 2250-3013, (p)-ISSN: 2319-4219
Volume 8, Issue 7 Version. II (July 2018), PP. 21-27

Effect of heavy metal Copper sulphate on Glycogen activity of Bivalve L. marginalis.....

Sandhya M. Sonawane, Mayur Sonawane
Department of Zoology, Nutan Maratha College, Jalgaon, Dist. Jalgaon. (M.S.) Mobile No. 9422977824
Department of Zoology, M.J. College, Jalgaon, Dist. Jalgaon. (M.S.) Mobile No.9405918053
Corresponding Author:Sandhya M. Sonawane

ABSTRACT: Heavy metal and pesticide pollutants cause stress to the aquatic organism and change its metabolic activity. The heavy metal pollutants give rise to alterations in the metabolic and physiological activity both after short and long term exposures. To investigate the physiological changes after pesticide and heavy metal treatment the most fundamental one would be the study of change in the biochemical constituents. Carbohydrates, proteins and lipids are the important metabolites which provide energy to different vital processes.

They glycogen content in freshwater bivalve, L. marginalis was altered indicating the effects of heavy metals. The average glycogen content in acute and chronic treatment by heavy metal copper sulphate was decreased in the whole body. The depletion of glycogen content was greater in the digestive gland as compared to the foot and mantle of the bivalve, when exposed to pollutants. This indicates that the digestive gland is the principal metabolic center for various metabolic functions. During acute and chronic exposures a significant decrease in the glycogen content of the digestive gland suggests greater glycolytic activity in the gland than the mantle and foot. The greater breakdown of glycogen may suggest the need of high energy to animal in stress conditions caused due to pollutants.

Keywords: Heavy metals $CuSO_4$, L. marginalis, Glycogen, digestive gland, acute, chronic.

Date of Submission: 29-06-2018 Date of acceptance: 16-07-2018

I. INTRODUCTION

Most information about the effect of environmental pollutants on aquatic animals has been obtained from mortality studies. Often very little is known about damage to different internal organs or about disturbed physiological and biochemical processes within an organism following exposure to environmental poisons. Consequently knowledge about the mode of action of toxicants and causes of death in poisoned aquatic animals is often lacking. A better understanding of these mechanisms is necessary if we want to predict the potential harmfulness of various chemicals to the environment.

Since different environment pollutants are likely to affect biological systems in different ways according to their respective chemical properties, the sum of physiological changes created by a particular pollutant is likely to be characteristic of that pollutant. Thus by observing the effects of pollutants on a set of physiological parameters, it might be possible to establish specific responses of that pollutant, and may take it possible to identify a pollutant on the basis of its physiological effect pattern.

The higher concentrations of toxicants bring the adverse effects on aquatic organisms, at cellular level or molecular level and ultimately lead to disorder in biochemical composition which is useful in determining different toxicants and protective mechanism of the body to resist the toxic effects of the substances.

The toxic chemicals (pollutants) act as one kind of stress to organism and organism responds to it by developing necessary potential to counter act that stress. The biochemical changes occurring act that stress. The biochemical changes occurring in the body give first indication of stress. During stress the organism needs sufficient energy which is supplied from reserve materials (glycogen, lipid and protein). If the stress is mild then only stored glycogen is used, as a source of energy, but if the stress is strong then the energy stored in lipid and protein may be used.

The heavy metals cause metabolic derangement in the living system, when come in contact. Heavy metals due to their potential toxicity produce biochemical changes in the tissues of animals.

Even though there is much work on the toxic effects of pesticides and heavy metals on specific target animals, little attention was paid to study the physiological and biochemical changes on non target aquatic species. Since Lamellidens Marginalis are fresh water bivalves an attempt was made to study the changes in biochemical composition in different heavy metal copper sulphate. Carbohydrates (glycogen) constitute the vital

Estimation of Biochemical components from tissues :

(1) Glycogen

The colorimetric estimation of glycogen present in the tissue was done by anthrone reagent method (Dezwaan and Zandee, 1972). 50 mg. of wet tissue was taken in 1 ml of 30% KOH solution. The mixture was boiled in water bath for 5-10 minutes, till the tissue was completely dissolved. The solution was cooled and to it 0.2 ml 2% Na_2SO_4 and 6 ml of absolute alcohol were added. This solution was kept in refrigerator for overnight. It was then centrifuged for 15 minutes at 3000 rpm. The supernatant was discarded and the residue cake was dissolved in 10 ml of distilled water 0.1 ml of this solution was taken and to it 0.9 ml of distilled water were added. The solution was heated in boiling water bath for 5 minutes and then cooled. The intensity of the colour developed was measured with the colorimeter (Erma) at 620 mu (Red Filter) filter. Anthrone, reagent was prepared by dissolving 50 mg anthrone powder and 1 gm Thiourea in 100 ml of 72% H_2SO_4. The amount of glycogen was calculated by referring to a standard graph value, where glucose was used as a standard. The glycogen value was calculated by multiplying with the conversion factor 0.927 to glucose value. The amount of glycogen was expressed in terms of Mg. of glycogen/100 mg of wet tissue.

III. OBSERVATION AND RESULTS

Biochemical components such as carbohydrates (glycogen) were studied in the normal (control) and pollutant copper sulphate treated whole body, foot, digestive gland and mantle of freshwater bivalve, L. marginalis the results are summarized in Tables .

Acute treatment-The acute treatment was given upto 72 hours by heavy metal pollutants, copper sulphate. After the acute treatment by pollutant, biochemical composition of the bivalve was altered and the results are summarized in the table.

The glycogen content of the whole body, foot digestive gland and mantle decreased after acute treatment by heavy metal. After copper sulphate acute treatment at 72 hours, the glycogen in the whole body, foot, digestive gland and mantle decreased from 2.08% to 1.22%, 2.53% to 2.13%, 2.78% to 1.62% and 1.13% to 0.86% respectively. The glycogen content of the foot and mantle depleted more as compared to the digestive gland.A significant change in the glycogen content was found .The maximum depletion occurred in the digestive gland of L. Marginalis.

Chronic treatment-The biochemical components such as glycogen was observed after chronic treatment in control and treated freshwater mussels, Lamellidens marginalis. The biochemical components of the whole body foot, digestive gland and mantle were observed and recorded in the table.

The glycogen content of the whole body, foot, digestive gland and mantle decreased in chronic (5, 10, 15 and 20 days) treatment by heavy metals. After copper sulphate chronic treatment, the glycogen in the whole body foot, digestive gland and mantle decreased. A significant change in the glycogen content was found. The maximum depletion occurred in the digestive gland of Lamellidens marginalis.

Table – 1: Glycogen content in selected tissues of the control and $CuSO_4$ exposed Lamellidens marginalis as a function of exposure period

Treatment	Sr. No.	Body Organ	Total glycogen content (%) + S.D.		
			24 hours	48 hours	72 hours
Control	1	Whole body	2.2874 ± 0.0713	2.1475 ± 0.002	2.0879 ± 0.0711
	2	Foot	2.8725 ± 0.00520	2.9675 ± 0.0578	2.5324 ± 0.0307
	3	Digestive gland	3.2035 ± 0.0036	3.0234 ± 0.0128	2.7852 ± 0.0787
	4	Mantle	1.2242 ± 0.0179	1.2542 ± 0.0427	1.1342 ± 0.0126
Acute treatment by $CuSO_4$	1	Whole body	1.7529 ± 0.0438 P<0.01	1.6432 ± 0.0189 P<0.001	1.1272 ± 0.0234 P<0.001
	2	Foot	2.6435 ± 0.0374 NS	2.6720 ± 0.2203 NS	2.1382 ± 0.01156 P<0.05
	3	Digestive gland	2.2705 ± 0.1328 P<0.001	2.0035 ± 0.0857 P<0.001	1.6240 ± 0.1239 P<0.001

The mode of action of pollutants may be responsible for cellular dis-organization offering the storage and metabolism of the glycogen. Decrease in glycogen content indicates disrupted carbohydrate metabolism. The pollutants give the heavy physical irritate stress causing rapid movement and increased respiration rate thus increased utilization of reserved glycogen to meet higher energy demand of body causing decrease in glycogen content (Bhagyalaxmi, 1981). Many worker support the above results in vertebrate and invertebrate animals. A change in serum protein and glycogen content of rainbow trout exposed to endrin was studied by Grant and Mahrle (1973). Koundinya and Ramamurthi (1978) observed the effect of lethal concentration of sumethion on carbohydrate metabolism in Tilapia mossambica. Baner and Ghosh (1978) have recorded the alterations in the levels of serum glucose, liver glycogen and glucose-6-phosphate of the fish, Clarius batrachus when exposed to cadmium. Banerjee et al. (1978) reported an increase in blood glucose level in the fish Tilapia mossambica when exposed to cadmium. Kabeer (1979) stated that decrease in glycogen content in Malathion exposed tissues can also be due to decrease in glycogen synthesis. Koundinya and Ramamurthi (1979) have observed that sumethion leads to an increase in blood glucose level in decrease in glycogen content. Rao and Rao (1979) studied the effect of methyl parathion on the fish Sarotherodon mossambica and noted a significant decrease in glycogen content, Gill and Pant (1981) studied the effect of Nickel intoxication of carbohydrate metabolism i.e. blood glucose and liver glycogen which were measure to assess the magnitude of biochemical stress. Bhagyalakshmi (1981) studied the levels of certain carbohydrate metabolites in the tissue of field crab, Oxiotelphusa senex senex after exposure it to an organophosphate pesticide sumithion, and recorded an increase in haemolymph glucose level and decrease in total carbohydrate level.

Nagabhushanam and Kulkarni (1981) observed increased haemolymph glucose and a decrease in midgut gland, when the prawns, Macrobrachium Kistensis were exposed to $ZnSO_4$ and $CuSO_4$. Srivastava and Singh (1981) studied the acute effect of methyl parathion on carbohydrate metabolism of the Indian carfish, heteropheustes fossilis. Forooqui (1982) observed a insignificant increase of glycogen in the ovary of Barytelphusa cunicularis after two days exposure to sevimol and a significant decrease after seven days exposure and concluded that glycogen breadwon provides the immediate energy source in stress condition. Natarajan (1982) studied the effect of various concentration of $ZnSO_4$ on glycogen content of river, muscle, brain, kidney and gills of the fish Anabas Scands. Bhagyalkshmi et al. (1984) observed a decrease in glycogen and elevated phosphorylase activity in the crab, Oxiotelphusa senex senex exposed to sumithion, suggesting onset of glycogenolysis forming free glucose and the possible exist of these glucose molecules in the haemolymph resulting in the hyperglycemia condition. Patil (1986) studied the effects of pesticides on the glycogen content of Mythimna (P) separate and found decreased glycogen content ater treatment.

Many workers studied the effects of pollutants on mollusks in Mandal and Ghose (1970) observed glycogen depletion in the digestive gland of the snail, Achatina fulica (Bawdich) when exposed to calcium arsenate. Ramana Rao and Ramamurthi (1980) studied the effect of sublethal concentration of sumithion on some biochemical constituents of the snail, Pila globosa and found a decrease in glycogen content. Lomte and Alam (1982) observed the stable level of glycogen in the foot and mantle but very sharp fall of glycogen in the digestive gland during sublethal exposure for 24 hours to organophosphate pesticide, malathion. Swami et al. (1983) found increased haemolymph glucose and decreased stored glycogen in Lamellindens marginalis when treated with Flodit and Metacid. Kulkarni et al. (1984) studied the impact of endosulfan on the apple snail, Pila globosa and found an elevation of blood glucose level after treatment. Chaudhari (1988) studied the effect of pesticides on biochemical composition of the snail Bellamya (viiparous) bengalensis and found decreased glycogen content after treatment.

SUMMARY

1. The biochemical composition of Lamellidens marginalis after acute and chronic treatment of heavy metals copper sulphate was studied to better understand the mechanism of action of pollutant, by observing the time bound and tissue specific alterations of biochemical component glycogen.
2. After acute treatment of heavy metals glycogen content of the whole body, foot, digestive gland and mantle was altered very prominently, glycogen depletion was significant.
3. The glycogen content of the whole body, foot, digestive gland and mantle decreased after chronic treatment of heavy metal pollutants, much glycogen content decreased in digestive gland which was followed by mantle and foot.

REFERENCES

[1]. Abel, P.D. (1974) : Toxicity of synthetic detergent to fish and aquatic vertebrates. J. Fish. Biol., 6 : 279-298.
[2]. Banerjee, S.K. and Ghosh, S.D. (1978) : Toxicity of cadmium : A comparative study in the air breathing fish Clarius bactrachus (Linn.) and in the non air breathing one, Tilapia mossambica (Peters). Ind. J. Exp. Biol., 16 : 1274.

[30]. Nagabhushanam, R. and Kulkarni, G.K. (1981) : Freshwater Palaemonid Prawn, Macrobrachium Kistensis (Tiwari) – Effect of heavy metal pollutants. Proc. Indian Metal Sci. Acad. 547 (3) : 380-386.

[31]. Natrajan, G.M. (1983) : Metasystox toxicity effects of lethal (LC 50/48 hrs.) concentration on free amino acid and glutamate dehydrogenase in some tissues in the air breathing fish, Channa striatus (Bleeker). Comp. Physiol. Ecol., 8(4) : 254-257.

[32]. Patil, P.N. (1986) : Impact of different pesticides on some physiological and neuroendocrinological aspects of Mythima (Pseudaletia) separate, Ph.D. Thesis, Marathwada University, Aurangabad, M.S., India.

[33]. Peter, M. (1973) : Metabolism of Carbohydrates. In : Review of physiological chemistry, Ed. By Harper, H.A. Lange Medical Publication, 14th Edn, pp. 232-267.

[34]. Ramana Rao, M.V. and Ramamurthi, R. (1978) : Studies on the metabolism of the apple snail, Pila globosa (Swainson in relation to pesticide impact). Ind. J. Her. 11 : 10.

[35]. Rao, K.R., D.A. Kulkarni, K.S.Pillai and U.H.Mane (1987) : Effect of fluoride on the fresh water bivalve mollusks, Indonaia caeruleus (Prashad, 1918) in relation to the effect of pH biochemical approach. Proc. Nat. Symp. Ecotoxic, pp. 13-20.

[36]. Sekeri, K.E., C.E. Sekeris, and P. Karlson, (1968) : Protein synthesis in Subcellular fractions of the blofly during different development stages. J. Insect. Physiol., 14 : 425-431.

[37]. Shigmatus, H. and H. Takeshita (1959) : On the change in the weight of the fat body and its chief constituents in the silkworm, Bombyx mori L. during metamorphosis. Apl. Ent. Zool. Japan, 3(2) : 123-126.

[38]. Shivaprasad Rao, K. and K.V. Ramana Rao, (1979) : Effect of sublethal oxidative enzymes and organic constituents in the tissue of the fresh water fish, Tilapia mossambica (Peters), Curr. Sci. 48 (12) : 526-528.

[39]. Shivaprasad Rao, K., Satyaprasad, K. and Ramana Rao, K.V. (1980 a) Freshwater snails – Effect of insecticides Telugu Vyghanika Patrika (Telugu Academic Publication) 9 : 27-32

[40]. Shivaprasad Rao, K., Satyaprasad, K. and Ramana Rao, K.V. (1980 b) : Sublethal effect of methyl parathion on tissue proteolysis in the freshwater mussels, Lamellidens marginalis (Lamark). Proc. Ind. Nat. Sci. Acad., 46B : 164-167.

[41]. Suryanarayanan, H. and Alexander, K.M. (1972) : Biochemical investigation on edible mollusks of Kerala I. Study on the nutritional value of some bivalves. Fish. Technol., 9(1) : 42-47.

[42]. Suryanarayanan H. and Alexander, K.M. (1971) : Fuel reserves of Molluscan muscles. Comp. Biochem. Physio., 40 : 55-60.

[43]. Swami, K.S., K.S. Jagannath Rao, K. Satyavelu Reddy, K. Shrinivasmoorthy, G. Lingamurthy, C.S., Chetty and K. Indira (1983) : The possible metabolic diversions adopted by the freshwater mussel to consumer the toxic metabolic effect of seleced pesticides. Indian J. Comp. Anim. Physiol., 1(1) : 95-106.

[44]. Thurberg, L.V. and Manchester, K.L. (1972) : Effect of dinervation on the glycogen content and on the activities of enzymes glucose and glycogen metabolism in rat diaphragm muscle. Biochem. J. 128 : 789.

[45]. Ventakaraman, R. and Chary, S.T. (1951) : Studies on oysters and Clams, Biochemical Variations. Indi. J. Med. Res., 39(4) : 533-541.

Sandhya M. Sonawane Effect of heavy metal Copper sulphate on Glycogen activity of Bivalve L. marginalis....." IOSR Journal of Pharmacy (IOSRPHR), vol. 8, no. 07, 2018, pp. 21-27.

Prashant M. Pawar · Babruvahan P. Ronge
R. Balasubramaniam · Anup S. Vibhute
Sulabha S. Apte *Editors*

Techno-Societal 2018

Proceedings of the 2nd International Conference on Advanced Technologies for Societal Applications - Volume 2

Springer

Prashant M. Pawar • Babruvahan P. Ronge
R. Balasubramaniam • Anup S. Vibhute
Sulabha S. Apte
Editors

Techno-Societal 2018

Proceedings of the 2nd International Conference on Advanced Technologies for Societal Applications - Volume 2

Springer

Part I
ICT Based Societal Technologies

Green Synthesis of Silver Nanoparticles Using Mushroom Species, Their Characterization and Catalytic Activity

H. G. Bhangale, S. G. Bachhav, K. M. Sarode, and D. R. Patil

Keywords Green synthesis · Silver nanoparticles · UV-visible spectra · FTIR · PSA · Zeta potential · Catalytic activity

1 Introduction

Nanoparticles are the particles in the size range between 10 nm and 100 nm and possess distinct properties as compared to their parent material. Metal nanoparticles due to their significant properties found applications in various fields such as optics, electronics, agriculture, medicine etc.

It is well known that silver nanoparticles exhibited excellent optical, electrical and thermal properties, hence useful in various fields such as sensing [1], catalysis, bio-imaging, medical [2], agriculture [3] etc. Silver nanoparticles have large applications including skin lotions and creams containing silver to prevent infection of burns and open wounds [4]. Silver nanoparticles exhibit strong catalytic [5, 6] and antimicrobial activity [7]. The traditional physical and chemical methods are found to be hazards as they are using toxic chemicals in the preparation of nanoparticles. Also, these methods require bulky and expensive instruments. Hence the scientific community is in search of the green, simple and cheap route to synthesize the metal nanoparticles. Microbes had shown their ability to reduce the metal ions and hence forming the metal nanoparticles. Microorganisms such as algae, bacteria and fungi, etc. were informed for the production of metal nanoparticles. Mushroom is the spore bearing fruiting body of the fungus. These mushroom fungi are used for the fabrication of silver nanoparticles. Silver nanoparticles of size about 20 nm synthesized using mushroom (*Pleurotus Florida*) showed their antimicrobial activity

H. G. Bhangale (✉)
JDMVP's Arts, Commerce and Science College, Yawal, Maharashtra, India

S. G. Bachhav · K. M. Sarode · D. R. Patil (✉)
Nanomaterial Research Laboratory, R.C. Patel Arts, Commerce & Science College, Shirpur, Maharashtra, India

© Springer Nature Switzerland AG 2020

P. M. Pawar et al. (eds.), *Techno-Societal 2018*,
https://doi.org/10.1007/978-3-030-16962-6_34

against different pathogenic microorganisms [8]. Dry mushroom species were explored for the reduction of silver ions by Manzoor- Ul-haq et.al and produced spherical silver nanoparticles in the size range between 20 nm and 44 nm [9].

In the present work we had employed naturally grown mushroom for the production of silver nanoparticles. To the best of our knowledge this is the first report for the catalytic activity of the mushroom mediated silver nanoparticles in the reduction of methylene blue by $NaBH_4$.

2 Materials and Methodology

2.1 Chemicals and Ingredients

All the chemicals $AgNO_3$, NaOH, $NaBH_4$ etc. were used of analytical grade. Naturally grown mushroom (Fig. 1) found in agriculture region nearby Bhusawal city located at the bottom of Satpuda Mountain, India was used.

2.2 Preparation of Mushroom Extract

Approximately 5 g of fresh mushroom was washed with distilled water to remove the organic impurities present on it and then suspended in 100 ml deionized water in an Erlenmeyer flask. The flask was incubated at 30 ± 2^0 C in an orbital shaker at 110 rpm. After 48 h incubation the mushroom was filtered with plastic sieve and the extract collected was used for the synthesis of silver nanoparticles.

Fig. 1 Photograph of mushroom species

2.3 Biosynthesis of Silver Nanoparticles

The 25 ml of $AgNO_3$solution was mixed with 25 ml of mushroom extract to attain the final concentration of 1 mM and 0.5 ml NaOH solution was added to adjust alkaline pH of the reaction solution. The flask containing reaction medium was incubated at $30 \pm 2^{\circ}C$ in an orbital shaker at 110 rpm.

3 Characterization

The formation of the silver nanoparticles was visually detected and then confirmed by using UV-visible spectrophotometer Shimadzu 2450. The scanning was done between 200 nm and 800 nm. The size of the prepared silver nanoparticles was determined using particle size analyzer (Malvern Zetasizer ver. 6.34). For testing the stability of the nanoparticles zeta potential measurement was carried by the Malvern instrument V2.2. The catalytic performance of the mushroom synthesized silver nanoparticles was evaluated by observing the reduction of Methylene blue by $NaBH_4$.

4 Result and Discussion

4.1 Visual Observation

The change in colour of the reaction medium from colourless to reddish brown is the preliminary indication of the formation of silver nanoparticles. The mushroom filtrate maintains the original colour Fig. 2(a) while the filtrate treated with $AgNO_3$ changes its colour from colourless to reddish brown in 2 h and attains the maximum intensity within 10 h Fig. 2(b). This indicates that the reduction of silver ions occurred within 10 h. The reddish-brown colour of the solution is due to SPR in the nanoparticles [10].

4.2 UV-Visible Spectroscopy

The UV-visible spectra of the formed silver nano-particles have been shown in the Fig. 3. The SPR absorbance band was recorded at 419 nm confirms the production of the silver nanoparticles. The single band was observed indicatings the formation of spherical particles [11].

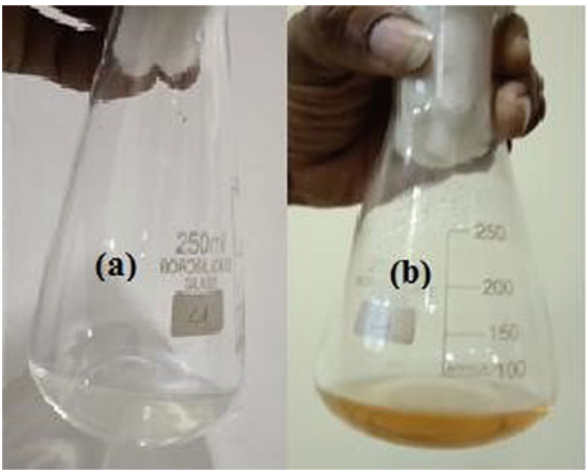

Fig. 2 (**a**) Filtrate and (**b**) AgNPs formed

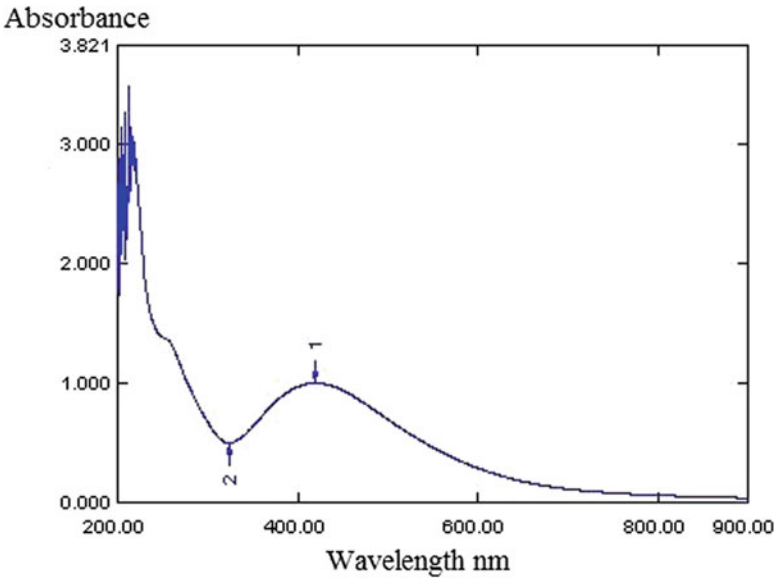

Fig. 3 UV-visible spectra of AgNPs

4.3 Particle Size Analyser and Zeta Potential

The zeta potential measurement was performed to determine the surface potential of the prepared nanoparticles. It gives the information about surface charge of the nanoparticles [12]. Zeta potential of the silver nanoparticles was measured using the LASER zeta meter Malvern Sizer Ver. 6.34. The zeta potential measured value was found to be about −10 mV (Fig. 4a). The negative value of the zeta potential indicates the stability of the silver nanoparticles.

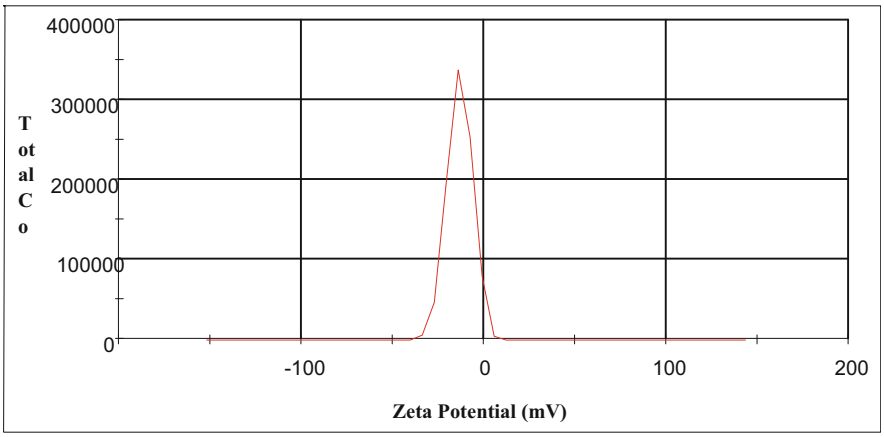

Fig. 4 (**a**) Zeta potential distribution

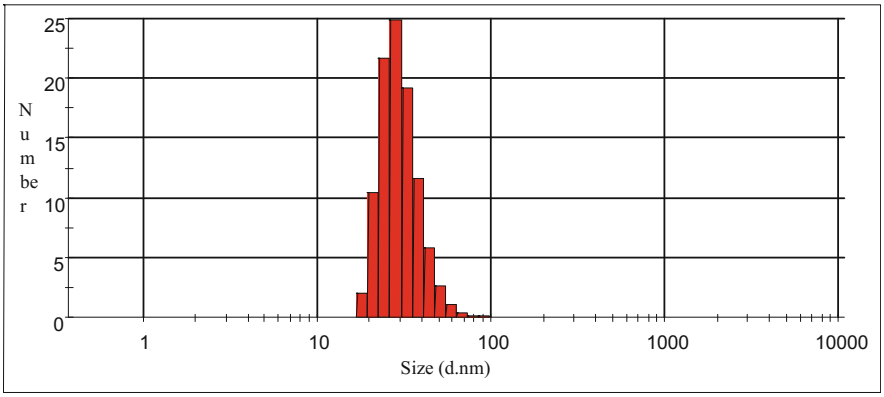

Fig. 4 (**b**) Particle size analysis of green synthesized silver nanoparticles

Particle size analyzer measurement was used to determine the average particle size, size distribution and polydispersity index of the prepared silver nanoparticles. From the particle sizer analysis, it was found that the formed silver nanoparticles were in the size range between 20 and 50 nm (Fig. 4b).

4.4 Catalytic Activity

To evaluate the catalytic performance of the mushroom mediated silver nanoparticles the reduction of the M.B. (Fig. 5) by $NaBH_4$ was observed visually and by using UV-visible spectroscopy. For this purpose, reactions were carried in two tubes 1 and 2 with proper proportions of M.B. and NaBH4 [13–16]. In tube

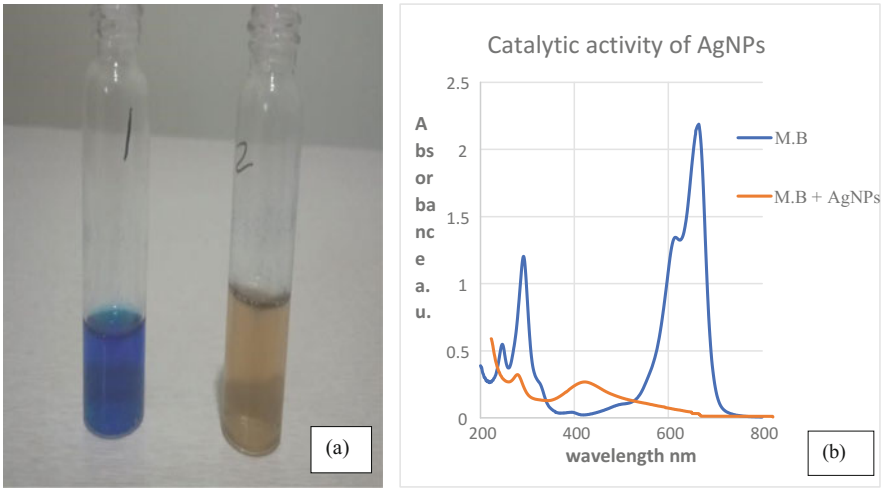

Fig. 5 Reduction of M.B. (**a**) Visually (**b**) UV-Visible spectra

2, 0.5 ml colloidal solution of silver nanoparticles was added. Immediately the reaction started in tube 2 and within 5 min the reaction solution becomes colourless and then light yellow which may be due to presence silver nanoparticles.

5 Conclusion

The naturally obtained mushroom from agriculture zone has shown their potential for the fabrication of silver nanoparticles at a rapid rate. The prepared silver nanoparticles are spherical with the average size 30 nm. These nanoparticles also exhibit their catalytic activity in the reduction of M.B. by $NaBH_4$ within 5 min. Thus, the formed silver nanoparticles play a significant role in the reduction of methylene blue by $NaBH_4$.

References

1. Vasestha A, Dimova-Malinovska D (2005) Nanostructured and nanoscale devices, sensors and detectors. Sci Technol Adv Mater 6:312–318
2. Midha K, Singh G, Nagpal M, Arora S (2015) Potential application of silver nanoparticles in medicine. Nanosci Nanotechnol Asia 5:10
3. Yokesh Babu M, Janaki Devi V, Ramakritinan CM, Umarani R, Taredahalli N, Kumaraguru AK (2014) Application of biosynthesized silver nanoparticles in agricultural and marine pest control. Curr Nanosci 10:9
4. Ip M, Lui SL, Poon VK, Lung I, Burd A (2006) Antimicrobial activities of silver dressings: an in vitro comparison. J Med Microbiol 55:59–63

5. Bhakya S, Muthukrishnan S, Sukumaran M, Muthukumar M, Senthil Kumar T, Rao MV (2015) Catalytic degradation of organic dyes using synthesized silver nanoparticles: a green approach. J Bioremed Biodegr 6(5):9
6. Princy KF, Manomi S, Philip R, Gopinath A (2016) Antibacterial and catalytic efficacy of biosynthesized silver nanoparticles using marine seaweed Padina Tetrasromatica. Nano Bimedeng 8(1):16–23
7. Mandal P (2018) Biosynthesis of silver nanoparticles by Plumeriarubra flower extract: characterization and their antimicrobial activities. Int J Eng Sci Invent 7(1):1–6
8. Bhat R, Deshpande R, Ganachari SV, Huh DS, Venkataraman A (2011) Photo-irriated biosynthesis of silver nanoparticles using edible mushroom pluerotus florida and their antibacterial activity studies. Bioinorg Chem Appl 2011:7
9. Ul-haq M, Rathod V, Patil S, Sing D, Krishnaveni R (2014) Isolation and screening of mushrooms for potent silver nanoparticles production from Bandipora District (Jammu and Kashmir) and their characterization. Int J Curr Microbiol App Sci 3(9):704–714
10. Mulvaney P (1996) Surface plasmon spectroscopy of nanosized metal particles. Langmuir 12:788–800
11. Desai R, Mankad V, Gupta S, Jha PK (2012) Size distribution of silver nanoparticles: UV-visible spectroscopic assessment. Nanosci Nanotechnol Lett 4:30–34
12. Haider MJ, Mehdi MS (2014) Study of morphology and zeta potential analyzer for the silver nanoparticles. Int J Sci Eng Res 5(7):381–387
13. Suvith VS, Philip D (2014) Catalytic degradation of methylene blue using biosynthesized gold and silver nanoparticles. Spectrochim Acta A Mol Biomol Spectrosc 118:526–530
14. Sarode KM, Bachhav SG, Patil UD, Patil DR (2018) Synthesis and characterization of MoS -graphene nanocomposite. In: Pawar P, Ronge B, Balasubramaniam R, Seshabhattar S (eds) Techno-societal 2016. ICATSA 2016. Springer, Cham
15. Sarode KM, Patil UD, Patil DR (2018) 3D MoS -graphene composite as catalyst for enhanced efficient hydrogen evolution. Int J Chemical Phys Sci 7(2):81–91
16. Sarode KM, Patil DR (2018) Metallic 1T phase MoS_2 Nanosheets for Supercapacitor application. J Nanoscience Technology 4(3):371–373

ResearchGate

See discussions, stats, and author profiles for this publication at: https://www.researchgate.net/publication/360860454

Microbial Synthesis of Gold and Silver Nanoparticles and their Characterization

Article · May 2022

CITATION
1

READS
114

4 authors, including:

Hemant Bhangale
J.D.M.V.P. Co.-Op. Samaj's Arts, Commerce and Science College, Yawal, Dist.- Jalgaon
5 PUBLICATIONS **24** CITATIONS

SEE PROFILE

All content following this page was uploaded by Hemant Bhangale on 26 May 2022.

The user has requested enhancement of the downloaded file.

International Journal of Life Sciences
International Peer Reviewed Open Access Journal

Special Issue A 13, December 2019
ISSN:2320-7817(p) 2320-964X(0)

Original Article Open Access

Microbial Synthesis of Gold and Silver Nanoparticles and their Characterization

Bhangale HG[1], Rane Nikita D [2] and Sonawane SM[3]

[1,3]JDMVP A.C.S. College, Yawal, Maharashtra, India.
[2]QC Chemist, Dikora Bulk Drug Pvt Ltd., Bhusawal, India.

Manuscript details:

Available online on
http://www.ijlsci.in

ISSN: 2320-964X (Online)
ISSN: 2320-7817 (Print)

Editor: Dr. Arvind Chavhan

Cite this article as:
Bhangale HG, Rane Nikita D and Sonawane SM (2019) Microbial Synthesis of Gold and Silver Nanoparticles and their Characterization, *Int. J. of. Life Sciences*, Special Issue, A13: 305-309.

Copyright: © Author, This is an open access article under the terms of the Creative Commons Attribution-Non-Commercial - No Derives License, which permits use and distribution in any medium, provided the original work is properly cited, the use is non-commercial and no modifications or adaptations are made.

ABSTRACT

We report the novel biological route for the synthesis of gold and silver nanoparticles using naturally grown mushroom species which is the facile, rapid cost effective and environmentally benign approach. The formation of nanoparticles was observed by change in colour of the reaction medium and then confirmed by using UV-visible spectroscopy. The SPR peak appeared at 530 nm for gold and for silver at 415 nm confirm the formation of the gold and silver nanoparticles respectively. PSA characterization was performed for size and distribution of the formed nanoparticles. The study identifies mushroom species as a potential candidate for biosynthesis of metal nanoparticles in large scale production.

Key words: Microbial synthesis, Gold and Silver nanoparticles, UV-visible spectroscopy, FTIR, PSA.

INTRODUCTION

Particles in the size range between 1 to 100 nm are identified as the nano-particles. Metal nanoparticles found many applications in various fields like medicine (Nakamura *et al*., 2019), agriculture (Anand and Madhulika, 2019), electronic (Wyatt *et al*., 2000), industries due to their unique antimicrobial (Qasim *et al*., 2018), optical (Huang *et al*. 2010), electrical properties (Diantoro *et al*., 2018). Gold, silver and copper nanoparticles exhibit the surface plasmon resonance in the visible range. Gold and silver have shown a great microbial activity for a wide range of microorganisms. Conventional physical and chemical methods were used for the synthesis of these nano-particles. But these methods involve the use and release of toxic chemicals during the synthesis process and causes the environmental pollution. Also, these methods are energy consuming and costly for the production of nano-particles. Biosynthesis of the nanoparticles involve the use of microorganisms, plants and templates which is the green approach. Fungi have shown their potential for the reduction of silver and gold ions form their nanoparticles (Birla *et al*., 2013; Jain, 2011). Mushrooms are the group of fungi which are widely used as a food and medicine in different parts of the world since long time (Manzoor-ul-haq, 2014). In the present study the mushroom extract was screened for its potential in the synthesis of the gold and silver nanoparticles and the formation was confirmed by UV-visible spectroscopy.

MATERIALS AND METHODS

Chemicals $HAuCl_4$ and $AgNO_3$ were used of analytical grade.

Collection of Mushroom Species

Mushrooms were collected in the agriculture region of Bhusawal in Jalgaon district. Mushrooms were collected in the rainy season when the conditions for their growth are favourable and easy availability. Photographs of the specimens were taken in their natural habitat on the shabby grass.

Preparation of extract

Fresh 10 gram of mushroom species were putted in 100 ml deionized water contained in Erlenmeyer flask. The flask was incubated in an orbital shaker at 110 rpm for 72 h at temperature 30 ^{0}C. The biomass was then filtered through Whatmann No. 1 filter paper and the filtrate was used for the synthesis of gold and silver nanoparticles.

Biosynthesis of Gold and Silver nanoparticles

For the synthesis of gold nanoparticles 1mM solution of $HAuCl_4$ was prepared. Equal amount of mushroom extract was challenged with 1mM Auric chloride and the flask was incubated in an orbital shaker at 110 rpm at temperature 30 ^{0}C for 12 h.

For the synthesis of silver nanoparticles equal amount of 1mM silver nitrate solution was added in mushroom extract contained in a flask. The flask was then incubated in an orbital shaker under the conditions that used for the synthesis of gold nanoparticles.

Characterization of Gold and Silver nanoparticles

The formation of the metal nanoparticles was detected visually from the change in colour of the reaction medium. UV-visible spectroscopy is used for the confirmation of the formation of the metal nanoparticles. The size of the prepared silver nanoparticles was determined using particle size analyser (Malvern Zetasizer ver. 6.34).

RESULT AND DISCUSSION

The preliminary indication for the synthesis of gold and silver nanoparticles is the change in colour of the reaction medium to pink and brown for gold and silver respectively from its original colour.

UV-visible spectroscopy

UV-visible spectroscopy is the characterization technique used to study the surface plasmon resonance exhibited by the metal nanoparticles. The UV-visible spectra of the prepared gold and silver nanoparticles are shown in fig. 4 and fig. 5 respectively. The SPR peak appeared at 530 nm in fig.4 confirm the formation of gold nanoparticles and the occurred at 415 nm in fig. 5 indicate the formation of silver nanoparticles. The single peak appeared in the UV-visible spectra indicates that the formed particles were spherical in shape [Desai R].

Figure 1. Photograph of mushroom species.

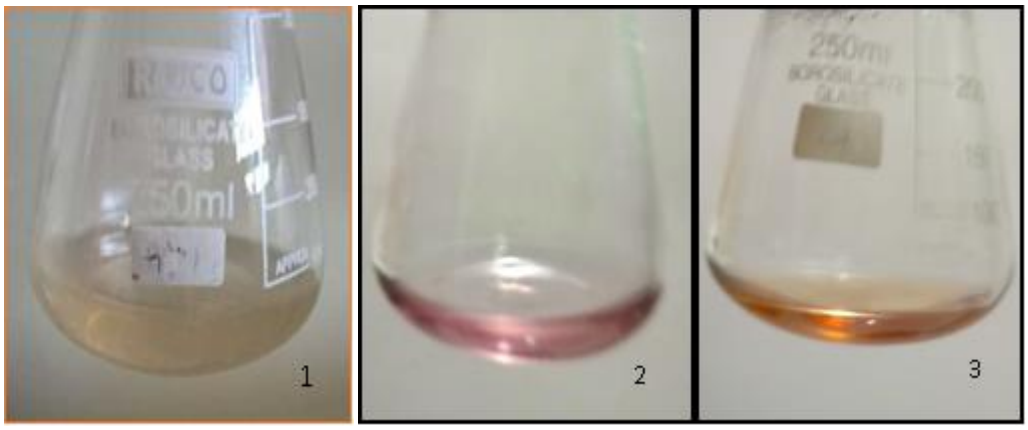

Figure 2. Mushroom extract. Figure 3. Flask 2 showing gold NPs and flask 3 showing silver NPs.

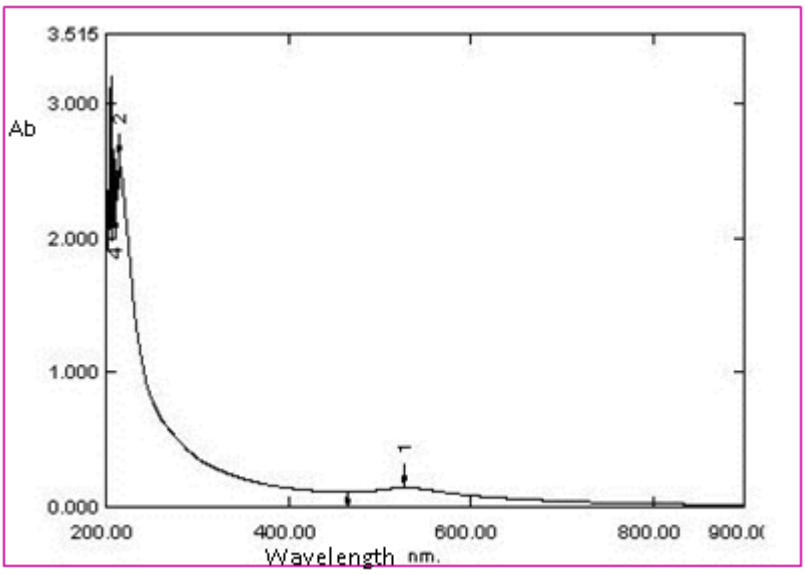

Figure 4. UV-visible spectra of Gold NPs

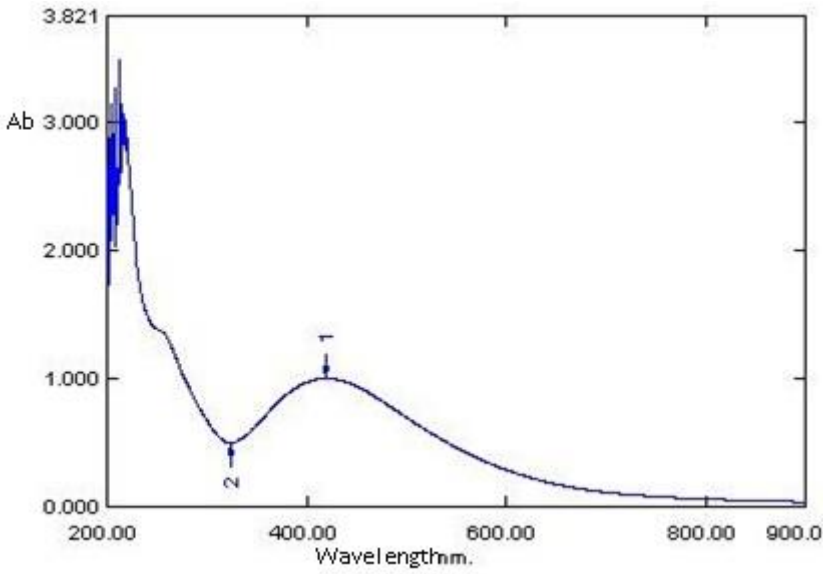

Figure 5. UV-visible spectra of silver NPs.

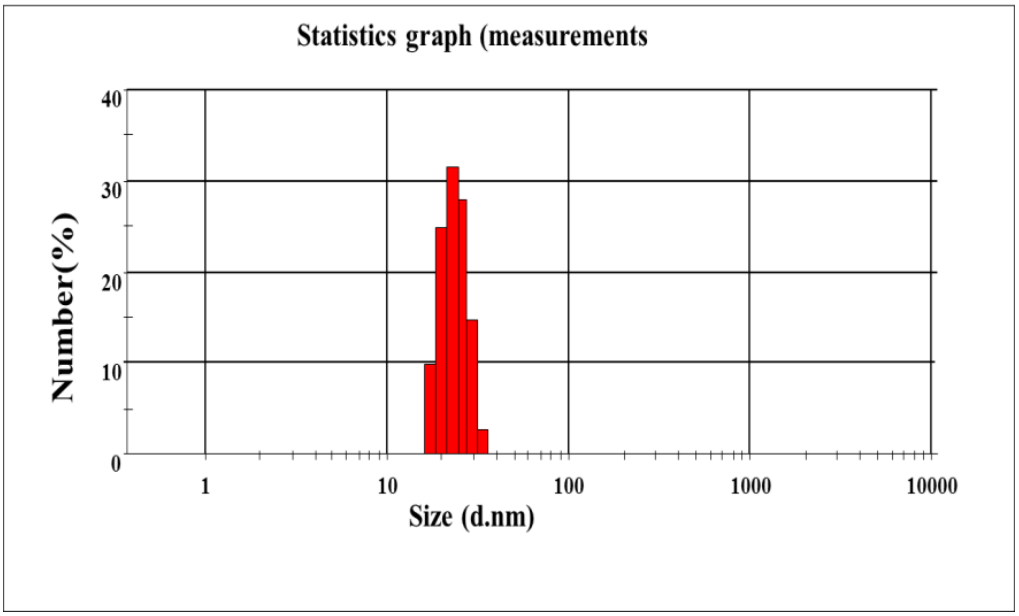

Figure 6. PSA histogram for gold nanoparticles.

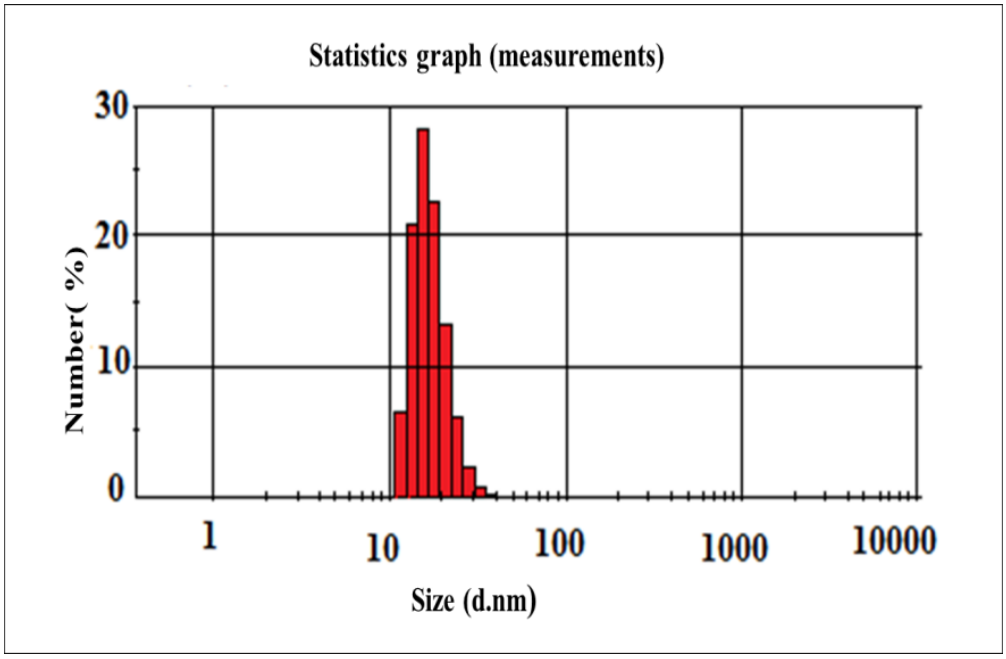

Figure 7. PSA histogram for silver nanoparticles.

CONCLUSION

Mushroom species found in the agriculture have shown their potential for the reduction of gold and silver ions and form their nanoparticles. The formed nanoparticles were spherical in shape and in the size range 10 nm to 50 nm. The method is best suited for large scale production in industries.

Conflicts of interest: The authors stated that no conflicts of interest.

REFERENCES

1. Anand R and Madhulika B (2019), Silver nanoparticles (AgNPs): as nanopesticides and nanofertilizers, MOJ Biol Med,4(1):19–20.
2. Birla S *et al.* (2013) Rapid Synthesis of Silver Nanoparticles from Fusarium oxysporum by Optimizing Physicocultural Conditions, The Scientific World Journal, (2013): pages 12.
3. Desai R *et al.* (2012) Size Distribution of Silver Nanoparticles: UV-Visible Spectroscopic Assessment, Nanoscinece and Nanotechnology Letters, 4: 30-34.

4. Diantoro M *et al*. (2018), Modification of Electrical Properties of Silver Nanoparticles, Silver Nanoparticles - Fabrication, Characterization and Applications, Khan Maaz, Intech Open, pp:233-248.
5. Huang X and Mostafa A (2010), Gold Nanoparticles: Optical properties and implementations in cancer diagnosis and photothermal therapy, Journal of Advanced Research 1:13–28.
6. Jain N *et al*. (2011), Extracellular biosynthesis and characterization of silver nanoparticles using *Aspergillus flavus* NJP08: A mechanism perspective, Nanoscale, 3: 635-641.
7. Manzoor-ul-haq *et al*. (2014) Isolation and Screening of Mushrooms for Potent Silver Nanoparticles Production from Bandipora District (Jammu and Kashmir) and their characterization, Int. J. Curr. Microbiol. App. Sci ,3(9):704-714.
8. Nakamura S, *et al*. (2019) Synthesis and Application of Silver Nanoparticles (Ag NPs) for the Prevention of Infection in Healthcare Workers, International Journal of Molecular Sciences: 20(15): 3620.
9. Qasim M *et al*. (2018). Antimicrobial activity of silver nanoparticles encapsulated in poly-*N*-isopropylacrylamide-based polymeric nanoparticles, Int. J. Nanomedicine,3(13):235-249.
10. Wyatt P. *et al*. (2000) Electronic and Optical Properties of Chemically Modified Metal Nanoparticles and Molecularly Bridged Nanoparticle Array,*J. Phys. Chem. B.* , 104, (38): 8925-8930.

© 2019 | Published by IJLSCI

View publication stats

Microbial Synthesis of Silver Nanoparticles Using *Aspergillus flavus* and Their Characterization

Hemant Bhangale, K.M. Sarode, A.M. Patil and D.R. Patil

Keywords *Aspergillus flavus* · Silver nanoparticles · Biosynthesis · UV · SEM · TEM

1 Introduction

Nanotechnology is the design, characterization, production and applications of structures, devices, and systems by controlled manipulation of size and shape at the nanometer scale that produces structures, devices, and systems with at least one novel/superior characteristics or property [1]. Nanoparticles are the fundamental units of the nanotechnology. Nanoparticles are typically in the range from 1 to 100 nm and can be tuned in various sizes and shapes, each having different quantum mechanical properties and hence different exploitation. The size of the nanoparticles is the most important quality of nanoparticles.

Silver nanoparticles have potential applications in the field of photonics [2], electronics [3], optical receptor [4], Biolabeling [5] and antimicrobial agents [6], water filters and also used in solar energy applications. Several methods like physical and chemical routes are employed to prepare silver nanoparticles of various shapes and sizes which are found to be expensive and involve the use of toxic chemicals. There is a growing need to develop cost effective and environmentally friendly technique for the synthesis of silver nanoparticles. Exploitation of microbial cells is a novel approach for the synthesis of metal nanoparticles [7]. The biological route is the reliable protocol for the synthesis of nanoparticles over a range of chemical composition, sizes, and high monodispersity. Biological synthesis takes place within living organisms and is catalyzed by enzymes.

H. Bhangale (✉) · K.M. Sarode · A.M. Patil · D.R. Patil
Nanomaterial Research Laboratory, R.C. Patel ACS College, Shirpur, Maharashtra, India
e-mail: hgbhangale67@gmail.com

© Springer International Publishing AG 2018

P.M. Pawar et al. (eds.), *Techno-Societal 2016*,
DOI 10.1007/978-3-319-53556-2_45

2.4 FTIR Measurements

The presence of proteins and potential biomolecules responsible for the synthesis of silver nanoparticles was analyzed by FTIR spectroscopy.

2.5 Scanning Electron Microscopy

The solution of silver nanoparticles was obtained in powder form for scanning electron microscopy.

2.6 TEM Measurements

A drop of colloidal silver nanoparticles solution was placed on the carbon-coated copper grid and dried by allowing water to evaporate at room temperature. Electron micrographs were obtained using Philips CM 200 transmission electron microscopy.

3 Result and Discussion

3.1 Biosynthesis of Silver Nanoparticles

The filtrate was pale yellow in color before the addition of silver nitrate solution and this change to brown in color on completion of the reaction with Ag^+ ions after 48 h (Fig. 1). The appearance of the brown color of the solution containing the cell

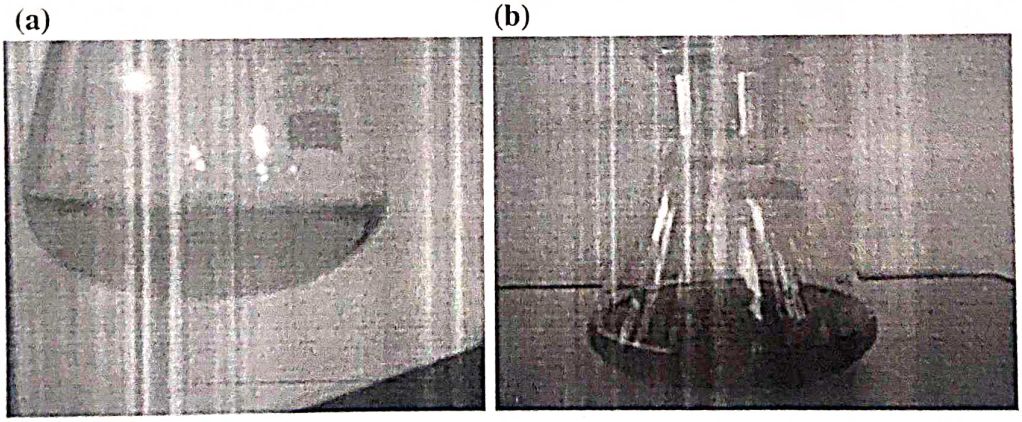

Fig. 1 a Flavus filtrate before treatment of $AgNO_3$ b after treatment

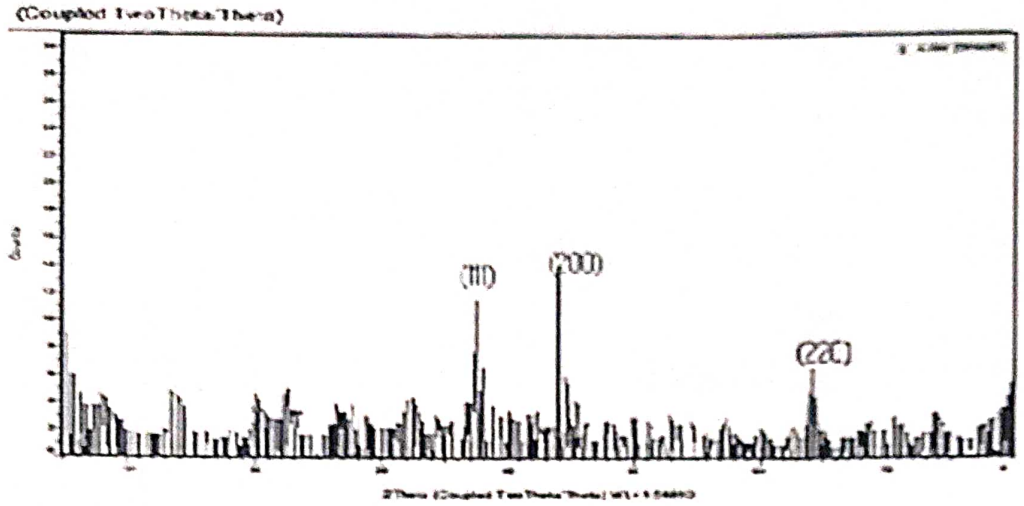

Fig. 3 XRD spectrum of synthesized silver nanoparticles

Fig. 4 Scanning electron micrograph of the silver nanoparticles

3.4 SEM

The scanning electron micrograph of silver nanoparticles synthesized by treating cell filtrate with 1 mM silver nitrate solution is depicted in Fig. 4. Which clearly shows surface deposited silver nanoparticles and some agglomeration was also observed.

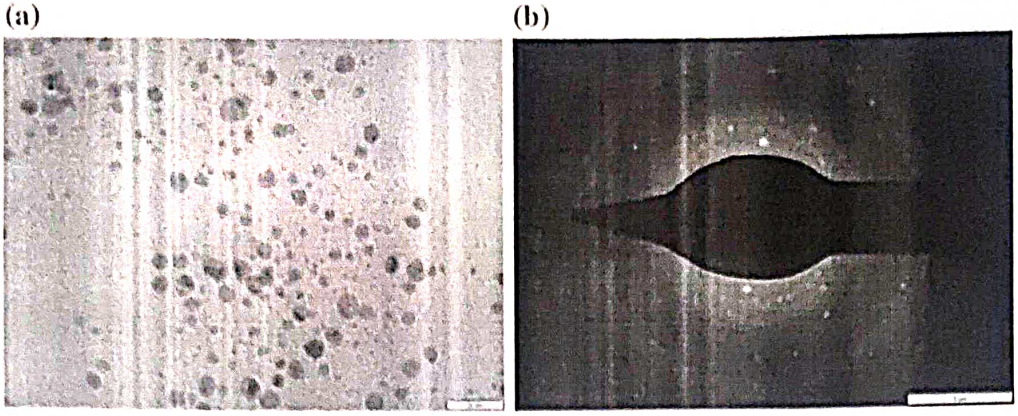

Fig. 6 a TEM of silver nanoparticles, b diffraction pattern of silver nanoparticles

4 Conclusions

The fungus *Aspergillus* has a potential to synthesize silver nanoparticles extracellularly and is the developing nano factories because of downstream processing and handling of biomass would be simple. UV-visible spectra show the maximum absorption at 409 nm with a single SPR band confirm that the particles are spherical. SEM observations show that the particles synthesized in the range between 10 and 55 nm with spherical in size. FTIR analysis confirms the presence of the proteins in the cell filtrate solution of silver nanoparticles. The synthesized silver nanoparticles were found to stable over a period of three months. TEM reveals that the particles were spherical with the average size of 7.13 nm and diffraction pattern exhibit the FCC structure.

References

1. Sharon M, Sharon M, Pandey S, Oza G (2012) Bio-nanotechnology concepts and applications. Ane Books, New Delhi
2. Velicov KP, Zegers GE, Von Blaaderen A (2003) Synthesis and characterization of large colloidal silver particles. Langmuir 19:1384
3. Rao CNR, Kulkarni GU, Thomas PJ, Edwards PP (2000) Metal nanoparticles and their assemblies. Chem Soc Rev 29:27–35
4. Schultz S, Smith DR, Mock JJ, Schultz A (2000) Single target molecule detection with nonbleaching multicolor optical immunolabels. Proc Natl Acad Sci 97:996
5. Hayat MA (1989) Colloidal gold: principles, methods and applications. Chem Phys 90:51
6. Valodkar M, Bhadorai A, Pohnerkar J, Mohan M, Thakore S (2010) Morphology and antibacterial activity of carbohydrate stabilized silver nanoparticles. Carbohydr Res 345:1767–1773
7. Vala AK et al (2014) Biogenesis of silver nanoparticles by marine derived fungus *Aspergillus Flavus* from Bhavnagar coast, Gulf of Khambhat, India. J Mar Biol Oceanogr 3:1

Prashant M. Pawar · Babruvahan P. Ronge
R. Balasubramaniam · Anup S. Vibhute
Sulabha S. Apte *Editors*

Techno-Societal 2018

Proceedings of the 2nd International Conference on Advanced Technologies for Societal Applications - Volume 2

Springer

Green Synthesis of Silver Nanoparticles Using Mushroom Species, Their Characterization and Catalytic Activity

H. G. Bhangale, S. G. Bachhav, K. M. Sarode, and D. R. Patil

Keywords Green synthesis · Silver nanoparticles · UV-visible spectra · FTIR · PSA · Zeta potential · Catalytic activity

1 Introduction

Nanoparticles are the particles in the size range between 10 nm and 100 nm and possess distinct properties as compared to their parent material. Metal nanoparticles due to their significant properties found applications in various fields such as optics, electronics, agriculture, medicine etc.

It is well known that silver nanoparticles exhibited excellent optical, electrical and thermal properties, hence useful in various fields such as sensing [1], catalysis, bio-imaging, medical [2], agriculture [3] etc. Silver nanoparticles have large applications including skin lotions and creams containing silver to prevent infection of burns and open wounds [4]. Silver nanoparticles exhibit strong catalytic [5, 6] and antimicrobial activity [7]. The traditional physical and chemical methods are found to be hazards as they are using toxic chemicals in the preparation of nanoparticles. Also, these methods require bulky and expensive instruments. Hence the scientific community is in search of the green, simple and cheap route to synthesize the metal nanoparticles. Microbes had shown their ability to reduce the metal ions and hence forming the metal nanoparticles. Microorganisms such as algae, bacteria and fungi, etc. were informed for the production of metal nanoparticles. Mushroom is the spore bearing fruiting body of the fungus. These mushroom fungi are used for the fabrication of silver nanoparticles. Silver nanoparticles of size about 20 nm synthesized using mushroom (*Pleurotus Florida*) showed their antimicrobial activity

H. G. Bhangale (✉)
JDMVP's Arts, Commerce and Science College, Yawal, Maharashtra, India

S. G. Bachhav · K. M. Sarode · D. R. Patil (✉)
Nanomaterial Research Laboratory, R.C. Patel Arts, Commerce & Science College, Shirpur, Maharashtra, India

© Springer Nature Switzerland AG 2020
P. M. Pawar et al. (eds.), *Techno-Societal 2018*,
https://doi.org/10.1007/978-3-030-16962-6_34

International Multilingual Research Journal

Vidyawarta®

MAH/MUL/03051/2012
ISSN-2319 9318

Special Issue

17-18

श्री शिवाजी विद्या प्रसारक संस्था का

भाऊसाहेब ना.स.पाटील साहित्य एवं मुल्ला फिदा अली मुल्ला अब्दुल अली वाणिज्य महाविद्यालय, देवपुर, धुले (महाराष्ट्र)

स्नातकोत्तर हिंदी विभाग

एवं

उत्तर महाराष्ट्र हिंदी प्राध्यापक परिषद

के संयुक्त तत्वावधान में आयोजित

वार्षिक अधिवेशन एवं राष्ट्रीय हिंदी संगोष्ठी

'इक्कीसवीं सदी का हिंदी कथा-साहित्य : विविध आयाम'

रविवार, ४ फरवरी २०१८

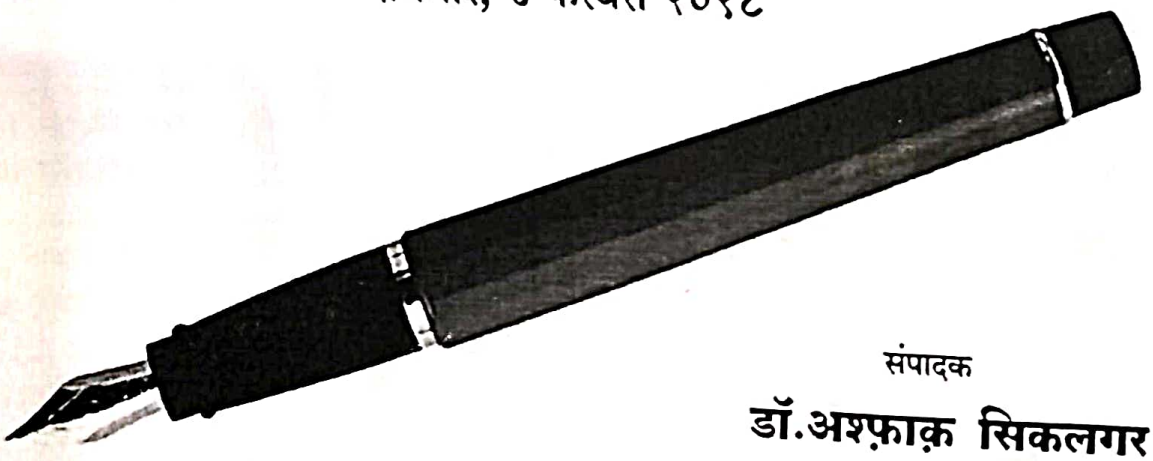

संपादक

डॉ.अश्फ़ाक़ सिकलगर

54) करुणा उपन्यास में चित्रित दलित चेतना || 173
इबरार खान

55) एक औरत : तीन बटा चार' कहानी संग्रह में चित्रित भौतिकता का यथार्थवादी चित्रण || 177
प्रा. संजय प्रल्हाद महाजन

56) काला पहाड़ उपन्यास में जनजातिय जीवन || 180
डॉ. मनोहर हिलाल पाटील

57) जहाँ जिन्दगी कैद है में मानवीय मूल्यों का विघटन || 183
प्रा.डॉ. कल्पना राजेंद्र पाटील

58) समयातीत गाथाएँ स्त्रियों की - मृणाल पांडे || 185
डॉ. राजेंद्र गणपत पाटील

59) आदिवासी कंजर समाज की नारी का जीवन्त दस्तावेज - रेत || 187
प्रा. शेख जाकीर एस.

60) अनामिका के कहानियों में चित्रित नारी || 190
प्रा. प्रल्हाद विजयसिंग पावरा

61) मृदुला गर्ग के मिलजुल मन उपन्यास में नारी चित्रण || 194
प्रा.डॉ.वनिता त्र्यंबक पवार

62) "ग्लोबल गाँव के देवता उपन्यास का मूल्यबोध" || 199
डॉ. अशोक एम. पवार

63) मानवीय संदर्भो को तलाशता यथार्थ — 'मुर्दहिया' || 202
प्रा.दिलीप पी.पाटील,जि.जलगांव

64) ``सुरजपाल चौहाण कृत `तिरस्कृत` में दलित चेतना`` || 204
प्रा. विष्णु जी. राठोड

65) `मोहनदास` कहानी में चिंतन के विविध आयाम || 206
प्रा. रविंद्र रामदास खरे

66) शिवानी की कहानियों में चित्रित सामाजिक समस्याएँ || 209
प्रा. निंबा लोटन वाल्हे

67) मार्च, माँ ओर साकुरा कहानी संग्रह के संदर्भ में || 211
तायडे राजाराम बाबुराव

https://sites.google.com/site/vidyawartajournal http://www.

भी आज मॉडर्न और सभ्य समाज की औरतें जो कुछ नहीं पा सकती उसे एक खिलावड़ी रूक्मिणी पा लेती है। दांवपेंच, छल-प्रपंच के साथ अपनी देह को धरमपुरा सीट के चुनाव के लिए हथियार बनाकर जिस चतुराई के साथ वह चुनाव जीतती है और उपमंत्री पद की शपथ लेती है, वह विस्मयकारी है।''

अतः भगवानदास मोरवाल जी का यह उपन्यास नारी अस्मिता और कंजरजाति के अस्तित्व को बचाए रखने का प्रयास करता है। यह उपन्यास कंजर जाति की आस्था धार्मिक विश्वास, समाज, संस्कृति का आईना है। वास्तव में यह अनुपम है। इसमें कंजर जनजाति का इतिहास रीति-रिवाज और उनकी सामाजिक जीवन आदि का प्रामाणिक चित्रण हुआ है। जो निश्चित रूप से प्रशंनीय हैं।

सन्दर्भ ग्रन्थ :-

१) रेत - भगवानदास मोरवाल - पृष्ठ २२
२) पूर्ववत - पृष्ठ ५५
३) पूर्ववत - पृष्ठ ५५
४) पूर्ववत - पृष्ठ १४४
५) पूर्ववत - पृष्ठ १६३
६) पूर्ववत - पृष्ठ १२१
७) पूर्ववत - पृष्ठ १८२
८) पूर्ववत - पृष्ठ ११२
९) पूर्ववत - पृष्ठ १११
१०) समीक्षा संपा. गोपालराय अप्रैल-जून २००८, पृष्ठ १५
११) उपन्यासकार भगवानदास मोरवाल - डॉ. मधु खराटे
१२) आदिवासी केन्द्रित हिन्दी उपन्यास - डॉ. प्रमोद चौधरी

□□□

60

अनामिका के कहानियों में चित्रित नारी

प्रा. प्रल्हाद विजयसिंग पावरा
हिंदी विभाग,
कला, विज्ञान एवं वाणिज्य महाविद्यालय, यावल, जि. जलगांव

समाज की गतिशीलता में स्त्री-पुरूष की संयुक्त और महत्वपूर्ण भूमिका होती है। कहा जाता है यह दोनों परिवाररूपी रथ के पहिए है। इनमें से किसी एक की गति शिथिल होने का तात्पर्य यह है दोनों में विरोधाभास की स्थिति आ गई है। इसलिए स्त्री और पुरुष दोनों एक-दूसरे को पूरक है। आचार्य रामचंद्र वर्मा ने नारी के स्वरूप को स्पष्ट करते हुए मानक हिंदी कोश में अपना विचार इस प्रकार व्यक्त किया है, ``विशेषत: वह स्त्री जिसमें लज्जा, सेवा, त्याग आदि गुणों की प्रधानता हो वह नारी है।``[१] अनामिका के उपन्यास `दिल्लू शेक्सपियर : द पोस्ट बस्तर` में मान्यता मॅडम के माध्यम से पारिवारिक स्थिति का चित्रण किया है। मान्यता मॅडम के बारे में उदाहरण द्रष्टव्य हैं,``घरेलू मुकदमें, मेरी बदनामियाँ, राजनैतिक गिरफ्तारियाँ, अनिश्चितताएँ, गलतफहमियाँ और लम्बी बिमारियाँ. ....! घरेलू रगड़े-झगडों और संकटों-तनावों की ये ही पेटेंट सूची हैं जिस पर टिक-टिक करता जीवन चुक जाता हैं।``[२] मान्यता मॅडम इन सारी समस्याओं के बावजूद भी अपने जीवन में संघर्षशील है। इस प्रकार अनामिक ने मान्यता मॅडम के जीवन में आई समस्याओं का चित्रण प्रस्तुत किया है।

समाज में प्रचलित प्रथाओं के अनुसार, नारी घर में, परिवार में और समाज में उपेक्षित थी। घर में सास-ससुर तथा पति की इच्छा के अनुसार ही रहती है। वह आर्थिक दृष्टि से परतंत्र और समाज में प्रताडित है। नारी को प्रेम करने का अधिकार नहीं था। नारी केवल उपभोग का साधन मानी जाती थी । पुरूषों की वासना का शिकार हो चुकी थी। इस सम्बन्ध में अरविंद जैन लिखते है ``सामंती व्यवस्था में नारी एक वस्तु है, संपत्ति है, संभोग और संतान की इच्छा पूरी करने वाली मादा है।``[३] परिवार में पितृसत्ता वर्चस्व के कारण नारी को घर में दुय्यम स्थान दिया जाता हैं। ऑफिस से आने पर स्त्री को पति के आज्ञा का पालन करना पड़ता हैं। अगर इसमें गलती होती है तो,

गालियां को बौछार सहनी पड़ती हैं। इस बारे में शीरीन कहती हैं, ``जैसे की हर घर में दूध और सब्जी का उठाना होता हैं न कि रोज इतना आना ही हैं, हमारे घर अब्बू की ढाई थोड़ी गोलाबारी, ढेर-सा कुआत रोज का उठाना था ! बाकी अलग से भी गाली-गलोज, डॉट-मार-मलामत और कोर्ट मार्शल के हजार प्रसंग !``[४] पुरूष अपने अधिकार का इस्तेमाल करता हैं। उसके मन के विरूध्द होनेवाली बातों पर अपनी भड़ास निकालता हैं। इतना ही नही बल्कि पशुता का व्यवहार करता हैं। शीरीन इस बारे में तारा से कहती है कि, ``अम्मी दरअसल अब्बू का बॉक्सिंग बेग हैं``[५] स्त्री को समाज में उपेक्षित पात्र के रूप में देखा गया है। यह किस्सा सिर्फ शीरीन के घर का ही नहीं बल्कि कई घरों का हैं। घर में स्त्री को मार-पीट, गाली-गलोज का शिकार होना पड़ता हैं। यह स्थिति सिर्फ घर में रहनेवाली स्त्रियों की ही नहीं बल्कि नौकरी करनेवाली स्त्री को भी शक की नजर से देखा जाता हैं। ऐसे घरो में किसी छुट्टी के दिन किसी व्यक्ति का फोन आता हैं तो वह उसे शक की नजर से देखता जाता हैं। इस बारें में शेफालिका कहती हैं कि, `हमारा संडे फंडे न होकर गनडें हो जाता। प्याले में तुफान उठते ही रहते।``[६] स्त्री को जीवन में संघर्ष करना पड़ता हैं। परिवार के किसी भी सदस्य की गलती होने से सारी मुसीबत माँ पर ही आती हैं। घर में पुरूष अपने अधिकारों का इस्तेमाल करके, घर से बाहर निकल जाने को कहता है। घर में स्त्री की औकात बता दी जाती हैं। शीरीन के पिताजी उसकी माँ को इसी तरह कहते हैं कि, ``ये देखो- सफाई की है, जूठन की ट्रे से सड़ा पड़ा हैं चीनी का डब्बा !.... और इस कपड़े के वार्डरोब पर खरोंच कैसे पड़ी... देखो, अभी उठके देखो- और सुनों, ऐसे किराएदारों की तरह बेदिली से घर में रहना हैं तो अपना रहने का इतंजाम कहीं ओर करो !चली जाओं ``[७] लेकिन स्त्री के पास कोई दूसरा पर्याय नहीं होता। अगर वह प्रयास भी करेगी तो अपने भाई को कहती है और भाई बुध्द की तरह अपने वाक्य कह देते हैं। इसका उदाहरण परिलक्षित होता हैं। जैसे, वह कहता है, कि ``हिम्मत नहीं हारो.... जैसे गजराज रणक्षेत्र में हर ओर से तीर आता हूआ देखकर भी लक्ष्य विमुख नहीं होता, तुम भी डटो, अपनी राह नहीं छोडों, तुमसे बड़ा सवाल स्पंदन का हैं तुम्हे दूसरा पति-प्रेमी मिल जाएगा, उसे दूसरा पिता कहाँ मिलेगा ?``[८] क्या स्त्री का अस्तित्व सिर्फ दूसरों के लिए हैं ? उसका खुद का जीवन नहीं होता? क्या उसकी अस्मिता, सम्मान स्त्री के लिए नहीं है ? इसका उत्तर अनामिका ने अवंतिका देवी के माध्यम से देने का सफल प्रयास किया हैं। अवंतिका देवी पति व्दारा घर से निकाली जाती है। वह सीपीएम की सांसद होती है। वह अपने अनुभव तारा को कहती है, कि ``ओर बेटा, एक तरह कॉल गर्ल औरत होती हैं-ब्याहता गृहस्थिन भी। कॉलगर्ल को यह छूट होती हैं कि हर कॉल पर वह प्रस्तुत न हो, पर गृहस्थिन की क्या मजाल। आगे याद हैं मुझे, कभी-कभी उनका प्रंचड क्रोध शांत करने के लिए या झगडे के संक्षिप्त समाधान के लिए खुद भी देह बिछा दी मैंने, एक ब्याहता के रूप में ही देह का उपयोग एक `ट्रेप` की तरह किया। जब कोई उपाय नहीं सूझा तो घर की `शांति` के लिए ओर अपने भी अज्ञात भयों से निजात पाने को एक `फंदे` की तरह देह बिछाई मैंने। जो बात सुनने को तैयार हो ही नहीं, उस पति के आगे एक `शॉर्टकट`की तरह अपनी देह बिछा देने को मजबूर पत्नियों की व्यथा-कथा किसी कॉलगर्ल से कम नहीं होती उस क्षण।``[९] घर में स्त्री शांति के लिए देह का इस्तेमाल करती है। इस प्रकार स्त्री जीवन में संघर्ष के साथ अपना मार्ग खोजने का प्रयास करती है।

अनामिका एक नारी के मन की करूण गाथा प्रस्तुत करती हैं। समाज में चलने वाली कुप्रवृत्तियों में घरेलु हिंसा भी महत्वपूर्ण हैं। घर के चार दीवारों के बीच चलनेवाली इन घटनाओं पर किसी का ध्यान नहीं जाता। स्त्री को पति रात को मार-पीटकर अपना वर्चस्व दिखाता है। इस तरह स्त्री शोषण का शिकार होती है। स्त्री अपने विचारों, भावानाओं का दमन करती है। दूसरे दिन अपने-अपने काम करती है। इस बारे में अनामिका लिखती है, ``पिट-पिटकर औरत क्या करेगी ? कुछ देर चिखेगी, फिर रोएगी-रुठेगी और उसके बाद धीरे-धीरे बिना मनाए मानकर काम-धाम में व्यवस्थित हो लेगी, पहले घर में मुस्कुराएगी और उसके बाद बाहर जाकर भी लगेगी हंसने, सभा में, मंच पर, हर जगह नजर आएगी औरत की हंसी, और कुछ नजर नहीं आएगी। क्या हंसी ही नये जमाने का घुघट हैं।``[१०] वह भी क्या कर सकती हैं। किसी के आगे वह नहीं बता सकती अगर ऐसा बता दिया तो लोग एक बुलाने पर दस आ जाते हैं। वह स्त्री की पीड़ा कम करने नहीं बल्कि अपनी भूख मिटाने का एक साधन मात्र के रूप में देखते हैं। किसी बेसहारा स्त्री को सिर्फ एक अच्छा मित्र चाहिए, पुरूष नहीं। इस संदर्भ में अनामिका लिखती है कि, ``सर्वतोमुखी प्रेम का दावा ठोंकने वाले देह-लोलुप प्रेमी तो `तीन बुलावै, तेरहा आवै` की तरह थोक में राह-मिल जाते हैं मगर देह-निरपेक्ष कोई सच्चा दोस्त नहीं मिलता किसी अकेली स्त्री को।``[११] समाज में बेसहारा स्त्रियों के प्रति पुरुष कठोरता का व्यवहार करते है। उसे उपभोग का साधन मानते है।

स्त्री अपने दुख दूसरों के पास व्यक्त नहीं करती। मान्यता मैडम अपने पारिवारिक जीवन का रथ ढो रही थी लेकिन मान्यता मैडम और प्रो.आशिष बचपन से साथ में पढा-लिखा करते थे। ये दोनो शादी भी करने वाले थे, लेकिन प्रो. आशिष विदेश जाने के बाद उनका विवाह नहीं हो सका। लेकिन वह विदेश से लौटकर कहता है

कि, ''मैंने स्वयं को पूरा अर्पित कर रखा है, आपसे तो कुछ भी अपेक्षा नहीं की, पढ़िए-लिखिए, अपने दायित्व पूरा करीए, बस इतनी छूट दीजिए की हर दिन एक बार दस मिनट का खातिर फोन कर लिया करूं !''[12] समाज में ऐसे रिश्तों को क्या नाम देना चाहिए ? क्या एक स्त्री और पुरुष के बीच मित्रता नहीं हो सकती ? क्या वह सच्चा मित्र नहीं हो सकता ? ऐसे कई प्रश्न स्त्री के मन में उठते है। मान्यता मेडम कहती है, ''मेरे स्वभाव में यही खराबी है कि स्नेह को लोग प्रेम समझ ा लेते हैं। और तरह-तरह की उम्मीदें लगते है करने जिनसे मेरा मन घबड़ा जाता है।.... अब इसे कैसे निबटूं !''[13] अनामिका ने मान्यता मेडम के माध्यम से स्त्री की मनोदशा का चित्रण किया है।

प्रेम संसार को सरस बनाकर गतिशील रखने का मुख्य आधार है। प्रेम पर लोभ, द्वेष और वासना का उभरता रंग उसे विकृत करता जा रहा है। पूर्व समय में 'प्रेमिका' शब्द पूर्ण सम्मान से लिया जाता था। क्योंकि दोनों पक्षों के प्रेम में सामायिक रंग, मान्यताओं को सम्मान, पारिवारिक सहजता और जीवन जीने का सहज मार्ग दिखाई देता था। लाल और रूनू दोनों प्रेम करते हैं। प्रेम के आवेग में उनके शारीरिक संबंध हो जाते हैं। जब शादी की बात आती है, तो लाल उसे अपने कर्तव्य की याद दिलाता हैं। लाल अन्य पुरुषों की तरह सपना समझकर भूला देना चाहता हैं। वह कहता है कि, ''तुम्हारी कोख में मेरा बीज तो है ही ! इसे ही उदात्त भाव से पालना या चाहो तो मुक्ति पाकर किसी अच्छे लड़के से ब्याह के लिए भी स्वंतत्र हो ! मेरी तरफ कोई बाधा नहीं देखते-देखते अपने नये घर-संसार में मुझे भूल जाओगी। समझना कि एक सपना देखा था......''[14] क्या समाज में रहकर बिना विवाह के बच्चे को जन्म देना संभव है ? आज समाज में 'प्रेम' शब्द विकृत हो गया है लेकिन अफजल जैसे भी पुरुष होते हैं जो रूनू को प्रेम करते है। लाला और रूनू दोनों के बीच आना नहीं चाहता था। लेकिन रूनू को कभी अकेला भी नहीं छोड़ा। लाल चले जाने के बाद अफजल ने दूसरी शादी भी नहीं की। अफजल ने कभी रूनू से कुछ नहीं चाहता लेकिन पिता की तरह रूनू की बेटी की जिम्मेदारी स्वयं संभालता है। अफजल कहता है कि, ''रूनू छोटे बच्चों के स्कूल में पढ़ाती हैं। मेरी प्राविडेण्ड फण्ड के पैसे है हीं। मिला जुलाकर किसी तरह काम चल जाएगा।''[15] अफजल रूनू से प्रेम करता था यह बात उसे कभी नहीं पता चलने दी। रूनू के देहांत के दिन ही अफजल ने आत्महत्या कर ली। समाज में ऐसे भी प्रेमी होते है, जो स्वयं के बारे में नहीं सोचते बल्कि अपने अतीत प्रेमी के प्रति अपना दायित्व निभाते हैं लेकिन दुन्नन जैसा व्यक्ति प्रेम को बता कर मीरा को अपने अस्मिता के प्रति जागरूक करता हैं। जब मीरा को अपने ससुरालवाले लोग तंग करते है, अपनी बीमार माँ से अंतिम समय मिलने नहीं जाने नहीं दिया जाता, तो दुन्नन कहता है कि, ''अन्याय सहना भी अन्याय है मीरा । तुम सारे बन्धनों को तोड़कर आ जाओ। मैं दुनिया की सारी खुशियों से तुम्हारा दामन भर दूंगा। रूनू मौसी भी हमारे साथ रहेगी। जब दुनिया को हमारी परवाह नहीं तो हम दुनिया की परवाह क्यों करें ? हम अलग ही दुनिया क्यों नहीं बसाएं ?''[16] दुन्नन मीरा को अपने अधिकारों की याद दिलाने का प्रयास करता है। यह समाज के ऐसे रिश्तों को बोझ समझता है।

पति के पापाचार के विरूध्द खड़ी होती दीक्षा का दृढ निश्चय, उसका नन्ना के घर चली आती है। ये पारिवारिक जीवन की स्वार्थपूर्ण प्रवृत्ति से त्रस्त होकर कहती है, ''तूने ही ठीक किया, नन्ना कि पारिवारिक को जीवन की इकलौती केंद्रीय सच्चाई बनकर अपने पूरे हावी नहीं हो जाने दिया.... चार गज कपड़े से भी बदतर हो जाती है आदमी की जिन्दगी अगर कोई बड़ा सामाजिक उद्देश्य लेकर चला न जाए-बचपन में दर्जी के हाथ में रहती है, यौवन में शो-केस के हैंगरों में टंगी हुई और बुढापा आते-आते धूल-भरे बक्से में बंद-बंद लगती है, गुमसाइन महकने !''[17] अनामिका ने स्त्री जीवन की सच्चाई को प्रस्तुत करने का प्रयास किया है।

नारी विवाह के कारण पति से जुड़ी होती है, परंतु कुछ परिस्थितियों में वह पति को छोड़कर किसी अन्य पुरूषों के प्रति आकृष्ट होती है। यह आकर्षण वासना की भूख मिटाने के लिए किया जाता है। फैनी पावर्स के पति को पागलपन के दौरे पड़ते है वह उसे नौकरों के सहारे छोड़कर चली आती हैं। अपने पति से उसे शारीरिक सुख नहीं मिलता हैं तो वह दूसरों के माध्यम से पूरा करती है ''.... इस तरह मैंने पूरा भारत देखा.... कई रजवाड़े में राही-राजा से लेकर फकीर तक-मेरे जितने प्रेमी हैं-उनसे मेरा सुख और दुःख-दोनों का साथ हैं।''[18] फैनी पावर्स के माध्यम से अनामिका पाश्चात्य संस्कृति के स्त्री का चित्रण करती है। अनामिका फैनी पावर्स के माध्यम से पूरे विश्व में एक अलग विचार को प्रस्तुत करना चाहती हैं। उपन्यास में फैनी पावर्स ने इतने लोगों के साथ अपनी प्रणय क्रीडा की, लेकिन किसी का परिवार उजड़ने नहीं दिया। इस बारें में फैनी कहती है कि, ''इतना मैंने ध्यान रखा कि मेरे चलते किसी का घोसला न उजड़े ! उसको ही पास फटकने दिया जो मेरी तरह बिल्कुल निस्संग था।''[19] लेकिन यह आकर्षण जब घनिष्ट होता है तब विवाह बाह्य दाम्पत्य भाव का स्वरूप धारण कर लेता है।

वेश्या समाज की लिए एक ज्वलंत समस्या है। वेश्या के मूल में हमारे समाज की आर्थिक स्थिति है। समाज में कोई भी स्त्री वेश्या व्यवसाय को अपनाने के लिए तैयार नहीं होती। इस संदर्भ में डॉ. रामेश्वर नारायण लिखते है, ''वेश्यावृत्ति का विकास सामाजिक

नैतिकता के अधःपतन का सूचक है। पाश्चात्य देशों में वेश्यावृत्ति उपेक्षित नहीं क्योंकि वहाँ यौनेच्छा पूर्ति की स्वतंत्रता है। भारतीय संदर्भ में अभी तक यह संभव नहीं है कि यौनभावना को स्वच्छंद छोड़ दिया जाए, इसलिए इस पर सामाजिक अंकुश के साथ-साथ सरकारी अंकुश भी है, किन्तु वेश्याओं के पक्ष में अगर विचार किया जाए तो यह निष्कर्ष निकलता है, कि वेश्यावृत्ति उनके लिए एक समस्या है क्योंकि यह वृत्ति अपनाने के लिए वेश्याएँ स्वच्छंद नहीं है।``२० अतः अपनी आजीविका चलाने के लिए उनकी मजबूरी है। नारी इस जन्म में क्या किसी भी जन्म में लड़की बनने की चाहत नहीं करेगी। जो नारी वेश्या व्यवसाय में जुड़ी होती है, उसका घर, परिवार, बच्चे आदि की कामना करना मुश्किल है। नारीत्व के सभी गुण होने के बाद भी वह अपना खुद का परिवार नहीं कर सकती। समाज के भेड़ियो की कामवासना को उसी को मिटाना हैं। उसका पूरा जीवन इसी दलदल में व्यतीत हो जाता है। समाज इस वर्ग को उपेक्षित करने के बाद आम व्यक्ति जैसे इनका जीवन नहीं होता। समाज में ऐसे कोने में रखा है, कि कभी कोई भी प्रकाश उनकी ओर नहीं आएगा। साहित्यकार अपनी रचना में ऐसे ही वर्ग की बात साहित्य के माध्यम से समाज के सामने लाने का प्रयास करता है।

अनामिका द्वारा स्त्री के कोमल भावों के साथ-साथ उसके जीवन की कठिनाइयों को चित्रित करने का सफल प्रयास किया गया हैं। उनके पात्र हमें समाज में, मुहल्ले में, गाँव में कहीं भी देख सकते हैं। अनामिका के उपन्यासों में देह व्यापार करनेवाली नारी का चित्रण यथार्थ धरातल पर दृष्टिगत होता हैं। बचपन का एक उदाहरण तारा अपनी मां का चित्रण प्रस्तुत करती है, ``चलना कहाँ हैं ? चार-पाँच की ही रही होऊँगी तब, अम्मी को ऐसा ही करते देखा थी ! सौ बातों में वक्त जाया नहीं करतीं, झट कहती हैं-`चलना कहाँ हैं ? जाने को जगह नहीं होती तो अक्सर मुझको ही खटिया के नीचे सुलाकर ऊपर वह आँधी-तुफान झेलती और फिर झट पल्लू से जाँघें पोंछती हुई, कहती-`चला आ बहार आ जा, बेटी, चलते हैं चौक पर, जलेबी खिला लाऊँ।``२१ हमेशा साहित्यकार ऐसा अछूत और अंधेरा कोना समाज के सामने लाता है। बचनप में माँ को जीवन को देखकर तारा कॉलगर्ल बन जाती है। इस सम्बन्ध में अनामिका लिखती है,``अम्मा ने मिशनरी स्कूल में पढ़ाया था। देखने में ठीक थी, इसलिए अक्सर विदेशी मेहमानों को सप्लाई होती ! और उमर कम थी, इसलिए मुझमें वात्सल्य के सूत्र भी ढूंढ लेते वे कभी-कभी ! मेरी उमर की अक्सर उनकी बेटियां होती जिनकी याद भी आती । एक साहब तो,खैर, इतना दयालू था कि प्यार-प्यार करने के बाद उसने मुझे बिस्कुट खरीद दिए और कितावें भी !उसका पता मैंने बहुत दिन संभाल कर रखा। ऐसी ने कहा था कि कभी कोई काम शुरू करना चाहे तो ढेर-सा पैसा भेजेगा।``२२ वेश्या व्यापार करनेवाली स्त्रियों के पास अलग-अलग व्यक्ति ग्राहक बनकर आते है। जब कोई विवाहित अपनी पत्नी के साथ जो देती है वासना पूरी नहीं कर पाता वह भडास इन वेश्याओं के देह पर निकालता है। इस संदर्भ में तारा कहती है, कि ``अब अपने जीवन का रोना रोएगा, अब अपने फ्रस्ट्रेशन मुझ पर निकलेगा, अब अपनी फेंटेसी आजमाएगा.... कभी-कभी तो ऐसा लगता है कि मैं बस ऊर्जा बोर्ड हूँ और तरह-तरह की आत्माएँ मुझ पर उतरती हैं।..``२३ समाज भूल जाता है कि यह भी एक स्त्री है। समाज में वेश्याओं को सिर्फ उपभोग का साधन माना जाता है। पुरुष धन के बल उसके मन के विरूध्द देह के साथ खेलता है। वेश्याओं के प्रति इतना पशुता का व्यवहार किया जाता हैं। अनामिका ने नारी मन का ऐसा कोई कोना अछूता नहीं छोड़ा जो किसी वेश्या के जीवन में ना घटा हो। किसी दिन अगर वहीं ग्राहक आने पर प्रतिरोध किया तो सिर्फ गालियों के बिना कुछ नहीं मिलता। वह महाक्रूर हँसी हँसकर बोलता है कि, ``तेरी औकात ही क्या हैं ? रंडी ? रंडी ही है न तू ? चुपचाप मेरा कहना मान !``२४

समाज में वेश्या व्यवसाय के कारण अनैतिक घटनाएँ कम होती हैं। स्त्री के शोषण में बलात्कार जैसी घटनाएँ दिखाई देती है। पुरुष अपनी वासना की हवस मिटाने के लिए वेश्याओं के पास जाता है। समाज में वेश्याओं के प्रति उदासीनता दिखाई देती हैं। पुरुष वेश्याओं को तुच्छ मानते है। अनामिका इस संदर्भ में लिखती है कि,``रण्डी-रणचण्डी- बचपन में एक सहेली के घर जाती थी तो चिढ़ाते थे उसके भाई...... उस समय तो मैं कटकर रह जाती थी, बहुत जल्द ही उसके घर आना-जाना छोड़ दिया.... पर आज कहीं मिले तो नज़रे मिलाकर जबाब दूँ- तुम्हारी माँ-बहने सुरक्षित है तो हमारे ही कारण ! मरद को हवस के बहुत रंग देख लिए ! सारी लल्लो-चप्पो एक ही नरक कुण्ड में जाकर गिरती हैं.... ``२५ अनामिका के उपन्यास में वेश्याओ के जीवन का सत्य सामने लाने का प्रयास किया हैं। समाज में यह ऐसा कटा वर्ग है लेकिन इसके बिना समाज नहीं चलेगा।

निष्कर्षतः हम देख सकते है कि परिवार में पत्नी का प्रेमी अथवा पति की प्रेमिका समस्या की जड़ है। परिवार में नारी पति से भौतिक समृध्दि की अपेक्षा उससे एक आत्मीय भाव, प्रेम और विश्वास चाहती है। वह पुरूष के सहद्यता की प्यासी है। ससुरालवालों ने मीरा को घर से निकाल दिया। आस-पड़ोस मित्र-मण्डली कान्त से सीधे-मुँह बात नहीं करते। समाज में विवाहित पुरुष किसी विधवा स्त्री को घर में रखता है तो समाज उसे अनैतिक व्यवहार मानकर बाधा उत्पन्न करते है। ऐसे परिस्थिति मे वह स्त्री समाज के सामने उपभोग

IOSR Journal Of Pharmacy www.iosrphr.org
(e)-ISSN: 2250-3013, (p)-ISSN: 2319-4219
Volume 8, Issue 7 Version. II (July 2018), PP. 21-27

Effect of heavy metal Copper sulphate on Glycogen activity of Bivalve L. marginalis…..

Sandhya M. Sonawane, Mayur Sonawane
Department of Zoology, Nutan Maratha College, Jalgaon. Dist. Jalgaon. (M.S.) Mobile No. 9422977824
Department of Zoology, M.J. College, Jalgaon, Dist Jalgaon (M S) Mobile No.9405918053
Corresponding Author:Sandhya M. Sonawane

ABSTRACT: Heavy metal and pesticide pollutants cause stress to the aquatic organism and change its metabolic activity. The heavy metal pollutants give rise to alterations in the metabolic and physiological activity both after short and long term exposures. To investigate the physiological changes after pesticide and heavy metal treatment the most fundamental one would be the study of change in the biochemical constituents. Carbohydrates, proteins and lipids are the important metabolites which provide energy to different vital processes.

They glycogen content in freshwater bivalve, L. marginalis was altered indicating the effects of heavy metals. The average glycogen content in acute and chronic treatment by heavy metal copper sulphate was decreased in the whole body The depletion of glycogen content was greater in the digestive gland as compared to the foot and mantle of the bivalve, when exposed to pollutants. This indicates that the digestive gland is the principal metabolic center for various metabolic functions. During acute and chronic exposures a significant decrease in the glycogen content of the digestive gland suggests greater glycolytic activity in the gland than the mantle and foot. The greater breakdown of glycogen may suggest the need of high energy to animal in stress conditions caused due to pollutants.

Keywords: Heavy metals $CuSO_4$, L. marginalis, Glycogen, digestive gland, acute, chronic.

Date of Submission: 29-06-2018 Date of acceptance: 16-07-2018

I. INTRODUCTION

Most information about the effect of environmental pollutants on aquatic animals has been obtained from mortality studies. Often very little is known about damage to different internal organs or about disturbed physiological and biochemical processes within an organism following exposure to environmental poisons. Consequently knowledge about the mode of action of toxicants and causes of death in poisoned aquatic animals is often lacking. A better understanding of these mechanisms is necessary if we want to predict the potential harmfulness of various chemicals to the environment.

Since different environment pollutants are likely to affect biological systems in different ways according to their respective chemical properties, the sum of physiological changes created by a particular pollutant is likely to be characteristic of that pollutant. Thus by observing the effects of pollutants on a set of physiological parameters, it might be possible to establish specific responses of that pollutant, and may take it possible to identify a pollutant on the basis of its physiological effect pattern.

The higher concentrations of toxicants bring the adverse effects on aquatic organisms, at cellular level or molecular level and ultimately lead to disorder in biochemical composition which is useful in determining different toxicants and protective mechanism of the body to resist the toxic effects of the substances.

The toxic chemicals (pollutants) act as one kind of stress to organism and organism responds to it by developing necessary potential to counter act that stress. The biochemical changes occurring act that stress. The biochemical changes occurring in the body give first indication of stress. During stress the organism needs sufficient energy which is supplied from reserve materials (glycogen, lipid and protein). If the stress is mild then only stored glycogen is used, as a source of energy, but if the stress is strong then the energy stored in lipid and protein may be used.

The heavy metals cause metabolic derangement in the living system, when come in contact. Heavy metals due to their potential toxicity produce biochemical changes in the tissues of animals.

Even though there is much work on the toxic effects of pesticides and heavy metals on specific target animals, little attention was paid to study the physiological and biochemical changes on non target aquatic species. Since Lamellidens Marginalis are fresh water bivalves an attempt was made to study the changes in biochemical composition in different heavy metal copper sulphate. Carbohydrates (glycogen) constitute the vital

Estimation of Biochemical components from tissues :

(1) Glycogen

The colorimetric estimation of glycogen present in the tissue was done by anthrone reagent method (Dezwaan and Zandee, 1972). 50 mg. of wet tissue was taken in 1 ml of 30% KOH solution. The mixture was boiled in water bath for 5-10 minutes, till the tissue was completely dissolved. The solution was cooled and to it 0.2 ml 2% Na_2SO_4 and 6 ml of absolute alcohol were added. This solution was kept in refrigerator for overnight. It was then centrifuged for 15 minutes at 3000 rpm. The supernatant was discarded and the residue cake was dissolved in 10 ml of distilled water 0.1 ml of this solution was taken and to it 0.9 ml of distilled water were added. The solution was heated in boiling water bath for 5 minutes and then cooled. The intensity of the colour developed was measured with the colorimeter (Erma) at 620 mu (Red Filter) filter. Anthrone, reagent was prepared by dissolving 50 mg anthrone powder and 1 gm Thiourea in 100 ml of 72% H_2SO_4. The amount of glycogen was calculated by referring to a standard graph value, where glucose was used as a standard. The glycogen value was calculated by multiplying with the conversion factor 0.927 to glucose value. The amount of glycogen was expressed in terms of Mg. of glycogen/100 mg of wet tissue.

III. OBSERVATION AND RESULTS

Biochemical components such as carbohydrates (glycogen) were studied in the normal (control) and pollutant copper sulphate treated whole body, foot, digestive gland and mantle of freshwater bivalve, L. marginalis the results are summarized in Tables .

Acute treatment-The acute treatment was given upto 72 hours by heavy metal pollutants, copper sulphate. After the acute treatment by pollutant, biochemical composition of the bivalve was altered and the results are summarized in the table.

The glycogen content of the whole body, foot digestive gland and mantle decreased after acute treatment by heavy metal. After copper sulphate acute treatment at 72 hours, the glycogen in the whole body, foot, digestive gland and mantle decreased from 2.08% to 1.22%, 2.53% to 2.13%, 2.78% to 1.62% and 1.13% to 0.86% respectively. The glycogen content of the foot and mantle depleted more as compared to the digestive gland.A significant change in the glycogen content was found .The maximum depletion occurred in the digestive gland of L. Marginalis.

Chronic treatment-The biochemical components such as glycogen was observed after chronic treatment in control and treated freshwater mussels, Lamellidens marginalis. The biochemical components of the whole body foot, digestive gland and mantle were observed and recorded in the table.

The glycogen content of the whole body, foot, digestive gland and mantle decreased in chronic (5, 10, 15 and 20 days) treatment by heavy metals. After copper sulphate chronic treatment, the glycogen in the whole body foot, digestive gland and mantle decreased. A significant change in the glycogen content was found. The maximum depletion occurred in the digestive gland of Lamellidens marginalis.

Table – 1: Glycogen content in selected tissues of the control and $CuSO_4$ exposed Lamellidens marginalis as a function of exposure period

Treatment	Sr. No.	Body Organ	Total glycogen content (%) + S.D.		
			24 hours	48 hours	72 hours
Control	1	Whole body	2.2874 ± 0.0713	2.1475 ± 0.002	2.0879 ± 0.0711
	2	Foot	2.8725 ± 0.00520	2.9675 ± 0.0578	2.5324 ± 0.0307
	3	Digestive gland	3.2035 ± 0.0036	3.0234 ± 0.0128	2.7852 ± 0.0787
	4	Mantle	1.2242 ± 0.0179	1.2542 ± 0.0427	1.1342 ± 0.0126
Acute treatment by $CuSO_4$	1	Whole body	1.7529 ± 0.0438 P<0.01	1.6432 ± 0.0189 P<0.001	1.1272 ± 0.0234 P<0.001
	2	Foot	2.6435 ± 0.0374 NS	2.6720 ± 0.2203 NS	2.1382 ± 0.01156 P<0.05
	3	Digestive gland	2.2705 ± 0.1328 P<0.001	2.0035 ± 0.0857 P<0.001	1.6240 ± 0.1239 P<0.001

The mode of action of pollutants may be responsible for cellular dis-organization offering the storage and metabolism of the glycogen. Decrease in glycogen content indicates disrupted carbohydrate metabolism. The pollutants give the heavy physical irritate stress causing rapid movement and increased respiration rate thus increased utilization of reserved glycogen to meet higher energy demand of body causing decrease in glycogen content (Bhagyalaxmi. 1981). Many worker support the above results in vertebrate and invertebrate animals. A change in serum protein and glycogen content of rainbow trout exposed to endrin was studied by Grant and Mahrle (1973). Koundinya and Ramamurthi (1978) observed the effect of lethal concentration of sumethion on carbohydrate metabolism in Tilapia mossambica. Baner and Ghosh (1978) have recorded the alterations in the levels of serum glucose, liver glycogen and glucose-6-phosphate of the fish, Clarius batrachus when exposed to cadmium. Banerjee et al. (1978) reported an increase in blood glucose level in the fish Tilapia mossambica when exposed to cadmium. Kabeer (1979) stated that decrease in glycogen content in Malathion exposed tissues can also be due to decrease in glycogen synthesis. Koundinya and Ramamurthi (1979) have observed that sumethion leads to an increase in blood glucose level in decrease in glycogen content. Rao and Rao (1979) studied the effect of methyl parathion on the fish Sarotherodon mossambica and noted a significant decrease in glycogen content, Gill and Pant (1981) studied the effect of Nickel intoxication of carbohydrate metabolism i.e. blood glucose and liver glycogen which were measure to assess the magnitude of biochemical stress. Bhagyalakshmi (1981) studied the levels of certain carbohydrate metabolites in the tissue of field crab, Oxiotelphusa senex senex after exposure it to an organophosphate pesticide sumithion, and recorded an increase in haemolymph glucose level and decrease in total carbohydrate level.

Nagabhushanam and Kulkarni (1981) observed increased haemolymph glucose and a decrease in midgut gland, when the prawns, Macrobrachium Kistensis were exposed to $ZnSO_4$ and $CuSO_4$. Srivastava and Singh (1981) studied the acute effect of methyl parathion on carbohydrate metabolism of the Indian carfish, heteropheustes fossilis. Forooqui (1982) observed a insignificant increase of glycogen in the ovary of Barytelphusa cunicularis after two days exposure to sevimol and a significant decrease after seven days exposure and concluded that glycogen breadwon provides the immediate energy source in stress condition. Natarajan (1982) studied the effect of various concentration of $ZnSO_4$ on glycogen content of river, muscle, brain, kidney and gills of the fish Anabas Scands. Bhagyalkshmi et al. (1984) observed a decrease in glycogen and elevated phosphorylase activity in the crab, Oxiotelphusa senex senex exposed to sumithion, suggesting onset of glycogenolysis forming free glucose and the possible exist of these glucose molecules in the haemolymph resulting in the hyperglycemia condition. Patil (1986) studied the effects of pesticides on the glycogen content of Mythimna (P) separate and found decreased glycogen content ater treatment.

Many workers studied the effects of pollutants on mollusks in Mandal and Ghose (1970) observed glycogen depletion in the digestive gland of the snail, Achatina fulica (Bawdich) when exposed to calcium arsenate. Ramana Rao and Ramamurthi (1980) studied the effect of sublethal concentration of sumithion on some biochemical constituents of the snail, Pila globosa and found a decrease in glycogen content. Lomte and Alam (1982) observed the stable level of glycogen in the foot and mantle but very sharp fall of glycogen in the digestive gland during sublethal exposure for 24 hours to organophosphate pesticide, malathion. Swami et al. (1983) found increased haemolymph glucose and decreased stored glycogen in Lamellindens marginalis when treated with Flodit and Metacid. Kulkarni et al. (1984) studied the impact of endosulfan on the apple snail, Pila globosa and found an elevation of blood glucose level after treatment. Chaudhari (1988) studied the effect of pesticides on biochemical composition of the snail Bellamya (viiparous) bengalensis and found decreased glycogen content after treatment.

SUMMARY

1. The biochemical composition of Lamellidens marginalis after acute and chronic treatment of heavy metals copper sulphate was studied to better understand the mechanism of action of pollutant, by observing the time bound and tissue specific alterations of biochemical component glycogen.
2. After acute treatment of heavy metals glycogen content of the whole body, foot, digestive gland and mantle was altered very prominently, glycogen depletion was significant.
3. The glycogen content of the whole body, foot, digestive gland and mantle decreased after chronic treatment of heavy metal pollutants, much glycogen content decreased in digestive gland which was followed by mantle and foot.

REFERENCES

[1]. Abel, P.D. (1974) : Toxicity of synthetic detergent to fish and aquatic vertebrates. J. Fish. Biol., 6 : 279-298.
[2]. Banerjee, S.K. and Ghosh, S.D. (1978) : Toxicity of cadmium : A comparative study in the air breathing fish Clarius bactrachus (Linn.) and in the non air breathing one, Tilapia mossambica (Peters). Ind. J. Exp. Biol., 16 : 1274.

[30] Nagabhushanam, R. and Kulkarni, G.K. (1981) : Freshwater Palaemonid Prawn, Macrobrachium Kistensis (Tiwari) – Effect of heavy metal pollutants. Proc. Indian Metal Sci. Acad. 547 (3) : 380-386.

[31] Natrajan, G.M. (1983) : Metasystox toxicity effects of lethal (LC 50/48 hrs.) concentration on free amino acid and glutamate dehydrogenase in some tissues in the air breathing fish, Channa striatus (Bleeker). Comp. Physiol. Ecol., 8(4) : 254-257.

[32] Patil, P.N. (1986) : Impact of different pesticides on some physiological and neuroendocrinological aspects of Mythima (Pseudaletia) separate, Ph.D. Thesis, Marathwada University, Aurangabad, M.S., India.

[33] Peter, M. (1973) : Metabolism of Carbohydrates. In : Review of physiological chemistry, Ed. By Harper, H.A. Lange Medical Publication, 14th Edn, pp. 232-267.

[34] Ramana Rao, M.V. and Ramamurthi, R. (1978) : Studies on the metabolism of the apple snail, Pila globosa (Swainson in relation to pesticide impact). Ind. J. Her. 11 : 10.

[35] Rao, K.R., D.A. Kulkarni, K.S.Pillai and U.H.Mane (1987) : Effect of fluoride on the fresh water bivalve mollusks, Indonaia caeruleus (Prashad, 1918) in relation to the effect of pH biochemical approach. Proc. Nat. Symp. Ecotoxic, pp. 13-20.

[36] Sekeri, K.E., C.E. Sekeris, and P. Karlson, (1968) : Protein synthesis in Subcellular fractions of the blofly during different development stages. J. Insect. Physiol., 14 : 425-431.

[37] Shigmatus, H. and H. Takeshita (1959) : On the change in the weight of the fat body and its chief constituents in the silkworm, Bombyx mori L. during metamorphosis. Apl. Ent. Zool. Japan, 3(2) : 123-126.

[38] Shivaprasad Rao, K. and K.V. Ramana Rao, (1979) : Effect of sublethal oxidative enzymes and organic constituents in the tissue of the fresh water fish, Tilapia mossambica (Peters), Curr. Sci. 48 (12) : 526-528.

[39] Shivaprasad Rao, K., Satyaprasad, K. and Ramana Rao, K.V. (1980 a) Freshwater snails – Effect of insecticides Telugu Vyghanika Patrika (Telugu Academic Publication) 9 : 27-32

[40] Shivaprasad Rao, K., Satyaprasad, K. and Ramana Rao, K.V. (1980 b) : Sublethal effect of methyl parathion on tissue proteolysis in the freshwater mussels, Lamellidens marginalis (Lamark). Proc. Ind. Nat. Sci. Acad., 46B : 164-167.

[41] Suryanarayanan, H. and Alexander, K.M. (1972) : Biochemical investigation on edible mollusks of Kerala I. Study on the nutritional value of some bivalves. Fish. Technol., 9(1) : 42-47.

[42] Suryanarayanan H. and Alexander, K.M. (1971) : Fuel reserves of Molluscan muscles. Comp. Biochem. Physio., 40 : 55-60.

[43] Swami, K.S., K.S. Jagannath Rao, K. Satyavelu Reddy, K. Shrinivasmoorthy, G. Lingamurthy, C.S., Chetty and K. Indira (1983) : The possible metabolic diversions adopted by the freshwater mussel to consumer the toxic metabolic effect of seleced pesticides. Indian J. Comp. Anim. Physiol., 1(1) : 95-106.

[44] Thurberg, L.V. and Manchester, K.L. (1972) : Effect of dinervation on the glycogen content and on the activities of enzymes glucose and glycogen metabolism in rat diaphragm muscle. Biochem. J. 128 : 789.

[45] Ventakaraman, R. and Chary, S.T. (1951) : Studies on oysters and Clams, Biochemical Variations. Indi. J. Med. Res., 39(4) : 533-541.

Sandhya M. Sonawane Effect of heavy metal Copper sulphate on Glycogen activity of Bivalve L. marginalis....."." IOSR Journal of Pharmacy (IOSRPHR), vol. 8, no. 07, 2018, pp. 21-27.

18-19

स्वातंत्र्योत्तर मराठी साहित्य आणि स्त्री
स्वातंत्र्योत्तर हिंदी साहित्य और नारी
Post-Independence Indian English Literature and Women

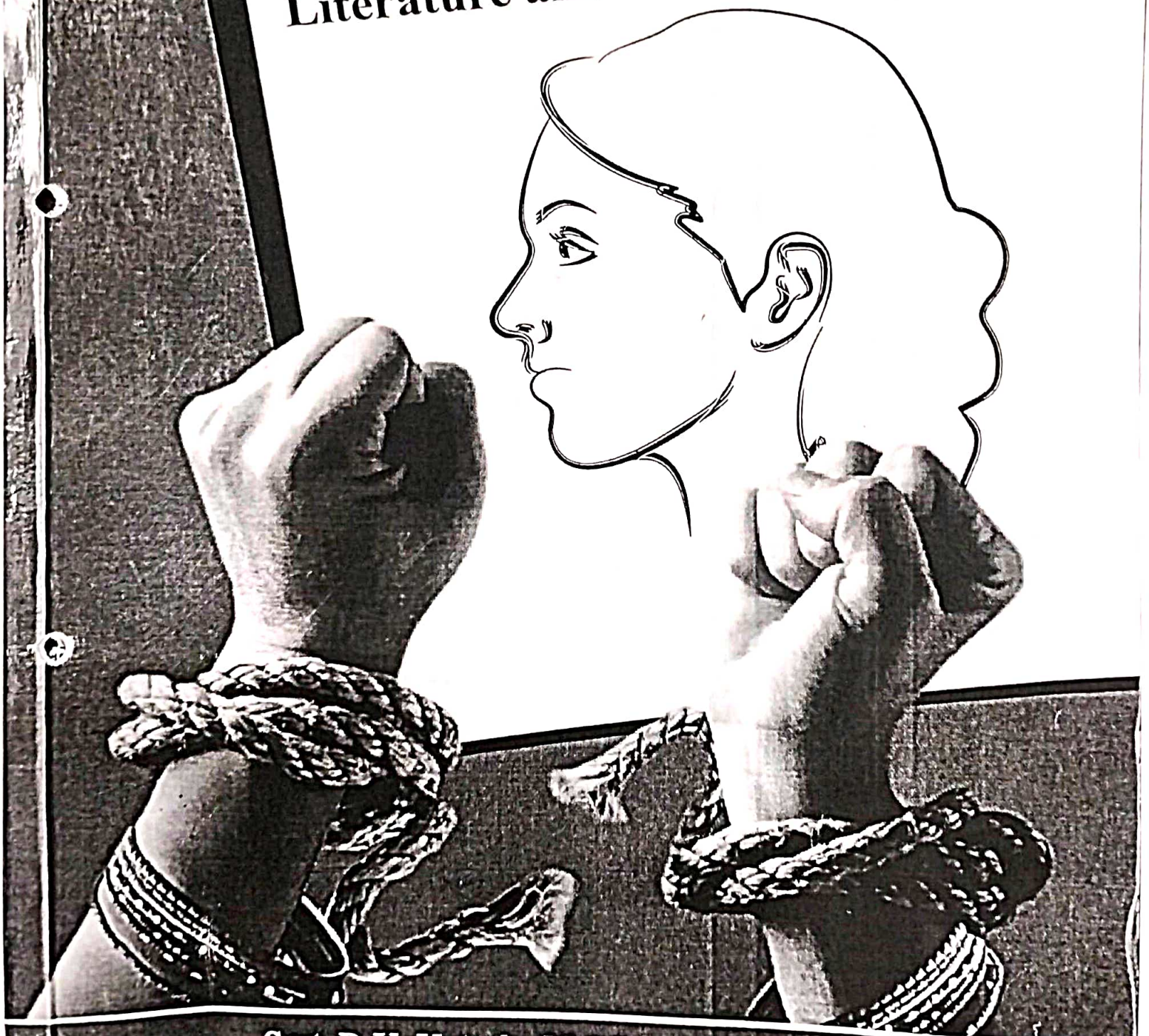

Smt. P. K. Kotecha Mahila Mahavidyalaya
Shanti Nagar, Bhusawal

- ममता कालिया के कथा-साहित्य में नारी-विमर्श .....
  - डॉ. सुनीति एस. आचार्य, शिरपुर
- रत्तिका के संघर्ष एवं अकेलेपन की कथा - सूरजमुखी अँधेरे के.....
  - डॉ. सुनीता नारायणराव कावळे, चालीसगाँव
- स्वातंत्र्योत्तर हिंदी कहानी में नारी .....
  - डॉ. सविता काशिराम तायडे, मुंबई
- स्वातंत्र्योत्तर हिंदी साहित्य और नारी .....
  - डॉ. शेख शहेनाज अहेमद, नांदेड
- स्वातंत्र्योत्तर हिंदी कहानी 'यही सच है' में नारी चित्रण .....
  - डॉ. शेखर घुंगरवार पी., नांदेड
- समकालीन महिला कथा साहित्य और नारी .....
  - प्रा. निलीमा दामोदर इंगळे, यावल
- स्वातंत्र्योत्तर हिंदी कहानी - साहित्य में नारी.....
  - प्रा. दिलीप पंडीत पाटील, चोपडा
- मधु काँकरिया की कहानियों में नारी-चित्रण.....
  - प्रा. प्रल्हाद विजयसिंग पावरा, यावल
- रामदरश मिश्रजी के उपन्यास में नारी .....
  - डॉ. यादव नामदेव मोरे, भोकरदन
- स्वातंत्र्योत्तर हिंदी कहानियों में नारी.....
  - प्रा. राजेश मेरसिंग खर्डे, जलगाँव
- हिन्दी उपन्यासों में नारी - 'आपका बंटी' और 'स्वामी' उपन्यासों के विशेष संदर्भ में .....
  - डॉ. अनिता भिमराव काकडे, भोकरदन
- स्वातंत्र्योत्तर नारी के विविध रूपों का चरित्रांकन : शशिप्रभा शास्त्री की कहानियाँ .....
  - डॉ. मनोज नामदेव पाटील, जलगाँव
- सुनीता जैन के उपन्यासों में नारी व्यथा.....
  - डॉ. गिरीष एस. कोळी, भुसावळ
- स्वातंत्र्योत्तर हिंदी ग़ज़लकारों की ग़ज़लों में नारी समस्याओं पर चिंतन.....
  - डॉ. दिपक विश्वासराव पाटील, धुले
- ज्ञानप्रकाश विवेक की कहानियों में नारी विषयक दृष्टि .....
  - डॉ. देवेंद्र नारायण बोंडे, जलगाँव
- स्वातंत्र्योत्तर हिंदी महिला उपन्यासकार और नारी चेतना .....
  - प्रा. डॉ. नितीन रंगनाथ गायकवाड, वैजापूर
- रूक्मिणी के संघर्ष एवं सक्षमीकरण की कथा : रेत .....
  - प्रा. लक्ष्मी मधुकर तायडे, भुसावल
- प्रवासी साहित्य में नारी .....
  - अनुपमा तिवारी, विशाखापट्टणम

ISBN : 978-97-87129-3

मधु काँकरिया की कहानियों में नारी-चित्रण

- प्रा. प्रल्हाद विजयसिंग पावरा
सहायक प्राध्यापक, हिंदी विभाग
कला, वाणिज्य एवं विज्ञान महाविद्यालय, यावल, जि. जलगाँव

बीसवीं शताब्दी के अंतिम दशक में महिला लेखन अत्यंत तीव्रता से उभरकर सामने आया। विशेषकर हिंदी कथा-साहित्य में महिलाओं को केंद्र में रखकर कई उपन्यास एवं कहानियाँ लिखी गई। जिनके माध्यम से नारी-जीवन के विविध पक्षों पर प्रकाश डालने का प्रयास किया गया। नारी पर होनेवाले अन्याय-अत्याचार, शारीरिक और मानसिक शोषण, अस्तित्त्व बोध, आर्थिक स्वावलंबन, समानता का अधिकार, दहेज की समस्या आदि तमाम बातों का चित्रण हिंदी कथा-साहित्य में किया गया।

इक्कीसवीं सदी के प्रारंभ में स्त्रियों के विभिन्न प्रश्नों पर हिंदी कथा साहित्य में महिला लेखिकाओं ने नए सिरे से विचार-विमर्श प्रारंभ किया हैं। उन्होंने नारी जीवन से संबंधित सामाजिक, सांस्कृतिक, आर्थिक, धार्मिक, मनोवैज्ञानिक आदि आयामों को दृष्टि में रखकर अनुपम साहित्य लेखन उपन्यासों एवं कहानियों के माध्यम से किया है। इन महिला लेखिकाओं में मन्नु भंडारी, मालती जोशी, प्रभा खेतान, उषा प्रियंवदा, ममता कालिया, शिवानी, मेहरून्निसा परवेज, मृदुला गर्ग, कृष्णा सोबती, मैत्रेयी पुष्पा, सूर्यबाला, सुनीता जैन, राजी सेठ इन लेखिकाओं के साथ ही मधु काँकरिया का लेखन अपना महत्वपूर्ण स्थान रखता हैं। सूर्यबाला के अनुसार - अनुभव यही कहता है कि लेखिकाओं का क्षेत्र अधिकतर घर और नारी मन रहा है जबकि पुरूष लेखन का घर बाहर दोनों। लेकिन हम इस क्षति की पूर्ति भी तो कर लेती हैं। नारी मन की अथाह गहराइयों में पैठकर इतना तो मैं दावे के साथ कह सकती हूँ कि नारी के अंदर इतने गूढ, तिलस्म, गुफाएँ और प्राचीर हैं कि इन्हें भेद पाना आसान नहीं, जिनको जितनी सत्यता और ईमानदारी से भेद सकती है - पुरूष नहीं।[1]

मधु काँकरिया ने अपने कथा साहित्य में अपनी अनुभूतियों को बेबाक तरीके से अभिव्यक्त किया हैं। उन्होंने कथा-साहित्य में सदियों से चली आ रही दहेज प्रथा, बालविवाह, विधवा जीवन, वेश्या जीवन आदि विभिन्न पहलुओं का चित्रण किया हैं। इन्हीं समस्याओं का चित्रण मधु काँकरिया की कहानी चूहे को चूहा ही रहने दो, एक रूकी हुई स्त्री, दाखिला, आसमान कितनी दूर, कुल्ला आदि में नारी चित्रण दिखाई देता है। प्राचीन काल की नारी की तुलना में आज की आधुनिक नारी काँकरिया की कहानियों में विद्रोह करती हुई दिखाई देती हैं।

मधु काँकरियाँ के कुल तीन कहानी-संग्रह प्रकाशित हो चुके है। इनमें पहला कहानी-संग्रह भरी दोपहरी के अँधेरे में चूहे को चूहा ही रहने दो कहानी में कहानी की नायिका युवती अपने पति से प्रतिशोध लेना चाहती है कि, वह पति की पतिव्रता पत्नी नहीं रहीं। अपने मन की भडास निकालना चाहती है। क्योंकि पति ने उस पर कई बंधन डाल रखे थे। किसी हमउम्र इन्सान से बात तक करने को वह तरस जाती थी। इन्हीं परिस्थितियों के कारण कहानी की युवती अपने पति से बगावत करती है। कहानी में स्वयं युवती कहती है कि, इससे आगे बढना मेरे एजेण्डा में नहीं था। आज की रात मेरे प्रतिशोध की रात थी।[2]

कहानी की नायिका दूसरे युवक को आमंत्रित कर जब चरमोत्कर्ष के क्षणों में खुद को उस ऐंद्रिय जाल में मुक्त कर लेती है तब युवती का प्रतिशोध कहीं न कहीं उसे आत्मसम्मान लौटाता हैं।

इस कहानी में मधु काँकरिया ने एक स्त्री की आंतरिक पीडा को बडी ही सजीवता से चित्रित किया है। उसके अंतर्द्वन्द्व का यह चित्रण शायद ही पहले कभी हुआ हो। पति के दबाव में जीती स्त्री का एक उन्मुक्त कदम। संवेदनशील मन को झकझोर देनेवाली यह कहानी हैं। यह कहानी एक नारी के मन का ज्वलंत चित्रण हैं।

मधु काँकरिया का दूसरा कहानी संग्रह बीतते हुए में एक रूकी हुई स्त्री कहानी में नायिका मानसी प्रेम में पागल एक ऐसी लडकी है, जो सालों अपने प्रेम को पाने के इंतजार में गुजार देती हैं। मेडिकल की पढाई करते-करते मानसी और सरबजीत प्रेमी-प्रेमिका बन जाते हैं। मानसी

ISBN : 978-97-87129-35-1

व्हार, प्रतिभासंपन्न, उच्चशिक्षित होने के बावजूद प्रेम में सबकुछ समर्पित कर देती हैं। अपने प्रेमी के लिए मर मिटने को तैयार होकर अपना करियर तक दाँव पर लगा देती है। इसके विपरित सरबजीत अपने जीवन में करियर को महत्त्व देता है। इसलिए सरबजीत मानसी को छोड ऑल इंडिया मेडिकल इन्स्टिटयूट दिल्ली चला जाता हैं। इसके संदर्भ में मधु कहानी में लिखती है कि, यहाँ स्त्रियाँ बलात्कार की उतनी नहीं जितनी धोखे का शिकार होती है।[३]

मानसी सरबजीत से धोखा खाने के बाद भी अपने प्रेमी की राह देखती है। इस प्रकार आखिर तक मानसी सरबजीत के प्रेम के लिए तडपती हैं।

इस कहानी में मानसी अपने सर्वस्व को हासिल करने के लिए एक रूकी हुई स्त्री जीवन के कितने ही अंतराल के बाद भी उस व्यक्ति के लिए रूकी हैं। क्या सचमुच उसके जीवन में भी बहाव आयेगा यह सोचने पर मजबूर करनेवाली की यह कहानी नारी के संवेदनशील मन का चित्रण करती हैं।

इसी कहानी संग्रह की कहानी दाखिला में सुकीर्ति नामक युवती की व्यथा का चित्रण हैं। सुकीर्ति की व्यथा यह है कि उसका पति उसे छोडकर चला गया है। वह अपने बेटे विक्रम को अच्छे स्कूल में दाखिला दिलाना चाहती हैं। अपने बेटे के लिए तडपती माँ अपने भाई को ही पति बनाकर स्कूल में ले जाती हैं। किन्तु अपने बेटे को लाख सिखाने के बाद भी बेटा उसे पापा की जगह मामा कहकर पुकारता है। और सारा मामला बिगड जाता है। सुकीर्ति सोचती है कि उसके इतने होशियार-होनहार, कर्तव्यदक्ष बेटे को केवल उसकी वजह से स्कूल में दाखिला नहीं मिला तो वह अपने आपको कभी माफ नहीं कर पायेगी। कॉन्वेंट स्कूलों में दाखिले के वक्त माता-पिता दोनों का होना जरूरी होने के कारण दो-तीन बार उसका प्रयत्न असफल हो जाता हैं। इन सभी परिस्थितियों को देखता विक्रम अपनी माँ से कहता है कि, इस बार तुम गडबड नहीं करना। इंटरव्यू रूम में घुसते ही कह देना फादर को पापा हमारे साथ नहीं रहतें, नहीं तो पिछले इंटरव्यू की तरह इस बार भी मेरा दाखिला नहीं हो पायेगा।[४]

सुकीर्ति कहानी की नायिका की व्यथा अन्य नारियों से भिन्न हैं। लेखिका ने इस कहानी में परित्यक्ता नारी की समस्या का चित्रण किया है। एक परिवार, सुखी परिवार जीवन में कितना मायने रखता है कि बेटे को स्कूल में दाखिला दिलवाने के लिए उसे झूठ तक का सहारा लेना पडता है। अकेली स्त्री का जीवन बडा ही कठीण और संघर्ष से भरा होता हैं।

इसी कहानी-संग्रह की कहानी आसमान कितनी दूर में मंदा नामक स्त्री की छोटी-सी ख्वाहिश का चित्रण हैं। शादी से पहले ही सुहागरात का सपना सँजोए मंदा जब भैरोसिंग के घर आती है तो उसकी ख्वाहिश यही है कि सुहागरात के लिए एक पलंग खरीदूँ। लेकिन उसका यह सपना अधुरा रह जाता हैं। वह अपने पारिवारिक समस्याओं में इतनी उलझ जाती है कि अपने बेटे और बेटियों की शादी तक करा देती हैं। मंदा की बडी बेटी मंगला द्वारा यह सपना पूरा होने ही जा रहा था कि, बेटी की सौगात स्वीकार करना मंदा के पति भैरोसिंग की संस्कृति में नहीं था। किन्तु बेटी के आग्रह खातिर उन्होंने पलंग तो रख लिया, पर मंदा के लिए नहीं पुत्रवधू के लिए जिसपर मंदा एक-बार लेटने की ख्वाहिश रखती हैं। इसी ख्वाहिश के कारण जब वह पलंग पर लेटती है तब उसे एहसास होता है कि, कितना अपूर्व लग रहा था... जमीन से तीन फिट ऊँचा उठकर सोना। शरीर का अंग-अंग जैसे इस अद्‌भुत अनुभूति से अभिभूत था। विश्वास ही नहीं हा रहा था कि सचमुच वह ही सोई है पलंग पर। इसी एक पल के लिए जाने कितने स्वप्न देखे थे उसने।[५]

मंदा के द्वारा कहानी में मधु काँकरिया ने नारी के संवेदनशील रूप को चित्रित किया हैं। लेखिका ने इस कहानी में प्रस्तुत किया है कि, एक सामान्य किशोरी का सामान्य सपना उम्र के पडाव तक पूर्ण नहीं होता। परिवार के भरण-पोषण, कल्याण में वह अपने आपको ढाल देती है। इसका सजीव चित्रण हुआ हैं।

मधु काँकरिया का तीसरा कहानी-संग्रह और अंत में इशु है। इस संग्रह की कहानी कुल्ला में नारी का चित्रण व्यक्त हुआ है। इसमें नायिका प्रमिला को पति द्वारा हीनता से भरा बर्ताव मिलता है। दाम्पत्य जीवन में जहाँ पति-पत्नी दोनों एक-दूसरे के जीवन के रथ के पहिए होते हैं। प्रमिला पति के प्रेम में अपना सर्वस्व लुटा देने को तैयार। परंतु नयी ब्याहता पत्नी के साथ उसका पति उसके साथ आक्रोशपूर्ण व्यवहार करता हैं। प्रमिला पति का दिल जीतने के लिए बडे चाव से पति के लिए रसोई में कुछ पन्ना ही रही थी कि उसकी पीठ पर पीछे से टूथपेस्ट के झाग का कुल्ला पति के ही द्वारा मादा जाता है। जूठे कुल्ले से प्रमिला खौल उठती हैं। अपमान से थरथराई वह पति पर बरस पडती है। प्रमिता सोचती है कि, इशश... किस कूडेदान की अर्चना करती